रास का एहसास

डॉ. प्रभाकर उनियाल

रास का एहसास

कहानी संग्रह

- डॉ. प्रभाकर उनियाल

भगत सिंह कोश्यारी
पूर्व राज्यपाल, महाराष्ट्र व गोवा राज्य
पूर्व मुख्यमंत्री, उत्तराखण्ड राज्य

सत्यमेव जयते

BHAGAT SINGH KOSHYARI
Former Governor of Maharashtra & Goa
Fromer Chief Minister of Uttarakhand

दो शब्द...

डॉ0 प्रभाकर उनियाल जी से मेरा बहुत लम्बा परिचय रहा है। वे आदर्श नागरिक थे, ऐसे बहुत कम लोग होते है जो समाज हित के लिए अपने सम्पूर्ण परिवार के झोंक देते हैं। प्रभाकर जी के रग-रग में देश भक्ति बसी थी। वे एक अच्छे लेखकर पत्रकार व अधिकारी तो थे ही लेकिन उनके अन्दर जो सबसे बड़ी बात मैंने देखी है कि वे सत्य की जो लड़ाई है उसके लिए वे किसी का भी सामना कर सकते थे।

प्रस्तुत कहानी संग्रह **''रास का एहसास''** में लेखक डॉ0 प्रभाकर उनियाल द्वारा दैनिक जीवन पर आधारित घटनाक्रमों को बहुत सटीक रूप से उजागर किया गया है। मनुष्य के जीवन में कई तरह के उतार-चढ़ाव और अनेकों प्रकार के जीवन संघर्ष को इस कहानी संग्रह के माध्यम से पाठकों तक बड़ी सफलता से साथ पहुँचाया है। कुछ कहानियाँ दर्शाती है कि मनुष्य न चाहते हुए भी जीवन के अनेक पड़ावों पर सदैव संघर्ष शील रहता है। कहानी वाममार्ग साधन अनुभूति कराती है कि मनुष्य कभी सामाजिक दबाव के कारण, कभी धार्मिक वजह से या कभी समुदाय से वशीभूत होकर जीवन पर्यन्त इसी उधेड़बुन में रहता है। कहानी पिकनिक में लेखक ने गाँव का सटीक चित्रण किया है, वहाँ का रहन-सहन, खान-पान, आबो-हवा सभी चलचित्र की भांति दिखने लगते है। कहानीकार ने अपने कहानी संग्रह द्वारा प्रमुख रूप से अपने व्यक्तित्व रचना शक्ति का परिचय अपनी सटीक लेखनी द्वारा दिया है।

(भगत सिंह कोश्यारी)

B-187, Sector-4, Defence Colony, Dehradun (U.K.) - 248001
Hotel Uttaranchal Deep, Naya Bazar, Near Bus stand, Pithoragarh (U.K.)
M.: +91 8126099999, 9607200791

प्रस्तावना

उत्तराखण्ड (देहरादून) से प्रकाशित **'गगरी'** मासिक पत्रिका में सितम्बर 2005 अंक से प्रारम्भ हो कर विगत कई वर्षो में मेरी 100 से अधिक कहानियां प्रकाशित हुई हैं। इनमें कुछ कहानियां छोटे (3 से 6 पृष्ठ) व कुछ मध्यम (7 से 12 पृष्ठ) आकार की हैं। कई कहानियां एक से अधिक अंकों में भी आयीं है जो लम्बी (12 से 25 पृष्ठ) और लघु उपन्यास जैसी हैं। इनमें से छोटे और मध्यम आकार की तीस कहानियों का एक संग्रह **'आलू का झोल'** नाम से जुलाई 2013 में प्रकाशित हो चुका है। किसी बड़े व नामी प्रकाशक से सम्पर्क न हो पाने के कारण निजी व्यवस्था से **'गगरी'** प्रकाशन के अन्तर्गत प्रकाशित कराया गया। उक्त कहानी संग्रह को पाठकों से व्यापक सराहना मिली है।

'आलू का झोल' को मिले समर्थन से प्रोत्साहित हो अब **'रास का एहसास'** कहानी संग्रह पाठकों के लिए प्रस्तुत है। इसके अन्तर्गत 15 लम्बी कहानियां दी गई हैं जिनमें से कुछ लघु उपन्यास जैसी हैं। इस कहानियों का लक्ष्य विशुद्ध मनोरंजन है जिनमें रोचक संयोगों व घटनाक्रमों के साथ यात्रा प्रसंग आगे बढ़ते हैं। इन कहानियों की विशेषता यह है कि एक बार आरम्भ करने के बाद इन्हें पूरा पढ़े बगैर छोड़ा नहीं जा सकता। इनके कथानक इस तरह गुंथे हुये हैं कि सौंदर्य के प्रति आकर्षण और उसके प्रभाव से बचने की चेष्टा के बीच द्वन्द्व निरन्तर जारी रहता है। यह अनिश्चितता रहस्य का ऐसा वातावरण बनाती है कि कहानियां भावुक बनाने से लेकर मीठी गुदगुदी तक पैदा कर देती हैं।

सेवाकाल के दौरान मेरा बहुत अधिक समय यात्रायें करते बीता है, संग्रह की अधिकांश कहानियों की कल्पना इस दौरान हुए अनुभवों को मन में रख कर की गई है अतः इन कहानियों का लक्ष्यसमूह अनायास ही वह वर्ग हो गया है जो यात्रा के समय का उपयोग पुस्तकें पढ़ने में करता है। कहानियों का कथानक उनको निश्चय ही कल्पना की उड़ान पर ले जाने का काम करेगा।

सभी कहानियों के पात्र एवं घटनायें काल्पनिक हैं, किसी घटना या व्यक्ति से इनका साम्य होना मात्र संयोग ही माना जायेगा।

(डॉ. प्रभाकर उनियाल)

अनुक्रमणिका

1.	अकेली आस	5
2	बहस के बाद	13
3	वाममार्ग साधना	22
4	परिधान से आगे	33
5	तपस्या का रहस्य	44
6	अपराध का बोझ	56
7	रास का एहसास	68
8	निडर की चेतना	81
9	चक्काजाम	93
10	पिघला सोना	107
11	रिलेशनशिप	121
12	पिकनिक	135
13	अभिनय का पति	152
14	मांजी की सोच	177
15	किनारे की चाहत	202

अकेली आस

ट्रेन पहुंचने का समय यों तो दोपहर का था लेकिन सर्दी के दिनों में कोहरे के कारण उसका आठ-दस लेट घंटे हो जाना सामान्य बात थी। आज भी यही हुआ था, दोपहर एक बजे के बजाय ट्रेन रात को 10 बजे के बाद पहुंची। बाहर कड़ाके की सर्दी थी, माधव को मालूम था कि उसे कोई टैक्सी नहीं मिलने वाली क्योंकि वे लम्बी दूरी वाले यात्रियों को ही प्राथमिकता देते थे और ऑटो रिक्शा से जाने का मतलब था खुली हवा में दौड़ना। उसने घर से कार बुला ली थी, लेकिन यह बारात के कारण लगे जाम में फंस गई। उसे फोन आ गया था कि कार पहुंचने में समय लग सकता है। प्लेटफार्म पर पड़ी बेंच पर बैठकर प्रतीक्षा करने के अलावा कोई चारा नहीं था, क्योंकि वहां से इसके बाद जाने वाली कोई ट्रेन न होने के कारण वेटिंग रूम बंद हो चुका था। अधिकांश लोग प्लेटफार्म से निकल गये थे और चाय-पानी के स्टॉल तक बंद हो चुके थे।

वह प्लेटफार्म पर लगभग अकेला ही था कि उसे थोड़ी दूरी पर रखी दूसरी बेंच पर एक महिला सी आकृति दिखाई दी, वह भी शायद अकेली थी। उसने अनुमान लगाया कि शायद वह भी उसी की जैसी परिस्थिति में हो। वह सोच ही रहा था कि महिला आकृति धीरे-धीरे चलकर उसकी ओर बढ़ चली, साथ में एक मंझले से आकार का बैग। नजदीक आने पर उसने आकृति की ओर देखा, वह एक युवती थी, लगभग 20-22 वर्ष की। वह ठगा सा रह गया। उसके मुंह से अनायास निकलने वाला था 'सब्बो दीदी!' लेकिन सम्भल गया। सब्बो दीदी तो अब काफी बड़ी आयु की हो चुकी होंगी, ये सब्बो दीदी कैसे हो सकती है? लेकिन वही कद, उतनी ही हल्की थुलथुली सी काया, वैसा ही आसमानी रंग का कुर्ता व सफेद सलवार। आयु को छोड़ कर उसे देख कहीं से भी नहीं लगता था कि वह सब्बो दीदी नहीं है।

युवती ने पास आकर माधव से जानना चाहा कि क्या वह लोकल है, उसने हामी भर दी। युवती ने एक मोहल्ले का नाम लेकर पूछा कि यह स्टेशन से कितनी दूर होगा। मोहल्ला माधव के लिए अच्छी तरह जाना-पहचाना था, यह उसका पुराना मोहल्ला था, उसका भी और सब्बो दीदी का भी। उसने दूरी तो बता दी लेकिन माथा ठनका कि युवती उसी मोहल्ले में जाना चाह रही है। उसे अचानक ध्यान आ गया कि जिस ट्रेन से वह आया है वह भी तो उसी शहर

से होती हुई आ रही है जहां सब्बो दीदी ब्याही हुई थीं। सीधे कुछ पूछना तो ठीक नहीं था लेकिन उसने पूछ लिया कि उस मोहल्ले में युवती को किस के यहाँ जाना है।

''अपने नाना–नानी के मकान में'' युवती ने अपना मन्तव्य बता दिया।

''कौन है वे लोग?'' उसने जानना चाहा।

''अब नहीं हैं, कभी रहते थे।''

वह हैरान था, वे तो कब के जा चुके थे, सब्बो दीदी की शादी के साल–दो साल बाद ही। ससुराल में सब्बो दीदी क्योंकि खुश नहीं थीं, उनके साथ बहुत बुरा व्यवहार होता था, इतना कि उनके माँ–बाप रोते और पछताते कि उन्होंने बेटी की शादी क्यों कर दी। वह तब छोटा था, कुछ अधिक नहीं समझता था लेकिन सब्बो दीदी के माँ–बाप के आंसू उसे अभी भी याद हैं। दीदी की माँ माधव को छाती से चिपटा कर आंसुओं से नहला सी देती ''काश! तू सगा भाई होता उसका और इतना बड़ा कि जाकर दीदी की मुश्किलों में उसका साथ दे सकता।''

माधव को याद आ गया कि सब्बो दीदी के माँ–बाप यहाँ का किराये का मकान छोड़कर दीदी के ही शहर चले गए थे लेकिन वहाँ जाकर भी कुछ नहीं कर पाये। दीदी का तलाक हो गया था। वे उसे लेकर किसी दूसरे शहर में चले गए थे, जहाँ दीदी को प्रिंसिपल की नौकरी मिल गई थी। इसके बाद की जानकरी उसे नहीं थी।

युवती आज पुराने रिश्ते कुरेदने चली आई थी। इससे साफ हो गया कि वह सब्बो दीदी की ही बेटी है, लेकिन स्टेशन पर वह इंतजार किसका कर रही है। माधव ने उससे ही पूछ लिया।

''मामाजी का!'' युवती ने दो शब्दों में बता दिया। उसके लिए सूचना नई थी क्योंकि सब्बो दीदी का तो कोई भाई था ही नहीं। वह कुछ परेशान हो उठा।

''मामा? कौन है वो?'' माधव ने पूछा।

''पता नहीं, लेकिन नाना–नानी के पुराने मकान के आस–पास ही कहीं वे रहते हैं, वे और माँ उनकी अक्सर बात किया करते थे। मैंने 'मामा' लिख कर नाना–नानी के पुराने पते पर पत्र डाला था। नानी व माँ का ईश्वर पर बहुत भरोसा था, मैं भी ऐसा ही भरोसा करती हूँ, मामा जहाँ भी होंगे मुझे लेने जरूर आयेंगे, इसी आशा के साथ यहाँ बैठी हूँ।

माधव जानता था कि सब्बो दीदी का अगर भाई जैसा कुछ है तो वही है। युवती की नानी व माँ का स्वयं युवती का विश्वास सही था। माधव वहाँ पर

हाजिर था लेकिन सब कुछ जता देना इतना आसान नहीं था।

वह परेशान हो उठा। यदि वही युवती का मामा है और युवती उसी की प्रतीक्षा कर रही है तो सारा भार उसी के सिर आ गया था। इतनी रात एक अपरिचित युवती को कहाँ लेकर जाये? अपने घर ले जाये तो तरह-तरह के सवाल, पूरा इतिहास बताने पर भी संतुष्ट कर पाना कठिन था और इतना अपना जानकर भी अकेले छोड़ देना और भी कष्टकारक, सीधा अपना परिचय देने में भी संकोच स्वाभाविक था।

''लेने वाले अगर नहीं आ पाये तो कठिनाई में पड़ सकती हो'' माधव ने आशंका जताई।

''माँ और नानी कहती थीं कि यह देवभूमि है, कोई नहीं आयेगा तो स्वयं ईश्वर सहायता करने चले आयेंगे। इसलिए मैं निश्चिन्त हूँ।''

वह तनाव में आ गया। समाधान सरल नहीं था, प्लेटफार्म पर सारी बातें नहीं हो सकती थी लेकिन युवती के लिए कुछ करना जरूरी था। उसने पुराने मोहल्ले के एक पुराने घर का ध्यान आ गया, जिसमें सब्बो दीदी की आयु की ही एक महिला अकेले रहती थी। माधव ने उससे निवेदन कर युवती के ठहरने की व्यवस्था कर दी। ऑटो से बात कर माधव ने युवती को रवाना कर दिया।

माधव को लेने उसकी कार अब तक नहीं आ पाई थी। वह फिर से बैंच पर आ गया, उसने लम्बी सांस खींची, ''सब्बो दीदी!'' और कहीं अतीत में खो गया।

सब्बो दीदी बहुत अच्छी थीं और दिखने में भली सुंदर। वाणी से जैसे शहद टपकता, उसे जब भी पुकारती तो उनकी आवाज में जैसे रस बरसने लगता, जो उसकी रग-रग तक पहुँच जाता। मोटी तो नहीं, लेकिन थोड़ी थुलथुल, पढ़ाई में होशियार, माँ-बाप की लाडली, उनकी इकलौती संतान। उसकी नजरों में तो वे जैसी जीती-जागती देवी थीं। उम्र में तो बहुत बड़ी नहीं, लेकिन व्यवहार में ऐसी कि जैसे माता-पिता के स्थान पर वे ही संरक्षक हों। मीठी डांट, सिर, गाल या बांह पर पिटाई के नाम पर मीठी सी थपकी और कभी-कभी नाक पकड़कर खींचना, दीदी का खास अंदाज था। कौन बेसहारा है, कौन गरीब है, किस को सहायता की आवश्यकता है, दीदी जैसे इसी तलाश में रहती। पास-पड़ोस व मोहल्ले में ऐसा कोई नहीं था जिसकी सुध दीदी ने न ली हो। माधव पर तो दीदी कुछ खास ही मेहरबान थीं, उसकी हर जरूरत जैसे उनकी चिंता बन गई थी। वह समय पर खाता-पीता है या नहीं? साफ-सफाई से रहता है या नहीं? नियमित स्कूल जाता है या नहीं? जरा सी चूक हुई नहीं कि दीदी डांटने को तैयार। दीदी ने नियम बना लिया था कि

स्कूल से आने के बाद माधव सीधा उनके घर आयेगा व वहीं खाना खायेगा।

दीदी के माता-पिता सब्बो को एक छोटा भाई मिल जाने से बहुत खुश थे। दीदी के साथ ही वे भी माधव के लिए कुछ न कुछ अच्छा या नया बनाकर खाने के लिए रखते। दीदी का प्यार जितना सरल था, उनका अनुशासन उतना ही सख्त, खाना खत्म होते ही तुरन्त बस्ता खोलकर कापी-किताब निकालने का हुक्म था। स्कूल में क्या पढ़ाया, सही था या गलत, उसने क्या सीखा? सारा हिसाब दीदी को देना पड़ता। दीदी सारी समीक्षा करतीं, सही-गलत बतातीं और फिर खुद पढ़ाने बैठ जाती। हिन्दी, गणित, इतिहास, भूगोल, दीदी किसी विषय में कोई कसर नहीं छोड़तीं। वे तब तक कोशिश करती रहतीं जब तक स्वयं उनकी या माधव की हिम्मत जबाव न दे जाए।

माधव के लिए सब्बो दीदी न कोई रूप है न नाम, न कोई रक्त सम्बन्ध, न कोई बन्धन, किन्तु स्मृति की कोई डोर दोनों को जोड़े हुए है। उसे याद है दीदी के घर में एक दिन खूब चहल-पहल थी, सब लोग बहुत खुश थे। उनके पिताजी मास्टर (अध्यापक) होने के साथ-साथ स्वतंत्रता संग्राम सेनानी भी थे, खूब खिलखिला रहे थे। दो सटे हुए कमरों के घर में मेहमानों की खासी भीड़ थी, आँगन भी अड़ा पड़ा था, लेकिन सब्बो दीदी कहीं नहीं दिख रही थीं, वे तो छत पर थीं।

छत पर बना छोटा कमरा भी मास्टर जी के पास ही था। हालांकि मकान किराए का था लेकिन मास्टर जी की इज्जत कुछ ऐसी थी जैसे वे ही मकान मालिक हों। यह कमरा साफ-सफाई को छोड़कर शायद ही किसी के लिए खुलता हो लेकिन सब्बो दीदी वहां थीं। दीदी को खोजते-खोजते माधव वहाँ पहुँच गया। दीदी कुछ बोली नहीं, बस माधव को छाती से चिपटा लिया। टप-टप आंसू की ऐसी धारा बही कि उसका सिर उनसे भीग गया।

''भूलोगे तो नहीं मुझे?'' वे कठिनाई से पूछ पायीं।

दीदी ने बांहें ढीली की और उसकी आंखों में देखा ''अनजाने डगर पर जा रही हूँ। कोई सगा-अपना नहीं, सुख-दुःख किससे साझा करूंगी, तुम आओगे इस काम?'' दीदी ने आशा भरी नजरों से उसे देखा।

माधव न तो रिश्तों को जानता था न ही नातों को, न इनके ताने-बाने और न ही ऊँच-नीच को, उनकी बारीकियों को कैसे जानता! दीदी जो उसे बहुत प्यार करती थीं, दीदी जो उसे अच्छा मानती थीं, दीदी जो उसे प्यारी लगती थीं, माधव को तो बस 'हाँ' ही कहना था। लेकिन शब्द वाणी से फूट जाएं, ऐसा हमेशा नहीं होता। माधव ने शब्दों से तो नहीं, पर आंखों ने हामी भर दी। दीदी ने अचानक चुन्नी का एक कोना फाड़ दिया, उन्होंने उसके सिर पर हाथ

फेरा ''इस धागे में बांध रही हूँ, किसी लालच में नहीं, बस अपनेपन से, हो सके तो याद रखना।'

आंसुओं को समेटे धीरे-धीरे छत वाले कमरे से दीदी नीचे आँगन में आ गई, माधव की उम्र कुछ अधिक समझने लायक नहीं थी, वह भी अपने घर चला आया था।

अतीत की यादों से बाहर निकल माधव रात में अपने घर चला आया। अगली सुबह वह युवती के पास पहुँच गया। युवती अपने नाना-नानी व माँ के बचपन के विषय में जानने को उत्सुक थी और वह सब्बो दीदी के बारे में। युवती ने बताया कि उसके नाना-नानी और माँ, सभी दुनिया से विदा हो चुके हैं और अब उसका अपना कोई नहीं है। मृत्यु से पहले माँ उसे लेकर बहुत चिन्तित थीं और मामा को याद करती थी। उन्होंने ही उसे मामा के बारे में पता करने को कहा था, इसीलिए यहां चली आई है।

विवरण ने माधव को अन्दर से हिला सा दिया। उसे विश्वास ही नहीं हुआ कि उसकी इतनी अच्छी व प्यारी सब्बो दीदी को यह सब सहना पड़ा। यह युवती तो जैसे दूसरी सब्बो दीदी ही थी। माधव की आंखें डबडबा आई, चाहकर भी वह आँसुओं को नहीं रोक पाया। उसका हाथ स्वतः युवती के सिर पर चला गया। बहुत देर तक मुँह से कोई शब्द नहीं निकला। युवती ने अपने सिर पर रखा हाथ दोनों हाथों से पकड़ लिया।

''तो आप ही वो मामा हो?'' माधव के पास उत्तर में बस आखों में भरे आंसू ही थे।

संयत होने के बाद माधव ने युवती से जानना चाहा कि वह आजकल कहाँ रहती है। युवती ने संक्षिप्त में बता दिया कि सब्बो दीदी की मृत्यु के कुछ समय बाद कॉलेज में माँ को मिला आवास छोड़कर वह पिता के घर चली गई थी लेकिन वहां उसे अपनाना तो दूर, उसका तिरस्कार ही किया गया।

युवती ने बताया कि बैंक में उसके पास थोड़े बहुत पैसे हैं जो उसकी माँ ने उसके विवाह के लिए जमा किये थे। एक जगह रिश्ते की बात चली भी थी लेकिन माँ के न रहने से वह भी ठप्प पड़ चुकी है। उसके पास अब न तो कोई ठिकाना है और न ही कोई साथी, दुनिया में अब वह अकेली रह गई है। जो कुछ भी आस है, बस मामा से ही बची है।

घर की महिला दीदी की पुरानी सहपाठी निकल आई। ससुराल के संयुक्त परिवार में पति की मृत्यु के बाद के व्यवहार से आहत हो वह मायके में रहने चली आई थी। उसका अकेला सम्पन्न भाई व्यापार के कारण परिवार सहित दूसरे शहर में रहने लगा था, लेकिन पुश्तैनी मकान से मोह होने के चलते उसे

बेचा नहीं था। वह वहाँ अकेली थी, युवती को साथ रखने के माधव के अनुरोध पर उसे कोई आपत्ति नहीं थी।

युवती को अनिश्चित भविष्य के साथ लम्बे समय तक ऐसे ही रखना ठीक नहीं था। उसके जीवन में स्थिरता लाने का जिम्मा सहसा ही माधव के पास आ गया था। उसने युवती से उसके पिता और उस परिवार के विषय में जानकारी ली जहाँ उसके रिश्ते की बात चल रही थी। नई जिम्मेदारी निभाने के लिए उसने अगले ही दिन, दूर, पूरब के लिए ट्रेन पकड़ ली। लगभग 27 घंटे की थकान भरी यात्रा के बाद वह गन्तव्य पर पहुँच गया। भूतकाल से अधिक भविष्य की चिन्ता जरूरी है, इस सोच के साथ वह उस परिवार में चला आया जहाँ युवती के रिश्ते की बात चल रही थी।

वे भले लोग थे, रिश्ता उन्हें स्वीकार था, लड़की पसंद थी और लड़का भी उसे चाहने लगा था लेकिन लड़की के परिवार वालों के द्वारा उसे न अपनाये जाने के कारण लोगों से तरह-तरह की बातें सुनने का भय रिश्ता जोड़ने में बाधक बन रहा था। लड़की का कोई मायका ही नहीं है, यह बात बाकी पक्षों पर हावी हो रही थी। उन्होंने माधव को भरोसा दिलाया कि इस ओर कुछ प्रगति होते ही वे रिश्ता पक्का कर देंगे। उनके व्यवहार से उत्साहित हो वह युवती के पिता के घर चला आया।

पिता के घर में माधव का सत्कार तो हुआ लेकिन युवती के प्रति अपनत्व पूरी तरह से गायब मिला। माधव ने बातचीत शुरू की ही थी कि सब्बो दीदी के खिलाफ शिकायतों का पिटारा खुल गया। उनके माता-पिता को भूखे-नंगे बताने से लेकर उन्हें सऊर न होने, दिखने में भद्दी होने और ससुराल से लगाव न होने जैसी कई बातें, कई पुरानी ग्रन्थियाँ थीं, जो फूट पड़ी। उन लोगों को कई वर्षों बाद आज वह मौका मिला था, जब सब्बो दीदी की ओर से कोई वहाँ आया था और जिसे यह सब सुनाया जा सके। युवती का पिता औरों से कुछ बढ़कर ही बोल रहा था। माधव ने सब कुछ धैर्यपूर्वक सुना, उनके गुस्से का गुब्बार बाहर निकालना जरूरी था।

सब कुछ बोल लिये जाने के बाद की प्रतिक्रिया के लिए उसकी ओर देखने पर माधव मुस्करा दिया। उसने शांत भाव से उन्हें बताया कि उनके परिवार की बेटी का रिश्ता हो रहा है। सब व्यवस्थाएं तैयार हैं, उन्हें कुछ नहीं करना है किन्तु बेटी क्योंकि उनके परिवार की है, इसलिए कन्यादान का पहला अधिकार उनका है। उसने जानना चाहा कि क्या वे इसके लिए तत्पर हैं।

''बिल्कुल नहीं, एकदम नहीं, हमारा उससे कोई मतलब नहीं'' युवती के पिता

ने निर्णय जैसा सुना दिया।

''ठीक है!'' माधव उठ खड़ा हुआ, ''बस इतना ही जानना था। नमस्कार!'' उसने दोनों हाथ जोड़ दिये।

''ऐसे कैसे?'' परिवार में एक प्रौढ़ महिला चौंकते हुए खड़ी हो गई, ''पूरी बात तो बता नहीं रहे कि वह है कहां, रिश्ता कहां हो रहा है। सीधे कन्यादान की बात पर उतर आये'' उसके स्वर में शिकायत थी, लेकिन अभिनय क्रोध का था।

''विवाह बिना कन्यादान के भी हो सकता है, लड़की भाग करके या मंदिर में फेरे लेकर भी यह कर सकती है लेकिन उसकी रगों में आपके परिवार का खून है। वह ऐसा करने को तैयार नहीं, क्योंकि उसके संस्कार इसकी इजाजत नहीं देते। उसे आपके परिवार की थू-थू होने का डर भी रोक रहा है। इसलिए आपके पास आना पड़ा।'' माधव ने थोड़ा झटका जैसा दिया।

परिवार वाले हैरान थे, वे जानते थे कि बेटी उनके ही परिवार की थी लेकिन अकड़ में थे, माधव ने वहीं पर चोट की थी। युवती का पिता उसकी ओर देख कुछ हकलाया, ''कहां हो रहा है उसका रिश्ता?'' उसने जानना चाहा।

''वे बहुत अच्छे लोग हैं, आपके परिवार से भी अधिक संस्कारित। वे पूरे परिवार से जुड़ने और सहमति को महत्व देते हैं। इसी शहर के हैं और उनकी हैसियत अच्छी है, लड़का भी होनहार है। लड़की उन्हें पसंद है और इससे अधिक वे कुछ नहीं चाहते। लड़की को तो वे अपना ही लेंगे, अलबत्ता परिवार का साथ न होना उन्हें जरूर खलेगा। मेरे यहाँ आने के पीछे उनकी यह इच्छा भी है।'' माधव ने थोड़ा समय लेते हुए स्थिर स्वर में परिवार की उत्सुकता बढ़ाई।

प्रौढ़ महिला शिकायत और क्रोध के बनावटी अंदाज में उसके आगे आ गई, ''माँ-बाप के होते हुए आप कौन होते हैं उसका रिश्ता पक्का करने वाले? वह जिस परिवार की बेटी है, यह उसकी जिम्मेदारी है। ठीक है, हमसे कुछ भूल-चूक हुई, लेकिन आखिर है तो वह हमारी ही बेटी।'' उसने उलाहना सा दिया। अब चौंकने की बारी माधव की थी।

''वैसे आप कौन हैं और उसके क्या लगते हैं?'' महिला के अभिनय में क्रोध व शिकायत की जगह अपनत्व ने ले ली।

''मामा!'' उसका आशय जानने के लिए माधव ने उसकी ओर देखा।

''तो ठीक है। आप मेरे भाई हुए, अब एक बहन आपसे प्रार्थना कर रही है कि उसकी बेटी जहां भी है, उसे घर वापस ले आओ।'' महिला ने सहमति के

लिए परिवार के अन्य सदस्यों की ओर देखा, कहीं कोई मतभेद नहीं था। माधव को समझते देर नहीं लगी कि महिला युवती की सौतेली माता है और परिवार में उसी की चलती है। उसे ऐसी नाटकीयता की अपेक्षा नहीं थी।

''लेकिन... '' उसके मुंह से निकला।

''लेकिन-वेकिन कुछ नहीं , हम आज ही उसका रिश्ता पक्का करने जा रहे हैं, और मामा को तो साथ में चलना ही है, वैसे भी घर-वर और वहां का रास्ता भी तो आप ही जानते हैं ना'' महिला अधिकारपूर्वक बोल रही थी।

युवती के पिता ने विस्मय से महिला की ओर देखा। माधव इस प्रगति से संतुष्ट था, ''ठीक है, बेटी आपकी है'' वह मुस्करा दिया।

''रिश्ता पक्का करने के बाद ये आपके साथ जा रहे हैं। बेटी को मनाना भी तो होगा, अपनी गलती मानने में क्या संकोच? वह भी अपनी बेटी के सामने। हमारी दूसरी कोई बेटी तो है नहीं, कन्यादान का पुण्यफल तो इससे ही मिलेगा।'' महिला ने निर्णय सुनाते हुए अपने पति की ओर देखा।

उसी दिन युवती का रिश्ता पक्का हो गया। अगले दिन माधव उसके पिता को लेकर अपने नगर पहुंच गया।

''आप ने अपनी भूमिका बहुत अच्छी तरह से निभायी, बहुत-बहुत धन्यवाद। अब मेरी जिम्मेदारी शुरू हो रही है, बस आप बेटी तक पहुंचा दीजिए।'' युवती के पिता ने कहा। माधव स्वयं भी नहीं चाहता था पिता-पुत्री के मिलन के समय वह वहां पर रहे।

युवती अपने पिता के साथ स्टेशन पर आ गई थी, विदा करने माधव को भी आना पड़ा। युवती का पिता उसे एक कोने में ले गया, ''सब्बो बहुत अच्छी थी। मैं ही मां-बाप के सिखाये में उससे अन्याय करता रहा। संयुक्त व्यापार वाले परिवार में बड़ों के कहे अनुसार ही चलना पड़ता है, लेकिन मन से मैंने हमेशा ही उसे चाहा है। मेरी यह बेटी तो बिल्कुल उसकी ही कापी है, उसी की तरह सीधी और सच्ची। अब सब्बो शायद मुझे माफ कर दे।'' उनका गला रुंआसा हो गया।

''मामा शादी में तो आयेंगे ना? आपको जरूर आना है।'' युवती माधव के पैरों पर झुक गई। उसने युवती को ऊपर उठा लिया। आंखों में आ गये आंसुओं के सैलाब ने उसका मुँह सिल दिया था।

बहस के बाद

सुन्दर सा प्लाट खरीद कर उस पर कलात्मक ढंग से बनाया गया घर और ऊपर से सुरुचिपूर्ण रख-रखाव। कालोनी शहर से कुछ दूर जरूर थी लेकिन शर्मा जी मित्रों को आग्रहपूर्वक अपने इस घर पर बुलाते। भानु का भी कभी कभार वहां जाना हो जाता। वह जब भी शर्मा जी के घर जाता तो काफी देर रुकना पड़ता, उसे शर्मा जी वैसे भी बहुत मानते थे, दोनों की आपस में खूब छनती। शर्मा जी की आर्थिक स्थिति अच्छी थी और बढ़िया खाने पीने पर उनका खास आग्रह था। उनके घर जाओ और बिना खाना खाये लौट आओ, यह हो ही नहीं सकता था।

भानु का घर शहर की दूसरी ओर था, काफी दूरी पर। वह शर्मा जी से जल्दी विदा ले लेना चाहता था लेकिन वे यों ही छोड़ देने वाले नहीं थे, न तो उसकी ना-नुकुर और न ही कोई बहाना काम आया। खाना खाकर भानु कार लेकर घर की ओर चल दिया, वह थका हुआ था और सामने से आ रही गाड़ियों की चकाचौंध उसे परेशान कर रही थी। शाम ढ़लते ही उस सड़क पर यह परेशानी रहती थी, अपने कामकाज से निवास की ओर जाने वालों के वाहनों की भारी-भीड़ रहती, सब एक दूसरे से आगे निकलने की जल्दी में रहते, जबकि दूसरी ओर से आने वाले कम ही होते। पूरी सड़क जाने वाले घेर लेते और आने वाले धारा के विपरीत तैरने वाले की तरह आगे बढ़ने को जूझते। पैर कभी ब्रेक पर तो कभी क्लच पर, भानु की झुंझलाहट बढ़ने लगी। एक डर यह भी था कि कार में पेट्रोल कम था और पम्प काफी आगे, लेकिन कार थी कि आगे बढ़ ही नहीं पा रही थी।

थोड़ी देर बाद रेला कुछ कम हुआ और कार को रास्ता मिल गया। आगे कुछ चढ़ाई थी, भानु की कार कुछ दूर ही चली थी कि झटका खाकर कार रुक गई। स्टार्ट करने की काफी कोशिश की लेकिन कुछ नहीं हुआ, उस ओर से आने वाला भी कोई नहीं, कि सहायता मिल सके। न्यूट्रल में पीछे ढ़लान की ओर ले जाकर भानु ने कार सड़क किनारे खड़ी कर दी। जिसका डर था वही हुआ था, कार में पेट्रोल खत्म हो चुका था। वहां से सबसे नजदीक शर्मा जी का ही घर था, भानु ने फोन कर उन्हीं से अनुरोध किया कि किसी के हाथों थोड़ा पेट्रोल भेजने की व्यवस्था कर दें।

पेट्रोल पहुंचने में समय लगने वाला था और प्रतीक्षा करने के अलावा भानु के पास और कोई विकल्प नहीं था। आस-पास कोई दुकान नहीं थी लेकिन कार

के सामने उसी ओर, मुख्य सड़क से अन्दर की ओर एक सड़क कटती थी, जहां पर एक टिन शेड के नीचे सीमेंट के दो बेंच बने थे, यह एक छोटा सा स्टैण्ड था जो इस समय खाली था। इसके आगे नगर की ओर जाने वाले वाहनों से लिफ्ट लेने के लिए कोई हाथ दे रहा था लेकिन कोई वाहन उसके पास नहीं रुका। आस-पास काफी अंधेरा था, इसलिए मानव आकृति के सिवा कुछ भी साफ दिखाई नहीं दे रहा था कि यह जाना जा सके कि लिफ्ट चाहने वाला कौन है, वह कार के पास ही टहलता रहा।

थोड़ी देर में शर्मा जी पेट्रोल लेकर स्वयं आ गये। उन्होंने बताया कि किसी और के उपलब्ध न हो पाने पर एक स्कूटर से लिफ्ट लेकर उन्हें स्वयं ही आना पड़ा और उसके घर तक साथ जाकर वे सुबह लौट आयेंगे।

भानु ने कार में पेट्रोल डाल कर उसे स्टार्ट कर दिया। कार की दिशा भी नगर की ओर थी, स्टार्ट होता दिख जाने पर लिफ्ट मांगने वाली आकृति कार की तरफ बढ़ गई, थोड़ा पास आ जाने पर भानु ने देखा कि एक युवा महिला थी, जिसके हाथों में एक भारी सा थैला था। पहनावे व सूरत से ही पता चल रहा था कि वह किसी अच्छे परिवार की शिक्षित युवती है। उसने बताया कि उसे बहुत दूर जाना है, काफी देर से वाहन की प्रतीक्षा कर रही है, उसने भानु से कार में लिफ्ट देने का अनुरोध किया।

''क्यों नहीं-क्यों नहीं!'' शर्मा जी ने तपाक से सहमति दे दी और स्वयं भी कार में बैठ गये। भानु कुछ चौंका, ''लेकिन आप को जाना कहां है?'' भानु ने युवती से पूछ लेना बेहतर समझा। युवती ने एक स्थान का नाम ले दिया।

''वहीं से होकर तो हमें भी जाना है, रास्ते ही में ही पड़ता है'' शर्मा जी ने तत्परता दिखाई।

युवती को कार में बिठाकर भानु घर की ओर चल पड़ा। शर्मा जी युवती से हल्की-फुल्की सी कुछ पूछताछ करते रहे और युवती हूं-हां में जवाब देती रही। आधा-पौन घंटे बाद युवती का इलाका आ गया। उसने अनुरोध किया कि वहीं मुख्य सड़क पर कार रोक दें, वहां से घर थोड़ी ही दूरी पर है, वह पैदल चली जायेगी।

''पैदल क्यों? वह भी इतनी रात में? और इतने सामान के साथ?'' शर्मा जी ने प्रतिवाद किया। युवती ना-ना करती रही लेकिन शर्मा जी इसे उसका संकोच मानते हुए कार को उसके घर तक लिवा ही लाये।

युवती कार से उतर गयी, साथ में शर्मा जी भी। उन्होंने थैला उठा लिया- युवती उनसे वहीं रुकने का अनुरोध करती रही लेकिन शर्मा जी उसे घर के अन्दर तक छोड़ने पर तुले थे। उनकी जिद के आगे हार मानते हुए युवती घर

की ओर बढ़ गई। निवास पहली मंजिल पर था, युवती तेजी से सीढ़ियां चढ़ गई और शर्मा जी उसके पीछे। भानु कार के पास रुक कर ही शर्मा जी की प्रतीक्षा करने लगा।

कुछ ही मिनट ऊपर से जोर-जोर से आवाजें आने लगी, शर्मा जी भी गुस्से में जोरों से बोल रहे थे। माजरा जानने के लिए भानु भी जीना चढ़कर ऊपर आ गया। युवती एक कोने में खड़ी थी, मध्य वय का एक युवक हाथ में शराब का गिलास थामे गुस्से से कांप रहा था और शर्मा जी भी तैश में उससे बहस कर रहे थे।

''मैंने पहले ही इन्हें साथ में आने से मना किया था'' शर्मा जी की ओर देखते हुए युवती ने भानु से उनकी शिकायत की।

''हुआ क्या है?'' भानु कुछ परेशान हुआ। ''ओह तो दूसरा भी है! साली दो-दो यारों के साथ गुलछर्रे उड़ा रही थी, अब तो घर तक भी पहुंच गये।'' शराब पिये युवक ने ताना मारा।

''बहुत ही बेहूदा आदमी है! आभार मानने के बजाय गाली-गलौच कर रहा है!'' शर्मा जी गुस्से में उबल रहे थे। ''ये बहुत परेशान थीं, आने का साधन नहीं मिल रहा था, रात हो चली थी और साथ में सामान भी था, इसलिए सहायता कर दी। आप गलत अर्थ निकाल रहे हैं।'' भानु ने समझाना चाहा।

''ऐसी कहानियों से सच नहीं छिपता। ये साली तो है ही ऐसी और इसको देखो कैसे लार टपक रही है। मेरे सामने ही मेरी बीवी को घूर रहा है।'' युवक शर्मा जी की ओर इशारा कर उन्हें मारने के लिए लपक पड़ा।

''चलो यहां से!'' बात बढ़ती देख भानु ने शर्मा जी की बांह पकड़ी और जबरन उन्हें नीचे ले गया। युवक पीछा करने के लिए तेजी से आगे बढ़ा लेकिन सम्भल नहीं पाया और जीने से नीचे फिसल गया। नशे व वेग के कारण वह लुढ़कते-लुढ़कते नीचे सड़क पर आ गया। उसके पीछे युवती भी भागकर नीचे आई और दृश्य देखकर सबके होश उड़ गये। युवक को कई चोटें आ गईं थीं, उसका सिर भी फट गया था और काफी खून बह आया था। युवती की चीख निकल गई, उसने युवक का सिर हाथ में लेकर उसके गाल थपथपाये, लेकिन वह बेसुध हो चुका था। मिनट भर से भी कम समय में यह सब हो गया, पास-पड़ोस के घरों से भी लोग माजरा देखने चले आये।

स्थिति की गम्भीरता को समझते भानु को देर नहीं लगी। उसने युवक को दोनों हाथों से उठाकर कार में पीछे सीट पर लिटा दिया। घर को ताला लगाकर युवती कार में उसके पैरों की ओर बैठ गई और शर्माजी भानु के पास ड्राइवर के बगल वाली सीट पर। भानु ने कार आगे बढ़ा दी, रास्ते में कोई कुछ नहीं

बोला, केवल युवती सुबकती रही। भानु कार को एक बड़े हास्पिटल में ले आया, जहां उसका पहले से परिचय था। युवक को तुरन्त इमर्जेन्सी में ले जाया गया, जहां केवल युवती को ही साथ आने की अनुमति थी। भानु वहीं शर्मा जी के साथ कमरे के बाहर रखे सोफे पर बैठ गया।

''बैठे बिठाये आफत गले पड़ गई!'' शर्मा जी बड़बड़ाये। चिन्तित भानु कंधे उचका कर सहमत तो हुआ लेकिन इस बातचीत में कोई रुचि नहीं जताई। कुछ देर बाद युवती बाहर आ गई।

''खून रुक गया है, मरहम-पट्टी हो चुकी है, इंजेक्शन भी लगा दिये गये हैं और शरीर में अब कुछ हलचल भी है। पूरी तरह होश में आने में कुछ समय लग सकता है लेकिन डाक्टर अब खतरे से बाहर बता रहे हैं। आप लोग अपने घर जा सकते हैं....'' युवती ने भानु से कहा, ''लेकिन...''

''लेकिन क्या?'' भानु ने जानना चाहा। ''बहुत बड़ा हास्पिटल है, काफी महंगा होगा, मेरे साथ में और कोई नहीं है, न पास में पैसे ही हैं, अगर किसी चीज की जरूरत पड़ गई तो....'' युवती ने भानु की ओर देखा।

भानु ने पर्स से कुछ रुपये निकालकर उसे दे दिये ''हास्पिटल वाले मुझे जानते हैं, मैं उन्हें कह देता हूं, आप से कोई कुछ नहीं मांगेगा।'' उसने युवती को आश्वस्त किया। शर्मा जी ने झल्लाकर सिर झटक दिया लेकिन कुछ बोले नहीं। युवती फिर से अन्दर युवक के पास चली गयी। शर्मा जी को कार में बैठाकर भानु अपने घर की ओर चल दिया।

''आपने तो सारी जिम्मेदारी ही ले ली'' शर्मा जी ने भानु को टोका ''वह भी ऐसे बेहूदा आदमी के लिए?'' उन्होंने नाराजगी सी जताई।

''उस महिला के विषय में भी तो सोचिये'' भानु ने याद दिलाया, ''थकी हारी घर पर पहुंची और यह सब हो गया, उस पर क्या बीत रही होगी?'' ''लेकिन वह तो उसे भी नहीं बख्श रहा था, कैसी-कैसी तोहमत लगा रहा था। बाप रे!'' शर्मा जी ने कानों को हाथ लगाया ''कैसे निभाती होगी ऐसे दुष्ट के साथ?'' उन्होंने हैरानी जताई।

बातें करते-करते भानु का घर आ गया। खाना तो शर्मा जी के घर पर हो ही चुका था। उन्हें दूसरे कमरे में भेज भानु सोने चला गया। आने में उसे कभी-कभी इतनी देर हो जाया करती थी, इसलिए पत्नी ने कोई अधिक पूछताछ नहीं की, फिर भी उसने हल्की फुल्की जानकारी उसे दे दी। भानु की आंख सुबह ही खुल गई, पत्नी ने नाश्ता तैयार कर दिया था। शर्मा जी के साथ भानु ने नाश्ता निपटाया। पत्नी ने उसे एक टिफिन थमा दिया ''पता नहीं कैसी

तबियत होगी। वह बेचारी तो बहुत परेशान होगी, जाने कुछ खाने को भी मिला होगा या नहीं, आप वहाँ हो आइये'' उसने सुझाव दिया।

भानु तो चिन्तित था ही, वह हास्पिटल चल दिया, शर्मा जी भी साथ हो लिए। उनका गुस्सा अब तक शान्त नहीं हुआ था।

''मुझ पर भी हाथ उठाने चला था, अच्छा हुआ, खूब सबक मिल गया उसे! मर भी जाता तो मुझे दुःख नहीं होता'' उन्होंने मुंह बनाया। भानु ने बात समझने के अंदाज में उनकी ओर देखा ''आप पर भी?'' ''हां, अपनी बीबी की कमर पर तो उसने बिना कुछ पूछे ही दो लातें जड़ दी थीं, भद्दी गाली देते हुए और देर रात गैर आदमी के साथ आने पर डपटते हुए।'' शर्मा जी ने बताया।

''ओह!'' भानु ने अफसोस जताया ''लगता है दोनों में बनती नहीं'' उसने अनुमान लगाया। ''औरत तो भले घर की और अच्छे स्वभाव की लगती है, आदमी ही जलील है!'' शर्मा जी ने निष्कर्ष सा बताया।

''क्या कह सकते हैं? हम तो किसी को भी नहीं जानते, नाम तक नहीं! कल की परेशानी में महिला की सहायता करना जरूरी हो गया था, इसलिए साथ दिया। मामला उनका आपसी है'' भानु ने बात स्पष्ट करनी चाही। शर्मा जी अभी भी शान्त नहीं हुए थे, उन्होंने अपना सिर दूसरी ओर घुमा दिया।

अस्पताल में युवती कमरे के बाहर ही मिल गयी, उसने बताया कि उसके पति को वार्ड में शिफ्ट कर दिया गया है और अब वह होश में है। उसने बताया कि वार्ड में कई मरीज हैं और पास बैठने के लिए प्रत्येक को मात्र एक स्टूल ही दिया गया है, वहां एक बार में एक से अधिक आदमी के प्रवेश की अनुमति नहीं है, किसी को भी बात करने के लिए कमरे से बाहर ही आना पड़ता है। उसने यह भी बताया कि उसे इन लोगों के आने का अनुमान था, इसलिए पहले से ही वार्ड से बाहर आ गई।

भानु ने टिफिन युवती के हाथ में पकड़ा दिया ''आपने कुछ खाया-पिया नहीं होगा, इसमें कुछ नाश्ता है, कर लीजिये।'' उसने कहा! युवती ने आभार जताते हुए डिब्बा ले लिया और भानु से सोफे पर बैठ जाने का अनुरोध किया ''आप लोगों को बहुत कष्ट हुआ, अपनी परेशानी में मैं कुछ भी सोच नहीं पाई- आप के बारे में भी कुछ नहीं पूछा। प्लीज मुझे क्षमा कर दीजिये!'' उसने अनुरोध किया। भानु व शर्माजी दीवार के कोने पर रखे सोफे पर बैठ गये, दूसरी दीवार के साथ लगे सोफे पर युवती बैठ गई। रात में न तो भानु युवती को ठीक से देख पाया था और न ही आपस में कोई परिचय हुआ था। रात के घटनाक्रम से यह अनुमान तो हो गया था कि पति-पत्नी के बीच सब कुछ सामान्य नहीं है लेकिन इस विषय में कुछ पूछना उसे ठीक नहीं लगा।

भानु यह सब सोच ही रहा था कि युवती के पड़ोस की कोई महिला हालचाल लेने वहां चली आ गई। युवती से उसने कुशलक्षेम पूछी और उसके पास सोफे पर बैठ गई। इसी बीच वार्ड ब्याय युवती को अन्दर बुला ले गया, महिला उससे कोई बात नहीं कर पाई थी, इसलिए वहीं बैठी रही। कुछ देर वहां चुप्पी बनी रही, जिसे उसीने तोड़ा।

''भला हो आप लोगों का, जो इसकी इतनी मदद कर दी, नहीं तो बहुत मुश्किल होती। चाह कर भी कोई इसका साथ नहीं दे पाता'' उसने कहा।

भानु ने चौंक कर उसकी ओर देखा, ''ऐसा क्यों?'' उसने पूछा

''आप नहीं जानते, इसकी हालत क्या है? क्या-क्या सहती है बेचारी! इसका पाला बड़े अजीब आदमी से पड़ा है! उफ! तौबा-तौबा!'' महिला ने लम्बी सांस ली। महिला ने उत्सुकता सी पैदा कर दी थी, शर्मा जी को आगे जानने की इच्छा हुई।

''अच्छा? इतना खराब आदमी है? लेकिन इसका साथ कोई क्यों नहीं दे पाता?'' उन्होंने पूछा।

''इसके आदमी ने सबसे बिगाड़ रखी है- कोई ऐसा नहीं, जिससे उसका झगड़ा न हुआ हो, कोई इनके मामले में नहीं पड़ना चाहता। बेचारी बिल्कुल अकेली पड़ गई है। करे भी तो क्या?'' महिला ने सहानुभूति सी दिखाई।

शर्मा जी की जिज्ञासा शान्त नहीं हुई थी, वे और भी जानना चाहते थे ''क्या समस्या है इनके बीच?'' उन्होंने प्रश्न किया।

अच्छी खासी निभ रही थी, जाने किसकी नजर लग गई, पहले आदमी की नौकरी छूटी, फिर वह चिड़चिड़ा रहने लगा और अब तो शराब की लत भी पड़ गई। दिन भर पीता रहता है, घर की हालत खराब है और कईयों की देनदारी ऊपर से है। मां-बाप, ससुराल किसी का सहारा नहीं है। यही थोड़ा बहुत हाथ-पैर मारती है लेकिन बदले में गाली-गलौज और लात-घूंसे सहती है। ऊपर से ऐसी मुसीबत? वह तो आप लोग थे, नहीं तो अकेली क्या करती बेचारी!'' महिला ने खाका खींचते हुए दर्द भरे अंदाज में दास्तान सुना दी।

''मर जाने देती!'' शर्मा जी तैश में आ गये ''जब आदमी इतना दुष्ट है तो!'' उनका स्वर तीखा हो गया। विवरण सुनकर भानु को भी बुरा गला लेकिन उसने चुप रहना ही बेहतर समझा।

युवती वार्ड से बाहर आ गयी, उसने महिला से एक-आध बात की, उसे धन्यवाद देकर विदा किया और सोफे पर आकर बैठ गई। वह भानु से कुछ कहना चाहती थी लेकिन शर्मा जी बीच में टपक पड़े।

''आप लोगों के बारे में सुनकर बड़ा बुरा लगा! निभाती कैसे हैं आप ऐसे आदमी के साथ?'' उन्होंने कुरेदा।

''यह हमारा आपस का मामला है- सब कुछ ठीक है'' युवती ने संक्षिप्त सा उत्तर देकर बात समाप्त करनी चाही।

''आपस का कैसे है? सारे आस-पड़ोस को पता है कि आप क्या-क्या सहती हैं और ये कैसा आदमी है!'' शर्मा जी ने उसे फिर से कुरेदने का प्रयास किया।

''वे मेरे पति हैं और मैं उनको बहुत मानती हूं, उनके विषय में कुछ गलत नहीं सुन सकूंगी'' युवती ने कुछ सख्ती से कहा।

''यह इक्कीसवीं सदी है, औरत व आदमी बराबर माने जाते हैं, आप अभी भी ऐसी पुरानी सोच रखती हैं?'' शर्मा जी हार मानने को तैयार नहीं थे।

''सोच पुरानी नहीं, प्रत्येक समय के लिए लागू है। पति-पत्नी एक-दूसरे के पूरक और एक-दूसरे के लिए बने होते हैं, इसे जन्म-जन्मान्तर का साथ माना जाता है। कोई भी परिस्थिति स्थाई नहीं होती, इसलिए विचलित होने जैसी कोई बात नहीं है। वैसे भी सुख-दुःख तो धूप-छांव की भांति होते हैं, यही समझना चाहिए।'' युवती ने बात स्पष्ट करने का प्रयास किया।

शर्मा जी थोड़ा सा ठिठके लेकिन युवती की बात से सहमत नहीं हो पा रहे थे। वे अपनी बात जारी रखने के मूड में थे ''ये सारी बातें किताबी और सैद्धांतिक हैं। व्यवहार में इनकी कोई जगह नहीं। यह क्या बात हुई कि एक आदमी अन्याय करता रहे और दूसरा चुपचाप सहता रहे? ऐसा सम्बन्ध तो बेड़ियों जैसा ही हुआ कि सजा मिली है तो भुगतनी ही पड़ेगी'' उन्होंने तर्क सा दिया।

युवती थोड़ा असहज सी हुई ''किसी बात को बनाने में समय लगा है और बिगाड़ने में केवल पल भर। ऐसी बातों का बहस से हल नहीं निकाला जा सकता और बदले की भावना से तो कभी नहीं। शान्त रहने और धैर्य रखने से बहुत सी बातें अपने आप ही हल हो जाती हैं। बात बढ़ाने से भी कहीं हल निकलता है?'' पूछते हुए युवती ने जोड़ा ''थोड़ा सहन कर लेना बात को बिगाड़ने से कहीं ज्यादा अच्छा होता है, यों भी स्त्रियों में पीड़ा सहने की बहुत क्षमता होती है, हमारे यहां तो यह बचपन से ही सिखाया-समझाया जाता है।'' उसने शर्मा जी को चुप कराने की कोशिश की।

युवती सुलझी हुई बातें कर रही थी, भानु सब कुछ सुन रहा था और शर्मा जी भी सोचने पर विवश हो गये ये लेकिन युवती के पति की खराब छवि उनके मन पर हावी थी। वे रुके नहीं बल्कि कुछ उत्तेजित भी हो गये ''ये सारे तर्क कमजोर लोगों के हैं जो समर्पण करने का बहाना खोजते हैं। सच तो यह है कि अन्याय सहने वाला भी अन्याय करने वाले के बराबर ही दोषी होता है। सही

रास्ता तो अन्याय का प्रतिकार करने का ही होता है।'' उन्होंने गर्दन तानते हुए उकसाने जैसी चेष्टा की।

युवती मुस्कुरा दी। उसने भानु की ओर देखा कि वह कुछ कहे। भानु ने युवती की मुस्कुराहट का अर्थ समझने की कोशिश की ''आप दोनों अपनी-अपनी जगह ठीक हैं लेकिन अच्छा तो यही है सम्बन्धों का सम्मान दोनों तरफ से हो'' उसने गोल-मोल सी बात की।

''बिल्कुल ठीक।'' युवती ने तुरन्त जोड़ा ''हमारी सोच में सबसे ऊपर अपने-पराये की भावना होती है। कठिनाई एक-दूसरे को न समझ पाने, एक दूसरे को दोष देने या जीत-हार के फेर में पड़ने से आती है। किसी स्त्री का पुत्र कितना भी बुरा क्यों न हो, वह उससे सम्बन्ध तोड़ने की नहीं सोच सकती क्योंकि वहां अपनत्व होता है। यही भाव पति के लिए होने पर कोई समस्या नहीं होती। भेद से अलगाव पैदा होता है और उसके बाद विवाद। मैं स्वयं को पति के साथ एकरूप मानती हूं इसलिए कोई दुःख नहीं है, यदि कोई कष्ट है तो उनकी बुराई सुनने में है।'' युवती ने अन्ततः शर्मा जी को निरुत्तर कर ही दिया।

''ग्रेट!'' भानु के मुंह से अनायास निकल पड़ा ''कितने गजब के विचार हैं। इस सोच से तो दाम्पत्य की सारी ही समस्यायें सुलझ जायेंगी- थोड़ी सहनशक्ति, कुछ धैर्य और आपस की समझदारी मिलकर परिस्थितियों को जटिल होने से रोक सकती हैं। लगता है आप इन्हें आजमा चुकी हैं, तभी ऐसी परिस्थितियों में भी आपके चेहरे पर कोई तनाव नहीं है।'' उसने युवती की ओर देखा। युवती मुस्करा दी।

युवती व उसके पति कौन हैं, उनके विवाह को कितने वर्ष हुए होंगे? पति की नौकरी के साथ क्या हुआ, दोनों के परिवारों की स्थिति व सम्बन्ध कैसे होंगे और आगे क्या होगा? कई सारे प्रश्नों ने भानु को घेर लिया लेकिन सीधे कुछ पूछना ठीक नहीं था। भानु सिर खुजा ही रहा था कि युवती ने उसे याद दिलाया कि वे चाहें तो उसके पति को देखने एक-एक कर अन्दर जा सकते हैं।

भानु वार्ड में दाखिल होकर युवती के पति के पास चला आया। युवक ने भानु का अभिवादन कर शुक्रिया अदा किया और आभार मानते हुए अपने व युवती के विषय में उसे कुछ बताने की अनुमति मांगी। उसने बताया कि उसके पिता युवती के यहां ही कर्मचारी थे। युवती के पिता ने ही उसे पढ़ा लिखा कर बड़ा किया और इंजीनियर बनवा दिया लेकिन दोनों के बचपन के साथ को रिश्ते में बदलने के प्रश्न पर वे कड़े विरोध में आ गये। दोनों ने किसी तरह विवाह तो कर लिया लेकिन युवती के पिता के कोप ने उन्हें कभी चैन से नहीं बैठने

दिया। नौकरी चले जाने व कई अन्य कठिनाईयों के चलते हार जाने से वह क्षुब्ध व हताश था। अपने से अधिक वह अपनी पत्नी को होने वाले कष्ट से दुःखी था और उसे मुक्त कर देने में ही सारी समस्याओं का हल देखने लगा था ताकि युवती के परिवार वाले उसे वापिस अपना लें। युवती सहमत नहीं हुई इसलिए इस तरह बुरा व्यवहार कर उसे हतोत्साहित करना शुरू किया लेकिन युवती का मनोबल इससे भी नहीं टूटा है, वह सब कुछ चुपचाप सहती जा रही है।

युवक की आंखों में आंसू तैर आये थे। उसने बताया कि उसे मालूम है कि कल शाम को युवती उसकी नौकरी की बात करने ही किसी संस्था में गई थी और वहां से ठोस आश्वासन के साथ खूब सारे फल लेकर खुशी–खुशी लौटी थी। उसने बताया कि मन से न चाहते हुए भी उसने बीती रात वह सब तमाशा किया जिसके लिए वह शर्मिंदा है। उसने शर्मा जी को भी भीतर बुलवा लिया और उनसे किये गये दुर्व्यवहार के लिए हृदय से माफी मांगी। शर्मा जी हतप्रभ थे, उन्होंने लम्बी सांस लेकर छोड़ी।

युवक का बेड कमरे के कोने पर था और उसके बगल में ही स्टाफ रूम। वहीं सामने एक छोटा सा टीवी स्क्रीन लगा था, युवक ने उसकी ओर इशारा किया ''यह टीवी सीसी कैमरे से जुड़ा हुआ है, जिससे बाहर गैलरी में आने–जाने वालों पर नजर रखी जाती है, संयोग से यह खुला था और मैंने बाहर आप लोगों की सारी बातें सुन लीं। सच तो यह है कि अपनी पत्नी के बिना मैं भी एक पल नहीं रह सकता लेकिन आज उसका जो रूप दिखा है उसके आगे तो नतमस्तक ही होना पड़ेगा। अब सारी दुविधायें समाप्त हो गई हैं।'' उसने एक बार फिर से दोनों के प्रति आभार जताया।

बाहर प्रतीक्षा कर रही युवती ने अन्दर अपने पति का बदला हुआ मिजाज देख लिया था। उसने भानु से कहा ''मैं आपको जानती तो नहीं, लेकिन आपका यह उपकार जीवन भर याद रहेगा।'' कह कर वह शर्मा जी की तरफ मुड़ गई ''और आपका तो खास तौर पर!''

युवती से विदा लेकर भानु शर्मा जी के साथ अस्पताल से बाहर निकल आया। सड़क पर आकर उसने शर्मा जी की पीठ थपथपाई ''अगर आप उसे कुरेद कर बहस नहीं करते तो यह सब सम्भव नहीं हो सकता था।''

''देखा!'' भानु का मजाक हाथों हाथ लेकर शर्मा जी ने साथ दिया ''लेकिन वह तो कह रही थी कि बहस से कोई हल नहीं निकलता।''

भानु जोरदार ठहाका मार कर हंस पड़ा।

वाममार्ग साधना

आचार्य जी का फोन आया तो गोपाल को सहसा विश्वास ही नहीं हुआ, उन्हें मिल पाना काफी कठिन था लेकिन यहाँ तो वे स्वयं मिलने का समय मांग रहे थे। फोन पर स्वयं आचार्य जी ही थे। वह एकाध बार सामाजिक समारोहों में उन्हें देख सुन चुका था और टेलीविजन पर भी उनके कार्यक्रम गोपाल ने देखे थे, अतः आवाज पहचानने में कोई कठिनाई नहीं हुई, फोन पर आचार्य जी ने अपना परिचय भी दे दिया था।

''आपका कुछ समय मिल पायेगा?'' आचार्य जी पूछ रहे थे। गोपाल ने उनसे जानना चाहा कि वे कब आना चाहेंगे।

''कुछ लम्बी बातचीत होनी है, इसलिए दो तीन बार तो मिलना होगा ही। दिन में कभी भी मिल सकते हैं लेकिन मैं चाहूँगा कि पहली भेंट दिन ढ़लने के बाद देर सांय हो सके तो अच्छा रहेगा।'' आचार्य जी ने अपनी इच्छा जताई।

गोपाल को उस दिन पहले ही बहुत सारे काम थे और वह स्वयं भी देर शाम से पहले उपलब्ध नहीं हो सकता था। उसने मिलने की सहमति दे दी आचार्य जी की गिनती इलाके के विद्वान लोगों में होती थी और वे तन्त्र-मन्त्र के विशेषज्ञ माने जाते थे। कई लोग उनसे विचार विमर्श लेने आते थे जिनमें से कुछ नामी-गिरामी व उच्च प्रतिष्ठित लोग भी होते। गोपाल के मन में भी उनसे भेंट करने की इच्छा थी लेकिन वे बहुत व्यस्त व्यक्ति थे और समय मिल पाने की कठिनाई के चलते अब तक उनसे नहीं मिल पाया था। आज वे स्वयं उसके ही आवास पर उससे भेंट करने वाले थे, लेकिन किसलिए? बहुत सोचने पर भी गोपाल को कोई उत्तर नहीं मिल पा रहा था। कोई अनुमान सटीक नहीं बैठ रहा था।

दिन भर के काम निपटाने के बाद घर पहुँचकर गोपाल ने एक कप चाय पी ही थी कि आचार्य जी आ पहुँचे, एकदम अकेले। वे किसी निजी वाहन में आये थे जो उन्हें छोड़कर वापिस जा चुका था। गोपाल ने स्वागत कर आचार्य जी को ड्राइंगरूम में बिठा दिया। पानी का गिलास समाप्त कर उसे मेज पर रख आचार्य जी उठ खड़े हुए, ''यहाँ शायद ठीक नहीं होगा, कोई ऐसा स्थान हो, जहाँ एकान्त मिल सके तो अधिक सुविधा होगी'' उन्होंने आग्रह किया।

गोपाल उन्हें आवास में बने अपने अध्ययन कक्ष में ले गया, जहाँ उसका अधिकांश समय बीतता था।

''यह अच्छा है'' कहते हुए आचार्य जी कुर्सी खींच कर उस पर बैठ गये व

गोपाल को भी बैठने का इशारा किया। वह मेज के सामने वाली कुर्सी पर बैठ गया। आचार्य जी दाहिना पैर बायें घुटने पर रख कर उस पर तबले की भाँति उंगली बजाने लगे। वे तल्लीन मुद्रा में कुछ देर सिर इधर-उधर हिलाते रहे, जैसे किसी गीत या संगीत का रस ले रहे हों, फिर एकाएक झटका देकर उसे सीधा कर लिया।

''एक विशेष प्रयोजन से आपके पास आया हूँ'' आचार्य जी ने बात आरम्भ की।

''जी!'' गोपाल तो जानना ही चाहता था।

''मेरे पास एक खास विद्या है।'' आचार्य जी ने गोपाल की ओर देखा ''जो मुझे मेरे गुरुजी से मिली थी लेकिन उसे देते हुए गुरुजी ने कुछ वचन भी लिये थे।'' उन्होंने बताया।

''जी!'' गोपाल ने उत्सुकता जताई।

''उनको दिये गये वचन में, एक तो विद्या का दुरुपयोग ने करने का वचन था और दूसरा यह कि विद्या का मैं प्रचार भी नहीं करूंगा और इससे आगे केवल उस व्यक्ति को ही दूंगा, जो इसके लिए पूरी तरह से पात्र हो।'' आचार्य जी ने स्पष्ट किया। गोपाल को बात तो समझ में आ रही थी लेकिन उसे यह क्यों बताया जा रहा है, इसका सूत्र पकड़ में नहीं आ पा रहा था।

''यह विद्या मैं अपने पुत्रों को देना चाह रहा था लेकिन उनमें से कोई भी इसके लिए दूर दूर तक पात्र नहीं है, उनकी न तो ईश्वर व उसकी शक्तियों में आस्था है और न ही तंत्र-मंत्र में विश्वास, वे इस सब को आडम्बर व ढोंग करार देते हैं। मैंने धर्म पूर्वक व शास्त्र-सम्मत रीति से उपार्जन कर उन्हें पाला है, वे इसी आजीविका से आगे बढ़े हैं, लेकिन इससे दूरी बनाये हुए हैं, उनसे मुझे कोई आशा नहीं'' आचार्य जी ने लम्बी सांस ली। वे चुप होकर छत की तरफ ताकने लगे।

''चाय चलेगी?'' गोपाल ने चुप्पी तोड़ी।

''नहीं! मैंनें देर सायं काल का समय विशेष रूप से चुना है। आपके विषय में कई लोगों से चर्चा सुनी है, आपमें विलक्षण व बहुमुखी प्रतिभा है और आप दोहरे चरित्र में विश्वास नहीं रखते। आडम्बरवादी सात्विकता के स्थान पर सरल जीवन जीते हैं, ऐसा समय चुनने का यह भी एक कारण है।'' आचार्य जी गोपाल की आंखों में झांक कर मुस्कुराये। गोपाल सुन कर कुछ समझने का प्रयत्न कर रहा था कि आचार्य जी ने बात आगे बढ़ाई ''आप ड्रिंक्स लेते हैं, मैं नहीं लेता लेकिन आज जिस विषय पर मैं बात करना चाहता हूँ उसमें इसकी भी भूमिका है इसलिए आज मुझे भी लेनी पड़ेगी। वैसे भी मेरा मानना है कि

यह न तो पापाचार की श्रेणी में आता है और न ही इसका नैतिकता से कोई सीधा सम्बन्ध है। आप क्या कहते हैं? क्या यह सम्भव है?'' आचार्य जी घुटने पर रखा पैर नीचे रख कर मेज पर आगे झुक गये।

गोपाल के लिए ड्रिंक्स लेना अन्तरंग विषय था, किसी के भी साथ अनौपचारिक हो जाना उसके लिए सरल नहीं था। वह यह बात कहना चाहता था किन्तु उस समय आचार्य जी की इच्छा का सम्मान करना आवश्यक समझा। घर में ड्रिंक्स उपलब्ध नहीं थे, उसने एक परिचित को फोन करके दुकान से मंगवा ली थी और पत्नी को खाने के लिए कुछ बनाने को कहने के लिए किचन में चला गया। किसी बाहरी व्यक्ति को घर में ड्रिंक्स की अनुमति के लिए पत्नी की सहमति भी लेनी जरूरी थी। मजबूरी समझ पत्नी ने आपत्ति नहीं की, वह गिलास आदि लेकर वापिस अध्ययन कक्ष में आ गया।

परिचित दुकान से आ चुका था। उससे बोतल ले, गोपाल ने उसे विदा कर दिया। उसने ड्रिंक्स बना कर आचार्य जी के सामने रख दी, स्वयं आचार्य जी के साथ ड्रिंक्स लेना उसे ठीक नहीं लगा, आचार्य जी ने भी इस पर जोर नहीं दिया। आचार्य जी ने पूरा गिलास एक साथ गटक कर मेज पर रख दिया, गोपाल ने दोबारा गिलास भर दिया। आचार्य जी मेज पर तबले की तरह उंगलियाँ चलाने लगे।

उन्होंने कमीज के बटन खोल कर अन्दर सिली हुई बनियान में से एक छोटी सी किताब निकाल कर सामने रख दी।

''पहले आप सरसरी तौर पर इसके पन्ने पलट लें, तब बात शुरू करेंगें।'' उन्होंने गोपाल से कहा, उसने किताब हाथ में ले ली। किताब हस्तलिखित थी, उस पर बाहर कोई शीर्षक नहीं था, उसने पन्ने पलटने आरम्भ किये।

किताब का पहला वाक्य था **'वाममार्ग साधना'** भूमिका में बताया गया था कि वाममार्ग जीवन में विजय होने का माध्यम है तथा विजय और कुछ नहीं पराजय का ही दूसरा पक्ष है। बिना दूसरे को पराजित किये विजयी होना सम्भव नहीं है। दूसरे का आशय शत्रु माना गया था तथा वाममार्ग में शत्रु को हानि पहुँचाने के ठोस तांत्रिक उपाय बताये गये थे। जिसमें मारण (प्राण लेना), मोहन (सम्मोहित करना), वश्य (वशीकरण), स्पन्दन (घबराहट), उच्चाटन (मानसिक परेशानी देना) आदि के साथ प्रेत बाधा, विघ्न, क्लेश, संताप और यंत्रणा जैसे विषय भी थे, इन्हें करने के तरीके और मंत्र भी किताब में दिये गये थे। अन्त में वन, नदी व श्मशान आदि स्थानों के वर्णन के साथ धतूरे व नुकीले पत्थर आदि कई प्रकार की वस्तुएं व बकरे-मुर्गे का मांस तथा कुत्ते की संगति जैसी बातें भी दी गयी थीं। आचार्य जी के विषय में गोपाल की धारणा बहुत अच्छी

थी लेकिन यह किताब तो कुछ और ही समझा रही थी। वह परेशान हो गया, हैरानी से उसने आचार्य जी की ओर देखा, वे मुस्कुरा दिये।

''कुछ कहना चाहते हैं?'' आचार्य जी ने पूछा।

''इसमें तो दूसरो को हानि पहुँचाने वाली बाते हैं, नकारात्मक उपाय हैं। हम लोग विश्वास तो 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' के दर्शन में करते हैं। यह उससे कहाँ मेल खाता है?'' गोपाल ने कहा।

''जीवन में हम जो कुछ देखते-सुनते, पढ़ते-सीखते हैं, कोई जरूरी तो नहीं कि वह सब हम करें भी। वाममार्ग भी एक पथ है, इसकी भी जानकारी होनी चाहिए।'' आचार्य जी ने समझाना चाहा।

''लेकिन ऐसी बातें जानने-सीखने की क्या आवश्यकता है?'' गोपाल ने प्रतिवाद सा किया।

''ऐसी बहुत सी घटनायें होती हैं जिन्हें हम समझ नहीं पाते, जैसे शिखर पर पहुँच चुके किसी व्यक्ति का अचानक पतन हो जाता है। कोई पथभ्रष्ट हो जाता है और किसी को मतिभ्रम हो जाता है। कोई लोभ में पड़कर अनैतिक हो जाता है और कोई मोह में पड़ कर व्याभिचारी। क्या सब कुछ यों ही हो जाता है? निरन्तर मर्यादा में रहने वाले व्यक्ति से भी कभी-कभी बड़ी चूक हो जाती हैं और उसे लज्जित होना पड़ता है। मन को संचालित करने वाली कोई न कोई शक्ति है जिसे प्रभावित करने से अच्छे बुरे परिणाम मिल सकते हैं।'' आचार्य जी ने स्पष्ट करने का प्रयास किया ''शस्त्र का उपयोग आक्रमण में भी हो सकता है और बचाव में भी, यही बात इस विद्या पर भी लागू होती है। यदि कोई व्यक्ति इस विद्या के प्रभाव से ग्रसित है तो इसका जानकार उसे इससे मुक्त भी करा सकता है। यह तो 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' दर्शन से मेल खाता है न?'' आचार्य जी ने गिलास हाथ में उठा गले में उड़ेल लिया।

गोपाल को अचानक एक घटना याद आ गयी। उसके एक वरिष्ठ अधिकारी ने अपने सेवा-निवृत्त होते समय उसे एक पुस्तक भेंट की थी, जिसके शीर्षक का आशय था कि किसी कर्मचारी को सेवा से बर्खास्त करने के लिए आरोप पत्र की भूमिका और महत्व क्या है। गोपाल ने तब अधिकारी से पूछा था कि वह उस पुस्तक का क्या करेगा, वह तो कर्मचारियों के हित के लिए काम करता है। उन अधिकारी का उत्तर था कि विषय का अच्छा ज्ञान होने पर आरोप पत्र में कमियां ढूंढकर आरोपी को बचाया भी जा सकता है। कोई आवश्यक नहीं कि पुस्तक का उपयोग किसी को बर्खास्त करने में ही हो, लगभग वैसी ही बात आचार्य जी भी कर रहे हैं, लेकिन उनकी बात से वह पूरे तौर पर सहमत नहीं हो पा रहा था।

गोपाल आचार्य जी के लिए तीसरा गिलास बना दिया। उन्होंने गिलास की ओर देखा और फिर गोपाल की ओर ''तो आप मेरी बात से सन्तुष्ट नहीं हो पा रहे हैं! ठीक है! मेरा आशय आपको वाममार्ग की सरसरी तौर पर जानकारी देना था, इसमें दीक्षित करना नहीं। मेरे गुरुजी के यही निर्देश थे कि विद्या देने के लिए चुने गये व्यक्ति को इस रीति से सबसे पहले वाममार्ग की जानकारी दी जाये ताकि वह सावधानी बरत सके।'' आचार्य जी ने बात पूरी की।

''तो क्या आपने मुझे विद्या देने के लिए चुना है? लेकिन मेरा क्षेत्र तो यह नहीं है।'' गोपाल ने शंका जताई।

''यह मेरी इच्छा है, लेकिन आप पर कोई बाध्यता नहीं है, पहले मैं आपको इस विद्या के प्रत्येक पक्ष से परिचित करा दूँ। इसके बाद इस विषय पर बातचीत करेंगे। आचार्य ने तीसरा गिलास भी गटक लिया ''अब मैं आप से शाम को नहीं, सुबह के समय भेंट करूंगा, परसों ठीक रहेगा?'' आचार्य जी कुर्सी से खड़े हो गये, उनको लेने वाहन आ चुका था। गोपाल के हामी भरते ही वे कक्ष से बाहर निकल गये।

रात को सोते समय गोपाल के दिमाग में वाममार्ग वाली किताब की बातें छाई रहीं, आंख लगते ही स्वप्न में भी उनके ही दृश्य दिखने लगे।। उसकी नींद टूट गयी, काफी प्रयासों के बाद भी आंख नहीं लगी। कहीं यह उच्चाटन तो नहीं? कहीं आचार्य जी उस पर कोई प्रयोग तो नहीं कर गये? उसे सन्देह हुआ। नींद पूरी न होने से वह पूरे दिन अनमना सा रहा। दूसरे दिन की अगली सुबह आचार्य जी को फिर आना था, उस रात भी उसे टुकड़ों टुकड़ों में ही कुछ नींद आ पायी, इसमें भी उसे अजीबोगरीब सपने दिखते रहे।

सुबह सूर्योदय के समय आचार्य जी उपस्थित हो गये, चेहरे पर तेज और पहले दिन के विपरीत सुसज्जित वेशभूषा में वे प्रभावित कर रहे थे।

''अब केवल फल और दूध'' कह कर वे कुर्सी पर बैठ गये ''वाममार्ग की साधना मेरे अनुकूल भी नहीं थी, इसलिए नहीं अपनाया। मैं मांस-मदिरा-धूम्रपान, किसी का सेवन नहीं करता। अपने गुरुजी को दिये वचन के कारण ऐसा करना पड़ा, लेकिन यह कष्टकारक अनुभव था, जिसे मैं कभी दोहराना नहीं चाहूँगा।'' उन्होंने सिर को झटका दिया। गोपाल ने सहमति में सिर हिला दिया।

''आज मैं मध्यमार्ग के विषय पर चर्चा करूंगा'' आचार्य जी ने गोपाल की ओर देखा ''यह व्यक्ति की आकांक्षाओं को पूरा करने को लेकर है, जिसमें केवल अपने हित पर ही विचार किया जाता है। इसमें धन-पद-रूप-शक्ति और सर्व सम्पन्नता प्राप्ति के उपाय हैं। यह सब प्रत्येक को चाहिये, इसलिए यह सबसे

बड़ा विषय है और इसी का अधिक चलन है।'' उन्होंने एक साफ सुथरी हस्तलिखित पुस्तक कुर्ते के नीचे से निकाल गोपाल के हाथों में दे दी।

''यदि यह मार्ग सचमुच कारगर है तो पुस्तक बहुत उपयोगी होगी' गोपाल ने मन में सोचा और पुस्तक के पन्ने पलटने लगा। पुस्तक में भाग्य और कर्म का सम्बन्ध बताते हुए कर्म की सफलता में भाग्य का महत्व दिखाया गया था। प्रत्येक सिद्धि के लिए कर्म का विधान और उसके कारक देवी-देवता, उनसे सम्बन्धित स्तोत्रों-मन्त्रों व उपयुक्त समयावधि आदि के साथ शास्त्रीय प्रावधानों व साधना यंत्रों का भी वर्णन था। व्रत, अनुष्ठान व होम आदि के विषय में कुछ उदाहरण कथायें भी अन्त में दी गई थीं। देवी-देवताओं के आपसी सम्बन्धों और क्रिया की पूरक उपक्रियाओं पर भी कुछ चर्चा की गयी थी। उसने जल्दी-जल्दी किताब पलट कर मेज पर रख दी।

''कर्म में सफलता तो परिश्रम और प्रयासों से मिलती है, भाग्य जैसी बातें और उस पर आश्रित रहना तो बुद्धिमानी नहीं कही जा सकती'' गोपाल ने टिप्पणी की।

''कर्म की सफलता में भाग्य की सहायक भूमिका होती है और कई बार इससे बहुत बड़ा अन्तर पड़ता है। जागृत भाग्य कर्म का पूरक होता है और भाग्यहीन का कर्म प्राय: व्यर्थ हो जाता है। मध्यमार्ग भाग्य को कर्म के अनुकूल बनाने के उपाय सुझाता है, जिससे सफलता की सम्भावना बढ़ जाती है।'' आचार्य जी ने गोपाल की शंका का समाधान करने का प्रयास किया। उन्होंने अपने जीवन में तथा अन्य व्यक्तियों के साथ हुई घटनाओं का उदाहरण देकर अपने मत को स्थापित करना चाहा। गोपाल को सरलता से इस सब पर विश्वास नहीं हो पा रहा था, उसके चेहरे पर सन्तोष के भाव नहीं आ पाये। आचार्य जी ने इसे ताड़ लिया।

''ऐसा कीजिये, अपने कर्म के साथ इनमें से कछ का प्रयोग करके देखिये और उससे होने वाले अनुभव के आधार पर अपनी धारणा बनाइये'' आचार्य जी कुर्सी से उठ खड़े हुए, ''दो दिन के बाद मिलूँगा'' कह कर वे कक्ष से बाहर निकल गये।

वाममार्ग गोपाल के दिमाग से निकल चुका था, अब देवी-देवता मन पर छा गये थे - धन के लिए लक्ष्मी, विद्या के लिए सरस्वती, शक्ति के लिए दुर्गा, रूप के लिए विष्णु, श्रृंगार के लिए कृष्ण, वीरता के लिए राम, बल के लिए हनुमान और इन्द्र, वरुण, अग्नि, वायु व कुबेर, अनगिनत देवता जो अपने-अपने कर्मों के कारक हैं - रात को स्वप्न में एक-एक देवता अपना परिचय देने लगे- मैं इन्द्र हूँ, मैं कुबेर हूँ, मैं भैरव हूँ, मैं नाग हूँ, मैं नरसिंह हूँ। अपने-अपने रूप में

दुर्गा, लक्ष्मी, सरस्वती, शिव व विष्णु, राम, कृष्ण व हनुमान, सभी अपने-अपने वाहनों के साथ दिख रहे थे। स्वप्न का दौर बहुत लम्बा चला, गोपाल चमत्कृत था, उसे बहुत अच्छा लगा। अच्छी नींद से वह तरोताजा था, दिन भर रह रह कर देवताओं की आकृतियाँ उसके दिमाग में आती रहीं। उसने पत्नी से चर्चा की, वह बहुत प्रसन्न हुई कि स्वप्न में उसे देवताओं के दर्शन हो गये। गोपाल को भी लगने लगा कि उस पर देवताओं की कृपा अवश्य है। जीवन में वह जो चाहता था वह उसे सरलता से मिलता रहा, जबकि उसके कई मित्रों-परिचितों को अनेक कठिनाईयों से गुजरना पड़ा। उनके मुकाबले वह भाग्यशाली है, अनायास ही वह भाग्य का अर्थ समझने लगा।

दो दिन बाद आचार्य जी फिर आ गये। कोई तामझाम नहीं, साधारण से धोती कुर्ते में और चेहरे पर सौम्य मुस्कुराहट। यह रूप पहले दोनों अवसरों से काफी भिन्न था। इससे पहले कि गोपाल उन्हें प्रणाम करता, आचार्य जी के दोनों हाथ नमस्कार की मुद्रा में जुड़ गये। गोपाल के आग्रह पर वे कुर्सी पर बैठ गये।

''मैं किसी महान ज्ञानी या विद्वान व्यक्ति के तौर पर आपके सामने नहीं हूँ जो अपनी विद्वता का बखान कर उपदेश करता हो। एक साधारण व्यक्ति की भांति मैं एक जिम्मेदारी निभा रहा हूँ। अपने गुरुजी द्वारा दी गयी विद्या मुझे किसी उपयुक्त व्यक्ति को सौंपनी है। आपका मन टटोलने से पहले मैं आपको इसके अगले पक्ष की जानकारी दे दूँ। यह देवमार्ग है जिसमें जीवन ही योग बन जाता है। विषय वर्णन से परे है जिसमें अनुभूति सर्वोपरि होती है। इसकी थोड़ी सी झलक आपको इस पुस्तक से मिल जायेगी।'' आचार्य जी ने एक छोटी सी पुस्तक गोपाल के हाथों में थमा दी।

पुस्तक जीवन और प्रकृति के जटिल रहस्यों, सृष्टि व ईश्वर के सम्बन्ध, ब्रह्माण्ड की संरचना व अनन्त व्यापकता, इसमें मानव की स्थिति व कीट पतंगों से लेकर सूक्ष्मतम कृमियों से उसके जीवन चक्र की तुलना तथा सर्व सामर्थ्य होने की निरर्थकता के साथ मनोभावों से ऊपर उठकर स्थावर जंगम व प्राणिमात्र के लिए शिवत्व के संकल्प को सामने रखती थी। लाभ-हानि व जीवन-मरण के भय से परे, आसक्ति व वैराग्य से ऊपर, मान-अपमान, यश-अपयश, अपना-पराया जैसे द्वन्द्वों में सम रहते हुए, लोक मंगल की भावना के साथ सतत साधना इसमें मुख्य उपाय था। अपनी चितवृत्तियों को नियंत्रित कर सरल जीवन जीने के लिए प्रवृत्त करना इसका लक्ष्य था। इसमें सहायता करने वाले तत्व यथा सूर्य, चन्द्रमा, गायत्री व प्रणव मंत्र आदि के साथ प्राणायाम, उपवास, कुछ योगिक क्रियायें तथा तत्व दर्शन संकेत रूप में दिये गये

थे। गोपाल ने गहराई में न जाकर पुस्तक को कहीं कहीं से पढ़ लिया।

''यह सब तो बहुत कठिन है।'' गोपाल ने पुस्तक को एक ओर रख दिया।

''और जटिल भी'' आचार्य जी ने जोड़ा ''सबसे सरल वाममार्ग ही है, अधिक लोग उसका ही अनुसरण करते हैं।''

''कैसे?'' गोपाल ने चौंक कर पूछा।

''दूसरों को हानि पहुँचाकर अपना हित साधना ही वाममार्ग का मुख्य उपकरण है। नकली दूध व मसाले कमाने वाले, जमाखोरी से कृत्रिम अभाव पैदा कर कालाबाजारी करने वाले, सीमेंन्ट में रेत मिलाने वाले, नदी नालों पर कब्जा कर उनका प्रवाह रोकने वाले, घटतौली करने वाले, जंगलों का विनाश कर प्राणवायु छीनने वाले, कामचोरी कर भी पूरा भुगतान लेने वाले, झूठे आश्वासन देकर जनता का विश्वास हासिल करने वाले, न्याय देने में विलम्ब कर अन्याय करने वाले, अवैध तरीकों से सम्पत्ति अर्जित करने वाले और इसी प्रकार के अन्य लोग वाममार्गी ही तो हैं। वे श्मशान में जाकर साधना नहीं करते किन्तु जीवित समाज को श्मशान बना देते हैं। ऐसे लोग सफेद कपड़ों में वाममार्गी हैं और हमारे चारों ओर फैले हैं। हम वाममार्ग पर नाक-भौं कैसे सिकोड़ सकते हैं?'' आचार्य जी ने समाज की विकृति का खाका खींचा ''इसलिए वाममार्ग को समझना जरूरी है। आचार्य जी की बात में दम था, गोपाल ने समझ कर सिर हिला दिया।

''कष्ट यह है कि हमने अपनी आवश्यकताओं को असीमित कर दिया है इसलिए जीवन में सन्तोष नहीं आ पाता। जैसे भी हो अधिकाधिक सम्पत्ति व शक्ति अर्जित करना ही लक्ष्य बन गया है, जिससे साधनों की पवित्रता गौण हो गयी है। जहाँ यह पवित्रता समाप्त होती है, वहीं से वाममार्ग आरम्भ हो जाता है।

लोभ व मोह होते हुए भी यदि साधनों की पवित्रता बनी रहती है तो यह मध्यमार्ग बन जाता है। सत्य तो यह है कि हमारे भीतर एक चोर बैठा हुआ है जो समाज के भय के कारण बाहर नहीं निकलता। एक बार समाज का भय समाप्त हुआ या समाज की नजरें बचीं तो चोर अपना काम कर बैठता है। एक तरह से समाज व्यक्ति का और स्वयं अपना प्रहरी है। समाज सोता है तो खो जाता है, जागृत होने पर सुरक्षित रहता है। समाज को फिसलने से रोकने के लिए कुछ नैतिक मूल्य बने हुए हैं, इस नैतिकता से समाज की रक्षा होती है। मध्यमार्ग बार-बार देवी-देवताओं के बहाने उन नैतिक मूल्यों की रक्षा के लिए सचेत करता है। आस्था मनोबल बढ़ाने में सहायक होती है और मनोबल व्यक्ति को भ्रष्ट होने से रोकने का काम करता है। मध्यमार्ग सामाजिक

सन्तुलन का भी काम करता है लेकिन समस्या यह है कि इसे मानने वाला वर्ग दुविधाग्रस्त रहता है। देवत्व उसे आकर्षित करता है, लेकिन इसकी जटिलता उसे इससे दूर रखती है। मन में बैठा चोर उसे गिराने का प्रयास करता है और प्रलोभन उसे फंसाता रहता है, ऐसे में मध्यमार्ग उसे सम्भालता है। आडम्बर न मानकर यदि मध्यमार्ग का वास्तविक महत्व समझ सकें तो इससे समाज को लाभ होगा।'' आचार्य जी ने मध्यमार्ग को स्वीकार करने पर बल दिया।

जो कुछ आचार्य जी कह रहे थे वह पुस्तकों में दिये गये उपायों से अलग था। वह आश्वस्त नहीं करता था लेकिन यह वह दर्शन था जो प्रभावित कर रहा था। गोपाल ने इसे स्वीकार किया लेकिन मुँह से कुछ नहीं बोला। वह आचार्य जी के मुख पर देखने लगा कि वे कुछ बोलें।

''देवमार्ग भी समाज का विषय है'' आचार्य जी ने हथेली खोली ''लेकिन इस पर चलने वाले शताब्दी में दो चार ही होते हैं और करोड़ों में एक-आध। हमारे समाज में साधु-सन्यासी हैं और देवमार्ग के अनुयायी भी हैं लेकिन बन्धनों से पूरी तरह मुक्त नहीं हो पाते। जगद्‌गुरु शंकराचार्य से लेकर स्वामी विवेकानन्द तक कुछेक ही उस शिखर पर पहुँच पाते हैं। देवमार्ग की मुख्य भूमिका प्रेरक की बन गयी है जो समय समय पर समाज को सचेत करता है और आश्वस्त भी। देवमार्ग की जानकारी व्यक्ति को उसके श्रेष्ठतम बिन्दु तक देख पाने में सहायक होती है। देवमार्ग पर अनुसरण करने वाले परम आदर के पात्र होते हैं और उनका विशेष स्थान होता है। इनके सामने सत्ता व धन नतमस्तक होते हैं। मध्यमार्ग पर चलने वाले कुछ लोग उन जैसा बनने का प्रयास करते हैं और वाममार्गी उनसे भय मानने लगते हैं। देवमार्ग पर चलने वालों मे देवत्व का अंश आ जाता है जो समाज को नैतिक बल देकर उसका क्षरण रोकता है। देवमार्ग की प्रतिष्ठा को उच्च स्थान पर रखने के लिए उसकी जानकारी आवश्यक है'' आचार्य ने बात समाप्त की।

''ये सारी जानकारी वास्तव में उपयोगी है, पुस्तकें पढ़कर तो यह समझ में नहीं आ पा रहा था लेकिन आप की बातचीत से काफी कुछ स्पष्ट हो गया है।'' गोपाल ने मुग्ध भाव से आचार्य जी की ओर देखा।

''तो अब क्या कहते हैं? क्या इन विद्याओं को मुझसे स्वीकार करेंगे?'' आचार्य जी ने सीधे ही पूछ डाला।

''मैं स्वयं को इस योग्य नहीं समझता।'' गोपाल ने असमर्थथता जताई

''कौन कितना योग्य है, यह विद्या देने वाले को देखना होता है, लेने वाले को नहीं। मैंने आपमें योग्यता देखी है।'' आचार्य जी ने सम्मोहित करने वाले भाव के साथ सीधे हृदय को छू लेने वाले स्वर से कहा। गोपाल ने महसूस किया कि

आचार्य जी में देवत्व के दर्शन हो रहे है। वह समझ नहीं पा रहा था कि वह क्या कहे। प्रतिवाद करे तो किस आधार पर और सहमति दे तो किस प्रकार। आचार्य जी के स्वर मे स्नेह भी था और अधिकार भी, विनती भी थी और आदेश भी। आदर के साथ कृतज्ञता भी छिप नहीं पा रही थी। गोपाल को लगा कि उसकी गर्दन आचार्य जी के हाथों में आ गयी है और उन्होंने मूंड कर उसे चेला बना लिया है। एक ऐसा पाश बन गया था जिसका स्पर्श कोमल था और बंधे रहने को विवश करता था।

यह मौन स्वीकृति थी, जिसे समझने में आचार्य जी ने देरी नहीं की। उन्होंने खड़े हो गोपाल के सिर पर हाथ फेरा और तीनों पुस्तकें उसकी गोद में डाल दीं ''अब मैं मुक्त हुआ'' उन्होंने लम्बी सांस ली और उसकी पीठ थपथपाकर कक्ष से बाहर निकल गये।

तीनों पुस्तकें लेकर गोपाल खड़ा हो गया कि इन्हें कहाँ व कैसे रखे और इनका क्या करे। 'एक बार ठीक से पढ़ लिया जाये' उसने मन में सोचा, 'लेकिन पहले कौन सी?' सहसा उसे आचार्य जी के शब्द ध्यान आ गये ''सबसे पहले वाममार्ग!' उसने किताब खोल ली 'लेकिन इसके लिए वैसा ही वातावरण चाहिए' उसे आचार्य जी के पहले दिन का दृश्य याद आ गया। आचार्य जी के पीने के बाद बची बोतल घर में थी ही, गोपाल ने एक साथ तीन गिलास तैयार कर लिए, बार-बार बनाने का झंझट खत्म। पहला गिलास गटका ही था कि पत्नी सामने आ गयी।

''यह क्या है?'' हैरानी से पत्नी ने पूछा।

''आज मै पहले मार्ग, वाममार्ग का अध्ययन कर रहा हूँ, गुरुजी के निर्देश हैं इसलिए यह सब जरूरी है। कल दूसरे और परसों तीसरे मार्ग का भी अध्ययन करूंगा।'' वह बोला।

अगले दिन, इससे पहले कि गोपाल दूसरी-तीसरी पुस्तकें पढ़ता, आचार्य जी के बेटे उसके घर आ धमके। वे जानना चाहते थे कि गोपाल ने उनके पिता को ड्रिंक्स क्यों दीं, वे तो छूते तक नहीं थे। समझाने में गोपाल के पसीने छूट गये, हार कर उसने तीनों किताबें उनके सामने रख दीं, ''लेकिन ये मैं आपको दे नहीं सकता'' उसने साफ किया।

''आखिर क्यों नहीं? जबकि ये हमारे पिता की ही हैं!'' पुत्रों ने जानना चाहा।

''क्योंकि मुझे अपना शिष्य बना कर गुरु रूप में उन्होंने इन्हें सौंपा है'' गोपाल ने बताया।

''तो गुरु के तौर पर हमें अपना शिष्य मान कर आप अब इन्हें हमको दे दीजिये'' पुत्रों ने अनुरोध किया, ''आचार्य जी के पुत्र होने के कारण हम इसके

लिए पात्र भी हैं।''

''अभी तो मैंने पुस्तकें ठीक से पढ़ी भी नहीं, कम से कम पढ़ तो लेने दो'' गोपाल ने उन्हें टालना चाहा।

गोपाल की पत्नी अन्दर से सब कुछ सुन रही थी, आचार्य जी के आने के बाद गोपाल की दिनचर्या व व्यवहार में आ रहे परिवर्तन को वह अनुभव कर चुकी थी। वह बाहर निकल आई।

''ये सारी किताबें इन्हें दे दीजिये'' पत्नी निर्णायक अन्दाज में बोल पड़ी।

''मैं सहमत हूं लेकिन ये निर्धारित रीति से ही दी जा सकेंगी'' गोपाल ने हामी भर दी।

''कैसे?'' आचार्य जी के पुत्रों ने उत्सुकता से पूछा।

''सबसे पहले वाममार्ग!'' गोपाल ने बताया और पुत्रों को विधि समझा दी।

पत्नी ने सिर पर हाथ दे मारा, वाममार्ग केवल जानकारी में ही नहीं, गोपाल के व्यवहार में आने लगा था, लेकिन उसने साथ में राहत की सांस भी ली कि सब कुछ जल्दी ही सिमट रहा है।

परिधान से आगे

क्लीनिक में आने की बात अगर पहले हो जाती तो ज्यादा अच्छा होता, लेकिन सब कुछ इतनी जल्दी हुआ कि सचिन इस बारे में शर्मा जी को बताना ही भूल गया। उसे उन्हीं के काम से एक बड़े अधिकारी से मिलने जाना था, लेकिन बात दिमाग से उतर गई। गफलत में वह सीधे क्लीनिक के लिए चल पड़ा, उसके निकलते ही शर्मा जी उसके घर पहुँच गये और पता कर पीछे-पीछे क्लीनिक तक आ गये।

सचिन ने क्लीनिक से पहले से ही समय लिया हुआ था। बात स्वयं डॉक्टर से हुई थी, उन्होंने ही यह समय दिया था। उसे हैरानी भी हुई, क्योंकि समय, शाम को क्लीनिक खुलने के निर्धारित समय से, एक घण्टा पहले का दिया गया था। आश्चर्य का एक और कारण यह था कि डॉक्टर समय की बड़ी पाबन्द थीं और इसका कड़ाई से पालन करती थीं। वह पहले भी डॉक्टर के पास आता रहा था, इस बार अलग से समय देने का कारण उसकी समझ में नहीं आ रहा था।

डॉक्टर से उसका परिचय चार-पाँच वर्ष पहले तब हुआ था, जब उन्होंने निजी प्रैक्टिस आरम्भ नहीं की थी। वे एम.डी. कर रही थीं और सरकारी अस्पताल में उस विषय के नामी डॉक्टर से कुछ मार्गदर्शन लेने आयीं थीं। वह भी उस दिन वहीं था, उसे याद है कि उस वरिष्ठ डॉक्टर ने इस डॉक्टर युवती का 'होनहार और अति योग्य' के रूप में उससे परिचय करवाया था। उसे तब भी आश्चर्य हुआ था क्योंकि आम तौर पर डॉक्टर युवतियां महिला रोगों अथवा बाल रोग के क्षेत्र में कार्य करती हैं। कम से कम महानगरों से बाहर अन्य केन्द्रों पर तो यही चलन था, लेकिन यह डॉक्टर अन्य जटिल, हृदय रोग, विषय में एम.डी. कर रही थीं।

डॉक्टर की पारिवारिक पृष्ठभूमि बहुत अच्छी थी, पैसों की कोई कमी नहीं थी। एम.डी. करते ही उनके लिए कोठी में ही क्लीनिक खोल दिया गया। शान्तिप्रिय परिवार को अधिक भीड़-भाड़ और खटपट पसन्द नहीं थी। डॉक्टर का विषय भी ऐसा ही था, जिसमें परामर्श लेने वालों की संख्या ही अधिक होती। क्लीनिक तीन भागों में था, एक डॉक्टर का सुसज्जित कक्ष, उसके बाहर एक मध्यम आकार का हॉल, जिसमें प्रतीक्षारत लोगों तथा रिसेप्शनिस्ट के बैठने की व्यवस्था थी। उसके बगल में एक लैब का कक्ष था जो इ.सी.जी. आदि के लिए उपयोग में आता था, प्रथम तल को क्लीनिक से जोड़ने वाला

जीना इसी कक्ष में खुलता था।

क्लीनिक की व्यवस्था के अनुसार सचिन सीधे आगन्तुकों वाले हाल में दाखिल हो गया, वहाँ कोई नहीं था। डॉक्टर के चैम्बर का दरवाजा खुला था, लेकिन वह भी खाली था, लैब वाले हिस्से में कुछ हलचल अवश्य हो रही थी। धुधंलके में सचिन ने देखा कि कोई युवती मेज पर झुक कर रिपोर्टों को देख रही थी। डॉक्टर के विषय में पूछने के लिए सचिन लैब की ओर बढ़ा ही था कि वह खड़ी हो गयी।

''आईये चीफ! मैं आप ही का इन्तजार कर रही थी'' युवती बोली। सचिन को कुछ समय के लिये अचानक विभाग के प्रमुख का वरिष्ठ पदभार मिल गया था। उस दौरान साथी व मित्र उसे मजाक में 'चीफ' कहने लगे थे, यह सिलसिला बाद में भी चलता रहा। परिचय कराने वाले वरिष्ठ डॉक्टर ने इस डॉक्टर युवती से सचिन को चीफ कहकर ही मिलवाया था। वह भी सचिन को 'चीफ' कह कर ही पुकारने लगी थीं।

नववयस्क सी लगती उस युवती की आवाज डॉक्टर जैसी ही थी, इस बारे में सचिन कुछ सोचता, इससे पहले ही युवती कक्ष से बाहर हॉल में, ट्यूब लाईट के उजाले में आ गयी।

'अरे! ये तो डॉक्टर ही हैं' सचिन चौंका, पहचान पाना वास्तव में सरल नहीं था। अपनी आयु से काफी छोटी दिखतीं, चेहरे पर सौम्यता, व्यवसायिक गम्भीरता की जगह सरल मुस्कुराहट और युवाओं की सी उत्साहपूर्ण पदचाप। सचिन उनका अभिवादन करता, हमेशा की तरह डॉक्टर ने ही मन्द मुस्कान व मधुर वाणी से उसका स्वागत किया।

डॉक्टर ने सचिन को अपने चैम्बर की ओर चलने का इशारा किया ही था कि शर्मा जी भी हाल में अन्दर आ कर सीधे सचिन की ओर बढ़ गये। सचिन ने अचकचाकर उनकी ओर देखा, शर्मा जी के कुछ कहने से पहले ही डॉक्टर पीछे मुड़ गयीं। उनका चेहरे पर कुछ गुस्सा सा गया।

''सॉरी चीफ! बाद में आइयेगा प्लीज़, मुझे थोड़ा वक्त लग जायेगा।'' डॉक्टर जल्दी से कह लैब से होते हुए जीने की ओर बढ़ गयीं। डॉक्टर के अचानक बदले व्यवहार से सचिन सोच में पड़ गया।

''डॉक्टर से भेंट हो गयी?'' शर्मा जी ने चुप्पी तोड़ सचिन की ओर देखा।

''हाँ, लेकिन वे तो बिना बात किये ही चली गयीं।'' सचिन ने परेशानी जताई।

''अभी जो गयी, वही डॉक्टर थी?'' शर्माजी ने चौंकते हुए पूछा।

''हाँ,'' ''टॉप और जीन्स में? इतनी स्मार्ट? इतनी कम आयु की?''

''हाँ, नववयस्क परिधान में वे ही थीं''

''बात किये बिना ही क्यों चली गई? कहीं मेरे आने के कारण तो नहीं?''

''पता नहीं, लेकिन अचानक उनका मूड बदला।'' सचिन कारण नहीं समझ पाया था। ''अब कब मिलेगी?''

''मालूम नहीं, लेकिन बाद में आने को कहा है।'' सचिन ने बताया।

''क्या तब तक हम अपना काम निपटा सकते हैं?'' शर्मा जी ने प्रस्ताव किया। समय काफी था, सचिन ने हामी भर दी।

शर्मा जी सचिन के एक अति निकट व्यक्ति का संदर्भ लेकर उससे मिलने आये थे। सचिन के माध्यम से उन्हें सरकार के एक बड़े अधिकारी से मिलना था। सचिन ने इसके लिए समय ले लिया था। यह समय डॉक्टर द्वारा उसे दिये गये समय के थोडा ही बाद का था। शर्मा जी सचिन के घर उसे लेने गये थे लेकिन उसके क्लीनिक पर होने की जानकारी मिलने पर वे भी पीछे पीछे चले आये थे।

शर्मा जी के साथ सचिन अधिकारी के आवास पर चला गया। अधिकारी तब तक किसी अन्य जिले के लिए निकल चुके थे। वे सचिन के लिए 'दो दिन बाद आने' का सन्देश छोड़ गये थे। शर्मा जी के पास अब दो दिन तक उनकी प्रतीक्षा करने के अलावा कोई चारा नहीं था। बड़ी संस्था से जुड़े होने के कारण वे शहर के सबसे बड़े होटल में रुके हुए थे। अधिकारी के आवास से वे सचिन को आग्रहपूर्वक अपने होटल में ले गये।

कमरे में शर्मा जी अकेले थे और शाम ढ़ल चुकी थी। उन्होंने सचिन से व्हिस्की में साथ देने का प्रस्ताव किया, सचिन ने चाय पकोड़े से साथ देना ही बेहतर समझा।

''क्या सचमुच वही डॉक्टर थी, जो टॉप और जीन्स में थी?'' पैग उठाते हुए शर्मा जी ने सचिन की ओर देख उससे पूछा।

''हाँ! क्यों?'' सचिन ने पूछा।

''विश्वास नहीं होता, वह तो किसी कालेज की लड़की सी दिख रही थी। अच्छी और खूबसूरत भी है, बेहद स्मार्ट!''

''हाँ, लेकिन वे ही डॉक्टर थीं।'' सचिन मुस्कुराया।

''क्या ये हमेशा ही ऐसे टॉप और जीन्स में रहती है?'' शर्मा जी ने फिर सवाल दागा।

''नहीं, क्लीनिक में तो वे माडरेट ड्रेस में होती हैं।'' सचिन ने बताया।

''आज भी तो ये क्लीनिक में ही थी?'' शर्माजी ने टोका।

''लेकिन क्लीनिक समय से एक घण्टा पहले!'' सचिन ने जैसे डॉक्टर की ओर से सफाई दी।

''आपको ऐसे समय क्यों बुलाया गया था?'' शर्मा जी ने कुरेदा।

''ठीक से नहीं बता सकता।'' सचिन अचकचाया।

''और मेरे आते ही अचानक उसका रुख क्यों बदल गया?'' शर्मा जी का अगला सवाल था। ''मैं खुद भी नहीं समझ पा रहा।'' सचिन सचमुच निरुत्तर था।

''आपको नहीं लगता कि सब बातें आपस में जुड़ी हुई हैं?'' शर्मा जी मुस्कुराये। ''कैसे?'' सचिन ने जानना चाहा।

''कोई युवती आयु से कम दिखती लगे, आकर्षक वेश में हो, एकान्त में मिले व किसी और के होने से परेशान दिखे तो कुछ तो बात होगी?'' शर्मा जी ने अपनी एक आँख दबाई।

''आप कहना क्या चाहते हैं?'' सचिन का माथा ठनका। ''आप वाकई खुशकिस्मत हैं'' शर्माजी खिलखिलाकर हँस पड़े।

''ओफ्फो! आपने तो हद कर दी!'' सचिन ने गहरी साँस ली।

सचिन के लिए पकोड़े आ चुके थे, लेकिन साथ में चाय नहीं आयी थी। शर्मा जी मुस्कुरा दिये, ''ये कोई चाय का समय है? व्हिस्की में आप जैसे बेहतरीन आदमी का साथ न हो तो पीने का क्या मजा?'' उन्होंने गिलास बना कर जबर्दस्ती सचिन के हाथ में थमा दिया।

''तो आप मुझसे इत्तेफाक नहीं रखते?'' शर्मा जी ने सचिन को फिर छेड़ा।

''बिलकुल नहीं, क्लीनिक उनके निवास के साथ है, वे अपनी सुविधा के कपड़ों में थीं, किसी ड्रेस कोड का तो सवाल ही नहीं है। वे प्रोफेशनल हैं, लोगों से मिलना उनके व्यवसाय का अंग है, अकेला मिलना कोई असामान्य बात नहीं है। समय उनकी उपलब्धता के अनुसार तय होता है, बिना समय लिये किसी अन्य के आने से उन्हें स्वाभाविक रूप से अच्छा नहीं लगेगा। यह भी तो हो सकता है कि उन्हें कोई और जरूरी काम याद आ गया हो। आप न जाने क्या सोच बैठे हैं।'' सचिन ने लम्बा चौड़ा प्रतिवाद किया।

''आपके मन में उसके लिए कोई फीलिंग नहीं है?'' शर्मा जी विषय को छोड़ना नहीं चाहते थे।

''फीलिंग है, बहुत अच्छी फीलिंग है। मैं उन्हें अच्छा मानता हूँ, वे अच्छी डॉक्टर हैं। स्वभाव से अच्छी हैं और सुयोग्य भी। वे व्यवहार कुशल हैं और विचारों से भी सुलझी हुई। वे केवल दिखने में ही नहीं, मन से भी सुन्दर हैं। वे

वाणी से मधुर और सौम्य भी हैं, वे सरल, लेकिन दृढ़निश्चयी हैं, उनके रोम रोम से आत्मविश्वास झलकता है और अंग अंग से विद्वता। वे धीर गम्भीर भी हैं और प्रसन्नमुखी भी। मैं उनका प्रशंसक हूँ।'' सचिन की आवाज में दृढ़ता आ गयी थी किन्तु आंखो में कुछ पानी सा भी तैरने लगा। अब तक उसे हल्का नशा भी हो चुका था। शर्मा जी की निगाहें सचिन के चेहरे पर टिक गयीं, वे उसके चेहरे के भाव पढ़ने लगे

''वाह!'' शर्मा जी के मुँह से निकला ''मन में उसके लिए इतना सब कुछ है, क्या डॉक्टर समझती नहीं होगी?''

''हो सकता है, लेकिन वैसा कुछ नहीं, जैसा आप समझ रहे हैं।'' सचिन उठ खड़ा हुआ। शर्मा जी की कार उसे घर तक छोड़ गयी। पकोड़ों से पेट पहले ही भर चुका था, लेटते ही सचिन को नींद आ गयी।

एक सुन्दर से बाग में पालथी मार कर ध्यान लगाये बैठे सचिन के पास एक युवती चली आयी। सुन्दर, सजीली, मुस्कुराती हुई वह सचिन के सामने आकर खड़ी हो गयी। शान्त और स्थिर, देवी के किसी अवतार की तरह। सचिन ने प्रणाम में सिर झुका दिया, वह कुछ नहीं बोली, बस मन्द-मन्द मुस्काती रही। सचिन ने अपने हाथों में फूल लेकर युवती पर बरसा दिये। उसने युवती के माथे पर रोली से बिन्दिया लगा, दीपक व कपूर से उसकी आरती की। सचिन युवती का चेहरा ठीक से नहीं देख पाया, उसने अनुभव किया कि वह डॉक्टर सी ही कोई थी। देखने के लिए अपना चेहरा ऊपर करते ही अचानक सचिन की नींद टूट गयी।

''यह कैसा सपना था?'' सुबह सचिन को हैरानी हुई 'तो शर्मा जी की कही हुई बातें रात में भी मन में घूम रहीं थीं, जिससे ऐसा सपना आया।' उसने मन में सोचा, लेकिन उसे सन्तोष हुआ कि सपना उसके विचारों और सोच के अनुरूप ही था।

थोड़ी देर बाद शर्मा जी का फोन आ गया। कुशल क्षेम, नींद कैसी आयी, आदि पूछने के बाद उन्होंने जानना चाहा कि डॉक्टर किस रोग की विशेषज्ञ हैं। सचिन के बताने पर शर्मा जी ने भी डॉक्टर से परामर्श लेने की इच्छा व्यक्त की। सचिन ने देख लेने की बात कह कर फोन रख दिया, उसने डॉक्टर से समय नहीं लिया।

सचिन से उत्तर न पाकर शर्मा जी ने उसका सन्दर्भ देकर स्वयं ही डॉक्टर से समय ले लिया। परिचय बढ़ाना उनके संस्थागत कार्य का एक भाग था और वे इसमें माहिर थे। क्लीनिक पहुँचने पर डॉक्टर ने उनका ठीक से स्वागत किया और इस बात पर खेद व्यक्त किया कि वे पहली शाम चीफ को

समय नहीं दे पायीं थीं। उन्होंने शर्मा जी को यह भी बताया कि वे चीफ के साथ आम लोगों जैसा बर्ताव नहीं कर सकतीं, इसलिए क्लीनिक से काफी पहले का समय तय किया था। उन्होंने शर्मा जी से यह कहने में भी संकोच नहीं किया कि उनका उस समय चीफ के साथ आना उन्हें अच्छा नहीं लगा था। शर्मा जी से उन्होंने यह आग्रह भी किया कि वे जब अगले दिन आयें तो चीफ को साथ लेकर आयें। मिलने के लिए उन्होंने फिर क्लीनिक से एक घण्टा पहले का समय दिया।

प्रसंगवश शर्मा जी ने डॉक्टर से पूछ लिया कि सचिन के साथ उनके विशेष व्यवहार का क्या कारण है। उत्तर में डॉक्टर ने चीफ की प्रशंसा में जैसे शब्दों का पिटारा ही खोल दिया। शर्मा जी को विश्वास नहीं हो पा रहा था कि किसी व्यक्ति में इतने सारे गुण हो सकते हैं। डॉक्टर एक-एक बात पर जोर दे रही थीं, कि चीफ की विलक्षण प्रतिभा व व्यक्तित्व से वे कैसे और किस कदर प्रभावित हैं।

शर्मा जी आश्चर्यचकित रह गये। सचिन के विषय में डॉक्टर, वैसा ही, और उससे भी बढ़ कर बोल रहीं थीं जैसा पहले दिन सचिन उनके बारे में बोल रहा था। शर्मा जी ने मन में तय किया कि सचिन को बता दिया जाये कि डॉक्टर उसके बारे में क्या और कैसा सोचती है लेकिन डॉक्टर ने उनसे आग्रह कर दिया कि सचिन से इस बातचीत का वर्णन न किया जाये।

डॉक्टर के पास से शर्मा जी कार लेकर सीधे सचिन के घर आ पहुँचे और आग्रह कर उसे अपने साथ होटल में ले गये। पहले पैग के साथ ही शर्मा जी फिर से चालू हो गये, "कमाल है! आपने कल डॉक्टर के बारे में जैसा कहा था, वह भी आपके बारे में उससे भी बढ़-चढ़ कर सोचती है।" शर्मा जी ने डॉक्टर को दिये हुए आश्वासन को किनारे रख कर सचिन को सब कुछ विस्तारपूर्वक बता दिया, कुछ और रोचक व चटपटा बना कर।

सचिन को अच्छा लगा कि उसको लेकर डॉक्टर में मन में इतने सुन्दर विचार हैं। उत्साहवश उसने भी सपने वाली बात शर्मा जी को बता दी। रात होते ही कार फिर सचिन को घर तक छोड़ आयी।

दूसरी रात भी सचिन को अच्छी नींद आयी। पहली रात के सपने वाली युवती फिर से उसके सामने थी, बादलों के झुरमुट में युवती पर चारों ओर से फूलों की बरसात हो रही थी। मधुर वाणी से धीमे स्वर में मंत्रों के उच्चारण साथ मन्द-मन्द मुस्काती वह अनुपम तेज की ओर बढ़ रही थी। सचिन ने युवती की ओर ध्यान से देख कर उसे पहचानने का प्रयास किया किन्तु दूर कहीं बांसुरी की मधुर धुन बजने लगी थी। उसने ध्वनि की दिशा में

मुँह किया ही था कि बांसुरी बन्द हो गयी और युवती अन्तर्ध्यान, किन्तु फूलों के साथ उसकी सुगन्ध बसी रह गयी। सचिन बहुत देर तक सोता रहा।
'शर्मा जी ने कल जो कुछ कहा था, उसी का असर लगता है,' सुबह उठकर सचिन ने फिर से मन में सोचा और मुस्कुरा कर अपनी दिनचर्या में जुट गया।

शाम को शर्मा जी डॉक्टर के क्लीनिक में जाने और सचिन को साथ लेने के लिए उसके घर पर पहुँच गये। सचिन तैयार हो रहा था। शर्मा जी कुर्सी खींच कर उसके पास बैठ गये। बातों बातों में दूसरी रात के सपने की बात भी सचिन के मुंह से निकल गयी।

''आज फिर आपको क्लीनिक समय से एक घण्टा पहले बुलाया है।'' शर्मा जी ने सचिन को छेड़ा।

''लेकिन आप भी तो साथ होंगे।'' सचिन ने प्रतिवाद जैसा किया।

''हाँ लेकिन मैं तो बस बहाना हूँ, भेंट मुलाकात तो आपसे होनी है।'' शर्मा जी ने कयास जैसा लगाया।

''ऐसा कुछ नहीं है, वे मुझे कल समय नहीं दे पायीं, इसलिए आज बुलाया होगा।'' सचिन ने टोका।

''वो आपको अलग से समय देती है, खास समझ कर व्यवहार करती है, आपकी खूब तारीफ करती है। आप भी उसे अच्छा मानते हो, उसके सपने भी देखते हो, उसकी पूजा करते हो और इतना कुछ होने पर भी दावा करते हो कि दोनों के बीच कुछ नहीं, यह मानने लायक बात नहीं है।'' शर्मा जी ने पूरा खाका खींच दिया, ''केवल डाक्टर मरीज की बात नहीं है, कुछ और मामला लगता है!'' उन्होंने कनखियों से सचिन की ओर देखा।

सचिन ने डॉक्टर के विषय में ऐसी-वैसी भावना से कभी सोचा ही नहीं था, जैसे शर्मा जी सोच रहे थे। ऐसी बातों की दूर दूर तक कोई सम्भावना भी नहीं थी। उसे आश्चर्य हुआ कि ऐसा सोचा भी कैसे जा सकता है। उसने सिर को दायें बायें हिला कर झटका सा दिया और चलने के लिए उठ खड़ा हुआ।

क्लीनिक पहुँचने पर डॉक्टर नहीं मिलीं, वे ऊपर निवास पर थीं। शर्मा जी को प्रतीक्षा करने के सन्देश के साथ क्लीनिक के कर्मचारी ने सचिन से डॉक्टर के निवास पर आने का आग्रह पहुँचाया। शर्मा जी ने सचिन की ओर बांयीं आँख झपकायी, जैसे कह रहें हो, देखा मैंने क्या कहा था।

सचिन जीने से होते हुए निवास पर चला गया। डॉक्टर के साथ अपने स्वास्थ्य सम्बन्धी परामर्श के बाद सचिन ने शर्मा जी को भी वहीं बुलाने का

आग्रह किया। डॉक्टर ने क्लीनिक में ही मिलना बेहतर समझा। दोनों नीचे क्लीनिक में आ गये। शर्मा जी को डॉक्टर के चेम्बर में बुलवा लिया गया। उनके चेहरे पर शरारत तैर रही थी, सचिन को अटपटा सा लगा। डॉक्टर ने दोनों की ओर देखा और मुस्कुरा दीं, ठीक वैसे ही जैसे रात सपने में युवती मुस्कुरा रही थी।

''आप कुछ परेशान लग रहे हैं,'' डॉक्टर ने शर्मा जी से पूछा ''कल जब आप चीफ की बातें कर रहे थे'' डॉक्टर ने सचिन की ओर इशारा करते हुए कहा, ''और चीफ के विषय में मेरी बातें सुन रहे थे, तब भी आपके चेहरे पर यही भाव थे। क्या सोच रहे हैं आप?'' डॉक्टर ने जैसे चोरी पकड़ ली। शर्मा जी चुप रहे।

''चीफ! पहले आप बताइये'' डॉक्टर सचिन की ओर मुड़ीं ''आपने इनसे मेरी बहुत अधिक प्रशंसा कर दी लगती है। मेरे बारे में आपकी इतनी अच्छी धारणा कैसे बन गई?'' उसने पूछा।

''अनुभवजन्य ज्ञान से!'' सचिन ने उत्तर दिया ''मैंने आपकी योग्यता, गुणों और व्यवहार को प्रत्यक्ष देखा है। यहाँ क्लीनिक में, और अन्यत्र भी, लोग आपकी प्रशंसा करते हैं। किसी में अच्छी बातें देखना और अन्य से उनकी चर्चा करना मुझे अच्छा लगता है, इससे औरों को भी प्रेरणा मिलती है। यह कुछ गलत तो नहीं?'' सचिन ने धैर्यपूर्वक कहा। फिर जैसे कुछ याद आ गया हो, ''लेकिन आपने भी तो मेरे विषय में इनसे काफी कुछ बढ़ा चढ़ा कर कह दिया है,'' उसने डॉक्टर की ओर देखा।

डॉक्टर खिलखिला पड़ीं, उन्मुक्त हंसी, सरल और निश्छल। उनके चेहरे पर लाली उभर आयी लेकिन तुरन्त ही संयत हो गयी। हंसी हल्की मुस्कुराहट में बदल गयी व आंखों में कुछ लजाने के भाव आ गये, ''तो शर्मा जी नहीं माने!'' वे बोलीं।

निवास से क्लीनिक में चाय आ गयी थी। मिठाई, नमकीन, बिस्कुट और तले हुए काजू, लेकिन चाय, तीन के स्थान पर चार कप।

''ऊपर निवास पर कोई खास मेहमान आने वाले थे। एक कप उनके लिए था, लेकिन अब वे थोड़ी देर से आयेंगे।'' डॉक्टर ने चाय के अतिरिक्त कप की जिज्ञासा तो शान्त कर दी लेकिन यह खास मेहमान कौन है, जिसे चाय पर उनके साथ रहना था, सचिन के मन में कुतूहल पैदा हो गया।

''लीजिए'' डॉक्टर ने चाय लेने का आग्रह करते हुए दोनों की ओर देखा, ''चीफ के बहुत प्रिय और अति निकट रहे एक भद्रपुरुष आ रहे हैं, जो अक्सर चीफ की बातें किया करते हैं और तारीफ करते कभी थकते नहीं, कि चीफ ने

कब-कब और क्या-क्या चमत्कार किये हैं। मुझे उन्होंने चीफ के विषय में इतना कुछ बता दिया है कि लगता है कि अब उनसे अधिक मैं चीफ को जानती हूँ। अभी आप थोड़ी देर में जान जायेगें कि ये महानुभाव कौन हैं?'' डॉक्टर मुस्कुराई।

''तो ये माजरा है!'' शर्मा जी सचिन के कानों में बुदबुदाये, ''इसलिए आपकी इतनी प्रशंसा हो रही थी'' उन्होंने कहा, ''लेकिन सपने?'' उन्होंने सचिन की ओर देखा। बात डॉक्टर के कानों तक पड़ गयी, ''कैसे सपने? कौन देखता है?'' उन्होंने पूछा, दोनों चुप रहे।

''चीफ तो कुछ बोलेंगे नहीं,'' डॉक्टर ने सचिन की ओर इशारा करते हुए शर्मा जी से कहा, ''लेकिन आप तो कुछ बताइये, यह सपनों वाली बात क्या है?''

सचिन के रोकते रोकते भी शर्माजी बोल पड़े ''इनके सपने में कोई युवती आती है,! ये उस पर फूल बरसाते हैं और उसकी पूजा करते हैं।'' उन्होंने उत्साह दिखाया।

''वाह! चीफ के सपने में काश खुद मैं ही आ सकती! वहीं विचार विमर्श हो जाता, इनकी सारी कठिनाई सपने में ही हल हो जाती।'' डॉक्टर चहकीं।

डॉक्टर की बात शर्मा जी की लाइन व अपेक्षा के अनुरूप नहीं थी, वे कुछ और सुनना चाहते थे और आसानी से हार मानने वालों में से नहीं थे।

''आप भी तो सपनें देखती होंगी? ये भी तो आपके सपनों में आ सकते हैं?'' शर्मा जी ने मजाक जैसा किया।

''आ सकते क्यों? मैं तो स्वागत करूंगी!'' डॉक्टर बिना देरी किये बोल पड़ीं ''चीफ के विषय में जितनी रोचक बातें सुनती हूं, उनके सपने आयें तो इनके अनुभव और ज्ञान का लाभ कम से कम सपने में तो मिलेगा'' डॉक्टर सचिन की ओर देख मुस्कुराई ''लेकिन मुझे जो सपने आते हैं, उनमें फूल तो मुझ पर भी बरसते हैं लेकिन पूजा के नहीं, आर्शीवाद के'' संयत भाव से कहते हुए डॉक्टर ने शर्मा जी की ओर देखा ''इसमें हैरानी की कोई बात नहीं है, हम दिन भर जो करते व सोचते हैं, जिनके विषय में बातें करते हैं, कई का असर हमाने मन पर होता है, उन्हीं में से कुछ के सपने भी आ जाते हैं।'' डॉक्टर ने पेशेवर जैसे अन्दाज में बात की।

चाय समाप्त होते होते एक भद्र दिखता युवक डॉक्टर के चेम्बर में आ गया। उसने झुक कर सचिन के घुटनों को हाथ लगाया। सचिन ने देखा वह उसके अधीन काम कर चुका एक युवा अधिकारी था, जो काफी कर्मठ और योग्य था, वह सचिन को अपना आदर्श मानता था। सचिन ने उसे गले से लगा

लिया।

''हम दोनों बचपन के मित्र हैं, हमारे पिता भी आपस में अच्छे मित्र थे।'' डॉक्टर ने सचिन को दोनों का आपसी सम्बन्ध बताया।

''और अब उनकी दोस्ती रिश्तेदारी में बदलने जा रही है'' युवक ने मुस्कुराते हुए बात पूरी की, ''कभी कभी आप यहां आतें हैं, यह जान कर मैंने ही आपसे भेंट करने की इच्छा जताई थी। इसीलिए इन्होंने आपको अलग से बुलाया था, कल भी और आज भी।'' डॉक्टर की ओर इशारा करते हुए युवक ने बताया।

कुशलक्षेम के उपरान्त डॉक्टर व युवक से विदा लेकर सचिन शर्मा जी की कार में वापिस चल दिया।

''अब सब कुछ समझ में आ गया? गलतफहमी दूर हुई कि नहीं?'' सचिन ने शर्मा जी से पूछा।

''ठीक है,'' शर्माजी चुप ही रहे।

''आप ऐसी-वैसी बातें सोच कैसे लेते हो?'' सचिन ने चुप्पी तोड़नी चाही।

''कोई पुरुष व स्त्री एक दूसरे को जानते हों, अच्छा मानते हों, एक जैसी बातें करते हों, एक दूसरे की प्रशंसा करते हों और दोनों को एक जैसे सपने आते हों तो सोचने के लिये कुछ तो मिल ही जाता है'' शर्मा जी ने सफाई दी।

''यह तो कोई बात नहीं हुई'' सचिन ने असहमति जताई, ''रिश्ते-नातों में, मुहल्ले-पड़ोस में, आफिस, सेवा-व्यवसाय आदि क्षेत्रों में और सामाजिक कार्यों में छोटे-बड़े व महिला-पुरुष एक दूसरे के साथ काम करते हैं। बहुतों से प्रभावित होते हैं, कइयों की प्रशंसा करते हैं, कुछ सपनों में भी आते होंगे। ये सब सामान्य बातें हैं'' उसने जोर दिया, ''चीजों को केवल स्त्री-पुरुष के नजरिये से देखना ठीक नहीं, ये तो मध्ययुगीन सोच है जो एक सीमित दायरे में घूमती है और स्वस्थ नहीं कही जा सकती'' सचिन ने ज्ञान जैसा बघारा, ''स्त्री और पुरुष के बीच में यही अकेला नाता नहीं होता, घर-परिवार, शिक्षा व कार्यस्थल आदि में भी एक-दूसरे के प्रति अपनत्व का भाव होता है।''

''हो सकता है कि आप ठीक हों लेकिन सबसे रोचक विषय फिर भी यही है, सारा साहित्य इसी पर है और फिल्में भी हीरो-हीरोइन के इर्द-गिर्द ही घूमती हैं। सभी समुदायों में, स्त्री-पुरुष का विवाह ही सबसे बड़ा आयोजन होता है। समय बिताने के लिये भला इससे अच्छा विषय और क्या हो सकता है?'' शर्मा जी अपने को सही ठहराने पर तुले थे, ''तीन दिनों से होटल के कमरे में अकेला रह रहा हूँ, सोचने को कुछ तो चाहिए था, अच्छी कहानी के लिये मसाला भी ठीक-ठाक जुट गया था। आप न भी मानें, तब भी कहानी काफी अच्छी बन सकती है।'' उन्होंने बात पूरी की।

ऐसी सोच पर सचिन को आश्चर्य हुआ, ''आपको यह सब सूझा कैसे?'' फटी आंखों से उसने शर्मा जी को देखा।

''चीजें जुड़ती चली गईं और कहानी आगे बढ़ गयी।'' शर्मा जी ने ठहाका लगाया।

''लेकिन कहानी बनी तो नहीं?'' सचिन ने उन्हें टोका, ''और न बन ही सकती है, पूरी तो बिलकुल नहीं हो सकती। सारी बातें एकदम साफ हो चुकी हैं और अब कोई भी पहेली बाकी नहीं बची।'' सचिन ने उन्हें छेड़ा।

''कहानी के लिए अभी भी काफी गुंजाइश बनी हुई है!'' शर्मा जी ने चुटकी ली। ''कैसे?'' सचिन कुछ चौंका।

''ठीक है कि बहुत कुछ साफ हो गया लेकिन डॉक्टर असली बात के बारे में तो चुप्पी साध गयी, उस पर कुछ भी नहीं कहा, वह तो अभी बाकी है।'' शर्मा जी कहानी जारी रखना चाहते थे। ''अब कौन सी बात बाकी बची है?'' सचिन हैरान था।

शर्मा जी के उत्तर देने से पहले ही कार होटल में दाखिल हो गई। उन्होंने कार पार्क की और सचिन के साथ अपने कमरे की ओर बढ़ने लगे।

''वह कौन सी बात है जो अभी भी बाकी रह गई है?'' सचिन ने शर्मा जी से चलते-चलते अपना सवाल दोहराया।

''जानने की इतनी जल्दी क्या है? पहले थोड़ा व्हिस्की तो हो जाये।'' शर्मा जी ने कमरे का ताला खोलते हुए मुस्कुरा कर सचिन की ओर देखा।

''फिर भी!'' सचिन जानने को उत्सुक था। उसने अनुमान लगाने का प्रयास किया लेकिन कुछ सूझा नहीं। शर्मा जी चुप रहे, उन्होंने व्हिस्की का गिलास सचिन के हाथ में थमा दिया।

दोहराने-तिहराने पर भी शर्मा जी ने सचिन के प्रश्न का उत्तर नहीं दिया।

''हां तो आप क्या पूछ रहे थे?'' दो-तीन पैग गटक जाने के बाद शर्मा जी को जैसे अचानक याद आ गया, ''यही ना! कि डॉक्टर की कौन सी बात अब भी सुलझने से बाकी रह गई?'' ''हां!'' सचिन ने सिर हिलाया।

''टॉप और जीन्स वाली बात! क्या कहा था आपने? नववयस्क परिधान! सचमुच उसमें कितनी स्मार्ट लग रही थी!'' शर्मा जी ने जोर का ठहाका लगाया ''वहीं से तो कहानी शुरु हुई थी।'' सचिन ने हाथ सिर पर दे मारा ''बस! बहुत हुआ! कहानी को यहीं रोक दीजिये! नो मोर कहानी!'' वह चीखना चाहता था, लेकिन लम्बी सांस लेकर छोड़ते हुए बस इतना भर ही कह पाया।

तपस्या का रहस्य

आमतौर पर वैसे तो संस्कृति को राज्य अथवा समाज से जोड़कर ही देखा जाता है लेकिन इस बार भोला को संस्कृति का नया ही मतलब निकालना पड़ गया। वह हाल ही में एक बड़े नगर से बदली होकर काफी दूर, एक छोटे लेकिन महत्वपूर्ण और बेहद खूबसूरत कस्बे में आया था। बड़े शहर की आपा-धापी और भागदौड़ भरी जिन्दगी से कस्बे में आना काफी सकून भरा था। जहां शहर में एक दूसरे से बात करने की भी फुर्सत नहीं होती थी, वहीं कस्बे में भोला का कई लोगों से, दिन में कई बार मिलना हो जाता। शहर में, जहां पड़ोसी से मिले भी हफ्तों गुजर जाते थे, वहीं कस्बे में वहां का रहने वाला हर आदमी पड़ोसी था। शहर में जहां बात लम्बी भूमिका के बाद शुरू होती, वहीं कस्बे में बिना किसी लाग लपेट के। शहर और कस्बे का यह अन्तर उसे बात-बात में दिखाई पड़ता।

तबादला होने के बाद तुरन्त वह अपने लिए मकान की व्यवस्था नहीं कर पाया था, इसलिए उसे दूर के रिश्ते के भाई के साथ रहना पड़ रहा था। कस्बे में व्यस्तता बहुत कम थी और समय काफी ज्यादा, रात को सोने से पहले दोनों में अक्सर गपशप होती। बातचीत आमतौर पर शहर और कस्बे के अन्तर से शुरू होती, भोला अक्सर अपनी हैरानी जताता।

''महानगर की संस्कृति से बहुत अलग है यहां की संस्कृति भाई साहब!'' रिश्ते का भाई बताता, ''और गांव की संस्कृति तो इससे भी अलग।''

''संस्कृति?'' भोला चौंकता, ''क्या अलग-अलग संस्कृति होती है नगर, गांव और कस्बे की?''

''हां भाई साहब! सबकी अलग-अलग होती है, उत्तर की, दक्षिण की, पूरब की, पश्चिम की, पहाड़ की और मैदान की भी'' भाई उत्तर देता। भोला अब तक संस्कृति का जो मतलब समझता था, यह उससे काफी अलग था।

'क्या मतलब है इसका संस्कृति से!' भोला सोचता, 'रहन-सहन, दिनचर्या, व्यवहार, चलन या दस्तूर?' उसे कोई निश्चित अर्थ नहीं सूझ पाता, किन्तु वह जो समझ पाया, वह प्रकृति है जो कई चीजों से मिलकर बनती है, नगर की हो या कस्बे की।

कस्बे की संस्कृति या प्रकृति को भोला ठीक से समझे, इससे पहले जरूरी था कि उसे रहने के लिए कोई ढंग का मकान मिल जाये। रिश्ते के भाई

के साथ-साथ अपने आपिफस के लोगों को भी भोला ने इस काम पर लगा रखा था कि जैसे ही कोई अच्छा मकान मिले, उसे बता दें। उसकी नौकरी भी अच्छी थी और वेतन भी काफी, किराये की कोई समस्या नहीं थी। असली कारण कस्बे में निजी मकानों की कमी थी, अधिकांश भवन सरकारी थे, जिनमें कर्मचारी पहले से ही डटे हुए थे। मकान मिलने में समय लग रहा था, इसलिए रिश्ते के भाई के उपकार पर रहना उसकी मजबूरी थी।

''पड़ोस में ही एक मकान में दो कमरे खाली हैं, भाई साहब!, शाम को देखने चलेंगे। खाने पर बुलाया है उन लोगों ने!'' भाई ने एक दिन भोला को बताया।

''खाने पर?''' भोला चौंका, ''क्या मकान देखने वालों को खाने पर बुलाने का भी चलन है यहां?'' शायद कस्बे की संस्कृति ही ऐसी हो, यह सोचकर उसने आश्वस्त होना चाहा।

''नहीं, नहीं ऐसा नहीं है। असल में यहां हमारे अपने समुदाय के काफी लोग है, अपनी जाति-बिरादरी के भी। कहीं न कहीं से सभी से रिश्तेदारी निकल ही आती है। आपके गांव में भी उनकी कोई रिश्तेदारी है, यह सोचकर खाने पर बुला लिया कि हम दोनों छड़े (कुंवारे) हैं, मकान देखने तो आयेंगे ही, वापिस जाकर कहां खाना बनायेंगे।'' भाई ने विस्तारपूर्वक समझाया।

''ठीक है'' भोला ने सहमति दे दी। वह सचमुच कुंवारा था और उसके रिश्ते का भाई भी, दोनों युवा थे। रिश्ते का भाई थुलथुल शरीर वाला और दिखने में आलसी जैसा था, नौकरी भी कोई खास नहीं थी। भोला दिखने में भी आकर्षक था, नौकरी अच्छी, और ऊंचा वेतन। रिश्ते के भाई से उसके नहीं, अक्सर भोला के ही बारे में पूछताछ होती। कस्बा छोटा था, नये आने वाले के बारे में सब लोग जल्दी ही काफी कुछ जान जाते।

भाई के आग्रह पर शाम को भोला उसके साथ मकान देखने और खाने पर चला गया। दोनों को बैठक में बैठाया गया, आव-भगत का अच्छा इन्तजाम था, चाय-पकौड़ी, नमकीन, बिस्कुट, मिठाई, फल वगैरह सब कुछ। भवनस्वामी ने भोला को उसके गांव के साथ सारे रिश्ते गिना डाले। बीच-बीच में वे अपने परिवार के विषय में भी बताते, अपनी सम्पन्नता, नाते रिश्ते, बच्चों की शिक्षा और अच्छे संस्कार भी, जो उन्होंने बच्चों को दिये। जल्दी ही चाय का दौर खत्म हो गया।

''बर्तन ले जाओ बेटी'' भवनस्वामी ने अन्दर आवाज दी। अन्दर से धीमे कदमों से आकर दोनों हाथ जोड़े दो तीन बार सिर झुकाकर एक युवती ने नमस्कार किया और बर्तन उठाकर ले गयी।

''बेटी है हमारी, बी.ए. किया है, बहुत सुशील है।'' गृहस्वामी ने बताया।

''कमरे देखें?'' भोला ने भाई की ओर देखा।

''जल्दी क्या है? खाने तक तो रुकना ही है, देख लेंगे थोड़ी देर में'' भाई ने भरोसा दिलाया। भोला ने थोड़ा जोर दिया ''फिर भी...'' भवनस्वामी ने बीच में ही रोक दिया ''आप के लायक नहीं हैं, बहुत छोटे हैं, रसोई भी नहीं है और न ही अलग से बाथरूम, जंगल में जाना पड़ता है।'' बात वहीं खत्म हो गई। भाई तो खाने के लिए डटा था ही, भोला ने जैसे-तैसे खाना खाया। अगले दिन फिर एक और मकान भाई ने सुझाया।

''क्या कल जैसा ही?'' भोला ने साफ-साफ जानना चाहा, ''खाने पर बिल्कुल नहीं जाऊंगा मैं कहीं।''

खाने पर तो नहीं पर मकान दिखाने भाई ले ही गया। मकान तो भोला को आधा अधूरा ही दिखाया गया, लेकिन आव-भगत, नाते-रिश्ते की बातें वहां भी पहले घर जैसी ही हुई। भाई एक-एक कर ऐसे पांच-छः घरों में भोला को ले गया, जो मकान दिखाने में तो कम लेकिन नाते-रिश्ते जोड़ने में ज्यादा उत्सुक थे। भोला को समझ में आ गया कि भाई मकान दिलाने में नहीं, बल्कि उसका घर बसाने में ज्यादा इच्छुक है। सभी घरों में विवाह योग्य युवतियां थीं, जो किसी न किसी बहाने भोला के सामने ला दी जातीं। इस सब की जानकारी भाई को न हो, या उसकी सहमति न हो, यह विश्वास कर पाना उसके लिए मुश्किल था, भाई का यह रवैया और निजी जीवन में दखल उसे अच्छा नहीं लगा।

''मुझे यह सब पसन्द नहीं'' भोला ने भाई से कहा, ''यह अच्छी बात नहीं हैं, और न ही मेरे संस्कार ऐसे हैं।'' जैसे भी हो भाई से अलग होना तो बेहद जरूरी है, उसने निश्चय कर लिया। भाई भी लोगों के दबाव से परेशान था, ''ऐसे सीधे लड़की देखने और एकदम रिश्ते की बात करने के संस्कार नहीं हैं उसके, उसे अपनी पुरानी परम्परा से प्यार है।'' वह लोगों को बताता।

कस्बे और गांव का अन्तर भोला को साफ दिखाई देने लगा था, शहर में भी भोला को ऐसे हालातों से दो चार होना पड़ा था। यह तभी से हो रहा था, जब से वह नौकरी पर लगा था। इक्कीस, बाईस वर्ष की आयु में ही प्रतियोगी परीक्षा में अच्छा स्थान प्राप्त कर भोला नौकरी पर आ गया था, बहुत अच्छे विभाग में, जहां नौकरी पाने को लोग लालायित रहते। पद भी अच्छा था, शान और कई सुविधाओं वाला, आगे कैरियर भी बेहद उज्ज्वल। उसकी नौकरी लगने पर उसके परिवार का रुतबा भी बढ़ गया था। ब्याह-शादी

लायक लड़कियों के घर तो ऐसे युवकों की तलाश में रहते ही हैं, साल छः महीने बीतते ही उसके लिए रिश्ते आने लगे, लेकिन उसका मन अभी शादी का नहीं था।

''बड़े अच्छे घर से रिश्ता आया है, लड़की भी बहुत अच्छी है, जन्मपत्री मिल गयी है, बात आगे बढ़ायें?'' घर वाले जोर देते। ''अभी नहीं'' कह कर भोला हर बार बात टाल देता। कभी कभार रिश्तेदार भी छेड़ देते, ''हमारे यहां जो लड़की आती है, वो देखी है तुमने? भई हमें तो बहुत पसन्द है, भाई साहब से बात करूं?'' एक बार अपने घर पर भोला के कुटुम्ब के चाचा जी ने उससे पूछा। ''अभी शादी का विचार नहीं है'' मुस्कराते हुए भोला ने बात खत्म कर दी। एक-आध बार और लोगों ने भी उसका मन टटोला, लेकिन वह टालता ही रहा।

शहर में भोला के साथ कभी ऐसा नहीं हुआ कि यों बहाने से बुला कर उसे लड़की दिखाई जाये या बिना बड़ों को बीच में डाले लड़की वाले सीधे उससे सम्पर्क करें। भोला को कस्बे का यह चलन नहीं भाया, लेकिन कस्बे वालों की भी अपनी मजबूरी थी। छोटे कस्बे में दायरा भी सीमित था और अच्छे रिश्तों की बेहद कमी। घर से दूर रह रहा कोई अच्छा युवक उनके प्रभाव में आ जाये तो घरवालों से तो सम्पर्क हो ही जायेगा, यह सोचकर वे पहल करते। पढ़ाई लिखाई और कैरियर पर ध्यान देने वाले भोला ने विवाह के विषय में कभी सोचा भी नहीं था। खासतौर पर लड़की देखने को लेकर उसकी सोच कुछ अलग थी, उसका मानना था कि लड़का-लड़की एक दूसरे से मिलें तो लेकिन पसन्द, नापसन्द के लिए नहीं, केवल निकटता बढ़ाने के लिए। लड़के-लड़की की रुचि के अनुसार यह माता-पिता को तय कर लेना चाहिए। खासतौर पर लड़की का इन्टरव्यू लेकर उसे पसन्द, नापसन्द करने की बात उसे अटपटी लगती, उसका सोचना था कि इससे लड़कियों की भावनाओं को चोट पहुंचती है। कस्बे वालों की जो भी मजबूरी हो, लेकिन वह अपनी इस तरह की घेरेबन्दी से परेशान था। वह रिश्ते की बात से ही बिदकने लगा, यो भी, उसे प्रमोशन परीक्षा की तैयारी करनी थी जो उसके कैरियर के लिए जरूरी था, पढ़ाई के लिए अलग मकान जरूरी हो गया था।

आखिरकार उसका इन्तजार खत्म हुआ, पहाड़ी कस्बे में पक्की पगडंडी से सटा एक अलग व सुन्दर मकान उसे मिल गया। भवनस्वामी दूर शहर में अच्छे पद पर तैनात थे, कब्जा होने के डर से मकान किराये पर नहीं देते थे। भोला की नौकरी बदली वाली थी, इसलिए उसे मकान मिल गया। रंग-रोगन, पुताई और परदे-गमलों की सुरुचिपूर्ण सजावट व रख-रखाव से

मकान को देखने लायक बन गया। पहाड़ी पगडंडी से सुन्दर आंगन व बरामदा साफ दिखाई देता।

पगडंडी पर खूब चहल-पहल रहती, सुबह शाम और भी ज्यादा, स्कूल खुलने और बन्द होने के समय पर खासतौर से। खिलखिलाते बच्चे और युवा अध्यापिकायें पगडंडी से होकर आती-जातीं, उनमें कुछ वे भी थीं जिनके घर भोला मकान देखने जा चुका था। बहुत समय से बन्द पड़े मकान की नई व सुन्दर रौनक पगडंडी पर चलने वालों की बातचीत का अक्सर ही विषय बन जाता, विशेषकर युवतियों की।

''बहुत सुन्दर मकान है, कितना अच्छा है ना?'' एक ने बात शुरू की। दूसरी, जिसके घर भोला जा चुका था, गुस्से से बोल पड़ी, ''लेकिन इसमें रहने वाला बिल्कुल बेकार!''

''क्यों?'' चौंककर औरों ने पूछा, उस ने सारी बात बता दी ''बिदकता है रिश्ते की बात से ही, बिल्कुल बौड़मदास है''

''पहुंच जा वहां, अकेला रहता है, बन जायेगा चौड़मदास'' तीसरी ने मजाक की।

''कौन? वो? अरे नहीं! बेचारे के संस्कार बीच में आ जाते हैं'' एक और ने व्यंग्य किया, ''आदर्शवादी जो है।''

पगडंडी पर चलते-चलते, बात अक्सर मकान से शुरू होकर भोला पर जा पहुंचत जाती, दिखने में कैसा है, घर में कौन-कौन हैं, नौकरी कैसी है, उम्र कितनी है, मिजाज कैसा है, वगैरह-वगैरह। छोटी जगह पर सब जानकारी वैसे भी मिल ही जाती है, रिश्ते का भाई कई घरों में सारी जानकारी पहुंचा भी चुका था। भोला के बारे में युवतियां काफी कुछ जान गईं, कुछ तो उसका मजाक उड़ातीं, लेकिन ज्यादातर उसकी तारीफ ही करती। युवतियों के मन में उसके लिए चाहत पैदा होना स्वाभाविक ही था। आंगन में टहलते, पेड़ पौधों को पानी देते और धूप सेंकत पगडंडी से युवतियों को जब वह दिखाई देता तो एक बार तो उनका मन खड़ा रहकर उसे देखने को जरूर करता।

उसे चाहने वाली युवतियों को सूझ नहीं पाता था कि उस तक पहुंचे कैसे, वे तो केवल कल्पना की उड़ान ही भर सकती थीं, लेकिन कठिनाइयों को चुनौती मानने वालों की भी कमी नहीं है। मकान से कुछ दूरी पर कई अच्छे परिवारों के निवास थे, अधिकांश बड़े अधिकारियों के। ऐसे ही एक घर की युवती पढ़ाई समाप्त करने के बाद शौकिया तौर पर स्कूल में नौकरी कर रही थी। पगडंडी पर आते-जाते उसने भोला के बारे में सुन लिया, एकाध बार पगडंडी से उसे देख भी लिया, वह उसे भा गया। वह महत्वाकांक्षी थी, उसने

भोला के विषय में, स्वभाव और दिनचर्या के बारे में जानकारी जुटानी शुरू की। शुरुआती जानकारी न तो काफी थी न ही उत्साहवर्धक, चुनौती काफी कठिन थी, लेकिन उसे तो सफल होना ही था, उसने प्रयास जारी रखे।

छोटे कस्बे में भोला के पास काफी समय था, आफिस में अधिक काम नहीं था और बाहर भी कोई खास जान पहचान नहीं, रिश्ते के भाई से भी दूरी बन चुकी थी। सुबह जल्दी उठ कर उसने दूर मन्दिर में जाना और शाम को पहाड़ में, ताजी हवा में, अकेले ही काफी दूर तक सैर करना शुरू कर दिया।

कुछ ही दिनों बाद उसे मन्दिर में सुबह उससे भी पहले एक युवती पहुंची हुई मिलती, जो तन्मयता के साथ पूजा कर रही होती। वह जिन मंत्रों और स्तुतियों से शिवजी की अर्चना करती थी, वह भोला को अति प्रिय थीं, युवती का कण्ठ, उच्चारण व लय भी मुग्ध कर देने वाली थी। वह युवती के विषय में जानना चाहता था लेकिन उसने भोला की ओर कभी देखा ही नहीं। शाम को भी सैर करते करते, कुछ दिनों बाद एक युवक भोला को दिखने लगा, जो मिलने पर उसे नमस्कार कर देता।

भोला युवक को पहचानता नहीं था किन्तु नमस्कार का प्रत्युत्तर दे देता। धीरे-धीरे वह युवक कभी आगे-पीछे तो कभी साथ-साथ, उसे सैर करते मिलने लगा। सप्ताह भर में तो सैर भी साथ-साथ ही होने लगी।

''आपने पहचाना नहीं, लगता है मुझे'' एक दिन युवक ने उससे कहा।

''देखा तो है शायद कहीं, लेकिन ठीक से याद नहीं'' भोला ने उत्सुकता दिखाई।

''वहीं रहता हूं मैं, उसी शहर में, जहां से आप आये हैं। मेरा भाई आपका अच्छा दोस्त है।'' एक नाम लेकर युवक ने बताया, वह उसका चचेरा भाई था और भोला उसे जानता था।

''यहां किसके पास आये हैं आप?'' भोला ने जानना चाहा।

''अपनी बुआ के पास, यहीं रहती हैं, बड़े पद हैं हमारे पूफा जी!'' एक बड़े पद का उल्लेख कर युवक ने बात पूरी की, ''छुट्टियां बिताने आया हूं।''

युवक भोला का हमवय था और रोचक बातें करने वाला भी, उसे लगा सैर का अच्छा साथी मिल गया। एक दिन शाम को नया रास्ता बताते हुए युवक ने प्रस्ताव किया ''आज इधर चलें? बहुत अच्छी साफ सुथरी और घुमावदार सड़क है, कोई भीड़-भाड़ भी नहीं।'' भोला साथ चल दिया। वापसी में एक घर की तरफ इशारा कर युवक ने बताया, ''यही है हमारे पूफा जी का घर, आइये आपकी भेंट करा देता हूं, आज वे घर पर ही होंगे।''

भोला को कोई आपत्ति नहीं हुई। परिचय बढ़ाना अच्छी बात है, विशेषकर बड़े अधिकारी से, यह सोचकर वह साथ चला गया।

युवक के पूफा घर पर नहीं थे, उसकी बुआ थीं। युवक ने भोला का, अपना मित्र, कहकर परिचय कराया, उसकी काफी प्रशंसा भी की।

''चाय लोगे?'' पूछकर बुआ अन्दर रसोई में चली गई। भोला साफे पर बैठ गया और युवक अन्दर चला गया, अपनी बुआ के पास। सटे हुए दूसरे कमरे में दरी के ऊपर साफ चादर पर, वही मन्दिर वाली युवती बैठी थी, एकाग्रचित्त से पुस्तक पढ़ती हुई। बगल में एक के ऊपर एक, करीने से और पुस्तकें भी रखीं थीं। सोफे से सब कुछ साफ साफ दिखाई दे रहा था, कमरे में लगे महापुरुषों के चित्र और पुस्तकों के कवर भी। भोला को अच्छा लगा, चित्रों वाले महापुरुष उसके भी आदर्श थे और पुस्तकें भी उसकी रुचि की ही थीं। वह चाहता था कि युवती कमरे में आये व उससे बातें करे लेकिन युवती ने उसकी कोई ध्यान नहीं दिया, नजरें उठाकर देखा तक नहीं।

''अजीब बात है'' वह सोच ही रहा था कि युवक की बुआ आ गईं, ''इसके दोस्त हो तुम! काफी बातें करता है ये तुम्हारी!'' युवक की तरफ इशारा करके बुआ ने कहा, ''मेरे लिए बिल्कुल इसकी तरह हो तुम, बेटे जैसे! ये तो एकाध दिन में चला जायेगा, तुम, जब भी मौका मिले, आते रहना, इसकी कमी नहीं अखरेगी'' बुआ की आवाज में अपनत्व के साथ अधिकार जैसा भाव भी था।

''जरूर!'' चलने से पहले इतना ही कहा भोला ने, बुआ दरवाजे तक छोड़ने आयी। दूसरे कमरे में बैठी युवती ने खड़े होकर औपचारिकता सी निभाई।

''बुआ जी की बेटी है, रिश्ता पक्का होने वाला है इसका, एक जगह बात चल रही है।'' युवक ने बताया, भोला को कुछ अच्छा नहीं लगा।

दो-चार दिन बाद सैर का साथी युवक अपने शहर लौट गया, भोला युवती के बारे में और कुछ जानना-पूछना चाहता था, लेकिन संकोचवश ऐसा नहीं कर पाया। सप्ताह भर बाद बुआ के घर से भोला के लिए बुलावा आ गया। उसे तो जैसे इसी का इन्तजार था, शाम की सैर करते वहां पहुंच गया।

''भतीजे का सन्देश आया था, तुम्हारी कुशलता पूछ रहा था, लेकिन तुम तो यहां आते ही नहीं'' बुआ ने उसके पहुंचने पर उलाहना दिया, ''सैर छोड़ दी या रास्ता ही भूल गये? यहां अकेले रहते हो, कैसे मन लगता है?'' बुआ ने भोला को काफी देर बिठाये रखा, चाय-नाश्ता लिये बगैर नहीं जाने दिया।

युवती आंगन में पौधों की गुड़ाई कर रही थी, वह वहीं रही, भोला के आने का जैसे उसने खयाल ही नहीं किया। बुआ दरवाजे तक छोड़ने आयीं, युवती से

उन्होंने भोला की तरफ देखते हुए सवाल किया ''क्या काम था तेरा इनके आफिस में? इन्हें बता दे, मदद कर देंगे।''

''कुछ नहीं, अपने आप पता कर लूंगी मैं'' कहते हुए युवती अपना काम करती रही।

''काम करते समय इसे व्यवधान बिल्कुल पसन्द नहीं, पढ़ाई हो चाहे और कुछ। कोई काम बता रही थी ये आपके आफिस में, मैं आज पूछ कर रखूंगी, तुम कल आ जाना, जरूर! इसी रास्ते पर सैर कर लेना, पक्का?'' बुआ ने आश्वस्त होना चाहा।

''ठीक है'' भोला को युवती की ओर से अपनी उपेक्षा अच्छी नहीं लगी, लेकिन अगले दिन आने में उसे कोई हानि भी नजर नहीं आयी। कोई काम होगा, हो सकता है कि मेरी मदद से हो जाये, यह सोचकर अगली शाम वह फिर से उस घर में चला आया। घर में अकेली युवती थी, उसने दरवाजा खोला, ''आइये!'' सोफे की तरफ इशारा कर उसने भोला को बैठने के लिए कहा।

''मांजी कहां हैं आपकी?'' भोला वाक्य पूरा करता कि, ''यहीं पड़ोस में हैं अभी आ रही हैं, पानी लेंगे आप?'' कह युवती दौड़कर पानी ले आयी। बगल के कमरे में कापियों का ढ़ेर रखा था, साथ में लाल-नीले पेन भी, युवती उन्हें उठा कर सोफे वाले कमरे में ले आई और सोफे के सामने नीचे दरी पर बैठ कर कापी जांचने लगीं।

''डिस्टर्ब कर सकता हूं आपको? सुना है काम करते समय आपको डिस्टरबेंस बिल्कुल पसन्द नहीं?'' भोला ने युवती को छेड़ा।

''नहीं तो'' कनखियों से भोला को देख थोड़ा मुस्कुराते हुए युवती धीमे से बोली।

''क्या काम है आपको मेरे आफिस में?'' खाली बैठे भोला ने सीधे सवाल किया।

''कोई खास नहीं'' युवती बोली, ''यही पता करना था कि आपके विभाग में सर्विस में आने के लिए क्या करना होता है।''

''किसके लिए पूछ रही हैं आप? किसे चाहिए सर्विस?'' भोला ने जानना चाहा।

''मैं ही सोच रही थी... अपने लिए'' भोला की तरफ देखे बगैर युवती ने कहा।

''लेकिन लड़कियों के लिए तो ये काम काफी कठिन है, पब्लिक डीलिंग है, ठीक भी नहीं, क्यों चाहती हैं आप इस विभाग में आना?''

''इसलिए कि सेलरी बहुत अच्छी है और फैसलिटीज भी काफी'' युवती ने बताया।

''हां, ये तो है'' भोला ने हामी भरी।

''कितने से स्टार्ट होती है?'' युवती ने जानना चाहा। भोला ने उसे पे स्केल बता दिया। कुल मिला कर कितना पड़ जाता है? सुविधाएं क्या-क्या है? आगे का कैरियर कैसा है? आपको कितना मिल जाता होगा? क्या उससे काम चल जाता है? घर में कौन-कौन हैं? कौन क्या करता है? मकान अपना है या किराये का? कापी जांचते-जांचते बातों-बातों में युवती ने कई ऐसे प्रश्न सहज भाव से कर डाले। भोला ने भी सामान्य भाव से सब के उत्तर दे दिये।

सामने नीचे दरी पर बैठी, नजरें झुकाये काम करती युवती को देखने का भरपूर मौका भोला को मिल रहा था। वह दिखने में सुन्दर थी, सौम्य भी, पहनावा, बात करने का सलीका और सरलता, सब कुछ प्रभावित करने वाला था। बातचीत के क्रम में एक-आध बार दोनों की नजरें मिलीं भी, युवती की आंखों में लज्जा और भोला की आंखों में कुतूहल था। वह कुछ और बातें करना चाहता था, लेकिन संकोच के चलते चुप ही रहा।

शहर में वह परिवार के साथ रहता था, यहां कस्बे में अकेलापन अब अखरने लगा था। रहने और खाने-पहनने से लेकर साफ-सफाई की चिन्ता के साथ, बातें करने के लिए किसी साथी की कमी भी खलने लगी थी, परिवार की ओर से जल्दी शादी करने के लिए दबाव था ही। ठीक से सेटिल होने का समय आ गया है, इस बारे में सोचा जाये, उसक लगने लगा। अब तक किसी लड़की को उसने इस दृष्टिकोण से नहीं देखा था, युवती में अच्छी सम्भावनायें थी लेकिन वह तो अब तक उसकी उपेक्षा ही कर रही थी, सोच कर वह कुछ विचलित सा हो गया।

''यहां लड़कियां बहुत बातें करती हैं आपके बारे में'' युवती ने बीच में आ गई चुप्पी तोड़ी, ''खासतौर पर आपके व्यक्तित्व और स्वभाव को लेकर!''

भोला को भी बातचीत का सूत्र मिल गया, ''अच्छा! क्या-क्या बातें करती हैं वे मेरे बारे में?'' उसने मुस्करा कर उत्सुकता जताई।

''यही कि आप धीर-गम्भीर, कुशाग्र, मेहनती और स्वाभिमानी हैं, आपकी सोच सकारात्मक है और रुचि परिस्औत। यह भी कि आप विचारों से उदार होते हुए भी अपने संस्कारों व परम्परा को प्यार करते हैं।''

''अरे वाह! आपने तो पूरा खाका ही खींच दिया, क्या सचमुच ऐसा सोचती हैं सब?''

''उनकी बातों से तो यही मतलब निकलता है, वे आपको इसी तरह से देखती हैं।''

''और क्या कहती हैं?''

''यह कि बहुत ही खुशकिस्मत होगी वो लड़की जिसे आप पसन्द करेंगे'' युवती ने लजीली मुस्कराहट के साथ भोला को कनखियों से देखा और झट से जीभ काट ली, जैसे कोई बड़ी भूल हो गई हो।

भोला को अन्दर से हलचल भरी गुदगुदी हुई वह कहना चाहता था, 'क्या तुम भी ऐसा सोचती हो?' लेकिन कुछ कह नहीं पाया। उसने बात बदल कर दूसरे तरीके से युवती के मन की थह लेनी चाही, ''आपका तो रिश्ता पक्का हो रहा है ना कहीं?''

''नहीं!'' युवती का चेहरा गुस्से से जैसे लाल हो गया ''मुझे पसन्द नहीं है वहां... मैं तो.....'' कहते-कहते वह एकाएक रुक गई, उसने फिर से जीभ काट ली, ''कुछ नहीं'' कहकर उसने दोनों हाथों से अपना चेहरा ढ़क लिया।

भोला को इस संकेत से कुछ बल मिला ''फिर कौन पसन्द है आपको?'' उसने पूछने का साहस कर दिखाया।

''क्या करेंगे जानकर?'' युवती बेहद शरमा गई, उसकी नजरें नीची ही रहीं। भोला को एकाएक मजाक सूझा, उसे लगा माहौल अच्छा है और मौका भी, वह बुरा नहीं मानेगी ''क्यों मैं भी तो उनमें से एक हो सकता हूं? इतना बुरा तो नहीं'' उसने कुछ हल्के अंदाज से कहा।

युवती ने गरदन ऊपर उठा दी और अपनी सजल आंखें भोला के चेहरे पर टिका दीं। कापी जांचना अब बन्द हो गया था, उसे सहसा विश्वास नहीं हो पा रहा था। ''सचमुच हो सकती हूं क्या मैं इतनी भाग्यशाली? आप गम्भीर हैं? मजाक तो नहीं कर रहे ना?'' उसने मन की गांठ खोलने के साथ सफाई भी मांग ली। लजीला चेहरा अब एकदम खिल चुका था।

''बिलकुल नहीं, मैं सचमुच सीरियस हूं, आखिर मेरा इतना लम्बा इण्टरव्यू लिया है आपने? कुछ तो बात होगी ही? पास या फेल, कुछ तो किया होगा, कोई हर्ज तो नहीं मुझे बताने में?'' भोला ने चुटकी ली।

युवती मुस्कुरा दी, उसका चेहरा और गुलाबी हो गया। फिर से सिर नीचे झुका, थोड़ा संयत हो कर वह बोली, ''इतना आसान है क्या आपको पा लेना, मैं तो रोज भगवान से प्रार्थना करती थी, आपको ....'' बात पूरी न कर वह उठ खड़ी हुई।

भोला का मन बल्लियों उछल गया, अब उसे भी मन की बात कह देनी चाहिए, उसे लगा यह सही मौका है, ''मुझे भी तो ....'' उसने अधूरी बात पूरी की, ''बहुत अच्छी लगती हैं आप। चाहने लगा हूं मैं, पता नहीं कैसे! कब से!''

युवती धीमे से भोला के नजदीक आ गई, ''बहुत अच्छे हैं आप'' कहते हुए झुककर उसने भोला के पैर छू लिये, आंखों में खुशी के आंसू भर गये।

''मैं भी'' भोला ने उसका हाथ पकड़ कर उठा लिया, दोनों खड़े हो गये। मन हुआ कि कस कर लिपट जायें, लेकिन ऐसा कर नहीं पाये, संस्कार व संकोच आड़े आ गये।

मांजी कब की आ चुकी थीं, उन्हें सीधे कमरे में आना ठीक नहीं लगा, दरवाजे के बाहर ही खड़ी रहीं, उन्होंने सब कुछ सुन और समझ लिया था। अन्दर आकर उन्होंने प्यार से भोला के सिर पर हाथ फेरा ''सचमुच ही हमारा बेटा बना दिया है इसने तो तुम्हें!'' भोला ने उठकर उनके पैर छू लिये।

''आपको पाने के लिए मैंने बड़ी कठिन तपस्या की है'' एक दिन युवती ने भोला को बताया, उसने सच जानना चाहा।

''आपके आदर्श, मर्यादा, मूल्यों और मान्यताओं को मानते हुए मैंने आपके अनुकूल बनने की कोशिश की, आपके विचारों व संस्कारों को अपना कर!'' युवती ने बताया।

''लेकिन तुमने मुझ से तो कभी बात भी नहीं की, मेरी तरफ ठीक से देखा तक नहीं, तुम्हारे यहां से रिश्ते की भी किसी ने कोई बात नहीं की।'' भोला ने कुछ हैरानी जताई।

''लड़की की ओर से किसी किस्म की पहल तो आप को सहन ही नहीं थी, आदर्शवादी थे ना! और रिश्ते के तो नाम से भी बिदकते थे! मैंने ही ममेरे भाई को शहर में आपके बारे में, आपकी रुचियों, पसन्द-नापसन्द आदि की जानकारी लेने के बाद उसे यहां बुलाकर आपसे नजदीकी बढ़ाने और घर पर लाने को कहा था, मांजी को भी मैंने सब कुछ समझा दिया था। आसान नहीं था यह सब!'' उसने भोला को छेड़ा ''फिर आपको थोड़ा तरसाना भी तो था।''

''ओह! तो यह थी तुम्हारी तपस्या? सुनियोजित ,सुविचारित और सुमधुर!'' भोला सब कुछ समझ गया। शहर और कस्बे की संस्कृति तो वह जान गया था ''लेकिन यह कैसी संस्कृति है, कहां की?'' वह समझना चाहता था।

''प्रणय की संस्कृति!'' युवती खिलखिलाकर हंस पड़ी ''और आपके संस्कार तो मेरे पहले ही अपने बन चुके हैं, मन से आपकी हो कर। बाकी के संस्कार तो समय, स्थान व परिस्थिति बनाते हैं'' युवती ने बड़ी सरलता से कह डाला।

भोला हैरान था, थोड़ी देर युवती की तरफ एकटक देखने के बाद उसने उसे छेड़ा ''और क्या-क्या होता है प्रणय की संस्कृति में?'' युवती का हाथ पकड़ कर उसने अपनी दोनों हथेलियों के बीच ले लिया।

अपना दूसरा हाथ भोला के होंठों पर रख कर ''ऊं..हूं! पहले शादी याने सबसे बड़ा संस्कार, याने विधिवत् पाणिग्रहण! यही कहती है ना हमारी संस्कृति?'' युवती ने धीमे से अपना हाथ छुड़ाने प्रयास किया।

''और संस्कार भी! लेकिन निभाना बहुत कठिन है'' भोला ने उसे अपनी ओर खींच कर आंखें झपझपाईं ''मैंने भी तो तपस्या की है तुम्हें पाने के लिए!''

''कैसे?'' गोल गोल आंखें कर युवती ने पूछा।

''मन ही मन तुम्हें चाह कर'' भोला मुस्कुराया।

''यह कौन सी तपस्या हुई?'' युवती ने भोला के सीने पर सिर टेक दिया।

''सौम्य तपस्या!'' भोला की बांहों का घेरा थोड़ा और कस गया, ''तुमने सौम्या बन जो साधना की है उसका उत्तर तो बस ऐसा ही हो सकता है।''

अपराध का बोझ

दो तरफ से मित्र देशों की सीमा से सटे खूबसूरत पहाड़ी स्टेशन की तलहटी में बसे शहर में जनवरी के पहले सप्ताह में सुबह का उजाला इतना नहीं होता कि रेल के डिब्बे के बल्ब की रोशनी में कोई किताब पढ़ी जा सके लेकिन सामने बैठे सज्जन पढ़ने में तन्मय थे। छोटा कद, कोई चालीस पैंतालीस की आयु, सिर पर काफी कम बाल और लेनिननुमा दाढ़ी देख बल्लभ ने अनुमान लगाया कि हो न हो, वे कोई बुद्धिजीवी होंगे। मंगोल चेहरा और छोटी आंखे देख कर उनके नेपाली या तिब्बती मूल के होने का भी आभास हो रहा था। उस कूपे में केवल वे दोनों ही थे, डिब्बे में भी भीड़ नहीं थी। ट्रेन को चले हुए लगभग डेढ़ घण्टा हो चुका था, बाहर हल्की रोशनी तो थी लेकिन धुंध के कारण कुछ देखा नहीं जा सकता था। बल्लभ अकेले बोर हो रहा था, सामने वाले सज्जन पढ़ने में मगशूल थे। वह कुछ बात करना चाहता था लेकिन उन्हें डिस्टर्ब करना ठीक नहीं था।

रेल की गति धीमी होने लगी थी, बल्लभ ने अनुमान लगाया कि शायद कोई स्टेशन आने वाला है। सामने वाले सज्जन ने किताब बन्द कर बगल में रख दी। बल्लभ उनकी ओर देख कर मुस्कुराया ताकि परिचय का सिलसिला शुरू हो सके।

''लो आ गया तस्करों का गढ़!'' सामने वाले सज्जन बड़बड़ाये, फिर अचानक जैसे कुछ याद आ गया हो, ''आप परेशानी में पड़ सकते हैं'' वे बल्लभ से बोले ''कोई पूछे तो इस गट्ठर को अपना मत बता देना'' बल्लभ के बगल में रखे हुए गट्ठर की ओर इशारा करते हुए उन्होंने कहा।

''क्यों? बल्लभ को आश्चर्य हुआ।

''इसमें रखी शालें विदेशी हैं और तस्करी करके लायी गयी हैं'' सज्जन ने बल्लभ को फिर चौंकाया।

''लेकिन मैंने तो इन्हें खरीदा है।'' बल्लभ उलझन में पड़ गया।

''आपके पास किसी दुकान की कोई रसीद नहीं है। वैसे भी एकाध होती तो चल जाता लेकिन ये तो पूरी बीस हैं। कोई सफाई काम नहीं आयेगी। इन्हें अपना न मानने में ही भलाई है।'' सज्जन ने बल्लभ को भयभीत कर दिया। वह परेशान हो गया। सामने वाले को कैसे पता चला कि गट्ठर में शालें हैं, और वह भी ठीक बीस। इनका तस्करी से क्या सम्बन्ध! उसने तो इन्हें फेरी

वाली लड़कियों से खरीदा है। सामने वाले व्यक्ति की शालों को हड़पने की कोई चाल तो नहीं है, उसे सन्देह हुआ, लेकिन सज्जन के व्यक्तितत्व ने इस सोच पर रोक लगा दी। प्रश्नवाचक दृष्टि से बल्लभ ने सज्जन की ओर देखा। ''घबराईये नहीं!'' सज्जन ने बल्लभ को विश्वास दिलाया ''गट्ठर आपका ही है और शायद आपका ही रहेगा लेकिन अगर बीच में चैकिंग हो गयी तो गट्ठर को बचाने की जगह आपको खुद को बचाना पड़ सकता है, इसलिए सावधान किया।'' वे बोले।

ट्रेन रुक गयी थी। एक मित्र देश की सीमा के पास स्थित यह स्टेशन बेहद छोटा था, नीचा प्लेटफार्म, छोटी लाईन (मीटर गेज) की पटरी के एक ओर तीन पुराने कमरे और दोनों ओर बीच बीच में टूटी हुई थोड़ी सी रेलिंग, जिसमें से लोग आसानी से आ-जा सकते थे। प्लेटफार्म के दूसरी ओर से भरे हुए लम्बे बोरे लिए लोग दौड़े आ रहे थे, कुछ इन्हें ट्रेन के अन्दर खींच रहे थे। तीन-चार मिनट रुकने के बाद ट्रेन चल पड़ी, बोरे खींचने वाले लोगों ने अपने पास से लम्बे-लम्बे पेंचकस निकाले और ट्रेन के दोनों ओर के पैनल खोल, बोरों के अन्दर का सारा सामान उनमें से निकाल कर, डिब्बे की बाहरी दीवार के अन्दर के खाली स्थान में भर दिया। ये इलेक्ट्रॉनिक सामान था, टेप, घड़ियाँ, खिलौने और ऐसी ही वस्तुएं इसमें रख कर पैनल को फिर से ऊपर कस दिया गया। बल्लभ सारे माजरे को फटी आँखों से देख रहा था, सज्जन मुस्कुरा रहे थे।

आधा पौने घण्टे बाद ट्रेन रुक गयी। ट्रेन के दोनों ओर किसी अर्धसैनिक बल के जवान खड़े थे, जैसे छापा मारने वाले हों, लेकिन ऐसा कुछ नहीं हुआ। ट्रेन के डिब्बे में एक इंस्पेक्टर चढ़ा, वह जैसे किसी को ढूंढ रहा हो। एक मोटी महिला उसके पास आई, ब्लाऊज में से कुछ रुपये निकाल कर उसने इन्सपेक्टर की मुट्ठी में रख दिये, उसने रुपये गिने और नीचे उतर गया। उसके उतरते ही ट्रेन चल पड़ी। ट्रेन के चलते ही फिर से पैनल खोल लिये गये, अन्दर से सारा सामान निकाल कर फिर से बोरों में भर दिया गया। आधा पौने घण्टे बाद ट्रेन दूसरे राज्य में प्रवेश कर एक छोटे से स्टेशन पर रुक गयी। बोरे तेजी से नीचे धकिया दिये गये, इन्हें लपकने वाले वहाँ पहले से ही तैनात थे। दो तीन मिनट के ठहराव के बाद ट्रेन फिर आगे बढ़ गयी।

इस पूरी कार्यवाही के दौरान बल्लभ चुप रहा और वे सज्जन भी कुछ नहीं बोले। इस चुप्पी को सज्जन ने तोड़ा ''लीजिए, बच गया आपका गट्ठर। बल्लभ ने चैन की सांस ली, उसने जानकारी देने और सावधान करने के लिए सज्जन का आभार जताया लेकिन गट्ठर के अन्दर के सामान की जानकारी

सज्जन को कैसे थी, इसका उत्तर नहीं मिल पाया। संकोच कुछ हट चुका था, बल्लभ पूछ ही बैठा।

''मैं भी आपके वाले होटल में ही ठहरा था, ठीक बगल वाले कमरे में, आपका शौलें खरीदने वाला दृश्य बालकनी से साफ-साफ दीख रहा था।'' सज्जन एक आँख दबा कर मुस्कुराये, बल्लभ लज्जा सा गया।

एक दिन पहले की घटना बल्लभ की आंखों के सामने घूम गई। छः-सात घंटे की दूरी पर स्थित एक केन्द्र पर कार्यालय के काम से रुकने के कारण सप्ताहांत बिताने और इस पहाड़ी स्टेशन को देखने की उत्सुकता के चलते वह यहां आया था। होटल वैसे तो काफी महंगा था लेकिन ऑफसीजन के चलते निर्धारित किराये से लगभग चौथाई में कमरा मिल गया। इस कमरे की बालकनी संकरी सी सड़क की ओर खुलती थी जहां से पहाड़ी का नजारा तो नहीं दिखता था लेकिन सड़क की चहल पहल सुंदर लगती थी। गोरखा और तिब्बती संस्कृति के मिले जुले रूप के साथ कुछ बंगाली झलक भी वहां से दिखाई दे जाती थी।

बल्लभ शनिवार की रात इस पहाड़ी स्टेशन पर पहुँचा था, रविवार की सुबह सुहावनी थी। पहली चाय तो उसने बिस्तर पर ही ले ली, लेकिन दूसरी चाय लेकर वह बालकनी में चला आया। नीचे अच्छी खासी आवाजाही थी, ठीक सामने, सड़क के किनारे, पटरी पर तिब्बती वेशभूषा में पाँच-छः सुंदर युवतियाँ बगल में शालों के गट्ठर लिये बैठी थीं, उनके साथ एक वृद्ध महिला भी थी। बल्लभ के बालकनी में आते ही युवतियों ने खड़े होकर एक-एक कर बल्लभ का अभिवादन किया। उनकी मुस्कुराहट में जादू था, भंगिमायें मोहिनी और अंग-अंग से लावण्य टपक रहा था।

''शाल ले लीजिए सर !'' उनमें एक की आवाज आई।

''प्लीज सर!'' दूसरी ने साथ दिया।

''ले लीजिए सर प्लीज!'' तीसरी व चौथी ने भी अनुरोध किया। युवतियों की आवाज में मिठास थी, चीनी बालाओं जैसा उनका हिन्दी उच्चारण अपनत्व बिखेर रहा था। बल्लभ ने उपेक्षा करनी चाही, खरीददारी करना उसके कार्यक्रम में सम्मिलित नहीं था। उसने बालकनी से मुड़कर पीछे कमरे के अन्दर जाना चाहा लेकिन ऐसा नहीं कर पाया। युवतियों के सम्मोहन ने उसे वहीं खड़ा रखा।

युवतियों का अनुरोध जारी था, उनका आग्रह बढ़ता ही जा रहा था जिसकी अनदेखी कर पाना सरल नहीं था। बल्लभ ने युवतियों से होटल के अन्दर आने को कहा ताकि वह वह शालें देख सके। युवतियों ने ना में सिर

हिला दिया कि होटल वाले अनुमति नहीं देंगे। उसने फोन से रिसेप्शन पर बात की, उन्होंने सहमति नहीं दी। इरादा जाहिर हो जाने के कारण वह शालें देखने होटल से निकल बाहर सड़क पर आ गया।

''ये देखिये सर! ये वाली देखिये सर!'' एक युवती ने कई सारी शालें बल्लभ के सामने फैला दीं।

बल्लभ ने दर पूछी, युवती ने साढ़े तीन सौ रुपये बताये, भाव ताव के बाद तीन सौ रुपये में एक शाल लेना तय हो गया।

''एक और ले लीजिए सर! इतने में ही लगा दूंगी।'' युवती ने मुँह बल्लभ के पास लाकर विशेष आग्रह किया। बल्लभ ने दो शालें ले कर उसे छः सौ रुपये थमा दिये।

बल्लभ पर्स जेब में रख भी नहीं पाया था कि दूसरी युवती सामने आ गयी, ''सर! सर! सर! मेरी बोहनी भी करा दीजिए। प्लीज सर! सस्ता लगा दूंगी।'' उसने बल्लभ पर अधिकार सा जता कर आग्रह किया।

''ठीक है, एक दे दो'' बल्लभ ने पीछा छुड़ाना चाहा।

''सर तीन ले लीजिए, ढ़ाई सौ के भाव से दे दूंगी।'' वह पीछे पड़ गयी। प्रस्ताव जंच जाने से बल्लभ ने उसे 750/- रुपये दे कर तीन शालें ले ली। उससे पीछा छुड़ाया ही था कि एक और युवती ने उसकी राह रोक ली।

''सर! मेरी भी बोहनी करा दीजिए दो सौ के रेट से दे दूंगी, लेकिन चार शालें लेनी होंगी।'' उसने प्रलोभन दिया।

''लेकिन इतनी शालों का मैं करूंगा क्या?'' बल्लभ ने परेशानी जताई।

''सर! लोगों को भेंट कर देना, सब खुश हो जायेंगे।'' युवतियां हार मानने को तैयार नहीं थी। अब कुछ कुछ घेराव जैसा हो गया था, बिना खरीदे निकलना सम्भव नहीं था। जान छुड़ाने के लिए बल्लभ ने आठ सौ रुपये देकर चार शालें ले लीं।

शालें बेचने के लिए अब भी दो युवतियाँ बची थीं। शालें बेच चुकी चारों युवतियों ने उनके लिए भी अनुरोध किया।

''इनकी बोनी भी करा दीजिए, सर!'' उन्होंने एक साथ कहा।

''मेरे पास पैसे खत्म हो गये हैं, अब नहीं हैं।'' बल्लभ ने मजबूरी दिखाई ।

''हैं सर! हमने आपका पर्स देख लिया है। उसमें खूब पैसे हैं, हम कोई मुफ्त में थोड़े ही मांग रही हैं।'' बची युवतियों में से एक बोली। बाकी युवतियाँ बल्लभ से सट सी गयीं।

''डेढ़ सौ के रेट से पाँच शालें लेनी होंगी।'' युवती ने प्रस्ताव किया। सम्मोहित

से बल्लभ के पास जैसे कोई चारा ही नहीं था। साढ़े सात सौ रुपये दे कर पाँच शालें पसन्द कर लीं।

''अब मैं ही बची हूँ, सर!'' सबसे सुन्दर युवती ने जैसे बाहें फैला दीं ''आशा है आप मुझे निराश नहीं करेंगे। सौ के हिसाब से दे दूंगी, बशर्ते छः ले लें, आपने सबकी बोनी कर दी। आज हम सब का दिन अच्छा जायेगा। शौलें दे दूँ, सर?'' उसने अधिकार पूर्वक कहा और छः शालें बल्लभ के पास रखी शालों के साथ रख दीं। बल्लभ ने पर्स से रुपये निकाल कर छः सौ गिन दिये। उसने साथ बैठी वृद्धा की ओर देखा कि क्या उसे भी कुछ बेचना है? वृद्धा ने नमस्कार मुद्रा में हाथ जोड़ कर सिर झुकाते हुये शालों का गट्ठर बांधने के लिये एक कपड़ा उसकी ओर बढ़ा दिया। उसने इसके बदले पैसे लेने से इन्कार कर दिया, बस मुस्कुरा दी। युवतियाँ बाय बाय कर मुस्कुराते हुए एक ओर चल दीं।

कमरे में आकर बल्लभ ने हिसाब लगाया, उसने बीस शालें ले ली थीं और जेब से साढ़े तीन हजार रुपये युवतियों के हवाले कर दिये थे। सभी शालें एक जैसी थीं व उसे एक शाल औसत पौने दो सौ रुपये की पड़ी थी।

तैयार होने के बाद बल्लभ टहलने के लिए बाजार में आ गया था। जाते हुए हुए तो उसने ध्यान नहीं दिया लेकिन लौटते हुए देखा कि संकरी सड़क के बाहर मुख्य सड़क पर दुकानों के आगे कपड़े लटके हुए थे। इनमें वैसी शालें भी थीं जैसी उसने युवतियों से खरीदी थीं। शालों पर 70/- रुपये की पर्ची लगी हुई थी। उसने हिसाब लगाया, दुकानों से इतनी शालें 1400/- रुपये में मिल जातीं, युवतियों से खरीद में उसे ढाई गुना कीमत देनी पड़ी। उसे दुःख हुआ कि युवतियों ने उसे अपने मायाजाल से ठग लिया था।

''कहां खो गये?'' सज्जन ने बल्लभ को झकझोरा।

''ठग थीं वे!'' बल्लभ ने सज्जन के सामने खीज प्रकट की। अपनी मोहिनी अदाओं से सस्ती शालें महंगे में भिड़ा दीं, ठगी के कैसे कैसे तरीके इजाद कर लिये हैं।''

सज्जन मुस्कुरा दिये ''जब आपने पहली शाल खरीदी थी तब अन्दाज तो लगाया ही होगा कि शालें कितने तक की हो सकती हैं?'' उन्होंने बल्लभ की ओर देखा।

''तब तो ठीक जंच रही थी कि उतने की ही होगी।'' बल्लभ ने उत्तर दिया।

''बाकी की शालें आपने उससे भी सस्ती, बल्कि काफी कम कीमत में खरीदीं!'' सज्जन ने पुष्टि चाही ''और सबका औसत मूल्य पहली शाल के लिए बताये गये मूल्य से आधा पड़ा?''

''हाँ।'' बल्लभ ने सहमति जताई।

''तो ठगी कैसे हुई?'' सज्जन ने जानना चाहा।

''बाजार में इसका असली मूल्य बेहद कम है।'' बल्लभ ने बताया।

''तो आपका मानना है कि आप ठगी का शिकार हुए हैं, युवतियों ने आपको अपने लावण्य के मायाजाल में फंसा लिया?'' सज्जन ने बल्लभ की प्रतिक्रिया जाननी चाही।

''बिलकुल यही हुआ'' बल्लभ ने सहमति जताई।

''यदि आप चाहे तो यहाँ इन शालों का मूल्य काफी अधिक मिल सकता है। प्रति शाल पांच सौ रुपये तक। किसी से बात करूं? सज्जन ने प्रस्ताव किया। बल्लभ चुप रहा। उसकी मौन स्वीकृति मान कर सज्जन ने ट्रेन में घूमते एक युवक को पास बुला कर उससे बात की। वह प्रति शाल चार सौ रुपये देने को तैयार हो गया। सज्जन ने बल्लभ की ओर देखा। सज्जन कुछ ही मिनट पहले उसे बता चुके थे कि यहां पांच सौ तक मिल सकते हैं, यह ध्यान में आते ही, थोड़ा और मिल जाये तो अच्छा, यह सोचकर बल्लभ ने जोड़ा कि इतने में तो नहीं दे पायेगा। भाव ताव के बाद साढ़े चार सौ रुपये प्रति शाल पर सौदा तय हो गया।

''एक दो शालें अपने लिए नहीं बचायेंगे?'' सज्जन ने बल्लभ से पूछा।

''हाँ, यह ठीक रहेगा।'' बल्लभ ने दो शालें रोक लीं।

खरीददार ने सौ सौ के तीस नोट व पचास रुपये की एक गड्डी के रूप में आठ हजार रुपये दे कर बल्लभ से शालें खरीद लीं।

''इससे बड़े नोट नहीं हो पायेंगे?'' बल्लभ ने खरीददार से पूछा।

''देखता हूँ'' कह कर खरीददार पचास की गड्डी उससे लेकर बड़े नोट लेने चला गया। शालों का गट्ठर बल्लभ के बगल में ही रखा रहा।

बल्लभ को साढ़े चार हजार रुपये का लाभ हो गया था, साथ ही दो शालें भी बच गयी थीं। ट्रेन अपने रास्ते पर बढ़ती रही।

''बधाई!'' सज्जन ने बल्लभ की ओर देखा, ''आप अच्छे व्यापारी हैं!'' वह बोला।

''मैं व्यापारी नहीं, एक अच्छी सेवा का अधिकारी हूँ।'' बल्लभ ने संशोधन किया।

''तो आपने शालें क्यों बेचीं?''

''इतनी सारी का क्या करता? मुझे जबरदस्ती भिड़ा दी गयी थीं।'' उसने तर्क दिया।

''और आपने मुनाफा क्यों कमाया?'' सज्जन ने कुरेदा।

''जितने में वह खरीदने को तैयार था, उतने में ही दीं। उसने भी भाव ताव करके ली, मैंने कोई जबरदस्ती नहीं की।'' बल्लभ ने सफाई दी।

''आपको नहीं लगता कि विदेश से तस्करी कर लाया गया सामान आपने सस्ते में खरीद कर महंगे में बेच दिया?'' सज्जन ने छेड़ना जारी रखा। बल्लभ के पास स्पष्ट उत्तर नहीं था, वह चुप रहा।

''तस्करी करना अपराध है। व्यापार कर दिये बिना क्रय विक्रय करना भी अपराध है। लाभ से प्राप्त आय को छुपाना भी अपराध है। वस्तु की वास्तविकता व गुणवत्ता जाने बगैर केवल लाभ के लिए किसी को बेच देना भी अपराध है, धोखाधड़ी है और यह सारे अपराध आपसे हो गये हैं।'' सज्जन ने बल्लभ को अपराधी जैसा ठहरा दिया। उसने जानबूझ कर कुछ नहीं किया था, सब कुछ परिस्थितिवश हो गया था लेकिन यह भी सच था कि लाभ उसकी जेब में था और सज्जन का कथन भी झूठ नहीं था। उसे कुछ अपराधबोध जैसा होने लगा, कुछ न कह उसने कंधे उचका दिये।

दोनों के बीच थोड़ी देर के लिए चुप्पी छा गयी जिसे सज्जन ने तोड़ा, ''यहां के बौद्ध धार्मिक स्वभाव के होते हैं,'' वे बोले, ''ठगी जैसी बातों से वे प्रायः दूर ही रहते हैं,'' बल्लभ ने प्रश्नवाचक दृष्टि से उनकी ओर देखा कि वे क्या कहना चाहते हैं।

''सुबह की बोहनी इन लोगों के लिए काफी मायने रखती है, इस समय वे ग्राहक को जाने नहीं देते, चाहे बिना मुनाफे के भी सामान क्यों न बेचना पड़े। मुनाफे की भी वे एक अधिकतम सीमा रखते हैं, इससे ऊपर नहीं लेते। युवतियाँ अपने विवाह के लिये धन स्वयं जुटाती है इसीलिये फेरे पर सामान बेचती हैं। वे अकेले नहीं, समूह में ही चलती हैं और कोई बुजुर्ग महिला उनके साथ होती है जो यह देखती है कि उनके साथ कोई दुर्व्यवहार न हो, और वे भी अपनी मर्यादा के बाहर जाकर अनैतिक लाभ न लें।

बल्लभ ने उलझन भरे अन्दाज में सज्जन को देखा, जैसे पूछना चाह रहा हो कि फिर मुझे क्यों ठगा गया, दुकानों में तो बहुत कम मूल्य पर वैसी शालें मिल रही थीं लेकिन वह चुप ही रहा। सज्जन बल्लभ की मनोदशा भांप गये।

''दुकानों वाले इन युवतियों से परेशान रहते हैं क्योंकि ये युवतियाँ कुटीर उद्योग के रूप में अपने घरों में बनी शालें आदि वस्तुएं कम रेट पर दे देती हैं जबकि दुकानों पर इनका मूल्य कई गुना वसूला जाता है। इनको हतोत्साहित करने के लिए ये लोग इनकी कुछ डिफेक्टिव वस्तुओं को अपनी दुकानों में टांग कर बेहद कम मूल्य की पर्चियाँ लगा देते हैं, लेकिन ऐसा ये केवल रविवार को दोपहर बाद ही करते हैं। जब लोग पैकिंग कर चुकने के बाद पहाड़ी शहर से

लौटने लगते हैं। खरीदने वालों को ये दुकानदार इनके डिफेक्टिव होने व स्टॉक में न होने की बात कह कर टरका देते हैं, इन वस्तुओं को बेचते नहीं। दुकानदारों की कोशिश रहती है कि इन युवतियों से सामान खरीदने वाले जाते समय 'युवतियों द्वारा ठगी का शिकार हो गये' जैसी भावना लेकर जायें ताकि वे अन्य लोगों को ऐसी युवतियों से सावधान रहने का प्रचार करें। होटल वाले लोग भी इन दुकानदारों से मिल जाते हैं, इसीलिए इन युवतियों से दूरी बनायी जाती है। जिस कारण इन्हें अपना सामान बेचने के लिए कड़ा परिश्रम करना पड़ता हैं। ये युवतियाँ ठग नहीं, स्वाभिमानी युवतियाँ हैं जो अपना रूप व सौन्दर्य नहीं, श्रम व कला बेचती हैं।'' सज्जन कुछ भावुक से हो गये।

बल्लभ ने सज्जन की बात बहुत ध्यान से सुनी। सारी परिस्थितियाँ देखते हुए उनकी बातें सच लग रही थीं। वह युवतियों को गलत समझ रहा था लेकिन फिर भी इतना तो सच था कि युवतियों ने योजना बना कर एक-एक कर अपनी शालें उसे बेची थीं। वह कुछ कहना चाहता था कि सज्जन फिर बोल पड़े ''युवतियों ने कोई लज्जाजनक व्यवहार नहीं किया था। वे सरल और निश्छल थीं, उनका रूप और यौवन स्वाभाविक है, इतना जरूर है कि उन्होनें कोई घूंघट या पर्दा नहीं किया था या बुरका नहीं पहना था। न तो उनकी मुस्कुराहट बनावटी थी और न ही अपनापन। उनका आग्रह भी विनम्र था। आप उनके आकर्षण में खिंचे चले गये तो यह आपकी कमजोरी है, उनका दोष नहीं। आप एक से खरीदने के बाद रुक भी सकते थे, लेकिन उनका साथ आप ही नहीं छोड़ना चाहते थे। आप अपने मन से हार रहे थे, उनके किसी मायाजाल से नहीं।'' सज्जन ने उसे झकझोर कर रख दिया।

बल्लभ असहज हो गया, सज्जन से आंखें मिला पाना कठिन हो रहा था। वह युवतियों को ठग ठहरा रहा था लेकिन परिस्थितियों ने युवतियों को न केवल निर्दोष सिद्ध कर दिया था बल्कि सारा दोष उसी का निकल आया था। उस पर युवतियों के प्रति आसक्ति का दोष ही नहीं, लोभी, तस्कर और ठग बन जाना भी इंगित हो गया था। अपराधबोध गहराता जा रहा था। हृदय क्षोभ से भरने लगा था और जेब में रखे मुनाफे के रुपये अन्दर से चुभने लगे थे। कुछ देर पहले तक वह स्वयं को सीधा व सरल मान रहा था और शालें बेचे चुकने के बाद चतुर भी, लेकिन अब उसे समझ नहीं आ रहा था कि क्या कहे और क्या करे।

''आप सही कर रहे हैं, यह सब अपराध है, भले ही जानबूझ कर न हुआ हो'' मरी सी आवाज में बल्लभ ने कहा ''लेकिन गलती मुझ से हो ही गई है।''

सज्जन ठहाका मारकर हंस पड़े और काफी देर तक हँसते रहे। वह

माजरा नहीं समझ पाया, सज्जन के चुप होने तक उनकी ओर देखता रहा। इसी बीच शालों के खरीददार ने बल्लभ से पचास रुपये वाली गड्डी लेकर पाँच-पाँच सौ के दस नोट उसे पकड़ा दिये।

''ठीक से देख लीजिये, कोई नकली न हो, इधर यह भी खूब होता है'' सज्जन ने बल्लभ को आगाह किया। इससे पहले कि बल्लभ नोटों को ध्यान से देखता, खरीददार युवक उसके हाथ से नोट छीन कर भाग गया। शालों वाला गट्ठर वहीं रखा रह गया था, तीन हजार रुपये बल्लभ की जेब में पहले ही आ चुके थे। सामने वाले सज्जन मुस्करा दिये, बल्लभ ने उनका आगाह करने के लिए उनका आभार जताया। धीमी रफ्तार से चल रही ट्रेन अचानक रुक गई। कोई छोटा स्टेशन आ गया था, स्थानीय सी दिखने वाली दो युवतियाँ उनके कूपे में बैठ गईं। एकाध मिनट के बाद ट्रेन फिर से चल पड़ी। बल्लभ प्रतीक्षा कर रहा था कि सज्जन कुछ बोलें लेकिन वे बाहर की ओर देख रहे थे। बात का सिलसिला शुरू करने के लिए बल्लभ ने ही पहल की।

''अब इनका क्या करें?'' शालों की तरफ इशारा करते हुए उसने सज्जन से पूछा। ''साथ ले जाइये! पैसे तो आपको मिल चुके हैं लेकिन शालें फिर भी आपके पास ही रहना चाहती हैं'' सज्जन नें मजाक किया। कूपे में युवतियाँ आमने सामने बैठी थीं, एक बल्लभ के बगल में और दूसरी उसके सामने, वे धीमी आवाज में मुस्कुराते हुए एक दूसरे से बातें कर रही थीं, बीच-बीच में कनखियों से बल्लभ की ओर देख लेतीं। बाहर अच्छी धूप निकल आयी थी और कूपे में खूब रोशनी भी हो गई थी लेकिन सज्जन ने दोबारा किताब नहीं खोली।

''यहाँ पर आकर अखबार मिलता है, लेकिन बाहर जाकर लेना पड़ता है।'' सज्जन ने बल्लभ को बताया ''नाश्ते के समय टहराव के कारण लोग खूब खाते-पीते भी हैं। ट्रेन यहां काफी देर रुकती है, स्टेशन आने वाला ही होगा।'' कुछ देर बाद स्टेशन भी आ गया। सज्जन अखबार लेने नीचे उतर गये। सिंगल लाइन होने के कारण ठेलियों पर ट्रेन के दोनों ओर सामान बिक रहा था।

युवतियाँ खुसर पुसर कर रही थीं, आपस में 'तू जा! नहीं, तू जा!' एक दूसरे से कह रही थीं।। अचानक उनकी कुछ सलाह सी बनी और दोनों बल्लभ की ओर मुड़ गयीं।

''एक्सक्यूज़ मी'' उनमें से कुछ तेज सी लगने वाली युवती ने बल्लभ से पूछा, ''क्या आप नाश्ता नहीं करेंगे?''

''नहीं, आप यह क्यों-पूछ रही हैं?'' बल्लभ ने जानना चाहा।

''इसलिए कि अगर आप नाश्ता करने बाहर जा रहे हों तो हमारे लिए भी ले

आयें।'' उन्होंने कारण बताते हुए कुछ आग्रह करने जैसी मुद्रा बना ली। बल्लभ ने उनकी बात रख ली, वह नाश्ता लेने के लिए नीचे उतर गया। बल्लभ नाश्ता पैक करवा ही रहा था कि ''भाई साहब! भाई साहब!'' सज्जन के जोर से चिल्लाने की आवाज आ गई, वे ट्रेन के दूसरी तरफ थे। नाश्ता वहीं छोड़, बल्लभ ने ट्रेन में चढ़कर ट्रेन के दूसरी ओर देखा, सज्जन दोनों युवतियों में से एक को पकड़े हुए थे, उसके हाथ में शालों वाला गट्ठर था, दूसरी युवती उसे छुड़ाने की कोशिश कर रही थी। इससे पहले कि कोई माजरा समझ पाता या भीड़ जुड़ती, बल्लभ वहाँ जाकर दोनों युवतियों को वापिस ट्रेन पर ले आया।

सज्जन बेहद गुस्से में थे, वे युवतियों को पुलिस को सौंपने के पक्ष में थे। बल्लभ ने युवतियों को धैर्य दिलाया और पूरी बात बताने को कहा। युवतियों के आँसू बहने लगे, उन्होंने बताया कि वे ठीक-ठाक परिवारों से हैं, बल्लभ और सज्जन की बातों से लगा कि शालें फालतू हैं, उसे इनकी जरूरत नहीं है और इनसे छुटकारा चाहता है। बस लालच में आकर उन्होंने मौके का फायदा उठाना चाहा, वे चोर नहीं हैं। सज्जन युवतियों की बातों से सहमत नहीं थे, वे उन्हें चोर ठहराने पर आमादा थे लेकिन बल्लभ को उनकी बात पर विश्वास हो गया। उसने मन ही मन कुछ निर्णय लिया।

''ये चोर नहीं हैं,'' बल्लभ ने सज्जन को अपना मत दिया ''ये चाहतीं तो मेरा सूटकेस ले जा सकती थीं, यह नया है और महंगा भी'' उसने सज्जन की ओर देखा और शालों वाला गट्ठर युवतियों की ओर बढ़ाते हुए कहा ''लो ये तुम्हारी हुईं,'' युवतियाँ उसके पैरों पर गिर पड़ीं, बल्लभ ने शालें उन्हें दे दी। सज्जन यह सब आश्चर्य से देखते रहे। युवतियाँ वहाँ से किसी और कूपे में चली गयी। सज्जन परेशान थे, उनके द्वारा कही गयी बातें अब उन्हें स्वयं ही खल रही थीं। ट्रेन से उन्हें अभी कुछ दूर और यात्रा करनी थी।

''शालें मैंने रूप और यौवन में फँस कर नहीं दीं'' बल्लभ स्वयं पर व्यंग करते हुए मुस्कुराया, ''यद्यपि प्रवृतियाँ स्वाभाविक हैं, मनुष्य से लेकर पशु तक के लिए इनके आकर्षण से बचना सरल नहीं है।'' वह हल्का फुल्का अनुभव कर रहा था।

''मैं समझ रहा हूँ, यहाँ मुझे अपनी धारणा बदलनी पड़ रही हैं। निश्चित तौर पर आप स्वार्थी नहीं हैं, बल्कि सरल व्यक्ति हैं जो किसी का ना नहीं कर सकते। आग्रह को ठुकराना आपके लिए काफी कठिन है। आप सहज ही दूसरों पर विश्वास कर लेते हैं, अपनी गलती को तुरन्त स्वीकार लेते हैं और सुधार के लिए तैयार रहते हैं।'' सज्जन ने बल्लभ के व्यक्तितत्व का खाका जैसा खींच दिया, ''हमारे चारों ओर जैसा वातावरण है, उसमें ऐसा बनना बहुत कठिन

है। नेता, अफसर, ठेकेदार, सभी भ्रष्टाचार में लिप्त हैं। कोई टैक्स चोरी करता है, कोई रिश्वत लेता है, कोई घपले–घोटाले करता है, ये सभी चोरी चकारी और लूट खसोट के ही तो रूप हैं। जिसकी जड़ में लोभ, मोह और स्वार्थ हैं। हर किसीको अधिक से अधिक पाने और जमा करने की भूख है, इसकी दौड़ सी लगी है। सब ओर ऐसे ही लोग दिखायी देते हैं, इसीलिए आपके बारे में भी ऐसा ही सोचा। इसका मुझे दुख है, लेकिन सन्तोष इस बात का है कि आप ऐसे नहीं है।'' उन्होंने बल्लभ की ओर देखा। बल्लभ अपराधबोध से मुक्त हो चुका था, उसने अपने को तरोताजा महसूस किया। सज्जन अभी कुछ और कहने के मूड़ में थे।

''आप में कुछ बात अवश्य है, यहां के लोग सुबह की बोनी के ग्राहक को सावधानी पूर्वक चुनते हैं, उन्हें पोजेटिव रेंज वाले लोगों की पहचान है और इसका आभास हो जाता है। शालें बेचने वाली युवतियों को विश्वास था कि आप उनका आग्रह अवश्य मानेंगे। युवतियाँ भले ही अलग अलग हों, हिसाब सबका साझा होता है, इसीलिए वे शाल की कीमत एक सीमा तक घटाती चली गयीं कि आपको औसत मूल्य कम ही पड़े। फर्जी नोट चलाने वाला अपने ही रुपये छोड़ कर भाग गया और चोरी करने वाली युवतियाँ चरणों में आ गयीं। आपसे कोई पार नहीं पा सका।'' उन्होंने बात पूरी की और फिर किताब खोल ली।

थोड़ी सी देर के बाद युवतियाँ अचानक फिर से कूपे में आ गयीं। उनके पास दोने में गरमागरम पकोड़े थे और कुल्हड़ में चाय। चाय और पकोड़े बल्लभ व सज्जन को थमा कर वे फिर से चली गयीं और शालों वाले गट्ठर के साथ वापस लौट आयीं।

''हमने बहुत सोचा, ये शालें हम नहीं रख पायेंगी।'' उनमें से एक बोली।

''लेकिन मैं तो ये आपको दे चुका हूँ, अब इनसे मेरा कोई लेना देना नहीं है।'' बल्लभ ने सरल अन्दाज में कहा।

''ठीक है, लेकिन आपको हमारा एक निवेदन मानना पड़ेगा'' युवती बोली।

''क्या?'' बल्लभ ने जानना चाहा।

''यह कि आप हमें अपने साथ इस कूपे में यात्रा करने दें।'' युवती ने विनती की।

''कोई आपत्ति नहीं, लेकिन कहाँ तक?'' बल्लभ ने पूछ डाला।

''जहाँ तक भी आप जायेंगे'' दोनों खिलखिला कर हँस पड़ीं ''आपका साथ छोड़ने का मन नहीं हो रहा, कुछ अनूठा अहसास हो रहा है।'' बात करने वाली

युवती बेझिझक बोल पड़ी।

''कैसा?'' बल्लभ को हैरानी सी हुई।

''देवता के साथ जैसा!'' दूसरी युवती ने साथ दिया ''इस ट्रेन के हमें कई सारे अनुभव हैं, लेकिन आज जैसा कभी नहीं हुआ। परिस्थितियों और बुरी संगति के कारण हम गलत रास्ते पर चल निकली थीं, लेकिन आपके व्यवहार ने हमारी दिशा ही बदल दी।''

सज्जन ने किताब बन्द कर दी ''जब जीती जागती किताब सामने हो तो इसे पढ़ने की क्या जरूरत है।'' उन्होंने किताब एक तरफ रख दी। बल्लभ मन ही मन मुस्कुराया कि यह सज्जन उसे क्या कुछ नहीं कह चुके थे, लेकिन अपराधबोध दिलाते शॉलों के गट्ठर से मुक्त हो जाने पर अब उसकी प्रशंसा कर रहे हैं। नैतिक मनोबल बढ़ जाने पर वह स्वयं भी अपने को सम्मानित अनुभव कर रहा था। ट्रेन धीरे धीरे चलती रही, बल्लभ, युवतियाँ और सज्जन एक दूसरे से घुल मिल गये, हल्की फुल्की बातें और हंसी मजाक भी होती रही।

डेढ़-दो घण्टे बाद बल्लभ का स्टेशन आ गया, वह सूटकेस लेकर ट्रेन से नीचे उतर गया। उसे लेने के लिए जिस कर्मचारी को आना था, वह अभी दिख नहीं रहा था। रुकी ट्रेन में से दोनों युवतियाँ भी उतर आयीं। शालों का गट्ठर बल्लभ के बगल में रख कर वे पास में खड़ी हो गईं। किसी नयी व्याही दुल्हन को इस ट्रेन तक छोडने पास के गांव से, बहुत कमजोर दिखतीं पन्द्रह-बीस फटेहाल गरीब महिलायें आयीं हुई थीं।

कुछ देर बाद दूसरी ओर से एक ट्रेन आ गई जिसका गन्तव्य उसी दिशा में था, जहां से बल्लभ आया था। दुल्हन को ट्रेन पर बिठा कर महिलायें सुबकने लगीं थीं। बिना कुछ बोले युवतियां भी ट्रेन में चढ़ गयीं। दरवाजे के एक कोने पर एक दूसरे के पीछे खड़े हो बल्लभ को एकटक देखती वे दूर तक हाथ हिलाती रहीं।

शालों का गट्ठर अभी भी बल्लभ के पास ही पड़ा था। कर्मचारी उसे लेने मोटर साइकिल लेकर आ चुका था, बल्लभ उस पर बैठ गया।

''ये आपके लिए हैं'' शालों को दिखाते हुए बल्लभ ने महिलाओं की ओर देखा। महिलाओं के कुछ समझ पाने से पहले ही कर्मचारी को कह उसने मोटर साइकिल दौड़ा दी।

''आपका शॉलों का गट्ठर!'' महिलायें जोर से चिल्लाईं।

बल्लभ ने पलट कर पीछे नहीं देखा।

रास का एहसास

इस स्टेशन पर ट्रेन नियत समय पर आ गयी थी। बड़ा थैला दाहिने और छोटा बायें कन्धे पर लटकाये मोहन कोच के दरवाजे पर आ गया। दरवाजे के ठीक सामने प्लेटफार्म पर एक युवती खड़ी थी, शायद वह किसी को लेने आयी थी। उसकी ओर ध्यान दिए बिना, कोच से उतर कर मोहन प्लेटफार्म से होते हुए स्टेशन से बाहर चला आया। थैले जमीन पर रख, वह होटल तक जाने के लिए वाहन तलाशने लगा। इसी बीच ट्रेन के सामने दिखी युवती उसके पास आ खड़ी हुई, उसके साथ कोई और नहीं था। मोहन ने अनुमान लगाया कि हो सकता है कि जिसे लेने वह आयी थी, वह ट्रेन में न हो। तभी सामने एक टैंपो आकर रुका, मोहन ने होटल का नाम लेकर ड्राइवर से पूछा कि क्या वह वहां भी जायेगा? उसके हामी भरते ही मोहन टैंपो में बैठ गया, युवती भी टैंपो पर चढ़कर उसके बगल में बैठ गई।

युवती ने अपना सिर व चेहरा चुन्नी से ढका हुआ था, केवल आंखें ही खुली थीं। हरे नीले सुनहरे व मेहरून रंगों के संयोग वाला सलवार-कुर्ता और उस पर पूरी बांह का स्वेटर, न बहुत लम्बी, न ठिगनी, छरहरी काया। टैम्पो ठसाठस भरा हुआ था, उसमें क्षमता से बहुत अधिक सवारियां थीं। युवती के लिए जगह बनाने के लिए वह अन्दर की ओर सरकने लगा, लेकिन युवती इशारे से उसे रोक, स्वयं अन्दर की ओर बैठ गयी। टैम्पो को बड़े नगर से सटे एक छोटे नगर तक जाना था, जो लगभग 14-15 किलोमीटर की दूरी पर था, टैम्पो को वहां पहुंचने में आधा-पौन घंटा लग जाता था। प्राइवेट टैक्सी या आटो वहां कठिनाई से ही मिल पाते थे।

टैम्पो के चल पड़ने के बाद सवारियां हिलढुल, आगे-पीछे होकर व्यवस्थित हो गईं। मोहन थोड़ा आगे सरक गया और युवती कुछ पीछे की ओर। सब लोग एक-दूसरे से अपरिचित थे, इसलिए एक दूसरे की ओर केवल देख ही सकते थे, बातें होने की स्थिति नहीं थी। मोहन ने एक होटल का नाम लेते हुए ड्राइवर से अनुरोध किया कि होटल आने पर उसे वहां उतार दे। ड्राइवर ने हामी भर दी।

''मैं भी वहीं उतरूंगी'' युवती भी बोल पड़ी। इसके साथ ही उसने पर्स में से मोबाइल निकाला और कोई नम्बर डायल करने लगी। मोबाइल मोहन की आंखों के सामने था, उस पर हरे-नीले रंग के संयोग से राधाकृष्ण की मुखाकृति का एक वालपेपर दिख रहा था।

'श्याम-हरित दुति होय' अचानक मोहन के मस्तिष्क में कौंधा, मोबाइल से नजरें हटाने का मन नहीं हो रहा था, चित्र बार-बार जैसे अपनी ओर खींच रहा था। युवती भी जैसे चित्र दिखाने का ही प्रयास कर रही थी, वह बार-बार नम्बर मिला रही थी, लेकिन फोन कानों पर न ले जाकर सामने ही रखे हुए थी। कुछ देर बाद उसने पर्स से दूसरा फोन निकाल कर उसे ऑन किया, पहले फोन से न मिल पाने वाला नम्बर वह देख-देखकर इससे मिलाने लगी। मोहन का ध्यान दूसरे वाले फोन पर गया, वही 'श्याम-हरित दुति' का वॉलपेपर, लेकिन पूरी आकृति में, आलिंगन की मुद्रा में, पहले वाले मोबाइल से भी अधिक मोहक... इतना कि बस देखते ही रहो। 'श्याम-हरित दुति ...' मोहन ने पूरी कविता याद करने का प्रयास किया।

'मेरी भवबाधा हरो, राधा नागरि सोय। जा तन की झाईं परे, श्याम हरित दुति होय।'

युवती की फोन काल मिल गयी थी, उसने फोन कान पर लगाकर अपना मुंह पीछे की ओर कर लिया, मोहन के कन्धे के पीछे उसकी पीठ पर। फोन युवती के दाहिने कान पर था और उसका मुंह मोहन के बांयें कान के पास, इतना पास कि फुसफुसाहट भी सुनाई दे जाये।

''हैलो'' मोहन को युवती की धीमी आवाज सुनाई दी। फोन पर दूसरी ओर से क्या कहा जा रहा था, उसे सुनाई नहीं दे रहा था।

''कितनी देर से फोन लगा रही हूं'' .... ''अब इतनी देर बाद मिला,'' दूसरी ओर से भी कुछ कहा गया।

''आप कैसे हो?''... ''हां मिल गये''... ''शायद वही हैं''... ''साथ में ही''.. . ''तुम क्या जलन हो रही है?''... ''तू भी ढूंढ़ ले कोई''... युवती खिलखिलाई, ''क्यों? दोस्ती करनी नहीं आती?'' वह चहकी ''कोई शक है,''. .. ''मैं नहीं चूकने वाली''... ''पक्का हो जायेगी''... ''शर्त लगा ले,''... ''कल तक क्यों?''-''आज ही'' युवती फिर खिलखिलाई। न चाहते हुए भी मोहन सब सुन रहा था लेकिन दूसरी ओर की बात सुनाई न देने से कोई सूत्र हाथ नहीं लग रहा था, लेकिन उसने अनुमान लगाया कि दूसरी ओर शायद युवती की कोई सखी हो सकती है।

युवती बातचीत में तल्लीन थी, मोहन का ध्यान उसकी बातों से हटकर अपनी पीठ पर होने वाली सरसराहट ने खींच लिया, उसे लगा कि युवती के कपोल उसकी पीठ को छू रहे हैं। टैम्पो से लगने वाले झटकों के साथ उसे इनका दबाव भी महसूस होने लगा। बीच-बीच में युवती के फोन सुनते समय उसने ऐसा अनुभव भी किया कि युवती के अधर मोहन की पीठ पर टिक गये हैं।

'वह यह क्या सोचने लगा, ऐसा नहीं हो सकता' सिर को झटका सा देकर मोहन ने शरीर को सीधा कर लिया। जान बूझकर या अनजाने, युवती ने जैसे इसकी कोई चिंता नहीं की, फोन पर उसकी रसीली बातें वैसे ही जारी रहीं। मोहन के एकदम सीधा बैठ जाने से उसे और सुविधा हो गई थी, उसने अपने शरीर के कुछ और भाग को मोहन के पीछे कर लिया, मोहन की पीठ पर जैसे युवती के शरीर के अन्य भागों का दबाव भी आ गया व युवती का बदन और भी सट गया। वैसे ही बैठे रहने के अलावा मोहन के पास और कोई चारा नहीं था। कुछ देर बाद टैम्पो दूसरे छोटे नगर में प्रवेश कर गया। सड़क पर भीड़-भाड़ थी, टैम्पो सड़क के किनारे रुक गया, युवती उठ खड़ी हुई। मोहन उसे उतरने देने के लिए एक ओर हो गया।

''यहीं तो उतरना है आपको भी'' युवती ने मोहन को उतरने का इशारा किया। ड्राइवर ने भी सिर हिलाया, मोहन नीचे उतर गया। होटल सड़क के दूसरी ओर था, दोनों थैले कन्धे पर टांग, मोहन ने सड़क पार कर ली, युवती ने भी साथ ही सड़क पार की। मोहन होटल की ओर बढ़ा ही था कि युवती ने उसे टोक दिया।

''उधर नहीं, इधर!'' युवती ने होटल के बगल वाली गली की ओर इशारा किया।

''क्यों?'' मोहन चौंका।

''यह तो बहुत महंगा होटल है, छोटे बजट का कोई कमरा ही नहीं''

''तो क्या?, मोहन ने उसे रोका ''मुझे तो यहीं ठहरना है,'' उसने बात समाप्त करनी चाही।

''उधर वाले में इससे कहीं कम में खाना-पीना और सब कुछ हो जायेगा'' युवती ने जोर दिया। मोहन उसकी बात अनसुनी कर अपने वाले होटल की ओर बढ़ गया। 'चलो पीछा छूटा' उसने मन ही मन सोचा। युवती कुछ देर सड़क पर ही खड़ी रही, जैसे कुछ सोच रही हो। होटल पहुंचकर मोहन ने रजिस्टर में एंट्री की ही थी कि युवती वहां आ गई। मोहन ने सोचा कि उसे टोक दे, लेकिन रजिस्टर में सिंगल परसन एंट्री होने के बाद होटल वाले स्वयं ही मामले को देख लेंगे, यह सोचकर वह चुप रहा। होटल में युवती को किसी ने रोका-टोका नहीं, वह आराम से रिसेप्शन के पास से होते हुए आगे निकल गई।

मोहन अपने कमरे में व्यवस्थित हुआ ही था कि वेटर चाय लेकर आ गया। मोहन को अच्छा लगा, चाय की वैसे भी जरूरत महसूस हो रही थी।

''अरे वाह'' उसके मुंह से निकला, ''चाय की सोचते ही यह सामने हाजिर हो गई''

''मैडम ने भिजवाई है'' वेटर ने बताया।

''कौन सी मैडम?'' मोहन चौंका।

''वही जो आपके साथ आई थीं'' उत्तर आया।

मोहन को समझने में कठिनाई नहीं हुई, 'तो यह वही है, पीछे ही पड़ गई' वह थोड़ा उत्तेजित हुआ लेकिन चाय पर गुस्सा निकालना बेकार था। उसने कप हाथ में ले लिया। चाय अच्छी बनी थी, थकान उतारने वाली। एक-दो सिप लेने के बाद मन में तर्क-वितर्क होने लगा- 'स्टेशन से ही पीछा कर रही है लेकिन है कौन? क्यों पीछा कर रही है?' होटल में उसे किसी ने रोका नहीं, उल्टे उसके कहने पर चाय ला दी, पता नहीं दिखने में कैसे होगी, किस आयु की, कहां की और किस परिवार की?' युवती की फोन पर हुई बातों से भी कोई साफ संकेत नहीं मिल पाया था। वह अच्छे स्तर के एक प्रतिष्ठित होटल में टिका था इसलिए युवती के ऐसी-वैसी होने की सम्भावना भी कम ही थी, 'तो फिर यह चाहती क्या है?' मोहन को कुछ नहीं सूझ रहा था। कमरे का दरवाजा बन्द कर वह बाथरूम में नहाने चला गया। नहा-धोकर मोहन तैयार हुआ ही था कि कमरे की बेल बज गई। उसने दरवाजा खोला तो सामने वही युवती खड़ी थी।

''अन्दर आ सकती हूं'' युवती ने कहा और मोहन के उत्तर की प्रतीक्षा किये बिना अन्दर आ गई।

''किसी और के कमरे में, इस तरह?'' मोहन अचकचाया।

''घबराइये नहीं, होटल वालों को पता है'' युवती ने दिलासा जैसा दिया, ''अभी तो मैं केवल यह जानने आई हूं कि खाना होटल में ही लेंगे या कहीं बाहर चलेंगे, यहां का खाना बहुत कॉस्टली है, बाहर रेंज में भी मिलेगा और वेराइटी की च्वॉइस भी।''

''आपको परेशान होने की जरूरत नहीं, जो ठीक लगेगा मैं स्वयं देख लूंगा'' मोहन ने बात समाप्त करनी चाही।

''मैं केवल पैसे के कारण पूछ रही थी, मैंने भी इस हैवी डिफरेन्स को देखा है'' युवती ने साफ किया।

''आपको किसने कहा कि मेरे पास पैसे नहीं हैं या कम हैं?'' मोहन हीनता से मुक्त होना चाहता था।

''आप टैक्सी न लेकर शेयर टैम्पो में बैठे, इससे लगा'' युवती ने फिर सफाई दी।

''वहां कोई टैक्सी नहीं दिखी, इसलिए! समस्या पैसे की नहीं थी'' मोहन ने बताया।

''थैंक गॉड'' युवती ने जैसे राहत की सांस ली, ''आपके पास पर्याप्त पैसे हैं, अब चिन्ता नहीं, लेकिन आपके खाने का क्या होगा?''

''आपको इसकी चिन्ता क्यों करनी चाहिए?'' मोहन ने टोका।

''क्योंकि मुझे भी आपके साथ ही खाना है, तभी तो बात आगे बढ़ेगी'' युवती ने जोर दिया।

एक अपरिचित युवती उस पर इस तरह अधिकार जताये, बात मोहन को हजम नहीं हुई। उसने दृढ़ता दिखाने का प्रयत्न किया ''नहीं! मैं अकेला रहना पसन्द करता हूं, मुझे किसी के साथ की जरूरत नहीं,''

अब तक मोहन ने युवती की ओर ठीक से देखा नहीं था, पहनावे व शरीर की आकृति के आधार पर ही उसने कल्पना कर ली थी कि वह कोई युवती या युवा महिला होगी। अब पहली बार उसकी नजरें युवती की ओर उठी थीं। ढ़के चेहरे के बीच केवल आंखें ही दिख रही थीं, बड़ी-बड़ी आंखें, सुन्दर घनी काली पलकें, बड़ी पुतलियां मोहन के चेहरे पर टिकी थीं। किसी मूर्ति पर बड़ी सफेद आंखों के बीच बनी गहरी काली पुतलियों जैसी, मोहन को उनमें चमक सी दिखाई दी। सम्मोहित सा होकर वह कुछ संयमित हुआ, अपने तीखे स्वर पर उसे हल्की सी कुछ खीझ हुई।

''दरअसल मैं एकान्त चाहता हूं,'' उसने अपनी बात में संशोधन किया।

''ठीक है! हालांकि मुझे आपकी जरूरत है, लेकिन आज आपको परेशान नहीं करूंगी। कल ही सही, मुझे उम्मीद है कि आप निराश नहीं करेंगे।'' युवती कहकर पीछे मुड़ने को ही थी कि मोहन ने उसका आशय जान लेना बेहतर समझा।

''थोड़ा स्पष्ट शब्दों में बताइये कि आप क्या चाहती हैं'' उसने पूछा।

''मैं आपसे बहुत दूर नहीं हूं, इसी होटल के दूसरे हिस्से में मेरा सूइट है, कुछ दिन से उसी में हूं। आज तो आप समय नहीं दे रहे, कल मैं आपको नहीं छोड़ूंगी'' युवती तेजी से कह कर कमरे से बाहर निकल गई।

नहाने के बाद मोहन को फिर से चाय की तलब लगी, उसने बेल बजा दी। वेटर को मोहन ने चाय का आर्डर देने के साथ ही उससे युवती के बारे में पूछ लेना ठीक समझा। वेटर तो जैसे तैयार ही बैठा था, उसने काफी कुछ बता दिया। उसके अनुसार युवती भारतीय मूल की है, लेकिन कहीं विदेश में रहती है, भक्तिरस का विषय समझने के लिए भारत आयी है। अक्सर राधा और कृष्ण से सम्बन्धित स्थानों पर जाती आती है, लेकिन चेहरा ढ़क कर ही रहती है, होटल में भी किसी ने उसका चेहरा नहीं देखा है। उसकी उपस्थिति में उसके

सूइट में कोई नहीं जा सकता, सफाई व सर्विस भी महिलाकर्मी ही करती हैं। उसने यह भी बताया कि वह किसी से नहीं घुलती-मिलती और यह कि पिछले सप्ताह तक एक भारतीय युवती उससे मिलने आती थी जो इस सप्ताह नहीं दिखी है। वेटर ने यह भी बताया कि मोहन पहला आदमी है जिससे बात करते हुए युवती को देखा गया है। युवती के मोहन के कमरे में जाने पर तो किसी को विश्वास ही नहीं हो रहा, वेटर स्वयं भी आश्चर्य जता रहा था।

महिलाओं के प्रति सम्मान का भाव होते हुए मोहन को यह विवरण अच्छा लगा क्योंकि युवती के प्रति उसकी अब तक बनती जा रही धारणा टूटने लगी थी। उसे अपनी सोच पर आश्चर्य हुआ कि कि वह पीठ पर कपोलों व अधरों का स्पर्श देखने लगा था, जबकि युवती के मुंह पर चुन्नी लिपटी हुई थी और वह स्वयं भी सर्दियों के मोटे कपड़े पहने हुए था, उसे स्वयं पर हंसी आ गई। मन को समझा कर वह फिर से युवती के विषय में सोचने लगा कि ऐसी युवती उससे क्या चाहती है और उसने मोहन को क्यों और कैसे चुना- वह कुछ भी समझ नहीं पा रहा था। सोच पर काबू पा मोहन अपने काम पर लगा गया, उसे उन सुन्दर स्थानों को देखने जाना था जिनका बहुत बड़ा धार्मिक, पौराणिक व ऐतिहासिक महत्व माना जाता है।

इस छोटे नगर में हजारों मंदिर थे, अधिकांश राधा-कृष्ण के, कुछ प्रसिद्ध मंदिरों में केवल कृष्ण या मात्र राधा की ही मूर्ति थी जिन्हें श्रद्धालु बहुत तल्लीनता से निहारते थे। कुछ तो इन मूर्तियों के सामने घंटों बैठे रहते थे और इतने भाव निमग्न हो जाते जैसे सुध-बुध ही खो बैठे हों। सड़कों पर श्र(ालु ही नजर आते थे। माथे पर त्रिशूल जैसी आकृति में चन्दन, जो नाक के ऊपरी भाग तक आता था, किसी के तो कानों और गले में भी चन्दन का टीका लगा रहता था।

बड़े मंदिरों में खूब भीड़भाड़ थी, मोहन सबसे पहले एक अति प्रसिद्ध में गया, पंक्ति में लगने के बाद कुछ देर में वह मूर्ति के सामने आ गया। बांकेबिहारी की काले पत्थर की मूर्ति, बहुत ही आकर्षक, लेकिन मूर्ति की आंखें मोहन के मन में समा गईं, अति भव्य-विलक्षण जैसे हृदय तक झांक रही हों। एकाएक मोहन को लगा कि ये आंखें तो बहुत परिचित सी हैं, बहुत पास से देखी हुई, लेकिन कब और कहां, उसके सामने एकाएक युवती की आंखें आ गईं, एकदम मूर्ति जैसी। कुछ और बड़े मंदिरों में मूर्तियों के दर्शन करते समय भी युवती की आंखें अनायास ध्यान में आ जातीं, वह जितना इस विचार से बचना चाहता, वह उनती ही अधिक जकड़ लेता। मूर्तियों में ध्यान की उसकी एकाग्रता, युवती की आंखों ने जैसे चुरा ली थी। मंदिरों के दर्शन कर शाम को वापस लौटते समय भी मूर्तियों का ध्यान आते ही उसके सामने सबसे पहले

युवती की आंखें आने लगी। वह समझ नहीं पा रहा था कि ये आंखें उस के मन पर इस प्रकार क्यों हावी हो गईं।

दिन भर चलते रह कर वह थक चुका था, होटल के रिसेप्शन पर अपने कमरे की चाबी लेने पहुंचा तो मैनेजर को व्यग्रता से प्रतीक्षा करते पाया, ''सर! आपने बहुत देर लगा दी! मैडम कई बार आपको पूछ चुकी हैं'' वह बोला।

इससे पहले कि वह कुछ कहता, मैनेजर के साथ वाली महिला रिसेप्शनिस्ट ने इंटरकॉम पर युवती को मोहन के होटल में पहुंच जाने की सूचना दे दी। मोहन पहले थोड़ी देर कमर टेककर थकान मिटाना चाहता था, चाय का आर्डर देकर वह अपने कमरे की ओर चला ही था कि महिला रिशेप्सनिस्ट पीछे से आगई। उसने बताया कि मोहन की चाय युवती अपने सूट में पहले ही मंगा चुकी है और उसकी प्रतीक्षा कर रही है।

युवती के बारे में मिला विवरण, उसके व्यक्तित्व के विषय में धारणा, अपनी उत्सुकता और कहीं पर बैठ थोड़ा सुस्ता लेने की चाहत के बीच मोहन रिसेप्शनिस्ट महिला के साथ युवती के कमरे की ओर बढ़ गया। धुंधली हल्की रोशनी में सूइट के अन्दर, उसका बाहर वाला कमरा एक सुसज्जित ड्राइंग रूम जैसा लग रहा था। मोहन का अनुमान था कि अपने सूइट के अन्दर युवती का चेहरा खुला होगा लेकिन ऐसा नहीं हुआ। अन्दर के कमरे से युवती हल्के हरे-पीले कुरते, आसमानी सलवार और नीली चुनरी से सिर व चेहरा ढ़के हुए बाहर आयी। उसने बहुत सलीके से दोनों हाथ जोड़ व सिर झुकाकर मोहन को नमस्कार किया। वह तब तक खड़ा ही था, युवती के अनुरोध पर बैठ गया, साथ के सोफे पर युवती भी बैठ गई। दो कप में चाय डालकर दोनों के हाथों में पकड़ा महिला रिशेप्सनिस्ट बाहर चली गई। एक सिप लेकर मोहन ने युवती की ओर देखा, वह भी उसी के चेहरे की ओर ही देख रही थी। युवती की आंखें मोहन को अब और चमकीली और बड़ी लगने लगीं, इतनी बड़ी कि जैसे सब कुछ अपने में समा लें। युवती ने हाथों में पकड़ा कप मुंह की तरफ बढ़ाया, मुख पर लिपटी चुनरी को बांये हाथ से थोड़ा ढ़ीला बना, आगे कर कप उसके नीचे से ओठों तक ले गयी और पहला सिप लिया। मोहन को झुंझलाहट सी होने लगी। ढ़ंके चेहरे और चुभने वाली चुप्पी के चलते चाय बेस्वाद लगने लगी। जल्दी से चाय निपटा कर वह खड़ा हो गया।

''अब चलना चाहूंगा'' मोहन ने कुछ तल्खी से कहा।

''ठीक है! सोचा था आज आपका कुछ साथ मिलेगा, लेकिन आप तो काफी थके होंगे'' युवती ने सहमति दी, ''लेकिन आपके जाने से पहले एक प्रश्न करना चाहूंगी, आप विवाहित हैं या अविवाहित?''

''मैं आपके किसी प्रश्न का कोई उत्तर नहीं दे पाऊंगा'' कुछ दृढ़ता दिखाकर मोहन बोला। युवती के दिनभर के व्यवहार से उपजी परेशानी, उसके विषय में प्राप्त विवरण और उसकी आंखों से सम्मोहन के बाद ऐसे प्रश्न ने उसे बुरी तरह उलझा दिया था।

''क्यों?'' युवती ने कमरे का दूधिया बल्ब जलाते हुए पूछा। तेज रोशनी से कमरा जगमगा उठा, पूरा दृश्य ही जैसे बदल गया। एक कोने पर राधा-कृष्ण की लगभग डेढ़ फीट लम्बी लकड़ी की काली मूर्ति, उन पर बड़ी सफेद आंखों पर गोल काली पुतलियां, कृष्ण के शरीर पर हरे-पीले और राधा के ऊपर नीले-पीले रंग का परिधान। मूर्ति के आगे छोटी मेज और उस पर बेतरतीब रखीं डायरियां, डायरियों के आगे पीले-हरे-गुलाबी रंग की चिपकने वाली छोटी पर्चियां, जिन पर मोटे मार्किंग पेन से अंग्रेजी में कुछ शब्द लिखे थे- जैसे '**Not convincing**' (समाधान कारक नहीं), **Not satisfactory** (संतोषजनक नहीं), **Unrealistic** (अवास्तविक), आदि। कई पर्चियां डायरी के पन्नों पर भी चिपकी हुई थीं। मेज पर कई पेन, स्केच/मार्किंग पेन और हाईलाइटर भी बिखरे हुए थे, सोफे व कुर्सी पर भी कई सारी पुस्तकें पड़ी हुई थी, सभी अंग्रेजी में, कृष्ण पर, राधा पर, रुक्मिणी, सुभद्रा व सत्यभामा पर और अधिकांश राधा-कृष्ण पर। अधिकांश पुस्तकों के कवर काले अथवा मिलते-जुलते गहरे रंग में थे और उन पर पीले-नीले और हरे व लाल रंगों के संयोग से बने चित्र। युवती के 'क्यों' का जबाव देना छोड़ मोहन पूरे कमरे का जायजा लेने लगा कि माजरा आखिर है क्या?

युवती दोनों हाथ आगे बांधे सोफे के सामने खड़ी थी, आंखें नीची किये।

''आपने कुछ बताया नहीं'' उसने पलकें ऊपर कीं, मोहन से छुप नहीं पाया कि पलकें कुछ नम हो गई थीं।

''जब तक मैं आपके दिनभर के व्यवहार का रहस्य नहीं जान लेता, कुछ कह पाना कठिन है, वैसे आप इतना व्यक्तिगत प्रश्न पूछ क्यों रही हैं?'' मोहन ने खड़े-खड़े कह डाला।

''क्योंकि आप के कुछ उत्तर उस पर भी निर्भर होंगे'' युवती ने स्पष्ट किया।

''कैसे उत्तर?'' मोहन ने हैरानी भरे अन्दाज में सवाल किया।

''क्या आप कुछ मिनट और बैठ सकेंगे?'' युवती ने अनुरोध के साथ पूछा।

''ठीक है।'' वह सोफे पर बैठ गया।

''आपके व्यक्तिगत विवरण में मेरी कोई रुचि नहीं है, वैसे भी यह होटल के रजिस्टर से आसानी मिल सकता है। मेरा एक विशेष प्रयोजन है जिसमें आपका

सहयोग और सहायता चाहिए।'' कहते-कहते युवती भी साथ वाले सोफे पर बैठ गई।

''मैं जानती थी कि आज सुबह आप ट्रेन की बहुत लम्बी यात्रा पर यहां पहुंचे हैं और पूरे दिन भी आराम नहीं कर पाये हैं, इसलिए अधिक परेशान नहीं करना चाहती, लेकिन आपके विषय में जो जानकारी मिली है, उसके चलते अपने आप को रोक पाना काफी कठिन हो रहा है।'' युवती ने उत्तर की अपेक्षा से मोहन की ओर देखा। दिनभर से उलझन में फंसा रहा मोहन एक बार फिर चौंका।

''कैसी जानकरी? कहां से मिली?'' हैरानी से उसने पूछा।

''आज सुबह नींद से जगते ही मुझे एक फोन आया था, पिछले सप्ताह तक एक युवती अपने प्रोजेक्ट के लिए मेरे साथ थी और अब अच्छी मित्र बन गई है'' युवती ने बताया ''कल दोपहर के बाद से वह वह ट्रेन में आपके साथ यात्रा कर रही थी। आज सुबह आपके यहां पहुंचने से लगभग तीन-चार घंटे पहले एक अन्य तीर्थ स्थान पर जाने के लिए वह ट्रेन से उतर गई थी। उसी ने फोन किया था कि आप किस ट्रेन के, किस कूपे में, व कितने बजे यहां पहुंचे वाले हैं, उसने फोन पर आपका हुलिया भी बता दिया था। वह आपसे बहुत प्रभावित थी और मुझे इस विषय में काफी कुछ बताया था, इसीलिए मैं आपसे मिलना चाहती थी।'' युवती ने उसकी उलझन कुछ हल्की की।

मोहन को पहले दिन की ट्रेन की यात्रा का स्मरण हो आया। ट्रेन में दो युवक उससे बहस कर रहे थे, वे इस मत के थे कि धर्म की बात बकवास के अलावा कुछ नहीं, देवता तथा राम-कृष्ण जैसे अवतार व उनकी लीलायें वगैरह सब कोरी गप्पें हैं, तीर्थ आदि जाना समय की बर्बादी है और ऐसी ही बातें। सामने की साइड वाली सीट पर कुछ देर पहले ट्रेन में चढ़ी युवती ने आते ही कोई किताब खोल ली थी, लेकिन युवकों की बहस ने उसका ध्यान खींच लिया। मोहन ने युक्ति, तर्कों और जीवंत उदाहरणों के साथ उनके मत को अमान्य किया और वेदों, शास्त्रों, ऋषि-मुनियों व अवतारों आदि के विषय में सूक्ष्म जानकारी भी दी। मोहन ने एक-एक बिन्दु की स्पष्ट और समाधानकारक व्याख्या की, दोनों युवक हार कर नतमस्तक हो गये। सामने वाली युवती ने डायरी खोल कर उसमें कुछ नोट भी किया था। युवकों के जाने के बाद युवती ने भी उससे कुछ बिन्दुओं पर चर्चा की थी और बताचीत के क्रम में ही, कहां से आये हैं व कहां जायेंगे, जैसी बातें भी की थीं। यहां वाली युवती उससे मिली इस जानकारी के कारण उससे मिलने को उत्सुक थी तो इसमें छुपाने वाली क्या बात थी, वह समझ नहीं पाया, ''लेकिन यह बात तो आप स्टेशन

पर भी बता सकती थीं'' उसने हल्की सी नाराजगी दिखाई।

''एक तो आप बहुत तेजी से आगे बढ़ गये और फिर समय ही नहीं मिला। दूसरे, आपके विषय में थोड़ा सुनिश्चित भी होना था कि आप वैसे ही हैं जैसा बताया गया था या फिर दूसरे पुरुषों की तरह ही'' युवती ने बिना रुके सफाई दी। ''ठीक है, अब आप मुझसे मिल चुकी हैं, और जांच भी चुकी होंगी, अब तो बता सकती हैं कि मुझसे क्या काम है?'' मोहन ने जानना चाहा।

''लेकिन आप तो दिनभर के थके हुए हैं, क्या सब आज संभव है?'' युवती ने आशंका जताई। ''काम की प्रकृति तो बताइये! अगर कुछ चर्चा-वार्ता होनी है तो अभी हो सकती है'' मोहन ने प्रस्ताव किया।

''ठीक है'' युवती ने सहमति जताई, ''मैं काफी दिनों से राधा व कृष्ण के जीवन, उनके चरित्र, यहां की गोपियों, कृष्ण की रानियों, पटरानियों के रूप-रस-श्रृंगार व प्रणय के साथ राधा तथा कृष्ण के सम्बन्धों का अध्ययन कर रही हूं। मैंने कई विद्वानों, अध्येताओं, भक्तों व शोधार्थियों से भेंट की है और काफी विवरण एकत्र कर लिया है। बहुत तरह की बातें सामने आई हैं, उनमें से कुछ तो इतनी विपरीत हैं कि भ्रमित कर देती हैं। कई ऐसे पक्ष और शब्द अध्ययन के दौरान सामने आये हैं, जिनके शाब्दिक व प्रचलित अर्थ में भारी विरोधाभास है। यहां पर आकर मैं बहुत भ्रमित हो गई हूं, कोई भी मेरी शंकाओं का समाधान नहीं कर पा रहा है, ऐसा लगता है कि मेरा सारा अध्ययन व्यर्थ होने जा रहा है। आपके विषय में जानकर कुछ आशा सी बंधी है, क्या आप इसमें मेरी सहायता कर सकेंगे?'' युवती ने मेज पर रखी डायरियों में से कुछ उठाकर मोहन के सामने रख दीं।

''लेकिन मेरा तो इस विषय पर कोई अध्ययन नहीं है, यहां पर भी पहली बार आया हूं। वैसे भी, मैं घुमन्तू प्रवृत्ति का हूं, न तो एक स्थान पर टिक कर रह सकता हूं और न ही किसी एक विषय पर केंद्रित रह सकता हूं। बहुत हल्की-फुल्की जानकारी है, मुझे संशय है कि इससे कोई सहायता हो सकेगी'' मोहन ने अपनी सीमायें बता दीं।

''कुछ शब्दों का अर्थ समझने में तो सहायता कर सकते हैं?'' युवती ने अनुरोध किया। ''प्रयास कर सकता हूं, बताइये ऐसे कौन-कौन से शब्द हैं'' मोहन ने पूछा।

''वासना!'' युवती ने मोहन की ओर देखा।

''बस यही? या और शब्द भी हैं'' मोहन मुस्कराया।

''प्रणय, रमण, अभिसार, अभिचार, आलाप, रास, क्रीड़ा, प्रसंग'' युवती एक-एक कर डायरी में से शब्द पढ़ने लगी।

''रुकिये!'' मोहन का सिर चकराया ''क्या ऐसे ही शब्दों पर चर्चा करने के लिए आपको मेरा साथ चाहिए था'' उसने विस्मय से पूछा।

युवती जोरों से हंसी, काफी देर बाद धीमे होकर उसकी हंसी रुकी ''आप भी वही सब अर्थ ले रहे हैं जो शब्दकोष और प्रचलन में हैं, जबकि कृष्ण, गोपियों व राधा से सम्बन्धित बहुत सारे साहित्य में इन शब्दों की भरमार है। अपने अध्ययन का सार क्या यही अर्थ लेकर सामने रखूं या कुछ अन्य अर्थ भी सामने आयेंगे? धर्म, अध्यात्म, साहित्य व विभिन्न बोली भाषा, परम्पराओं को सामने रखते हुए कुछ नये अर्थ किसी से मिलेंगे, इस आशा में सारे प्रयास कर रही हूं। आपके विषय में सुना था कि आप विद्वान, सुलझे हुए व अनुभवी व्यक्ति हैं, हो सके तो शब्दों का भाव समझाइये।'' युवती ने मोहन को चुनौती सी दी। मोहन क्या बताता। स्वयं वह दिन भर युवती के सानिध्य के क्या-क्या अर्थ निकाल रहा था, अब अचानक नये अर्थ कहां से लाये। शब्द उसके मस्तिष्क पर जैसे हथौड़े से आघात करने लगे थे। उसने दोनों आंखें बन्द कर लीं, उसकी गर्दन कुछ सोचने के लिए पीछे सोफे पर टिक गई और पैर आगे सरक कर फैल गये, उंगलियां दोनों जांघों पर तबले जैसी बजने लगीं, वह जैसे दूर शून्य में खो गया।

''हे कृष्ण! हे यादव! हे सखेति!'' अनायास उसके ओठों में हलचल सी हुई। हाथों में पकड़ी मुरली होठों पर रखे, योगेश्वर के रूप में कृष्ण उसकी आंखों में घूमने लगे। उसने कृष्ण से याचना की कि उसे इन शब्दों का भाव समझा दे। कृष्ण के पीछे बादलों की घटा छा गई और उनके शरीर से छम-छम करती हुए राधा प्रकट होकर उनके बगल में आ खड़ी हुई। कृष्ण ने इशारा कर सारे शब्द राधा की ओर खिसका दिये। राधा मुस्करा दीं, उन्होंने अपने हाथों से, दाहिने से बायां और बायें से दाहिना, कृष्ण के दोनों हाथ पकड़ लिये। छम-छम, छम-छम, कृष्ण को अपनी ओर खींचकर राधा उनकी आंखों में आंखें डाल कर रींगने लगी।

कृष्ण भी बांसुरी कमर में खोंस नाच में मग्न हो उठे, बादल हल्की फुहारों में बदल गये। राधा के शरीर से कई गोपियां प्रकट हो गईं और उन्होंने राधा-कृष्ण को घेरे में ले लिया। वे एक-दूसरे का हाथ पकड़कर नाचने लगीं, नाचते-नाचते राधा एक से दो, दो से चार और चार से आठ राधायें बन, एक-दूसरे का हाथ पकड़ कर नाचने लगीं। नाचते नाचते उनकी मुखाकृति, रूप-रंग व वस्त्र बदल गये और वे कृष्ण की पटरानियां बन गईं। गोपियों में से भी गोपियां निकलने लगीं, असंख्य और अनन्त। हजार, दो, चार, आठ और सोलह हजार कृष्ण की रानियों जैसी। मोहन की आंखें और भिंच गईं।

''श्रीकृष्ण गोविन्द हरे मुरारे! हे नाथ नारायण वासुदेवः!'' मोहन बुदबुदाया! गोपियां फिर से छोटे घेरे में आकर वापस राधा में समा गईं। पटरानियों के आठों रूप भी फिर से राधा में एकाकार हो गये। कृष्ण ने मोहन के एक कान पर अपना मुंह लगा दिया और राधा ने दूसरे कान पर। कृष्ण शब्द बोलते तो राधा अर्थ बता देतीं और राधा शब्द बोलती तो कृष्ण उसका अर्थ समझा देते। शब्द और अर्थ, राधा और कृष्ण, एक से अनेक, दो से चार, चार से आठ, असंख्य और अनन्त। चारों ओर शब्द ही शब्द और गोपियों की तरह उनके चारों और घेरे बनाते अर्थ, बढ़ते और सिमटते घेरे, सिमटकर फिर बढ़ते और आपस में घुलमिल कर फिर एक हो जाते। अचानक कृष्ण स्वयं भी राधा में समा गये, सामने रह गयीं सिर्फ राधा,, हरे नीले वस्त्रों में, अप्रतिम सौन्दर्य, बड़ी बड़ी आंखें। अर्थ या भाव के लिए शब्द बनता है, शब्द के लिए अर्थ नहीं। कई बातों के लिए तो शब्द बन ही नहीं पाये हैं और कई बातें बिना किसी शब्द के स्पष्ट हो जाती हैं। राधा की बड़ी बड़ी आंखें जैसे एक एक बात समझा रही हों, राधा की सूरत आंखों में बसा मोहन ने पलकें बन्द कर लीं। राधा ने ताली बजा कर उसका ध्यान खींचा और अचानक ओझल हो गई।

मोहन जैसे शून्य से संसार में आ गया हो, मूर्छा से चेतना लौट आई हो, उसकी आंखें खुल गईं। सामने युवती विस्मित खड़ी थी, उसके चेहरे की चुनरी खुल गई थी। 'यह क्या! बिल्कुल राधा जैसी!', मोहन उसे एकटक देखता रहा, युवती भी मोहन की ओर ही देख रही थी। मोहन के शरीर में सिहरन सी हुई, वह झटके से उठ बैठा।

''आपको शायद नींद आ गई थी, काफी गहरी, शायद थकान के कारण! मैंने डिस्टर्ब करना ठीक नहीं समझा'' युवती भी संयत हो चुकी थी।

''मैं चलता हूं, लेकिन इतना कहना चाहूंगा कि शब्द व अर्थ भी राधा-कृष्ण जैसे ही हैं, एक से अनेक, अनेक से एक, सब कुछ प्रसंग के अधीन है। पुरूष-स्त्री की एक दूसरे में आसक्ति वासना है, एक-दूसरे की कामना प्रणय है और प्रणय की कामना आसक्ति। मिलने की कामना अभिसार है और अभिसार का प्रसंग अभिचार। बातचीत का क्रम आलाप है और आलाप की इच्छा प्रणय। सानिध्य मिलना रमण है और रमण की चेष्टा अभिचार। जीत-हार की चेष्टा क्रीड़ा है और क्रीड़ा का प्रदर्शन रास। लेकिन यह सब शब्दार्थ स्त्री-पुरुष के संदर्भ में है। ईश्वर में वासना भक्ति है और धन में वासना लोभ। ईश्वर में आसक्ति भाव है और पुत्रादि में आसक्ति मोह। जीवों का प्रणय सृष्टि है और जल-थल का प्रणय प्रलय। भक्तगण अपने भगवान की मूर्ति के सामने घंटो, दिनों व वर्षो तक बैठते हैं, वे कोई निश्चित अर्थ लेकर ऐसा नहीं करते।

इसलिए अर्थ नहीं, भाव लेना चाहिए। राधा का भाव, कृष्ण का भाव, राधाकृष्ण का भाव।'' मोहन एक साथ कह गया।

युवती मंत्रमुग्ध भाव से मोहन की बातें सुनती रही, उसकी मुस्कुराहट हल्की गम्भीरता में बदल गई, ''नींद से जागते ही आप एकदम पुराने विषय पर कैसे आ गये और वह भी इतनी स्पष्ट सोच के साथ? यह नींद थी या समाधि?'' युवती विस्मय में थी। मोहन स्वयं भी चमत्कृत था।

''पता नहीं, शायद महारास था!'' मोहन सहसा बोल उठा।

''तभी आप इतनी देर तक सोते रहे?'' युवती ने अपनापन दिखाया।

''ओह! तब तो बहुत देर हो चुकी होगी, मुझे चलना चाहिए'' मोहन उठ खड़ा हुआ, युवती ने उसे दरवाजे तक छोड़ दिया। वह अपने कमरे में आकर बिस्तर पर लेट गया।

मोहन की आंख लगी ही थी कि कमरे की घंटी बज उठी। वेटर ने बताया कि युवती अचानक अपने देश वापस जा रही है और अभी होटल छोड़ रही है, लेकिन पहले उससे मिलना चाहती है। फटाफट कपड़े पहन मोहन उसके कमरे में चला आया।

''आप के जाते ही मेरी आंख लग गयी थी, स्वप्न में आप के शब्द जैसे मुझे राधा-कृष्ण के शब्द व अर्थ के खेल का आंखें देखा हाल सुना रहे थे और फिर वही सब कुछ मेरे सामने भी होने लगा। यह रास था या महारास, मै नहीं जानती, लेकिन ऐसा लगता है कि मुझे सब कुछ मिल गया, अब और कुछ जानना शेष नहीं इसलिए वापस जा रही हूं। जाने से पहले सोचा आप से मिल लूं क्योंकि आपको मिलने के बाद ही मुझे ऐसा अनुभव हुआ है।'' यवुती की पलकें भीग चुकी थीं, वह मोहन से लिपट गई।

महिला वेटर ने युवती के कमरे की बेल बजा दी, टैक्सी आ चुकी थी। युवती ने अपना चेहरा फिर से हरे-नीले रंग की चुनरी में लपेट कर मोहन की ओर देखा, वही बड़ी बड़ी आंखें जो मोहन के मन में बस चुकी थीं। युवती कमरे से बाहर निकली तो मोहन भी उसके पीछे दरवाजे से बाहर आकर खड़ा हो गया। उसके मुंह से अनायास निकल पड़ा ''जय श्री राधे!'' होटल का सारा स्टाफ जैसे जड़वत् खड़ा था। युवती धीमे-धीमे टैक्सी की ओर बढ़ गई।

मोहन अपने कमरे में लौट आया। युवती की आंखों के साथ ही उसकी सूरत भी मोहन की आंखों में बस चुकी थी।

''हे राधे!'' मोहन ने लम्बी सांस खींची और अपनी आंखें बन्द कर लीं।

निडर की चेतना

बस को बहुत खटारा तो नहीं कह सकते थे लेकिन इतनी अच्छी भी नहीं थी कि उसमें बैठने का मन हो आये। और कोई बस उस ओर जाने वाली नहीं थी जहां भास्कर को जाना था, इसलिए इसी बस में बैठना मजबूरी जो इसलिए पैदा हुई कि अपने गन्तव्य पर पहुंचने का मार्ग चुनने में वह गलती कर बैठा। उसने नक्शा देखकर कार्यक्रम बनाया और रेल के बजाय सड़क मार्ग का विकल्प चुना, क्योंकि वहां से एक मात्र उपलब्ध ट्रेन पैसेंजर गाड़ी थी और लगभग 350 किमी घूमकर गन्तव्य तक पहुंचती थीं जबकि सड़क मार्ग से यह लगभग150 किमी. की दूरी पर था। भास्कर टैक्सी से 70 किमी. चलकर यहां तक पहुंचा था और यहां से उसे आगे अपने गंतव्य के लिए बस पकड़नी थी जो लगभग 80 किमी. दूर था।

सुबह के साढ़े ग्यारह बजे थे और बस के चलने का समय अपरान्ह 1.00 बजे का था। जाने वाली बस खड़ी थी, लेकिन लगभग खाली। भास्कर बस में बैठने के लिए चढ़ा ही था कि कण्डक्टर ने उसे रोक दिया, यह कहकर कि बस की यात्रा उसके लिए ठीक नहीं रहेगी। उसे हैरानी हुई, बात कुछ समझ में नहीं आई, उसने कण्डक्टर से जानना चाहा। कण्डक्टर ने बताया कि दूरी भले ही 70 कि.मी. की हो लेकिन इसमें लगभग 5-6 घंटे का समय लगता है, रास्ता काफी खराब है, पहाड़ी इलाका और घना जंगल है। बाहरी आदमियों के लिए इधर से जाने पर खतरा रहता है। नये आदमी को इलाके में लाने पर बस के ड्राइवर कण्डक्टर भी परेशानी में पड़ सकते हैं इसलिए बेहतर यही है कि वह बस से उधर जाने का विचार त्याग दे।

कार्यक्रम के अनुसार भास्कर को अगली सुबह अपने गन्तव्य पर पहुंचना बहुत जरूरी था, बस से तो वह शाम तक पहुंच जाता। लेकिन ट्रेन से जाने के लिए पहले तो उसे यात्रा के अपने आरम्भिक स्थान तक जाना पड़ता और फिर वहां से ट्रेन पकड़नी पड़ती जिससे वह तीसरे दिन तक ही गन्तव्य पर पहुंच सकता था। यह यात्रा लम्बी होने के साथ ऊबाऊ और खर्चीली होने की भी सम्भावना थी। बस कण्डक्टर किसी भी कीमत पर साथ ले जाने को तैयार नहीं था और कोई परिचित भी वहां नहीं था। भास्कर पास की चाय की दुकान पर चला आया ताकि वहां किसी की सलाह ले सके।

गर्मी का मौसम था और दोपहर बाद का समय, आस-पास की दुकानों के शटर गिरे हुए थे, चाय की दुकान में भी बस एक नौकर ही था। लगभग 12-13

साल का लड़का, जिसे इलाके की कोई खास जानकारी नहीं थी, लेकिन ओट में बैठने के लिए वही एक मात्र स्थान था। सामान किनारे रख भास्कर ने एक बेंच पर कमर टेक दी। पौन-एक घंटा यों ही बीत गया, तब जाकर कहीं थोड़ी बहुत आवाजाही शुरू हुई। भास्कर ठीक-ठाक आदमी की तलाश में था जिससे कुछ जानकारी ली जा सके, लेकिन वहां स्थानीय ग्रामीणों के अलावा कोई नहीं दिखा।

भास्कर को तभी बस के पास महिला दिखाई दी, जो शहरी वेशभूषा में थी और पढ़ी-लिखी प्रतीत होती थी। कण्डक्टर से कुछ बात कर वह चाय की दुकान की ओर आ रही थी, दुकान में दाखिल होते ही वह भास्कर के पास आ गई। एक स्थान का नाम लेते हुए वह बोली कि कण्डक्टर ने उसे बताया है कि वह (भास्कर) भी वहीं जा रहा है। उसने भास्कर की ओर देखा,उसने पुष्टि कर दी।

महिला ने भास्कर को बताया कि वह भी वहीं जाना चाह रही है लेकिन यह सम्भव नहीं हो पा रहा है, बस वाले ले जाने को तैयार नहीं और टैक्सी वाले भी इस भय से नहीं जा रहे कि उनकी टैक्सी तो जायेगी ही, जान भी जा सकती है। पैसों का प्रलोभन भी काम नहीं आ रहा था, जबकि उसका वहां जाना हर हाल में जरूरी है। भास्कर ने उत्सुकता से उसकी ओर देखा कि वह क्या बताना चाह रही है।

महिला ने बताया कि वह दो-तीन दिन से प्रयास कर रही है लेकिन सफल नहीं हो पाई। भास्कर के भी वहां जाने की इच्छा जानकर वह उसके पास आई है ताकि कोई रास्त सूझ सके। बातों-बातों में भास्कर ने अपने वहां जाने का हेतु बताकर महिला के वहां जाने का कारण पूछ डाला। महिला ने बताया कि उसके पति टेलीकॉम इंजीनियर हैं, उसे पता चला है कि माओवादी उन्हें पकड़कर जंगल में ले गये हैं। पहले तो वह यह सोचकर वह निश्चिन्त थी कि वे अपनी किसी आवश्यकता या काम के लिए उन्हें ले गये। लेकिन अब उनके बारे में कुछ पता नहीं चल पा रहा है कि वे कहां हैं और उनके साथ क्या हो रहा है। उसने बताया कि जानकार लोग ऐसा मान रहे हैं कि उसके पति पर उन लोगों को कुछ संदेह हो गया होगा, ऐसे में अगर संदेह पुष्ट हो गया तो वे उन्हें मार देंगे, नहीं तो मामला साफ होने तक पकड़े रखेंगे और उनके किसी नजदीकी का पता चला तो उसे भी पकड़ लेंगे। इसलिए उसे अपना परिचय न खोलने की सलाह दी गई है, लेकिन उसे पति के विषय में पता करना ही है, इसीलिए इधर चली आई। उसने यह भी बताया कि भास्कर को पढ़ा लिखा और बाहरी आदमी देखकर वह यह सब बता रही है। उसने भास्कर से सहायता

करने का भी अनुरोध किया।

भास्कर अपनी ही परेशानी में था, उसकी क्या सहायता करता, लेकिन एक महिला का अनुरोध भी ऐसे ही तो नहीं ठुकराया जा सकता था। यदि उसके जाने का कोई उपाय हो जाता है तो भास्कर का भी अपने गन्तव्य तक पहुंचना सम्भव हो जायेगा, यह सोचकर उसने महिला को भरोसा दिलाया कि उससे जो बन पड़ेगा, वह अवश्य करेगा।

जहां चाह होती है, वहां राह भी निकल आती है, ईश्वर किसी न किसी रूप में सहायता कर देता है। उसने कण्डक्टर के कथन पर गौर किया, जिसने हतोत्साहित तो किया था, लेकिन यह भी नहीं कहा था कि बाहरी आदमी वहां जाते ही नहीं, या जा ही नहीं सकते। भास्कर ने अनुमान लगाया कि माओवादियों से मिलने वाले बाहरी लोग भी वहां जाते ही होंगे, वे कैसे जाते हैं, इससे कुछ सूत्र हाथ लग सकता है। महिला को साथ लेकर वह कण्डक्टर के पास चला आया, महिला के अनुरोध पर उसका परिचय न देते हुए भास्कर ने उसे अपने साथ बताया।

कण्डक्टर ने फिर से असमर्थता जता दी। भास्कर ने उससे कोई रास्ता निकालने का अनुरोध किया, लेकिन कण्डक्टर नहीं पिघला। साथी महिला ने उसे रुपयों का लालच देकर कोई तरीका सुझाने को कहा तो उसने बताया कि माओवादियों का एक एरिया कमाण्डर लोगों को वहां जाने की अनुमति देता है, लेकिन खूब ठोक बजाकर और पूरी तरह संतुष्ट होने पर ही। उसने दोनों को उससे सम्पर्क करने की सलाह दी और उस तक पहुंचने का जरिया भी बता दिया।

सम्पर्क सूत्र के सहारे भास्कर महिला के साथ एरिया कमाण्डर तक पहुंच गया। भास्कर ने अपना परिचय दिया और अपना मंतव्य भी बताया दिया। कमाण्डर ने कुछ पूछताछ की और भास्कर के विषय में संतुष्ट होकर उन्हें बस से जाने की अनुमति दे दी। उसने कण्डक्टर को इस बारे में संदेश भिजवा दिया और हिदायत दी कि दोनों को गन्तव्य पर ले जाकर ही बस से उतारे, बीच में कहीं नहीं। महिला को भास्कर के साथ मानकर उससे कोई पूछताछ नहीं की गई। भास्कर की समस्या हल हो चुकी थी, वह बस में चढ़ गया, महिला भी साथ में सीट पर आ बैठी।

पुरानी बस थी और सवारियां लोकल, रास्ता पहाड़ी था और सड़क संकरी, बस की स्पीड काफी कम थी, सवारियां उतारने-चढ़ाने को लेकर बस हर स्टॉप पर रुकती। कण्डक्टर स्टॉप आने से पहले ही आवाज लगा देता कि उस स्टॉप पर उतरने वाले आगे आ जायें। बस की सवारियां भास्कर और महिला को आश्चर्य से घूरतीं, क्योंकि स्थानीय आदिवासियों से वे बहुत अलग दिखते थे।

कोई–कोई बातचीत भी करने लगते, कहां से हैं, कहां जा रहे हैं, से लेकर क्या काम करते हैं तक, परिचय भी पूछ लेते। कोई अपना परिचय देकर इलाके के विषय में भी बताते कि यह कितना खतरनाक है और जगह दिखाकर बताते कि यहां फलां साल बम से बस उड़ा दी गई थी या यहां इतने लोगों को लाइन से खड़ा कर गोली मार दी गई थी, या यहां जन अदालत लगती है जहां सरकारी मुलाजिमों और गांव के भेदियों को सजा दी जाती है। यह जानबूझ था या अनायास, लेकिन दोनों को भयभीत करने में कोई कमी नहीं रखी जा रही थी। इन किस्सों से भास्कर कोई खास विचलित नहीं हुआ क्योंकि ऐसे विवरण वह समाचार पत्रों में कई बार पढ़ चुका था। इलाके के विषय में भी पहले सुन चुका था, अन्तर केवल इतना था कि वह इधर से स्वयं गुजर रहा था। महिला हर किस्से के साथ कांप उठती, सी.. करके दांत भींचती हुई हवा मुंह के अन्दर खींचती और फिर भास्कर की बांह कसकर पकड़ लेती। सम्भलने का उपक्रम करते हुए वह जरा दूर हट जाती, लेकिन अगले ही हिचकोले के साथ फिर से भास्कर के साथ आ सटती और फिर उसके कंधे पर सर टेक देती। यह अभिनय था अथवा स्वाभाविक व्यवहार, लेकिन वह भास्कर की अपनी सगी दिखाई दे रही थी, इतनी कि रंच मात्र भी संदेह न हो लेकिन भास्कर ने अनुभव किया कि वह सतर्क थी और हर जानकारी पर ध्यान दे रही थी, खासतौर पर कण्डक्टर की आवाज पर, जब उसके कान खड़े हो जाते।

बस के हिचकोले खाते हुए ऐसे ही तीन–चार घंटे बीत गये, उतरते–चढ़ते सवारियां कभी कम हो जातीं तो कभी ज्यादा। अचानक कण्डक्टर भास्कर के पास आया और बताया कि अगले स्टॉप पर बस लगभग आधा घंटा रुकेगी, वे उतर कर चाय आदि ले सकते हैं। थोड़ी देर में स्टाप भी आ गया, अपेक्षाकृत कुछ बड़ा सा बाजार, खासी चहल–पहल, कण्डक्टर ने स्टॉप का नाम लिया तो महिला सहसा चौंक उठी और उतरने के लिए चट से खड़ी हो गयी। भास्कर भी बस से उतर गया, लेकिन महिला ने अपना बैग भी उतार लिया। भास्कर ने चौंक कर उसकी ओर देखा, महिला ने मुस्कुरा कर उसे चुप रहने का इशारा कर दिया।

महिला भी भास्कर के साथ–साथ चाय की दुकान पर आ गयी, भास्कर ने चाय आर्डर कर दी। महिला ने दुकानदार के पास जाकर कुछ पूछताछ शुरू कर दी। वह जानना चाहती थी कि आस–पास कोई टेलीफोन एक्सचेंज है या कहीं टेलीफोन का काम चल रहा है। दुकानदार ने कोई जबाव न देकर पास की दूसरी दुकान की ओर इशारा कर दिया। महिला उस दुकान में चली गई, वहां उसकी जाने क्या बात हुई कि तीन–चार लोगों ने उसे घेर लिया और पकड़कर

भास्कर के पास ले आये। उन्होंने भास्कर को पकड़ लिया और उसका सामान बस से उतार कर अपने कब्जे में कर लिया। ड्राइवर-कण्डक्टर माजरा समझने बस के पास आये तो उन पर तड़ातड़ थप्पड़ बरस गये। कण्डक्टर ने सफाई दी कि एरिया कमाण्डर ने इन्हें बस पर बैठाया है और वह सारी जानकारी उन्हें दे दी जो एरिया कमाण्डर ने भास्कर से पूछताछ कर जुटायी थी। इस पर उनका रुख भास्कर की ओर हो गया और गाली-गलौज करते हुए उन्होंने आरोप लगाया कि वह झूठी जानकारी और धोखा देकर बस में बैठा है। उन्होंने यह आरोप भी मढ़ा कि यहां आने के लिए उसने महिला की आड़ ली है। उनका संदेह था कि भास्कर सरकारी जासूस है अथवा किसी खास उद्देश्य से यहां आया है। भास्कर ने अनुमान लगाया कि ये लोग छोटे स्तर के कार्यकर्ता हो सकते हैं, इसलिए उनके पास सफाई देने की कोई तुक नहीं, लेकिन प्रतिवाद तो करना ही था। उसने अपना वास्तविक परिचय दिया लेकिन किसी ने विश्वास नहीं किया। इस बीच कुछ और लोग आ गये और उसके चारों ओर घेरा और बढ़ गया। बस ड्राइवर ने वहां से बस को भगाने में ही खैर समझी, भास्कर व महिला वहीं रह गये। महिला से यहां भी कोई पूछताछ नहीं हुई, सारा संदेह भास्कर को लेकर ही था, महिला ने भी चुप रहने में ही खैर समझी।

नई परिस्थिति भास्कर के नियंत्रण से बाहर थी, यहां उन्हीं लोगों का राज चलता था, यह बात साफ हो चुकी थी और इसमें कोई संदेह नहीं था कि वे स्थानीय माओवादी थे। ऐसे में धैर्य रखना जरूरी था, कोई हड़बड़ाहट या जल्दीबाजी उल्टी पड़ सकती थी। उसने संयत भाव से उन लोगों से अनुरोध किया कि वे उन दोनों को चाय नाश्ता कर लेने दें, फिर जैसा चाहें आगे की कार्यवाही कर लें। उन्होंने एक-दूसरे की ओर देखा और गर्दन हिलाकर हामी भर दी। चाय पर भास्कर ने महिला से पूछा कि उसकी ओर से क्या गड़बड़ी हो गई थी। महिला ने बताया कि उसने अपने पति के बारे में उनका पदनाम लेकर पूछताछ की थी। दुकानदार ने उसे बता दिया था कि वे यहीं आस-पास कहीं पकड़ में बन्द हैं, उससे और कुछ पूछने से पहले ही वहां माओवादी आ गये। महिला ने पूछा कि अब उन्हें क्या करना चाहिए।

'धैर्यपूर्वक परिस्थिति का सामना!' भास्कर ने संक्षिप्त सा उतर दिया।

चाय समाप्त करते-करते वहां कई और लोग आ जुटे जिनमें महिलाएं भी थीं, लगभग सभी के हाथों में हथियार थे, बन्दूकों ले लेकर, भाले और तीर कमान तक। आठ-दस लोग भास्कर को घेरे में लेकर एक ओर चल दिए और थोड़ा पीछे महिलाओं के घेरे में साथी महिला भी ले ली गई। लगभग डेढ़ घंटा चल लेने के बाद वे लोग जंगल के बीच एक छोटे से मैदान में ले जाये गये। जिसके

एक कोने पर आठ–दस झोपड़ियां और एक पक्का सा मकान था। भास्कर को इस मकान में ले जाकर एक कमरे में बंद कर बाहर से ताला जड़ दिया गया। मकान किसी बैरक जैसा था, जिसमें लाइन से पांच–छः कमरे और उनके सामने बरामदा था। हर कमरे के पीछे एक शौचालय और एक छोटा सा गलियारा भी था जिसमें से पीछे की ओर खिड़की लगी थी। यह खिड़की बाहर से ही खुलती व बंद होती थी। भास्कर को समझते देर नहीं लगी यह कुछ जेल जैसी व्यवस्था थी जहां माओवादी अपने विरोधियों को पकड़ में रखते थे।

कमरे अन्दर मिट्टी का चबूतरा बना था और उस पर एक दरी बिछी हुई थी, भास्कर उस पर लेट गया। शरीर को कुछ आराम मिल जाये, तभी दिमाग काम करेगा, उसने मन में सोचा और लम्बी सांसे खींचीं। यह एक विपत्ति थी, जिसमें उसके साथ सख्ती तो हुई थी लेकिन मार–पीट या अधिक गाली–गलौज नहीं, इसका अर्थ था कि उसे पकड़ने वाले अपने मन से नहीं, बल्कि किन्हीं निर्देशों पर प्रशिक्षित तरीके से चल रहे थे। यहां तक कि आपस में भी वे कोई खास बात नहीं कर रहे थे। भास्कर ने अनुमान लगाया कि उसके साथ आगे का व्यवहार उन लोगों के किसी बड़े पदाधिकारी के आने पर ही तय होगा, लेकिन यह तय नहीं था कि वह कब आयेगा।

भास्कर सोच में डूबा ही हुआ था कि उसे किसी महिला के जोर–जोर से रोने की आवाज सुनाई दी, उसे महसूस किया कि हो न हो, यह उसकी साथी महिला ही है लेकिन वह अचानक रोने क्यों लगी। उसने ध्यान से सुनने की कोशिश की, महिला कह रही थी वह किसी भी कीमत पर वहां नहीं रहेगी, उसे घबराहट हो रही है और उसकी तबियत बिगड़ रही है। वह बार–बार अपने बच्चों का नाम लेकर चीख रही थी कि उन पर तो दया करो, बिना मां–बाप के वे कैसे रहेंगे। महिला के आस–पास की खुसर–पुसर से अभास हो रहा था कि उसके पहरेदार काफी परेशान हो गये हैं और समझ नहीं पा रहे हैं कि क्या करें। इसी खुसर–पुसर के बीच बगल के कमरे से किसी आदमी की आवाज आने लगी।

''कौन है वहां?, कब आयी, कैसे पहुंची? अरे कुछ तो बताओ'' वह जोर से कहने की कोशिश कर रहा था लेकिन आवाज में दम नहीं था, उसकी आवाज अनुसनी रह गई। भास्कर माजरा समझने की कोशिश करता, इससे पहले ही, दो आदमियों के साथ एक हथियारबंद महिला उसके कमरे के सामने आ गयी। उन्होंने भास्कर से शिकायत की कि उसकी बीबी ने बहुत दुःखी कर दिया है, वह उसे समझा ले, नहीं तो अंजाम बहुत बुरा होगा।

भास्कर ने पूरी परिस्थिति का आंकलन किया और उनसे जानना चाहा कि साथी

महिला क्या कह रही है और क्या चाहती है। बंदूकधारी आदमी ने उसे कुछ झुंझलाते हुए बताया कि महिला को कोने का कमरा दिया गया है जो टूटा-फूटा और खराब हालत में है। बाकी कमरे भी बुरी हालत में हैं, केवल दो कमरे ही ठीक हैं, जिनमें से एक में पहले से कोई बंद है और दूसरे में भास्कर। ऐसे में महिला को कहा रखें! न तो पति या साथी के साथ रख सकते हैं और न ही गैर मर्द के साथ, लेकिन वह जिद पर अड़ी हुई है और बेमतलब चीख चिल्ला रही है।

भास्कर को इतना तो समझ में आ गया कि महिला का मनोबल ऊंचा है, वह जो कुछ कर रही है, वह अभिनय है और किसी खास उद्देश्य से है। उसे आभास हो चुका था कि उसका पति यहीं कहीं है और वह उसे अपनी उपस्थिति का संकेत दे रही थी। पड़ोस के कमरे से आयी आवाज से भास्कर इस बात से आश्वस्त हो भी गया था। उसने तय किया कि महिला का साथ देना चाहिए, उसके लिए उसके पहरेदारों को और दबाव में लाना होगा ताकि वे हड़बड़ी और जल्दबाजी में उससे सहमत होने को बाध्य हो जायें।

भास्कर ने उन्हें बताया कि महिला हाई ब्लड प्रेशर की मरीज है और इसके बढ़ने पर कुछ भी हो सकता है, बेहोशी से लेकर मौत तक, इसलिए जहां तक हो उसे शांत रखा जाये। पहरेदारों ने भास्कर के कमरे को खोल दिया और उसे लेकर महिला के पास आ गये। महिला से भास्कर ने कहा कि उसकी तबियत कहीं और न बिगड़ जाये इसलिए वह भास्कर के कमरे में आ जाये। महिला ने आशय समझने के लिए आश्चर्य से भास्कर की ओर देखा, वह कुछ और कहता, इससे पहले ही पहरेदार भड़क गये कि ऐसा नहीं हो सकता, उन्हें यहां रंगरलियां मनाने के लिए नहीं लाया गया है। भास्कर ने उनसे पहले पूरी बात सुन लेने का आग्रह किया। उसने कहा कि ये मेरे कमरे में आ जायें और अगर उन लोगों को ऐतराज है तो उसे (भास्कर को) बगल के कमरे वाले आदमी के साथ भेज दें, उसे कोई आपत्ति नहीं होगी। पहरेदारों ने एक दूसरे की ओर देखा और कोई असहमति न देखते हुए 'ठीक है' कहकर अपने सिर हिला दिए। महिला को भास्कर वाले कमरे और भास्कर को बगल वाले कमरे में शिफ्ट कर दिया गया। सबके हाथ पांव क्योंकि खुले थे इसलिए महिला ने बगल के कमरे के अन्दर देख लिया। भास्कर की ओर कृतज्ञता से देखते हुए वह अपने नये कमरे की ओर बढ़ गई।

धीरे-धीरे रात हो गई, कमरों के सामने कुछ दूरी पर लालटेंने रख दी गईं और रात को खाना-पानी भी दे दिया गया। भास्कर ने अनुमान लगाया कि उनकी बातें सुनने का प्रयास हो सकता है, इसलिए जितना संभव हो, चुप रहा जाये।

साथी आदमी कुछ कहना चाहता था, लेकिन भास्कर ने उसे इशारों में मना कर दिया। महिला अपने पति तक पहुंचना चाहती थी, यह काम हो चुका था। भास्कर की उनके पचड़े में पड़ने की कोई योजना नहीं थी, उसकी पहली प्राथमिकता अच्छी नींद लेने की थी। वह छाती और पेट के बल लेट, हथेलियों को तकिया बनाकर जमीन पर ही गहरी नींद में सो गया।

सुबह भास्कर तरोताजा था, शौचादि से निवृत होकर वह प्राणायाम के उपरान्त ध्यान में बैठ गया। निश्चिन्त हो उसने स्वयं को ईश्वर की इच्छा के आगे समर्पित कर दिया। आस्था और विश्वास के दो बड़े सम्बल उसके साथ थे। मन में कोई द्वन्द नहीं, न कोई तनाव, न भय, न निराशा, चेहरा शांत और निर्विकार। साथी आदमी उसे अपलक देखता रहा, तभी बाहर हलचल हुई। मकान के आगे बरामदे के बाहर खूब भीड़ जमा हो गई थी। लोग हवा में हथियार लहरा रहे थे और नारे लगने लगे थे। माओवादियों का कोई वरिष्ठ नेता वहां आ गया था।

थोड़ा हो हल्ले के बाद भीड़ पीछे कर दी गई और नेता वहां दो सशस्त्र आदमियों के साथ रह गया। मकान के दोनों कमरों के ताले खोल, भास्कर, पुरुष साथी और महिला, तीनों को बाहर बरामदे में खड़ा कर दिया गया। भास्कर बीच में था। पुरुष व महिला ने एक दूसरे को सामने देखकर राहत महसूस की।

भास्कर को उनसे अलग कर बरामदे से नीचे उतार, नेता के सामने जमीन पर बिठा दिया गया। नेता के लिए कुर्सी आ गई और वह उस पर बैठ गया।

''तो ये है?'' नेता ने भास्कर की ओर देख कर अपने सहयोगियों से पूछा, उन्होंने गरदन हिला दी।

''तो तू यहां तक पहुंच गया?'' नेता ने भास्कर को गुस्सा दिखाया। भास्कर ने संक्षिप्त में अपना मंतव्य बता दिया।

''झूठ बोलता है? हमें क्या पता नहीं? तू सरकारी जासूस है।'' नेता चीखा।

''सच्चाई मैंने बता दी है, इसकी जांच की जा सकती है'' भास्कर ने धैर्यपूर्वक कहा।

''हम जांच-वांच नहीं करते। शक होने पर सीधे गोली मार देते हैं'' नेता का चेहरा तमतमा गया।

''बहुत सरल है, जिस कार्यालय में मुझे जाना है, वहां सम्पर्क कर उनके मुख्यालय से पुष्टि कर लो'' बिना विचलित हुए भास्कर ने प्रस्ताव रखा।

''सब साले मिले हुए हो, सारी तैयारी करके आये हो, लेकिन हम किसी

चक्कर में नहीं पड़ते। यहां आकर कोई जिन्दा वापिस नहीं जा सकता'' नेता का स्वर तीखा हो गया। भास्कर चुप रहा।

''अगर आफिस के काम से आया है तो अपनी औरत को साथ क्यों लाया?'' नेता ने महिला की ओर देखते हुए सवाल दागा।

''यह मेरी पत्नी नहीं, मै अकेला हूं'' भास्कर ने स्थिति स्पष्ट की।

''फिर इसे क्यों साथ लाया? बीबी बता कर और यह भी तुमसे क्यों चिपकी जा रही थी?'' नेता ने कुरेदा।

''मैं नहीं लाया, वह स्वयं आयी है। बस में साथ बैठने से ही मेरी पत्नी नहीं हो गयी'' भास्कर ने बात पूरी की।

''बहरहाल जो भी हो, हमारा शक दूर नहीं हुआ है, लम्बे समय तक बंद रखकर पहरेदारी और खाने-पीने का इंतजाम करना भी अब हमारे बस की बात नहीं। तुझे मरना ही होगा'' नेता ने भास्कर को घूरा। भास्कर ने चुप रहना ही बेहतर समझा।

''मरने के लिए तैयार है?'' नेता ने जोर देकर पूछते हुए भास्कर की नजरों में झांका।

भास्कर मुस्करा दिया ''ठीक है!'' उसके मुंह से अनायास ही निकल पड़ा।

''ठीक है? ठीक है क्या? तैयार है मरने के लिए?'' नेता चौंका।

''अगर यही मेरे नियति में लिखा है तो क्या हो सकता?'' भास्कर संयत रहा।

नेता को ऐसी प्रतिक्रिया का अनुमान नहीं था, उसे सहसा विश्वास नहीं हुआ, उसने फिर कुरेदा ''एकदम तैयार है?''

''होना ही पड़ता है, मृत्यु से कौन भाग सका है? यह तो कभी भी, कहीं भी, किसी भी रूप में आ जाती है, सोचने का समय ही कहां मिलता है? उसके लिए तो हमेशा तैयार रहना ही चाहिए'' भास्कर ने कुछ दार्शनिक से अंदाज में कहा।

''क्या? मैं समझा नहीं, मरने के लिए हमेशा तैयार रहना चाहिए?'' नेता को कुछ भी स्पष्ट नहीं हुआ।

''हमारे यहां कहा गया है कि 'अजरामरवत् प्राज्ञो विद्यामर्थं च चिन्तयेत्, गृहीत इव केशेषु मृत्युनां धर्मचामरेत्।' यानि जीवन के दायित्व का निर्वाह यह सोच कर करना चाहिए कि मैं अजर-अमर हूं लेकिन आचरण करते समय 'मौत ने मेरे बाल पकड़े हुए हैं' ऐसा विचार करना चाहिए। फौज में भी यही सिखाया जाता है कि श्भ्वचम वित जीम इमेजए इनज इम तमंकल वित जीम ूवतेजश तो तैयार तो रहना ही पड़ता है'' भास्कर के चेहरे पर सन्तोष का सा भाव आ

गया।

''तुझे डर नहीं लगता? मौत सामने खड़ी है, दो लोग तेरी तरफ बन्दूक ताने हुए हैं, और तू बजाय जान की भीख मांगने के, दिलेरी दिखा रहा है?'' नेता ने नाराजगी जताई।

''एक तो कोई निश्चित नहीं कि मांगने पर भीख मिल ही जाये, दूसरे, ऐसी कायरता से मिला जीवन ग्लानि ही अधिक देगा। मेरी मृत्यु अगर तुम्हारे किसी अच्छे लक्ष्य में सहायक होती है तो यह ज्यादा सार्थक होगा। मृत्यु तो वैसे भी मुक्ति का ही दूसरा नाम है, आत्मा परमात्मा में समा जायेगी। मैंने ध्यान के लिए आंखें बंद कर ली हैं। तुम अपना काम कर सकते हो'' भास्कर की दोनों हथेलियां घुटनों पर स्वतः आ गयीं।

''अरे कौन है ये'' नेता चीखा ''पागल है! इसे शायद यकीन नहीं हो रहा कि इसको सचमुच गोली मारी जा रही है। लेकिन अफसोस कि अब कुछ नहीं हो सकता।'' कहते कहते नेता का स्वर कुछ ढीला पड़ गया। भास्कर ने आंखें नहीं खोली, वह वैसी ही स्थिर बैठा रहा। काफी देर हो गयी, न गोली ही चली और न भास्कर ने ही आंखें खोलीं।

''आंखें खोल लीजिये'' भास्कर के कानों में आवाज पड़ी, यह पुरुष के साथ महिला का भी स्वर था। भास्कर ने देखा कि साथी महिला और उसका पति भास्कर के बगल में खड़े थे। सामने नेता भी कुर्सी छोड़कर खड़ा हो गया था।

''अजीब आदमी है'' नेता बड़बड़ाया ''न डर, न घबराहट, न परेशानी, न जान बचाने की चिन्ता, उल्टे जान देने को तैयार बैठा है। क्या करें इसका? इसको मारने के लिए हाथ नहीं उठ पा रहे, बल्कि कांप रहे हैं और यह शांत बैठा है। है कौन यह?'' नेता का स्वर कांप रहा था। भास्कर ने मुस्करा कर उसकी ओर देखा और खड़ा हो गया। उसने नेता को बांहों में ले लिया।

''हम सब परिस्थितियों के दास हैं, जिन्हें बनाना ईश्वर के हाथ में हैं। इन्हीं में से हमारी भूमिकायें तय होती हैं, लेकिन हैं हम सब एक ही ईश्वर के अंश। इच्छा मन में हो तो देर-सबेर अच्छी भूमिका भी मिल ही जाती है। वैसे अच्छा-बुरा कुछ नहीं, बस सब परिस्थितियों का खेल है, इसलिए कुछ भी स्थायी नहीं है। आज तुम्हारे अन्दर बैठे आदमी ने मेरी रक्षा की है, जब यह जाग उठा है तो अब सब कुछ अच्छा ही होगा।'' भास्कर ने बात पूरी करने के बाद ही उसे अपने से अलग किया।

पहले से ही हैरान नेता की केवल आंखें ही बोल रहीं थीं, वह मौन ही रहा।

''मैं बहुत सामान्य आदमी हूं और जिस काम के लिए इधर आया हूं उसे

सम्पन्न करने के लिए जाना चाहता हूं, क्या यह सम्भव हो पायेगा?'' भास्कर ने नेता से पूछा।

नेता किंकर्तव्यमूढ़ सा खड़ा था। उसे समझ नहीं आ पा रहा था कि क्या कहे और क्या करे। पहरेदारों और साथियों को पीछे छोड़ वह भास्कर व महिला पुरुष साथियों के साथ कस्बे की ओर बढ़ गया।

रास्ते में नेता को सारी जानकारी मिल गई, भास्कर का वास्तविक परिचय, महिला से भेंट की परिस्थति व घटनाक्रम आदि। वह आश्वस्त हो चुका था कि उनमें से कोई भी न तो सरकारी जासूस था और न ही उनका विरोधी, लेकिन उसे भय था कि उन्हें यों ही जाने देने पर उसके साथी भड़क सकते हैं। उसने अपना भय भास्कर के सामने रख दिया।

''तुम्हें लगता है कि तुमने कोई अपराध किया है?'' भास्कर ने नेता से पूछा।

''नहीं।'' नेता ने तुरंत उत्तर दिया।

''तो फिर भय कैसा?'' भास्कर ने जानना चाहा।

''उन्हें आप लोगों के निर्दोष होने पर विश्वास नहीं होगा!'' नेता ने शंका व्यक्त की।

''या फिर तुम्हारे निर्णय या आचरण पर या फिर तुम पर ही?'' भास्कर ने कुरेदा।

''यह भी हो सकता है'' नेता ने स्वीकार किया।

''सारी गड़बड़ यही है। सच तो यह है कि तुम्हारा सारा व्यापार ही भय पर आधारित है। भय पैदा करो कि कोई तुम्हारे ठिकाने पर न आ पाये, भय पैदा करो कि कोई तुम्हारी बात न टाल पाये, भय पैदा करो कि लोग तुमसे जुड़े रहें, तुम्हारा विरोध न करें, अवहेलना न करें, विद्रोह न करें। समाज को भयभीत कर बंधक बनाया हुआ है। इससे लगता है कि कि न तो तुम्हें अपनी विचारधारा पर भरोसा है और न ही अपने उन कार्यों पर, जिन्हें तुम जनहित में बताते हुए कर रहे हो। लोगों को इन बातों से प्रभावित न होते देख ही शायद हताशा में हिंसा पर उतर आये हो, जिससे समाज में भय का वातावरण बना रहे। भय फैलाने के इस क्रम में हत्यायें हो रही हैं, आतंक पैदा किया जा रहा है और भय की इस संस्कृति का विस्तार तुम्हारे तंत्र में प्रत्येक स्तर तक हो गया है, इसलिए अब स्वयं एक दूसरे से भी भयभीत हो।'' भास्कर ने समझाते हुए खाका सा खींचा।

''लेकिन इसमें किया भी क्या जा सकता है?'' नेता ने पूछा।

''समाज को भयमुक्त करो, लोगों को भयभीत नहीं, निर्भय बनाओ। उन्हें

निर्वैर बनाने का प्रयास करो, प्रेम और विश्वास पैदा करो। सद्भाव और साहचर्य बढ़ाओ- इसी में से कोई सही रास्ता निकलेगा।'' भास्कर ने उपदेश जैसा दे डाला।

''ऐसा भी हो सकता है क्या?'' नेता को विश्वास नहीं हुआ।

''बिल्कुल!'' भास्कर का विश्वास दृढ़ था।

''कैसे?'' नेता ने उत्सुकता दिखाई।

''पहले स्वयं में चेतना लाओ, खुद को भयमुक्त करो, कुछ धैर्य और थोड़े साहस के साथ आत्मविश्वास से आगे बढ़ो- मार्ग अपने आप निकलेगा।'' भास्कर ने युक्ति बताई।

कस्बा पास आ गया था बातचीत लगभग थम ही चुकी थी कि नेता ने चुप्पी तोड़ी ''बहुत से साल बरबाद हो चुके, कहीं कोई आशा नहीं, अपने ही बुने जाल में फंस गये हैं, कोई सिरा ही नजर नहीं आ रहा था। आज एक रास्ता मिल गया है, अब जो भी हो, या तो इस तंत्र से मुक्त होऊंगा या फिर इस शरीर से ही, लेकिन अब निर्भय और निर्वैर होकर ही जीऊंगा'' उसके स्वर में दृढ़ता आ गयी थी।

सामने बस खड़ी थी, भास्कर और उसके साथी बस में चढ़ गये, नेता पीछे ही रुका रह गया, उसके साथ उसके समर्थक आ जुटे थे। पांच-सात मिनट बाद बस स्टार्ट हो गयी। अचानक ही नेता दौड़ कर बस पर चला आया, उसने भास्कर के कान में अपना नाम बताया और उसी झुकी मुद्रा में उसके पैर छू लिए, कुछ देर वह वैसे झुके रहकर तेजी से बस से उतर गया।

भास्कर ने महसूस किया कि उसके पैर भीगे हुए हैं। महिला सीट बदल कर खिड़की से बीच की सीट पर आ गई और भास्कर के कंधे पर सिर टेक दिया। पुरुष खिड़की से बाहर की ओर देखते हुए आंखें मल रहा था।

भास्कर वैसे ही शान्त भाव से बैठा रहा, जैसे कुछ खास न हुआ हो। यात्रा होगी तो इसमें कुछ न कुछ तो नया होगा ही।

चक्काजाम

छोटे से बाजार वाले इस कस्बे को गाँव कहना ही ज्यादा ठीक होगा। यही कोई पन्द्रह–बीस छोटी बड़ी दुकानें, दो छोटे स्कूल, एक इण्टर कालिज, एक कमरे का पोस्ट ऑफिस और दो–तीन कर्मियों वाले बैंक के साथ यहाँ ब्लाक मुख्यालय भी था। आस–पास के पच्चीस–तीस गाँवों का प्रमुख केन्द्र यह कस्बा कुछ सामाजिक गतिविधियों के लिए भी जाना जाता है। श्रवण को ऑफिस के कार्य से पाँच–छः दिन इसी कस्बे में रहना था। उसे यहां छोड़ कर ऑफिस की गाड़ी वापस चली गई, इस व्यवस्था के साथ कि नियत दिन वह उसे लेने आ जायेगी।

भीड़–भाड़ से दूर यह छोटा सा कस्बा बेहद खूबसूरत था और रहने वाले बहुत भोले। अन्य पहाड़ी स्थानों की तरह ही, गाँव के अधिकांश युवा नौकरी के लिए बाहर रहते थे, कई तो विदेशों में भी थे। कस्बे में हर माह अच्छी खासी रकम आती थी, लोगों का जीवन स्तर अच्छा था और बाजार में आम जीवन व सुविधा के सभी सामान मिल जाते थे। अधिकांश लोगों के अपने पक्के मकान थे और उन्हें कर्मचारियों व शिक्षकों को किराये पर देने में उन्हें खुशी होती थी। जितना बड़ा अधिकारी या कर्मचारी किरायेदार होता, मकान मालिक का रुतबा भी उतना ही माना जाता। शिक्षकों, विशेषकर अकेली महिलाओं को विशेष महत्व मिलता। एक तो इसलिए कि वे आसानी से परिवार का सदस्य जैसा बन जातीं, और दूसरे, बच्चों को पढ़ाई में व स्कूल में उनसे सहयोग मिल जाता। कर्मचारी व शिक्षक इस कस्बे में आना अच्छा मानते, बस कठिनाई थी तो एक ही और वह थी यातायात को लेकर।

कस्बा दो मुख्य मार्गो को जोड़ने वाली ब्रान्च रोड पर था, दोनों मुख्य मार्ग प्रमुख नगरों को कई कस्बों से जोड़ते थे लेकिन अलग अलग दिशाओं में थे। इन मार्गो पर तो वाहनों की खूब आवाजाही होती थी लेकिन दोनों को आपस में जोड़ने वाली सड़क पर जो कुछ भी यातायात था, केवल इसी कस्बे को लेकर था। अधिकतर व्यस्त और निकट वाले मार्ग से ही लोगों का आना जाना होता। यात्री बसें, हालांकि दोनों ओर से आती जाती थीं लेकिन दूसरी ओर की सवारियां काफी कम होती थीं। गाँवों में महिलाओं और बच्चों के ही अधिक होने व उनकी जरूरतें कस्बे से ही पूरा होने के कारण स्थानीय लोगों की मुख्य मार्गो तक आवाजाही कम ही होती। यह शिक्षकों कर्मचारियों

की आने-जाने व बाहर नौकरी करने वालों के अपने गाँव आने के दौरान ही बढ़ती। बाहर नौकरी करने वाले आते समय एक साथ फुल टैक्सी बुक करके आते एवं जाते समय भी यही करते, इस कारण कस्बे की इस सड़क के लिए ठीक से व्यवस्था नहीं बन पायी, सुबह शाम की निर्धारित दो सेवाओं के अलावा और कोई साधन नहीं था। श्रवण ने कस्बे की तारीफ तो कई बार सुनी थी लेकिन इस कठिनाई के विषय में उसे कोई जानकारी नहीं थी।

शुक्रवार तक अपना काम समाप्त कर शनिवार को सुबह श्रवण को वापस अपने शहर के लिए चल देना था। काम-काज व आस-पास के सैर सपाटे आदि में शुक्रवार की रात काफी देर से सोना हुआ। आफिस की कार को शाम तक पहुँच जाना था लेकिन अभी तक उसे इसकी पक्की जानकारी नहीं हो पायी थी। सुबह काफी तड़के उठ श्रवण सड़क तक कार देखने के लिये आ गया, कार नहीं आई थी। तभी किसी ने बताया कि आज पूरे प्रदेश में चक्का जाम है और किसी भी वाहन का चल पाना सम्भव नहीं है क्योंकि बन्द बहुत असरदार है, सड़कों पर वाहन फूँकने या उनमें तोड़फोड़ होने की आशंका के चलते सड़कें सूनी रहेंगीं।

श्रवण के लिए यह स्थिति काफी परेशान करने वाली थी। उसे हर स्थिति में शनिवार की रात्री तक वापिस अपने नगर पहुँचना था। उसके घर के सभी सदस्य वहां आने वाले थे। उसका वहाँ अगले दिन रहना बेहद जरूरी था क्योंकि उसके घर वाले उसके रिश्ते की बात तय कर चुके थे और लड़की पसन्द आ जाने पर उसी दिन टीका करने का भी प्रस्ताव था।

कस्बे में कोई टैक्सी नहीं थी और न ही फोन आदि के द्वारा मंगायी जा सकती थी। उस दिन तो यह सम्भव ही नहीं था क्योंकि चक्का जाम के लिए काफी तैयारी की गई थी। वह बैचेन हो उठा। काफी हाथ-पांव मारने के बाद उसे पता चला कि कस्बे से होकर लगभग 60 किमी दूर मुख्य मार्ग तक सब्जियाँ और दूध लेकर एक मिनी ट्रक प्रत्येक सुबह चलता है जो कुछ ही देर में आने वाला है। उसे कुछ आशा बंधी और उसने उसी ट्रक से जाने का निश्चय कर लिया।

कस्बे का विभाग का स्टाफ संख्या में बहुत कम था। उसके दौरे के कारण उन सभी को काफी व्यस्त रहना पड़ा था, उन्हें श्रवण के रविवार को जाने का अनुमान था, शनिवार के विषय में किसी से कोई चर्चा नहीं हुई थी। उसे कस्बे से कुछ दूर एक संस्था के गेस्ट हाउस में ठहराया गया था, जहाँ सुविधायें भले ही अच्छी थीं, लेकिन एकान्त में था। उसका उस दिन किसी से भी सम्पर्क नहीं हो पाया। किसी तरह स्टाफ को उसके उसी दिन जाने के विषय

में पता चल गया। सब दौडे-दौड़े आये और उसे एक दिन और रुकने के लिए मनाने की काफी कोशिशें कीं, लेकिन उसकी जिद के आगे सफल नहीं हो पाये।

इसी बीच दूध सब्जी वाला मिनी ट्रक आ गया। स्टाफ ने ड्राइवर से बात की लेकिन उसने श्रवण को ले जाने से इन्कार कर दिया। ट्रक के आगे की, ड्राइवर के बगल वाली सीटें पहले से ही भरी थीं, उसमें ट्रक मालिक के परिवार की महिलाएं और बच्चे बैठे थे। ट्रक के पिछले हिस्से में दूध की ठेकियां और सब्जी के टोकरे थे, जिनके बीच बैठा ही नहीं जा सकता था। ट्रक में पहले से बैठी सवारियों को न तो उतारा जा सकता था और न ही पीछे बिठाया जा सकता था, ड्राइवर सचमुच मजबूर था। स्टाफ का कस्बे के लोगों के बीच अच्छा सम्मान था, उनकी बात प्रायः टाली नहीं जाती थी, लेकिन यहाँ उनका भारी अनुरोध भी काम नहीं आ रहा था। ड्राइवर ने यह सुझाया कि साहब (श्रवण) पीछे फल व सब्जियों के बीच खड़े हो जायें, आगे आठ-दस कि.मी. के बाद ट्रक मालिक के परिवार के सदस्य उतर जायेंगे और फिर आगे जगह हो जायेगी। यह सुझाव स्टाफ को किसी भी तरह से स्वीकार नहीं था, वे अपने वरिष्ठ अधिकारी को इस तरह से विदा नहीं कर सकते थे, सड़क पर भीड़ भी बढ़ चुकी थी और ऐसा करने से जनता के बीच उनकी हँसी भी होती। बात होते-होते श्रवण तक पहुँच गयी, सरल स्वभाव का होने के कारण उसने पीछे खड़े होकर जाने के लिए सहमति दे दी लेकिन स्टाफ को यह कतई स्वीकार नहीं था। ट्रक को जाने की जल्दी थी और काफी देरी हो चुकी थी, अन्दर महिलाओं में भी बैचेनी बढ़ रही थी।

अचानक पढ़ी लिखी व सुन्दर दिखने वाली एक युवती ने आगे की सीट से उतर कर श्रवण के लिए जगह बना दी और स्वयं उसकी जगह पीछे खड़े होने को तैयार हो गयी। यह श्रवण को नागवार लगा कि किसी महिला को स्थान देने के बजाय खुद ही उससे ऊपर हो, यह सामान्य सभ्यता के भी विरुद्ध था। उसे वहाँ से हर हालत में निकलना था, यह मिनी ट्रक ही एक मात्र साधन था लेकिन कोई हल नहीं निकल पा रहा था। आगे सीटें ठसाठस भरी थीं और उसमें तिल रखने की जगह नहीं थी, युवती के प्रस्ताव से श्रवण सहमत नहीं था और उसके प्रस्ताव पर वहाँ का स्टाफ। युवती श्रवण के पास आकर उसे एक ओर ले गई, उसने उससे बातचीत की और आगे सीट पर बैठी महिलाओं से कुछ कह कर व अपना पर्स उठा, उतर कर एक ओर चल दी।

भीड़ में कुछ खुसर-पुसर होने लगी, एक महिला के इस तरह किसी दूसरे के कारण अपनी यात्रा छोड़ देना लोगों को अच्छा नहीं लगा। दोष श्रवण

पर आ रहा था, बात बढ़ती इससे पहले ही आगे बैठी महिलायें सिरदर्द का बहाना बना कर चाय पीने के लिए नीचे उतर गयीं। श्रवण भी स्टाफ के साथ चाय पीने चला गया, भीड़ धीरे-धीरे छँट गयी। चाय खत्म होते ही महिलायें अपनी सीटों पर आ गयीं। ड्राइवर ने ट्रक स्टार्ट किया। महिलाओं ने श्रवण को इशारा किया और स्टाफ ने फटाफट उसका सामान पीछे रख दिया। आगे की सीट से युवती के उतरने के कारण श्रवण के लिए जगह बन चुकी थी, वह भी ट्रक पर चढ़ गया। स्टाफ ने हाथ हिलाकर उसे विदा कर दिया। आधा-पौने कि.मी. आगे जाकर ट्रक रुक गया, युवती कन्धे पर पर्स लटकाये पैदल जा रही थी। श्रवण नीचे उतर पीछे डाले पर चढ़ गया और युवती आगे की सीट पर बैठ गयी। उसके साथ बैठी महिलाओं के साथ ड्राइवर भी खिल-खिलाकर हँस दिया, श्रवण भी मुस्कराये बगैर नहीं रह सका। युवती की योजना ने सबकी बात रख ली थी और मामला हल हो गया।

आठ-दस कि.मी. आगे ट्रक मालिक के परिवार के सदस्यों को उतरना था लेकिन उनके साथ वाली युवती नहीं उतरी। श्रवण आगे आ गया। युवती ने उसके लिये जगह बना दी, उसने बताया कि वह ट्रक मालिक के मकान में पहले कभी किरायेदार रह चुकी है लेकिन अब भी परिवार के सदस्य जैसी ही है। उसने यह भी बताया कि वह यहाँ इण्टर कॉलेज में प्रैक्टिकल का एक्जाम लेने आई थी और बहुत जरूरी होने के कारण उसे इस तरह से जाना पड़ रहा है। उसे उसी नगर जाना था जहां श्रवण का घर था।

‘‘मैं भी वहीं जा रहा हूँ। कल बहुत जरूरी काम है, लेकिन आगे कोई साधन मिल पायेगा क्या?'' श्रवण ने उसकी ओर देखा।

‘‘पता नहीं!'' कह कर युवती चुप हो गयी।

मुख्य मार्ग से सौ-सवा सौ मीटर पहले ट्रक रुक गया। चक्का जाम के कारण किसी नुकसान की आशंका के चलते ड्राइवर मेन रोड पर नहीं जाना चाहता था। युवती और श्रवण ट्रक से उतर गये। श्रवण पैदल मुख्य मार्ग की की ओर बढ़ने लगा। युवती वहीं ठिठक गई।

‘‘क्या हुआ?'' श्रवण ने पूछा ‘‘आप नहीं चलेंगी?''

‘‘जी जाना तो है'' युवती ने उत्तर दिया।

‘‘तो संकोच किस बात का? हमें एक ही जगह तो जाना है।'' श्रवण ने युवती को भरोसा दिलाया। वह साथ चल दी। सात-आठ मिनट में वे दोनों मुख्य सड़क पर आ गये। सड़क सुनसान थी, पान व चाय की दुकानें तक बन्द थीं। सामान्य दिनों में तो सड़क पर खूब आवाजाही रहती थी लेकिन आज दूर-दूर तक कोई वाहन नहीं था। बन्द चाय की दुकान के बाहर खड़े उसके नौकर ने

बताया कि सुबह होते ही दुकानें बन्द करा दी गई थीं और उसने सुबह से ही कोई वाहन आता जाता नहीं देखा।

''ऐसी कल्पना तो बिल्कुल नहीं थी, टैक्सी, जीप या कम से कम मोटर साईकिलें तो दिख ही सकती थीं लेकिन यह तो कर्फ्यू जैसा हो गया है। आदमी तक की शक्ल नहीं दिखायी दे रही है।'' युवती परेशानी में बड़बड़ाई।

श्रवण स्वयं ही परेशान था, वह चाहता था कि अपने गंतव्य की ओर पैदल ही चल पड़े। रास्ते में जहाँ से, जो भी साधन मिले, उसी का सहारा ले लेगा लेकिन युवती साथ में थी। उसके साथ तो ऐसा खतरा नहीं लिया जा सकता और उसे परेशानी में इस तरह अकेला भी नहीं छोड़ा जा सकता था। श्रवण ने उसे दिलासा दिया कि वह साथ में है और युवती को ज्यादा परेशान होने की आवश्यकता नहीं। अपना नाम व घर आदि बता कर परिचय देते हुये उसने विश्वास दिलाया कि उस पर भरोसा किया जा सकता है।

युवती बुरी तरह चौंक पड़ी। उसने किसी तरह अपनी हैरानी काबू में की। एकदम नजरें झुकाये ''जी!'' कह कर उसने श्रवण का प्रस्ताव मान लिया।

सुबह पीछे छूट चुकी थी, धूप में तेजी आ गई थी। ठीक से बैठने तक की कोई व्यवस्था नहीं थी। अब तक नाश्ता भी नहीं किया था, लेकिन यहाँ तो चाय मिलने में भी कठिनाई थी, पानी तक का कोई प्रबन्ध नहीं हो पा रहा था। श्रवण को झुंझलाहट होने लगी, उसे यों बिना सोचे समझे चल निकलने की अपनी मूर्खता पर हंसी आ गयी।

''क्या हुआ?'' उसे यों अनायास सिर झटकते देख युवती चौंकी।

''कुछ नहीं, बुरे फंस गये हैं, न खाने को, न पीने को, बैठने तक को नहीं और निकलने की कोई सूरत भी नहीं'' श्रवण ने लम्बी सांस ली।

उसे परेशान देख युवती चिन्तित हो गई। उसने चाय की दुकान के नौकर से बात की। नौकर ने दुकान तो नहीं खोली, लेकिन बताया कि पास में ही एक सरकारी निगम का अच्छा गेस्ट हाउस है, जहाँ खाने पीने और ठहरने की अच्छी व्यवस्था है। टी.वी. व फोन आदि अन्य सुविधाएं भी हैं। युवती ने यह बात श्रवण को बता दी और आग्रह किया कि उसे गेस्ट हाउस में नाश्ता कर लेना चाहिए और हो सके तो थोड़ा आराम भी। श्रवण के प्रस्ताव पर कुछ संकोच सा दिखा युवती भी उसके साथ चल दी।

गेस्ट हाउस में, अपना परिचय देने पर, श्रवण को सचमुच अच्छा व्यवहार मिला लेकिन कठिनाई यह आ गई कि वहाँ टूरिस्टों का एक बड़ा ग्रुप टिका हुआ था। उनके हो हल्ले के चलते लांज तक में नहीं बैठा जा सकता था

और सभी कमरे भी उन्हीं के लिए बुक थे। अचानक हुए चक्का जाम के कारण उनका तय कार्यक्रम गड़बड़ा गया था और वे सभी गुस्से में थे। उनसे किसी प्रकार के सहयोग की कोई आशा नहीं की जा सकती थी।

श्रवण गेस्ट हाउस से निकलना चाहता था लेकिन युवती से उसकी परेशानी देखी नहीं गई। उसने मैनेजर से बात की, वहां एक कमरा उपलब्ध था लेकिन इतना छोटा कि उसमें केवल सिंगल बेड ही आ सकता था, कोई कुर्सी भी नहीं, केवल एक छोटा टेबिल लगाने की जगह थी। मैनेजर श्रवण से इतना छोटा कमरा लेने के लिए कहने का साहस नहीं जुटा पा रहा था। वह कुछ सोच पाता, इससे पहले ही युवती बोल उठी ''चल जायेगा, कुछ न होने से तो यह बेहतर है'' उसने किसी के भी उत्तर की प्रतीक्षा नहीं की और श्रवण का सामान ले उस छोटे से कमरे में जा घुसी। मैनेजर ने एंट्री करने के लिए रजिस्टर श्रवण की ओर बढ़ा दिया।

रजिस्टर में नाम व पते के साथ ठहरने वाले के आपसी सम्बन्ध, आयु, किस कार्य से आये है, कहाँ से आये है, कहाँ जाना है, जैसे विवरण भी देने थे। केवल अपना ही नाम लिखने से मैनेजर को सफाई देकर पूरी कहानी बतानी पड़ती और सारे विवरण देने पर और भी कई उलझनें थीं। श्रवण वैसे भी उस युवती को जानता नहीं था, न उसका नाम और न ही पता, वह सिर खुजाने लगा।

''कोई बात नहीं सर! एंट्री बाद में कर लिजिएगा। मैडम ने नाश्ते का आर्डर कर दिया है, आपको बुला रही हैं। मैनेजर ने श्रवण को राहत दी। कोई और उपाय न देख वह कमरे में आ गया।

''मैं यहां से जाना चाहूंगी लेकिन तीन-चार बजे से पहले कोई वाहन नहीं मिलने वाला। सड़क पर अकेले खड़ा रहना ठीक नहीं, कोई साथ होता तो बात और थी।'' उसके आते ही युवती बोल उठी।

''तो यहीं रुकिये ना'' श्रवण ने कहा ''रूम की एंट्री आपके नाम करवा देते हैं, मैं बाहर रुक जाऊंगा''

''ऐसा मत कीजिये, यह ठीक नहीं होगा, मैं आपको कठिनाई में नहीं देख सकती'' कुछ सोचने के बाद मन बना युवती ने श्रवण की ओर देखा, ''अगर आप को आपत्ति न हो तो मैं भी यहीं रुक जाती हूं, जाना भी तो साथ में ही है।'' श्रवण ने हांमी भर दी।

''यों भी मकान मालिक के घर में सुबह तीन बजे से खटर-पटर शुरु हो गयी थी। रात को भी बहुत देर से सोना हुआ, नींद पूरी नहीं हो पायी। थोड़ा पलक झपक जाती तो कुछ सकून मिलता, लेकिन यहां बदलने को कपड़े भी तो नही

हैं!'' युवती ने बड़े स्वाभाविक अंदाज में कहा, जैसे दोनों अच्छे मित्र या परिचित हों।

श्रवण ने कुछ कहे बिना कन्धे उचका दिये। डाले पर खड़े-खड़े आने और ट्रक की यात्रा से उसे कुछ थकान हो चली थी। मुंह हाथ धोने के लिये उसने अटेची खोल कर तौलिया निकाला लेकिन उसके नीचे कुछ धोतियां निकल आईं। कस्बे की उस संस्था में, जिसके गेस्ट हाउस में श्रवण ठहरा हुआ था, कुटीर उद्योग के रूप में ऐसी धोतियां बनायी जाती थीं। ये धोतियां मंहगी नहीं थीं और घर के उपयोग के लिए अच्छी होती थीं। श्रवण कुछ धोतियां वहीं से खरीद लाया था।

युवती की निगाह धोतियों पर पड़ गई लेकिन वह कुछ बोली नहीं। परिस्थिति को देख श्रवण ने एक धोती उसकी ओर बढ़ा दी।

''थैंक्स!'' युवती ने धोती ले ली, ''आपको कैसे पता चला कि मुझे यही धोती पसन्द आयेगी? मैं आपको इसके पैसे नहीं दूंगी!'' उसने श्रवण की ओर देखा ''लेकिन उधार भी नहीं रखूंगी'' कहते हुए वह धोती लेकर कमरे से सटे बाथरूम में चली गयी। उसका अचानक खूब घुले मिले दिखने वाला व्यवहार उसे समझ में नहीं आ रहा था, युवती के कहने का आशय भी वह कुछ समझ नहीं पाया।

थोड़ी देर में युवती कपड़े बदल कर बाहर आ गई ''आगे भी, पता नहीं कितना परेशान होना पड़ेगा। आप भी फ्रेश होकर थोड़ा आराम कर लो।'' उसने अधिकार सा जताते हुए श्रवण से अनुरोध किया। श्रवण ने हैरानी से युवती की ओर देखा। वह उसकी परेशानी भांप गई।

''मेरे इस तरह धोती ले लेने से आपको अचरज हो रहा होगा! दरअसल मैं जब भी इस कस्बे से अपने शहर में आती थी, भेंट बगैरह देने के लिये या किसी की मांग पर ऐसी धोतियां लाती रहती थी। मेरे घर पर ऐसी पांच-चार नई धोतियां रखी हैं। इस धोती के बदले में आपको अच्छी धोती मिल जायेगी। वैसे यह भी अच्छी लग रही है ना?'' बाल झटकते हुये उसने कनखियों से श्रवण की ओर देखा। वह मुस्कुराये बगैर नहीं रह सका और तौलिया लेकर बाथरूम में जाने लगा।

''कपड़े नहीं बदलेंगे? लेटने-सोने से ये तो गन्दे हो जायेंगे?'' युवती ने सवाल किया और खुद ही जबाब भी सुना दिया ''लेकिन आप तो यहां पर भी बदल सकते हैं। बस मुझे उधर मुंह करना होगा।''

''नहीं, ठीक है!'' श्रवण ने कठिनाई से कहा और असहमति में गर्दन हिला घूरकर उसकी ओर देखा। कुछ देर पहले तक साथ चलने तक में संकोच

दिखाने वाली युवती का इतने सरलतापूर्वक सामान्य ढंग से आत्मीय व्यवहार करने पर उसे काफी आश्चर्य हुआ। वह बाथरूम में घुस गया और हाथ मुंह धोकर दो-तीन मिनट में बाहर आ गया।

''नाश्ता आने ही वाला होगा, बहुत भूख लगी है, थोड़ी गर्मागर्म चाय पीने से सारी थकान मिट जाएगी,'' युवती ने कहना जारी रखा। श्रवण को समझ में नहीं आया कि क्या करे। बैठे तो कहाँ पर? बेड पर युवती के कपड़े और पर्स से निकला सामान फैला हुआ था।

''ओह!'' युवती ने सामान एक ओर समेटा ''बेड चौड़ाई में कम है लेकिन लम्बाई में पूरा है। आप लेट कर आराम कर लें, मुझे नीचे की ओर, दीवार पर पीठ टेकने से झपकी आ जायेगी।'' उसने श्रवण के लिए एक तकिया लगा दिया। वह खड़ा ही रहा।

''इसमें परेशानी जैसा कुछ नहीं है। दरवाजे आधे खुले रहेंगे, केवल तीन-चार घंटे की तो बात है।'' युवती ने श्रवण को समझाया।

नाश्ता आ चुका था, युवती ने प्लेटों में लगा दिया और कप में चाय डाल कर श्रवण को पकड़ा दी। श्रवण बेड पर युवती से काफी दूरी बना कर बैठ गया। मेज सामने थी, उसने चाय का कप मेज पर रख दिया।

''मैं आपको पहचान गई हूं और मुझे आप पर भरोसा है, आपके साथ कोई कठिनाई नहीं है।'' श्रवण को गम्भीर मुद्रा में देख युवती ने उससे कहा ''लेकिन आप इतने असहज और चुप-चुप क्यों हैं?''

''कुछ नहीं, बस यों ही'' श्रवण ने संक्षिप्त सा जवाब दिया।

''देखिये! मै आपकी कठिनाई समझ रही हूँ, आप मेरे बारे में कुछ नहीं जानते, मैं भी इस समय अधिक कुछ नहीं बता सकती, लेकिन आपसे मिलना मैं ईश्वर की ऊपर मानती हूं। हमारा सहज रहना बहुत कठिन नहीं है, विश्वास कीजिए मेरे कारण आप किसी संकट में नहीं पड़ेंगे।'' युवती ने कुछ अनुरोध जैसा किया।

''लेकिन'' श्रवण कठिनाई से कह पाया ''इस तरह?''

''हम कोई अपराध नहीं कर रहे! परिस्थिति ही ऐसी है कि एक दूसरे का साथ देना चाहिये। अपने पर विश्वास हो तो इसमें परेशान होने लायक कुछ नहीं।'' युवती ने बेड व तकिया झाड़ कर श्रवण के लेटने के लिये जगह बना दी और अपने आप तकिये के विपरीत बेड के दूसरे कोने पर बैठ गई। उसके आग्रह में कुछ ऐसा जादू था कि श्रवण को बेड पर लेटना ही पड़ा, लेकिन उसे एक अपरिचित युवती के साथ कमरे में अकेले होना पच नहीं पा रहा था।

पैरों के पास युवती के बैठे होने से श्रवण अपने पैर पूरे नहीं पसार पा रहा था, करवट बदलने भी कठिनाई थी लेकिन युवती को बैठे बैठे ही नींद आ गयी। उसकी गरदन झुक कर श्रवण की ओर हो गयी। खूबसूरत, सरल और निश्छल चेहरे पर निश्चिन्त भाव, एक पैर पर दूसरा पैर रखे उसने घुटनों से कुछ ऊपर दोनों हाथ आपस में इस तरह बांधे हुये थे कि श्रवण पर न पड़ें। श्रवण की आंखें उस पर टिक गयीं, बहुत कोशिश करने पर भी हट नहीं पायीं। यह नैसर्गिक सुन्दरता उसे भा गई, मन हुआ कि उससे बातें करे, उसे चूम ले, उसको अपने से लिपटा ले। श्रवण उसका दिल धक-धक करने लगा, ऐसे में नींद आने का तो सवाल ही नहीं था।

श्रवण ने जैसे तैसे संयत होकर, किसी तरह अपने को सम्भाला लेकिन दूसरी परेशानी सामने थी। अगर शाम तक यहाँ से निकलने की कोई व्यवस्था नहीं हुई तो रात को भी इस छोटे कमरे में युवती के साथ रहना पड़ेगा। दिन के लिए तो जैसे तैसे कोई तर्क चल जाएगा लेकिन रात भर के साथ से तो कई सवाल उठेंगे ही। उसकी परेशानी इस बात को लेकर अधिक थी कि युवती उसके बारे में कहीं यह न सोच ले कि वही रात को रुकना चाहता है। इस बारे में युवती को विश्वास दिलाना जरूरी था। सोचते सोचते वह बेड से चुपचाप उठ कर टहलते हुए मुख्य सड़क पर आ गया।

आधेक घण्टे के बाद श्रवण को एक टैक्सी कार आती दिखी। उसमें चार लोग बैठे थे और एक सवारी के लिए जगह बची थी। श्रवण ने कार रुकवा कर उससे बात की, वे सहमत हो गये। श्रवण अपना सामान लेने गेस्ट हाउस आ गया लेकिन उसके मन ने उसे लताड़ा। युवती को इस तरह छोड़ कर व एक तरह से धोखा देकर जाना उसे अच्छा नहीं लगा। उसने युवती को जगा कर बताया कि एक टैक्सी का प्रबन्ध हो गया है लेकिन उसमें केवल एक ही आदमी जा सकता है। उसने युवती से टैक्सी में जाने का प्रस्ताव किया। युवती श्रवण के साथ ही जाना चाहती थी लेकिन उसके बहुत जोर देने पर उसकी बात मानने को सहमत हो गयी। उसे किसी तरह कार में बैठा कर श्रवण वापिस गेस्ट हाऊस में आ गया। उसने तकिये पर सिर टिका कोहनी से अपनी आँखें ढक लीं, जैसे किसी बला से छुटकारा मिला हो।

कोई पन्द्रह बीस मिनट ही हुये होंगे कि युवती वापिस लौट आयी। कार से उतर कर, तेजी से चलते हुये वह सीधे कमरे के अन्दर आ गई। उसकी आंखों में आंसू थे और चेहरा सफेद हो गया था। वह बेहद डरी हुई थी। पूछने पर उसने बताया टैक्सी मे बैठे लोग ठीक नहीं थे, टैक्सी चलते ही उन्होंने अपनी हरकतें चालू कर दी थीं। वह उन्हें किसी तरह बहाना बना और बातों में

उलझा कर वापिस ले आयी। वह श्रवण पर बुरी तरह से नाराज थी लेकिन उसकी छाती से लिपट गई ''आखिर आप मुझसे छुटकारा क्यों पाना चाहते हैं? जानते हैं आपने मुझे कितनी बड़ी मुसीबत में डाल दिया था? आप ने भलेपन से मुझे साथ लिया था, फिर यह सब क्यों? किस बात से इतना ज्यादा डर रहे हैं आप? क्या कोई और बात है?'' उसने सवालों की झड़ी लगा दी। श्रवण के पास कोई उत्तर नहीं था, वह इस पर स्वयं लज्जित था, युवती से ''सॉरी'' कहने के अलावा कोई चारा नहीं था।

इस बीच मैनेजर माजरा जानने के लिये कार के पास गया लेकिन कार वाले खतरा भांप कर भाग खड़े हुये। उसे मामला, पूरा तो नहीं, कुछ-कुछ समझ में आ रहा था। उसे दोनों के पति-पत्नि होने पर सन्देह होने लगा। रजिस्टर में अभी तक एंट्री नहीं हुई थी और बिना एंट्री किये किसी को भी ठहराया नहीं जा सकता था। यह उसकी नौकरी का सवाल था। उसने श्रवण से बात की, श्रवण किसी एंट्री के चक्कर में न पड़, हर हालत में गेस्ट हाउस छोड़ना चाहता था।

शाम को तीन चार बजते-बजते चक्का जाम कुछ कमजोर पड़ गया लेकिन उस स्थान से बस या टैक्सी सेवा आरम्भ नहीं होती थी, बल्कि चालीस कि.मी. दूर एक नजदीकी शहर से आती थीं। मैनेजर से कह कर श्रवण ने वहां से एक टैक्सी मंगवा दी, जिसे वहां पहुंचते पहुंचते शाम के छः-सात बज गये। यह तय था कि अपने शहर वे देर रात ही पंहुच सकेंगे। दोनों का समान टैक्सी में रखवा दिया गया।

श्रवण हिसाब करने के लिए मैनेजर के पास आ गया, पीछे युवती भी आ गई। श्रवण ने पेमेन्ट कर दिया, मैनेजर ने बड़ी शालीनता से युवती की ओर देख कर उससे कहा 'मैडम सॉरी! मैंने गेस्टहाहस में आप दोनों का स्वागत हसबैन्ड-वाइफ के रूप में किया था, आपने ऐसा संकेत दिया था। यह स्वाभाविक भी लग रहा था, लेकिन मैं कुछ उलझन में पड़ गया हूं। आप को दोनों विदा भी उसी रूप में करते हुये मैं आपसे यह जरूर कहना चाहूंगा कि पति-पत्नी के रूप में आप दोनों काफी सुरक्षित स्थिति में हैं। किसी प्रकार की गफलत नुकसान ही करेगी। मुझे अगर कोई गलतफहमी हो गई है तो भी मैं यही कहूंगा कि अपने पड़ाव पर पहुंचने तक आप लोग इसे बनाये रखिये। आपको किसी को न कुछ कहना है, न सफाई देनी है, केवल नार्मल रहना है।'' सीख सी देते हुये उसने समझाया।

युवती अब तक सम्भल चुकी थी, प्रतिक्रिया जानने के लिये उसने श्रवण की ओर देखा। वह खुद युवती के चेहरे पर देख रहा था, वह मुस्कुरा

दी, ''यह बात इन्हें समझाइये! भला कोई ऐसे भी करता है?'' श्रवण के प्रति अपनेपन से नाराजगी सी दिखाते हुये उसने जोर देकर मैनेजर से कहा।

''बेस्ट आफ जर्नी, गुडलक सर! गुडलक मैडम!'' मैनेजर ने हाथ जोड़ कर दोनों को विदा कर दिया।

युवती जो बात श्रवण को समझाने में हार चुकी थी, मैनेजर ने बड़ी सरलता से उसे समझा दी। वैसे भी जिस आशंका से वह भयभीत था, उससे निश्चिन्त हो चुका था। देर रात ही सही, लेकिन घर पहुँचने की व्यवस्था बन चुकी थी। चाहते न चाहते युवती की सहायता भी उससे हो ही गयी थी। वह अब पूरी तरह संयत हो चुका था, उसे छेड़छाड़ की सूझी।

''चलें?'' टैक्सी का दरवाजा खोलते हुए उसने युवती को प्यार भरी निगाह से देख कर अन्दर बैठने का इशारा किया।

''हां!'' युवती श्रवण का हाथ पकड़ कर टैक्सी में आ गयी। दोनों एक दूसरे को कनखियों से देखकर मुस्कुराये।

युवती ने कुछ नींद ले ली थी, श्रवण बेहद थका हुआ था, लेकिन नींद में युवती से टकरा जाने के भय से कार में अंधेरा होने के वावजूद वह सम्भल कर बैठा था। युवती बेफिक्र थी, जाने कब उसका सिर श्रवण के सीने पर टिक गया। थोड़ी ही देर में श्रवण का चेहरा भी युवती के माथे पर आ गया और कुछ देर बाद उसकी बाहें भी युवती के शरीर पर लिपट गईं जो धीरे-धीरे कस रही थीं। युवती भी जैसे नींद में ही कसमसा कर उसकी बाहों को हटा रही थी।

आधा रास्ता तय करने के बाद टैक्सी चाय के एक होटल पर आ गयी।

''चाय लेंगे साहब?'' ड्राइवर ने कार रोक कर पूछा। श्रवण हड़बड़ा कर युवती से कुछ इस तरह से अलग हुआ जैसे गहरी नींद में हो। युवती ने अलसाई सी अंगड़ाई ली ''कहां आ गये हम?'' उसने पूछा।

ड्राइवर ने जगह का नाम बता, कार से बाहर उतर कर यह भी पूछ लिया कि दोनों चाय कार के अन्दर लेंगे या बाहर आयेंगे।

''अन्दर ही!'' उत्तर युवती ने दिया।

''नहीं! बाहर जायेंगे'' श्रवण कार का दरवाजा खोल कर बाहर निकल गया। पीछे पीछे युवती भी चली आई। ड्राइवर चाय पीने के लिये बाहर सड़क पर ही खड़ा होकर होटल वाले से बातचीत में व्यस्त हो गया। दोनों ढ़ाबे के अन्दर चले गये, अन्दर काफी बड़ा हाल था, मध्यम रोशनी में वहां उन दोनों के अलावा कोई नहीं था।

''आप कुछ परेशान लग रहे हैं?'' युवती ने बात शुरू की।

''हूं! सोने को नहीं मिल पाया'' श्रवण ने कुछ अनमने ढ़ंग से कहा।

''लेकिन मुझे तो लगता है, आप बहुत देर से काफी गहरी नींद में थे।'' युवती ने मुसकुराहट के साथ श्रवण की ओर देखा ''मैं समझ सकती हूं कि आपकी नींद कितनी गहरी थी, सचमुच बहुत गहरी! मैं इसे महसूस भी कर रही थी।''

श्रवण युवती के कहने का अर्थ ठीक से नहीं समझ पाया कि यह सरल भाव से कहा गया था या व्यंग्य से। लेकिन वह सकपका गया, जैसे कोई चोरी पकड़ी गई हो। संयत होते हुये उसने युवती की ओर देखा, ''अच्छा?''

''सचमुच की नींद थी या नींद का अभिनय, लेकिन'' युवती ने जोर देकर कहा ''सब कुछ स्वाभाविक था, पति-पत्नि ऐसे ही तो यात्रा करते हैं!'' युवती अपनी रौ में थी ''आप सचमुच अच्छे हैं, आपकी एक अच्छी आदत ने आज बहुत मदद की।''

''कैसे?'' आश्चर्य से श्रवण ने पूछा

''आप बहुत कम बोलते हैं, अगर कहीं मेरे बारे में पूछताछ शुरू कर देते तो सम्भालना मुश्किल होता।'' युवती कुछ प्यार के साथ बोली ''वैसे आप ने मेरे बारे में सुबह से कुछ नहीं पूछा। क्या, कुछ नहीं जानना चाहते?''

''बताइये!'' श्रवण ने कहा।

''जान जायेंगे सब कुछ! लेकिन एक बात जरूर कहूंगी, मानिये चाहे नहीं, आप बहुत अच्छे अभिनेता हैं।'' उसने श्रवण की आंखों में आंखें डाल दीं।

श्रवण चौंक गया, ''क्या?'' वह बोला।

''दिन भर किसी सन्यासी की तरह दूर-दूर रहने-दिखने की कोशिश करना, जबकि मन में कुछ और ही हलचल हो रही हो, काफी मुश्किल है ना?''

''यह गलत है!'' श्रवण ने प्रतिवाद करना चाहा। युवती ने श्रवण का हाथ अपने हाथों में ले लिया ''मैंने भी तो जीवन में पहली बार किसी के सीने पर सिर रखा है। अब मान भी लीजिये! यहां और कोई नहीं है!'' वह श्रवण के कान के पास फुसफुसाई। श्रवण फंस गया था, इस समय ज्यादा प्रतिवाद करना सम्भव नहीं था। वह खड़ा होना चाहता था लेकिन युवती ने उसका हाथ कस कर पकड़ा हुआ था। वह चुपचाप बैठा रहा।

''आप कितनी भी कोशिश करें, मन की बात थोड़े ही छिपती है, वह तो किसी न किसी तरीके बाहर आ ही जाती है।'' युवती ने श्रवण को छेड़ा।

श्रवण का संकोच भी कुछ कम हुआ ''ओफ्फो! आप तो पीछे ही पड़ गईं! आप नाराज किस बात से हैं? मेरी नींद से या होश से? मैं आपको जानता

तक नहीं, लेकिन अचानक से आपका सारा व्यवहार ऐसा हो गया है जैसे'' श्रवण को आगे ठीक से शब्द नहीं सूझ पाये।

''मैं और आपसे नाराज? एक तो इतनी हिम्मत नहीं है और दूसरे मैं जानती हूं कि ऐसी बातों को हम परिवार में रह कर ही देखते और समझते हैं। परिवार में लड़कियां न होने और आप के ही घर के बड़े लड़के होने से आप ऐसी बातों से दूर ही रहे। आप का ध्यान केवल पढ़ाई पर रहा और जॉब भी जल्दी ही मिल गया। केवल सुनी सुनाई बातों या किताबों से ही सब कुछ तो नहीं सीखा जा सकता। आप, आप की नींद और होश, सब मुझे बहुत अच्छे लगे।'' युवती बड़े धैर्य के साथ बोली।

श्रवण समझ नहीं पाया कि युवती उसके बारे में सचमुच काफी कुछ जानती है या तुक्के मार रही है। उसने युवती को कुरेदा ''इस तरह से किसी बिल्कुल अपरिचित युवती के साथ अकेले? मेरे ऐसे संस्कार नहीं हैं, इसलिये परेशान था।'' वह बोला।

''संस्कार यह कहां सिखाते हैं कि औरत का बस एक ही मतलब है। हमारी सभ्यता, संस्कार, मर्यादायें और ऐसी ही कई अन्य बातें हमें गाइड करती हैं, डराती नहीं। नारी आज पुरुषों के साथ कन्धे से कन्धा मिला कर चल रही है। बहुत सी महिलायें और पुरुष अपने घरों से बहुत दूर साथ-साथ नौकरी करते हैं। सब लोग भयभीत रहेंगे तो कैसे चलेगा?'' कहते कहते युवती अचानक रुक गयी। उसे लगा वह कुछ ज्यादा ही बोल गई, उसने बात सम्भाली ''आप अपरिचित महिलाओं से इतना अधिक बच कर रहते हैं। वह लड़की सचमुच खुशकिस्मत होगी जिसे आप जैसे पति मिलेंगे।'' वह थोड़ा रुक कर बोली ''वैसे भी कल तो शहर में यही जरूरी काम है ना, जिसके लिये आप इतने कष्ट सह कर आये हैं?''

श्रवण को जैसे करंट सा लगा। उसने युवती की ओर देखा ''आपका भाषण काफी अच्छा था, आप इतना सब कैसे जानती हैं मेरे बारे में?'' उसने पूछा।

''बाकी बातें कार में!'' फैसला सा सुनाते हुए युवती उठ खड़ी हुई। दोनों के आते ही कार स्टार्ट हो गयी।

''भैया, शहर पहुंचने पर पहले मुझे मेरे घर के बाहर वाली गली तक छोड़ देना उसके बाद इन्हें!'' युवती ने ड्राइवर से कहा।

''नहीं! घर तक छोड़ देंगे आपको!'' श्रवण ने प्रस्ताव किया।

''कल तो वहां आ ही रहे हैं आप सब लोग!'' श्रवण के दोनों हाथ अपने हाथों में लेकर उसकी ओर देख युवती मुस्कुराई।

श्रवण ने गहरी सांस लेकर फटी आंखों से युवती की ओर देखा और एक साथ सांस छोड़ दी। वह कुछ नहीं बोल पाया, हंसी का दौरा बहुत देर तक नहीं रुका। उसने युवती की गरदन में बांह डाल कर उसे अपनी ओर खींच लिया ''ग्रेट..! तो आप हो?'' युवती आंखें नीची किये उससे लिपट गयी। कार अपनी रफ्तार से चलती रही। नींद के झोंके में श्रवण का सिर युवती की गोद में आ गया और युवती की उंगलियां उसके बालों में चलने लगीं, दोनों को समय का पता ही नहीं चला।

कार युवती के घर के बाहर ही रुकी। युवती और श्रवण कार से एक साथ उतरे। घर के लोग युवती की खबर न मिल पाने से परेशान थे। उसे देर रात टैक्सी में किसी युवक के साथ इस तरह अकेले देख वे हैरान हुए। श्रवण की ओर देखते हुए युवती ने लजा कर सिर झुका लिया। श्रवण ने उसके माता-पिता को प्रणाम किया ''जी! वैसे कल तो यहां आ ही रहे हैं हम सब लोग!'' उसने युवती की ओर देखा ''लेकिन परिस्थितियां कुछ ऐसी बनीं कि इनके साथ आज ही घर तक आना पड़ा! दरअसल यह सब चक्काजाम की वजह से हुआ।'' घर के लोग कुछ समझ पाते, इससे पहले ही ''गुडनाइट!'' कह कर श्रवण तेजी से बाहर निकल गया।

''यह कैसा चक्का जाम था?'' परिवार के सब लोगों ने युवती को घेर लिया।

पिघला सोना

लाल-गुलाबी रंग के कागजों में रखे सोने के गहने तो उन कागजों के रंगों के साथ ही सोने के लगते हैं, जब उनकी चमक कई गुना बढ़ जाती है। इससे भी अधिक कान्ति पिघले सोने की होती है, पीली नहीं, लाली लिए हुए बहती चमक। श्रीसूक्त का पहला मंत्र ललित को याद आ जाता है :

''ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम्।

चन्द्रां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदो मद्बआवह।।''

अर्थात् के अनुसार वेदों को प्रकट करने वाले अग्निदेव से, स्वर्ण के सदृश कान्ति वाली, हरिणीं के रूप को धारण करने वाली, सोने और चाँदी के पुष्पों की मालावाली, सब प्राणियों को चन्द्रमा की तरह प्रकाशित करने वाली, स्वर्ण के रूप वाली लक्ष्मी का हम आवाहन करते हैं।

स्वर्ण अर्थात सुवर्ण याने अच्छा वर्ण! अच्छा वर्ण? उस पिघले हुए सोने के रंग में सब कुछ समाहित होकर ललित के माथे पर केन्द्रित हो गया, सीधे दो भौंहों के बीच में, जिसके ठीक नीचे नाक आरम्भ होती है। लक्ष्मी का ध्यान करते-करते कब श्रीसूक्त पूरा हो गया, उसे ध्यान नहीं, किन्तु पिघले हुए सोने की कान्ति, लाली लिए पीले रंग से खिला चमकदार चेहरा उसकी आंखें में छा गया, जैसा हल्दी हाथ के बाद की आरती की लौ के प्रकाश में, दुल्हन बनने वाली किसी युवती का चेहरा लगता है। पहाड़ में कहते हैं ''पिंगलदक्क्'' अर्थात पीली लालिमा लिए हुए फक्क् गोरा!

ऐसा ही एक चेहरा ललित की याद में बसा हुआ है, एकदम 'पिंगलदक्क्!' अपने व्यस्त जीवन में यों तो वह उसे कब का भूल चुका है किन्तु उसकी कान्ति मन में बहुत गहरे पैठी हुई है।

तेज-तर्रार, पढ़ाई-लिखाई में होशियार, दिखने-भालने में सुन्दर, सबके साथ घुलने मिलने वाला और नाते-रिश्तेदारों में लोकप्रिय, कुछ ऐसा ही था वह उन दिनों, जब पहले-पहल उससे मिला था। यह संयोग था या पहले से आयोजित, उसे नहीं मालूम, उससे भेंट कुछ नाटकीय से अंदाज में हुई, एक विवाह समारोह में, विवाह के बाद आयोजित प्रीतिभोज में, जिसमें सम्मिलित होने वह गया था। इस विवाह में बुलाया तो उसके पिता को गया था किन्तु उनकी कहीं और व्यस्तता के चलते उसे जाना पड़ा। कुछ चुने हुए लोगों को ही बारात में बुलाया गया था। बारात दूर गांव में एक खाते-पीते घर में जानी थी किन्तु अधिकांश बाराती ललित के जैसे ही निकले, पिता के बदले आये हुए, सभी उसकी तरह

20–25 की उम्र के। स्वागती गांव में युवतियों की भी अच्छी खासी संख्या थी। बाराती, विशेषकर युवा, उनके खास निशाने पर थे। बारात के स्वागत से आरम्भ हुई छेड़–छाड़ चुहलबाजी, स्वागत भोज के समय की मीठी गालियां और बारातियों के गोली जैसे तेज जबाब, फेरों के समय और उसके बाद की धमाचौकड़ी, सब ऐसे मगन हुए कि रात कब बीत गई, पता ही नहीं चला।

अपने खास चलते ललित हर मौके पर आगे था, बिना किसी के चुने वह सबका नेता हो गया, युवतियों पर तो उसका जैसे जादू ही चढ़ गया, सबकी छेड़छाड़ का केन्द्र वही हो गया, बिल्कुल सिनेमा के नायक जैसे। वापसी में सब बारातियों की जुबान पर बस उसका ही नाम था, ''वाह क्या बात है छा गये तुम तो'' सब ओर यही शोर। वापिस दुल्हे के घर पहुंचने पर बारात के किस्से रोचक अन्दाज में बयान होने लगे। होते होते ये किस्से दुल्हे के घर के हर सदस्य तक पहुंच गये और साथ में ललित के कारनामे भी। प्रीतिभोज में सबको उसी के आने का इन्तजार था, खासकर दुल्हे की छोटी बहिन को, जो उसे पहली बार देखने और मिलने के लिए बेताब थी। इसलिए भी क्योंकि वह उसकी दीदी का नजदीकी परिवार का देवर था और रिश्ते में जीजा भी होता था। शादी–व्याह में देड़दाड़ के लिए ऐसे रिश्ते सबसे मुफीद होते हैं।

युवकों को जो आनन्द बारात में आता है, प्रीतिभोज में वह सब कहां। ललित का वहां आने का कोई मन नहीं था किन्तु आग्रह, विशेषकर साथ गये बारातियों का, इतना अधिक था कि उसे वहां जाना ही पड़ा। ब्याह का आयोजन उन दिनों खुले मैदान में पंडाल आदि लगा कर होता था और मध्यमवर्गीय परिवारों में किसी धर्मशाला जैसी जगह पर। मेज–कुर्सियों के साथ बैठ कर भोजन करने और स्थान की कमी के चलते खाने के लिए लोगों को बारी का इन्तजार करना पड़ता। ललित काफी देर से वहां पहुंचा, सब कुर्सियां भरी थीं और कुछ लोग बारी के लिए खड़े थे। इससे पहले कि वह भी अपनी बारी के लिए खड़ा होता, उसे एक बुलावा आ गया, उसके रिश्ते की भाभी से, जो खाने के हाल से सटे कमरे के बाहर खड़ी थी।

''वहां कहां खड़े रहोगे देवर जी! काफी देर लगेगी, यहीं लगा देते हैं आपका खाना, इस कमरे में!'' भाभी ने अन्दर की ओर इशारा किया। अगल–बगल दो बड़े कमरे थे, जिनके पीछे एक–एक छोटा कमरा भी था। एक बड़ा और उसके पीछे का छोटा कमरा दुल्हा–दुल्हन के लिए और बगल में छोटे कमरे में भंडार और आगे परिवार के लोगों के लिए पांच–चार कुर्सियां पड़ी थीं। घर के लोगों के खाना परोसने के लिए गये होने के कारण वहां कोई नहीं था। उसे कुछ अजीब सा तो लगा लेकिन वह कमरे में चला गया।

वह कुर्सी पर बैठा ही था कि भण्डार के काम लाये जा रहे अन्दर के छोटे कमरे से एक युवती निकल आयी, ''नमस्ते'' कुछ-कुछ लज्जाते हुए झुककर उसने दोनों हाथ जोड़े और उसके सामने से होते हुए बाहर की ओर चली गई। वह उसका चेहरा तो ठीक से नहीं देख पाया किन्तु लम्बा छरहरा बदन और उस पर करीने से पहनी गई गुलाबी साड़ी ने उसे पलट कर उसकी ओर देखने को विवश कर दिया। युवती ओट में बाहर खड़ी उसकी रिश्ते की भाभी से कुछ काना-फूंसी कर रही थी, वह उसे देख पाता, इससे पहले भाभी अन्दर आ गई।

''थोड़ा देर लगेगी खाना आने में, अभी पूरियां तल रही हैं, तब तक चाय मंगा दी है आपके लिए'' भाभी बगल में रखी कुर्सी पर बैठ गई। एकाध मिनट बाद एक लड़का एक कुल्हड़ में चाय ले आया।

''इसे दे दे'' युवती की तरफ इशारा करते हुए भाभी ने लड़के से कहा, लड़के से कुल्हड़ युवती ने ले लिया।

''अरे आजा! शरमा क्यों रही है?'' भाभी ने युवती को अन्दर बुला लिया। लज्जाती-शरमाती सी युवती ने कुछ छुपाते सा चेहरा दूसरी ओर करते हुए कुल्हड़ ललित के हाथों में पकड़ा दिया।

''साली होती है ये आपकी!'' उसका नाम लेते हुए भाभी ने बताया ''मेरी छोटी बहिन है, गांव से आयी है, वहीं रहती है।''

चाय अच्छी बनी थी, गर्म थी, ललित धीरे-धीरे चुस्कियां ले रहा था, मन हुआ युवती को ठीक से देख ले। वह नजरें उठा ही पाया था कि युवती ने ललित के हाथ से झट से कुल्हड़ खींच लिया, आधे से अधिक चाय बची थी, युवती गटागट पी गई।

''जूठी है ये!'' ललित कठिनाई से कह पाया। युवती का चेहरा उसके सामने था, गोरा! पीली लालिमा लिए हुए भरा चेहरा, उन्मुक्त, बड़ी सुन्दर आँखें, गुलाबी ओंठ, मुस्कराहट लिए हुए सन्तोष का सा भाव। वह उसे देखता रहा गया, मन से आवाज आयी 'पिंगलदक्क्!'

तभी भाभी ने एकाग्रता तोड़ दी, ''लो ये तो हो गई आपकी! बारात के लौटने के बाद से ही पागल हुई बैठी है आपके लिए, लोगों के मुंह से आपकी बातें सुनकर।'' ललित उसे और देखना चाहता था, जी भरकर! किन्तु संकोच आड़े आ गया।

''जीजा जी! बहुत देर से आये आप?'' उसके कानों में जैसे मिश्री घुल गई, मीठी आवाज में नजरें चुराये जमीन पर पैर का अगूंठा चलाते हुए युवती ने धीमे से कहा।

''बहुत सुन्दर हो तुम! सचमुच बहुत सुन्दर!'' वह बस इतना ही कह पाया, कहे

बगैर रहा ही नहीं गया।

''पसन्द है आपको?'' भाभी ने उससे सीधे सवाल दाग दिया, ''कुछ दिन यहीं रोक लेती हूं इसे!''

ललित को सूझ नहीं पाया कि वह क्या कहे। मन हिलोरें ले रहा था लेकिन वह अचकचा गया, ''हॉल में ही खा लूंगा मैं खाना!'' उसने की और उठ खड़ा हुआ। युवती भी अपनी दीदी के सामने कुछ असहज थी।

''नाराज हो गये?'' कनखियों से ललित की ओर देखते हुए उसने सवाल किया।

''नहीं, नहीं, काफी देर हो गई है'' उसने सफाई दी। युवती ने उसे रोका तो नहीं, किन्तु एक छोटा सा अनुरोध कर दिया, ''अभी एक दो दिन मैं यहीं हूं, दीदी के यहां, आप कल जरूर आना, नहीं आयेंगे तो मैं खाना-पीना छोड़ दूंगी''

वह ठगा सा रह गया, बस पांच-सात मिनट की मुलाकात और ऐसा जादू! वह रातभर सो नहीं सका। रह-रह कर युवती का विचार मन में आ जाता, लम्बा छरहरा बदन, गुलाबी साड़ी, भरा चेहरा, लाल-पीली पिघले सोने सी चमक, बड़ी-बड़ी आँखें, गुलाबी ओंठ, कनखियों से देखने की अदा, पैर का अंगूठा जमीन पर चलाना, कुल्हड़ खींच कर चाय पी लेना, मीठी सुरीली आवाज, अपनेपन के साथ मीठी जिद! वह इन्हीं विचारों में कैद हो गया।

युवती को देखे बगैर चैन नहीं मिलने वाला था, उससे न मिले, यह कैसे हो सकता था। पाश में बंध कर खिंचता हुआ सा वह अगले दिन युवती से मिलने भाभी के घर पहुंच ही गया। एक दूसरे व घर परिवार के बारे में, और इधर-उधर की कई बातों में ढ़ाई तीन घंटे कब बीत गये, उसे पता ही नहीं चला। चलते समय फिर वैसा ही अनुरोध, वही जिद और रात में फिर युवती के विचारों में खो जाना, यही क्रम अगले चार-पांच दिन चलता रहा। अगले दिन वह युवती से मिलने पहुंचा तो वह वहां नहीं थी, उसे बताया गया कि वह गांव जा चुकी है।

''लेकिन उसने तो नहीं बताया था?'' ललित ने जानना चाहा।

उत्तर भाभी ने दिया ''उसे खुद भी कहां पता था, अचानक जाना पड़ा। उसने तो रुकने की बहुत कोशिश की, बहुत रोई, आप से मिले बगैर नहीं जाना चाहती थी, पर उसकी एक नहीं चली। कहीं शादी की बात चल पड़ी है उसकी, वह तो मर जायेगी आपके बगैर, सचमुच खाना-पीना छोड़ देगी, अपनी जिन्दगी उसने आप के नाम कर दी है।'' वह क्या करता! उसके बस में कुछ था ही नहीं, मात्र बीस इक्कीस की उम्र, न कोई काम, न धन्धा, पूरी तरह

परिवार पर आश्रित, आखिर करे तो क्या।

''अच्छा'' कह कर वापस चलने लगा कि भाभी ने रोक लिया ''अगर आपको भी वो पसन्द है और चाहने लगे हो उसे, तो मैं कुछ कर सकती हूं।'' भाभी ने प्रस्ताव किया। वह अपनी सीमायें पहचानता था, सीधे स्वीकार करने का अर्थ था घर में बवाल! जिस माहौल में वह पला-बढ़ा था, वहां यह उम्र शादी की तो दूर, उस विषय में सोचने तक की नहीं थी। वह युवती की ओर खिंचा जरूर था किन्तु अभी से शादी के पक्ष में वह नहीं था, क्या कहता! बस चुप रहा।

भाभी ने बताया कि उसकी बहन बहुत जिद्दी है, अपनी मरजी के बगैर शादी के लिए वह कभी नहीं मानेगी और यह भी कि उससे शादी करने से लिए वह तीन-चार साल इन्तजार भी कर सकती है। वह कुछ सोच नहीं पा रहा था, क्या कहे।

भाभी जैसे सब कुछ जानती थी, ''सुना है अगले महीने आप लोगों का पूरा परिवार गांव जा रहा है, सिर्फ आपके पिताजी ही काम-काज के लिए यहां रहेंगे?''

''हां'' ललित की जुबान खुली।

''मैं अपनी बेटी को आपके साथ भेज दूंगी। वहां गांव में मुझसे बड़ी एक और बहन है, आपके ही परिवार में। बेटी अपनी मौसी के पास रह लेगी, छह-सात साल की है, वहीं छुट्टियां कट जायेंगी।'' भाभी ने योजना समझायी, ''मैं बेटी को सब कुछ समझा दूंगी, दीदी बड़ी होशियार है, सब ठीक कर देगी।'' ललित ने कोई आपत्ति नहीं की।

भाभी की बेटी ललित के परिवार के साथ शहर से उसके गांव चली आई, बेटी को उसकी मौसी के यहां छोड़ आया। वहां से वह यह वायदा करने के साथ लौटा कि सुबह उसे लेने आ जायेगा। शाम को फिर छोड़ना और सुबह फिर लेने जाना, गांव में वैसे भी उसे कोई और खास काम नहीं था। आने-जाने के इस चक्कर में उसे वहां कई बार काफी देर तक रुकना भी पड़ता था। गांव वाली भाभी इस मौके का पूरा फायदा उठाती, अपनी छोटी बहन, उस युवती की खूब तारीफ करती, काम-काज, तौर-तरीका, रहन-सहन, उठना-बैठना, होशियारी, व्यवहार कुशलता बगैरह सभी कुछ। गांव वाली भाभी का इसमें निजी हित भी था, एक तो ललित का परिवार गांव में अच्छी हैसियत वाला था। अच्छा रहन-सहन, आमतौर पर शहर में रहने वाला, केवल छुट्टियां बिताने गांव में आते, छोटी बहन वहां आ जाय तो बहन तो सुखी होगी ही, गांव में रुतबा भी बढेगा। इसमें गांव वाली भाभी का एक और लालच था, उसका मायका बहुत दूर था। इतनी दूर गांव से और कोई रिश्ता नहीं था, मायके की

बहुत याद आती, बहन के आने से यह कमी भी दूर हो जाती।

गांव वाली भाभी सचमुच होशियार थी, वह ललित को काफी नजदीक ले आई, इतना कि उसका का अधिकांश समय वहां कटने लगा। वह उसे समझाने में सफल हो गई कि अगर वह पीछे हटा तो उसकी युवा बहन जान भी दे सकती है। भाभी ने यह भी बताया कि उसकी बहन का कहीं और रिश्ता करने की सारी कोशिशें नाकाम हो चुकी हैं और अब वह केवल उसी की है। युवती की पिघले सोने सी कान्ति ललित के मन में बस चुकी थी, मन ही मन वह भी उसका हो चुका था, किन्तु सब कुछ इतना सरल भी तो नहीं था।

''मैं इसमें क्या कर सकता हूं? शादी के बारे में तो अभी सोच भी नहीं सकता!'' उसने अपनी मजबूरी बताई।

''आप वहां एक बार हो आओ, उससे बात कर लो, आपकी जो भी मजबूरी है, उसे समझा दो। उसके बाद, अगर उससे शादी नहीं कर सकते तो उसे यह भी साफ बता दो।'' प्रस्ताव उसे ठीक जंचा। उससे मिलने और बातें करने का मौका मिलेगा। युवती की तस्वीर फिर से उसकी आंखों में तैर गयी, उसने युवती के गांव जाने का मन बन लिया। उसके घर में तो किसी को न तो युवती के बारे में खास जानकारी थी और न ही दोनों के बीच पनप रहे रिश्ते का अंदाज।

गर्मियों में, जिन दिनों स्कूलों में छुट्टियां होती हैं, युवती के गांव से कुछेक मील की दूरी पर एक बहुत बड़ा मेला होता था, जिसकी काफी मान्यता थी। मेले में जाने के बहाने ललित युवती के गांव चला गया। नदी के किनारे बसा सुन्दर गांव, काफी बड़ा, खूब रौनक और चहल-पहल भरा, अधिकतर लोग निर्धन, किन्तु स्वभाव से सरल और मिजाज में मस्त थे। युवती के घर में बूढ़े माता-पिता के अलावा एक बड़ा भाई, हाल ही में ब्याह कर आई नई भाभी और एक छोटा भाई था। पक्का दो मंजिला घर, छत पठाल की बनी हुई और ऊपर की मंजिल में बड़ा बरामदा, जहां से थोड़ी दूर, नदी तक, गांव का पूरा नजारा दिखाई देता। आंगन गाय, भैंस, बैलों, बछड़ों व बकरियों से भरा हुआ। सरकारी नौकरी में लगे लड़कों और अच्छे घरों में ब्याही बेटियों के कारण परिवार का गांव में खासा नाम था। यों भी गांवों में लोग एक-दूसरे को काफी नजदीक से जानते हैं।

लोगों से पता पूछकर ललित युवती के घर पहुंच गया। शाम का समय, सूर्य अस्त होने को था, यह लोगों के काम-काज से घर लौटने की बेला थी। घर और आंगन देखकर उसे अच्छा लगा।

''कोई घर में है?''' नीचे आंगन से उसने आवाज लगाई।

''कौन है?'' अन्दर से कमरे निकल कर वही, दिल में बैठी युवती, बरामदे में आ गई। साधारण से कपड़े, किन्तु चेहरे पर वैसी ही चमक! वही दमकता रूप! इठलाता हुआ छरहरा बदन!

''आप?'' युवती को जैसे विश्वास ही नहीं हुआ, ''ओ मां!'' उसने दोनों हाथों से अपना चेहरा ढ़क लिया और दौड़कर अन्दर चली गई। बरामदे की तरफ ताकता ललित आंगन में ही खड़ा रहा।

ललित को अधिक देर प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ी। दो-तीन मिनट के बाद युवती फिर से बरामदे में आ गई, पहले के मुकाबले थोड़ी व्यवस्थित और संयत। ''ऊपर आ जाओ आप!'' उसने नजरें चुराते हुए ललित को बरामदे में बुला लिया और वहां पड़े तख्त की चादर बदलने लगी। ललित को समझते देर नहीं लगी कि युवती घर में अकेली है। वह उससे इस तरह अचानक क्या बात करे, कहां से शुरू कर, वह सोच ही रहा था कि युवती फिर से अन्दर चली गई। इस बार वह हाथ में गिलास और पानी का लोटे के साथ लौटी।

''कैसी हो?'' सकुचाते हुए ललित ने शुरूआत की। वह जबाब में मुस्करा दी, ''आप कैसे हो?''

''अच्छा हूं, घर में और लोग कैसे हैं?'' अब तक दोनों की नजरें एक दूसरे से नहीं मिल पाई थीं, ललित ने बातचीत का सिलसिला आगे बढ़ाया।

''और आपके?'' युवती की तरफ से जबाब में फिर से सवाल आ गया।

''अकेली हो घर में? और कोई नहीं है?'' ललित अब संयत हो चुका था, मन हुआ एक बार जी भरकर युवती को देख ले, नजरें उठाकर उसने युवती से पूछा।

युवती को शरारत पर आते समय नहीं लगा, ''अकेली? नहीं तो! आप जो हैं।''

इसी हंसी, इसी लावण्य को देखने तो ललित इतनी दूर से आया था। वह तख्त पर बैठा था, युवती सामने खड़ी थी।

''खड़ी क्यों हो? बैठ जाओ!'' थोड़ा सरककर जगह बनाते हुए तख्त पर हथेली रखकर ललित ने इशारा किया।

''इश्श्श!...''ओठों पर उंगली रख आंगन की ओर आंखों से इशारा करते हुए, ''भाभी आ रही है'' कहकर युवती फिर से अन्दर भाग गई।

रात पड़ते-पड़ते, धीरे-धीरे करके सभी सदस्य घर में आ गये। कुशल क्षेम, स्वागत सत्कार, सब कुछ अच्छा रहा। ''क्यों आये? कैसे आये?'' किसी ने

कुछ नहीं पूछा। तख्त पर बैठा वह उकता सा रहा था, बार-बार युवती को देखने, उसके पास रहने और उससे बात करने का मन होता, किन्तु वह कमरे से बाहर नहीं निकली।

यों ही चुपचाप बैठे-बैठे रात के खाने का समय हो गया। गांव में रसोई के पास ही खाना-खाने का प्रचलन था, रसोई का कमरा अलग होता भी नहीं था, कमरे में ही, एक कोने में या किसी दीवार के सहारे मिट्टी का बड़ा सा चूल्हा बना होता था, उससे थोड़ा सा हटकर खाने वाले बैठते। महिलाएं पुरुषों के साथ नहीं, बल्कि बाद में अलग से खाना खातीं। हाथ पांव धुलाकर ललित को अन्दर कमरे में खाने पर बैठाया गया, चूल्हे पर रोटी सेंकने युवती ही बैठी थी। साथ में खाने पर उसके पिता भी थे। युवती का सारा ध्यान रोटी बनाने पर था, भूलकर भी उसने ललित की तरफ नहीं देखा, परोसने में उसकी भाभी मदद कर रही थी। ललित भी सिर्फ थाली की तरफ ही देखता रहा, युवती के पिता की बातों में 'हूं हां' मिलाकर किसी तरह भोजन पूरा किया।

वह फिर से बरामदे में आ गया, युवती अन्दर कमरे में ही रही। बरामदे के पीछे अलग-अलग दो कमरे थे, एक कमरे में बड़ा भाई और उसकी नवेली दुल्हन, दूसरे में युवती और उसकी माता और नीचे, आंगन के पीछे के कमरे में युवती के पिता और छोटे भाई सोते थे।

गर्मी का मौसम था, ललित के सोने का प्रबन्ध बाहर बरामदे में ही तख्त पर कर दिया गया। दूसरे दिन उसे वापिस लौटना था किन्तु युवती से तो कोई बात ही नहीं हो पायी थी। वह काफी उदास हो गया, ऐसे में नींद कहां से आती, करवटें बदलते-बदलते वह सोने की कोशिश करने लगा, आधी रात होते-होते उसे झपकी आ ही गयी।

हल्की नींद में ललित ने बालों में सरसराहट सी महसूस की। सिरहाने की ओर खड़ी युवती उसके सिर पर उंगलियां फेर रही थी।

''तुम?'' ललित की नींद टूटी, उसके ओंठों पर उंगलियां रख युवती ने उसका माथा चूम लिया, ''बहुत अच्छे हो आप!'' उसके कान के पास मुंह ले जाकर वह धीरे से फुसफुसाई। ललित ने चाहा वह भी युवती का माथा चूम ले, पर ऐसा कर नहीं सका। युवती की उंगलियां अभी भी उसके ओंठों पर थीं, उसने उसकी कलाई पकड़ कर युवती को पास खींचने की कोशिश की।

''कल!'' युवती ने धीरे से अपना हाथ छुड़ाया और ओझल हो गई। जागते में बेचैन करने और सोते में मीठे सपने लाने के लिए यह कम नहीं था।

गांवों में नित्य क्रिया खुले में होने के कारण सभी को जल्दी उठना पड़ता है,

गर्मियों में यों भी सुबह जल्दी हो जाती है। हाथ मुंह धोकर युवती के पिता, ललित से ''कहीं जरूरी काम से जाना है, कुछ देर बाद ही लौट पाऊंगा, मेरे आने तक रुके रहना'' कह कर तेजी से निकल गए। युवती के माता, भाई, भाभी, और छोटा भाई भी एक-एक अपने काम से या काम के बहाने से घर से चले गये। रह गया बरामदे में तख्त पर बैठा ललित और अन्दर कमरे में अकेली युवती जो अभी तक बाहर नहीं निकली थी।

''अकेले क्यों बैठे हैं? अन्दर आ जाइये!'' कमरे में देहरी तक आकर युवती ने ललित को बुलाया और वापिस अन्दर चली गई। थोड़ा संकोच के बाद वह भी कमरे में चला गया। दोनों घुटने जोड़ कर छाती के सामने किये और दोनों एड़ी पंजे मिलाये, पैर सामने जमीन पर रखे युवती पटरी पर बैठी थी, दूसरी पटरी पर ललित बैठ गया। मिट्टी से लिपा हुआ सुन्दर कमरा! खिड़की की ओर से आती धूप से कमरे में उजाला हो गया। सामने युवती का वही चमकता-दमकता रूप, वही गुलाबी साड़ी, पीली-लाल कान्ति लिए चेहरा, मन्द मुस्कान और गुलाबी होंठ! उसने जी भर कर देखना चाहा लेकिन युवती की नजरे नीचे थीं, जमीन की ओर।

''मैं'' ललित ने बात शुरू करनी चाही।

''जानती हूं, यही ना कि आप अभी शादी नहीं करना चाहते? यही बताने यहां आये हैं ना?''

''हां'' ललित चौंका, ''लेकिन''

''जानती हूं कि आप को मैं पसन्द हूं लेकिन मजबूर हैं''

''हां'' ललित को सूझ नहीं पा रहा था कि वह इससे आगे क्या कहे।

''मैंने अपने घर के लोगों को बता दिया है, शादी करूंगी तो सिर्फ आपसे, चाहे दस साल रुकना पड़े, मैं किसी और के बारे में सोच भी नहीं सकती।''

''लेकिन'' ललित ने साहस कर ही डाला, ''मेरे घरवालों से अब तक मेरी या किसी की भी, कोई बात नहीं हुई है।''

''तो कर लीजिये आप भी! जल्दी से'' युवती झट से उठी और ललित की दोनों आंखों को चूम कर उससे लिपट गई, ''बहुत प्यारी आंखें हैं आपकी! बड़ी-बड़ी और गोल-गोल! मर जाऊंगी मैं आपके बिना!''

''अरे यह क्या?'' थोड़ा सम्भल कर, वह पीछे हटा, किन्तु युवती ने उसका हाथ नहीं छोड़ा, ''मुझे आपकी निशानी चाहिए, यह!'' उसने ललित की उंगली में पड़ी अंगूठी, आराम और सलीके के साथ निकाल कर अपनी उंगली में पहन ली। इससे पहले कि वह कुछ समझता, युवती ने अपने पास से एक और

अंगूठी निकाल कर उसकी उंगली में डाल दी, ''लो हो गई मैं आपकी! आगे का जिम्मा अब आपका!'' वह वापिस पटरी पर बैठ गई।

एकान्त में युवती की पहल ने ललित को विचलित कर दिया किन्तु लज्जा, संकोच, संस्कार और भय सब मिल कर इतने भारी बन गये थे कि वह कुछ सोच ही नहीं पाया, जड़वत् बना रहा।

''चाय लेंगे ना? कुछ घरेलू पकवान भी हैं, मुंह मीठा हो जायेगा।'' वह चुपचाप बैठा रहा, ललित, न प्रतिरोध, न समर्पण! चाय के साथ सिर्फ 'हां-हूं' जबकि युवती ने घर-बार और बच्चों तक का खाका खींच दिया। ललित के पास सोचने को कुछ नहीं बचा था, सारे फैसले वह पहले ही ले चुकी थी।

डेढ़-दो घंटे बाद घर के सभी सदस्य लौट आये, सब कुछ जैसे नियोजित था। ललित के चलने का समय हो गया था, दूसरे गांव से आया मेहमान, रिश्ते में घर की बेटी का देवर! रीति-रिवाज से टीके की रस्म भी हुई, कुछ रुपये भी उसकी जेब में ठूंस दिये गये। बेटी को भी कुछ माल-असबाव भिजवाना था, वह भी उसे सौंप दिया गया। युवती को छोडकर घर के सब लोग गांव के बाहर तक उसे छोड़ने भी आये। पूरे गांव में फैल गया कि युवती का रिश्ता उसकी दीदी के देवर से हो गया है और टीका भी हो चुका। इस सबसे बेफिक्र ललित मीठी यादों में खोया, युवती को मन में बिठाये अपने गांव लौट गया।

गांव में बातें चलती हैं तो दूर तक पहुंचती हैं, खासतौर पर रिश्तों की बातें। जिस रिश्ते की बात एक गांव से दूसरे गांव तक न पहुंचे वह रिश्ता ही क्या। छुट्टियां बिताकर ललित अपने परिवार के साथ पिता के पास शहर लौट आया। उसके भी पहले पहुंचीं उसके रिश्ते की बातें और गांव-शहर में रहने वाली रिश्ते की भाभियों की अपनी बहन के लिए उसे घेरने की चर्चा। जितने मुंह उतनी बातें, जो कुछ हुआ वह बढ़ा-चढ़ा और जो नहीं हुआ, उसे कल्पित कर बात ललित के पिता तक पहुंचा दी गई।

''वह तो अभी छोटा है, उम्र क्या है? बस 20-21 साल, अभी तो रोजगार पर भी नहीं लगा है, कहां से उठी उसकी शादी की बात?'' ललित उसके पिता आग-बबूला हो गये। उससे भी पूछताछ हुई, कुछ डांट फटकार भी मिली।

वह जानता था, उसे चिन्ता करने की जरूरत नहीं, अभी तीन-चार साल तक, स्थायी रोजगार मिलने तक, और कहीं उसकी शादी की बात नहीं चलने वाली और रही उस 'युवती' की बात! तो वह तो इन्तजार के लिए तैयार थी ही। उसने पिता को बताया कि न तो शादी की ही बात हुई और न ही कोई वायदा किया गया है। उसे इस समय पिता का गुस्सा कम करना था, किन्तु पिता सयाने थे और समझदार भी, उन्हें डर था कि लड़का गांव में कहीं ऐसा-वैसा

न कर आया हो, मन में आया खटका दूर करना जरूरी था, साथ में लड़के को बचाना भी। उन्होंने एक-एक कर सारे सूत्र जोड़े, उनका शक शहर-गांव की भाभियों पर ही गया, उनके हिसाब से वे उनके लड़के को फंसा रही थीं। उसके पिता का रुतबा बड़ा था, साथ में जान-पहचान भी, भाभियों के लिए ऐसे हालात बना दिये कि उसके नाम से भी बिदकें। ललित का उनसे मिलना-जुलना एकदम बन्द हो गया, साथ में टूट गये युवती से सम्पर्क के सभी रास्ते।

पिता का गुस्सा युवती के गांव तक भी पहुंच गया, सरकारी नौकरी पर लगे युवती के दो अन्य भाई रिश्ते के विराध में आ गये, ''आखिर क्या है उस रिश्ते में? अभी तो कुछ भी नहीं करता लड़का, पांच-चार साल में नौकरी मिलेगी ही, इसकी क्या गारंटी है? मिलती भी है तो पता नहीं कैसी? फिर चार-पांच साल बाद शादी करने से मुकर गया तो? अभी उसके घर वाले विरोध में हैं, तब मान जायेंगे, इसका क्या भरोसा? लड़की की शादी की तो उम्र यही है, तब तक क्या बैठी रहेगी? कोई ऊंच-नीच हो गई तो क्या होगा?'' सवालों की बौछार होने लगी। युवती के पास कोई उत्तर नहीं था, था तो बस मात्र विश्वास, उसे अपने प्यार पर पूरा भरोसा था।

ललित से युवती सम्पर्क कर नहीं सकती थी, उसकी दोनों दीदियां असहाय थीं, किन्तु वह झुकी नहीं, वह जान देने को तैयार थी लेकिन किसी और से शादी करने को नहीं। उसके भाई जिद पर आ गये, ललित के पिता का भी दबाव था।

युवती के घर में ललित की बुराई शुरू हो गयी, 'शहरी है, तफरीह करने चला आया था गांव में। साफ मुकर गया है शादी के वायदे से, कहता है शादी की कोई बात नहीं की, न कोई वायदा। कहता है वह शहर का लड़का है, शहर में पला बढ़ा है, भला गांव की अनपढ़ लड़की से शादी क्यों करेगा। सिर्फ खिलवाड़ किया है उसने लड़की से।'

युवती के घर में ललित खलनायक बन चुका था, सब रिश्ते के विरोधी हो गये थे। युवती पर दबाव बढ़ता गया, वह टूटने लगी किन्तु उसे भरोसा था कि ललित जरूर आयेगा और उसे भगाकर ले जायेगा। उसे विश्वास नहीं था कि वह केवल अपने शहरी होने के कारण उसके प्यार को ठुकरा देगा, उसे याद आ गया ललित पर बरबस बरसा उसका प्यार, ललित की बड़ी-बड़ी, गोल-गोल आंखें! जिन्हें उसने चूमा था। उसकी आंखों से आंसुओं की झड़ी बह निकली, बेवश थी, किसी से कुछ नहीं कह सकती थी, उसकी सुनने वाला भी कोई नहीं था। आखिरी कोशिश के रूप में उसने अपनी पीड़ा नई ब्याही भाभी से बताई कि सारी बात किसी तरह ललित तक पहुंचा दें। इससे पहले कि भाभी कुछ

कर पाती, भाई बीच में आ गये, भाभी उनके दबाव में आ गई। उसने युवती को समझाया कि इस उम्र में यह सब बातें होती ही रहती हैं, बल्कि कईयों से और कईयों के साथ। यह भी कि शहर के लड़के तो गांव की लड़कियों को ऐसे ही ठगते हैं और बाद में मुकर जाते हैं। उनके झूठे वादे पर जिन्दगी खराब नहीं करनी चाहिए, शादी के बाद सब कुछ ठीक हो जायेगा।

युवती की भाभी द्वारा युवती को समझा दिये जाने की आड़ में, युवती का रिश्ता, उससे पूछे बगैर, उसकी मर्जी के बिना, कहीं और हो गया। दूर गांव में क्या हो रहा था, ललित को पता नहीं लगा, उसे आशा थी कि युवती उसका इन्तजार जरूर करेगी। जितना हो सकता था, शादी के लिए युवती ने प्रतिरोध किया, बारात आने के दो-तीन दिन पहले से खाना-पीना छोड़ दिया। शादी के दिन तो वह मूर्छित भी हो गयी लेकिन घरवाले ज्यादा जिद्दी निकले। शादी होना उनकी प्रतिष्ठा से जुड़ गया था, अर्धमूर्छित अवस्था में ही उसका विवाह करा दिया गया।

दूल्हे का गांव युवती के गांव से बहुत अधिक दूरी पर था, इतना दूर कि दूसरे जिले में, बड़ा शहर पार करने के बाद ही पहुंचा जा सकता था। रिश्ता जानबूझ कर दूर इसलिए किया गया था कि युवती के प्रेम की चर्चा दूल्हे के गांव तक न पहुंचे। विवाह के बाद बारात की विदाई हुई, लेकिन रास्ते में दुल्हन की हालत एकायक बहुत ज्यादा बिगड़ गई। उसकी हालत बिगड़ती देख उसे लड़के के गांव ले जाने के स्थान पर शहर में ही रोक लिया गया, बारात के रास्ते में पड़ने वाला शहर पहले वाला ही था। युवती की दीदी, शहरवाली भाभी के घर दुल्हा-दुल्हन के अलावा उनके एक-दो लोग भी साथ में रुक गये।

शहर वाली भाभी को युवती को बहन की हालत का अन्दाजा नहीं था, शादी में वह नहीं जा पाई थी, युवती की हालत देखकर वह बैचेन हो उठी। अपनी बेटी को ललित को को बुलाने के लिए भेज दिया। साथ में गांव जा चुकी होने के कारण बेटी उससे घुली मिली थी ही, उसे पूरी बात न बताकर उसने केवल इतना बताया कि ''गांव से मौसी आई हुई है, उसकी तबियत काफी खराब है, आपको बुलाया है।''

ललित साथ में चल दिया। उसकी कल्पना में युवती का वही लावण्यमय रूप, भरा-दमकता लाल-पीली कान्ति लिए हुए चेहरा, मन्द मुस्कान व गुलाबी साड़ी घूमने लगी। कुल्हड़ खींचकर चाय पीना, रात को चुपके से आना, आंखें चूमकर लिपटना और अगूंठियां बदलना, एक-एक कर सारी बातें याद आने लगीं।

वह जा कर बाहर कमरे में बैठ गया, वहां दो-तीन लोग और भी थे, दूल्हा और उसके परिवार के लोग। भाभी ने बहाने से सबको रसोई में बुला लिया, बेटी ललित को अन्दर के कमरे में युवती के पास ले गई। मध्यम सी रोशनी में, सामने पलंग पर बैठी युवती, दुल्हन के वेश में, लाल जोड़ा, हाथों में मेंहदी, नाक में बड़ी सी नथ।

''शादी हो गई मौसी की'' बेटी बोली। ललित का जोर का झटका लगा, वह कुछ बोल नहीं पाया, पलंग से कुछ दूर, दरवाजे के पास ही खड़ा रहा। युवती ने ललित की तरफ नहीं देखा, वह सिसक रही थी। पलंग के पास ही बिल्ली का बच्चा था, युवती ने उसे गोद में बिठा लिया ''गांव नहीं भाया तुझे शहरी बिल्ले? दे गया दगा? सिर्फ शहर ही दिखता है, इन बड़ी-बड़ी, गोल-गोल आंखों को?'' कराहते-सिसकते हुए युवती जैसे कुछ और भी कहना चाहती थी, लेकिन एकाएक सुबकने लगी। ललित ने आंख उठाकर युवती की ओर देखा, चेहरा काला पड़ गया था और ओंठ नीले, शरीर कृश हो गया था और गालों में गडढ़े, आंखों के नीचे झाँइयां, बदन पर सोना था किन्तु सोने की कान्ति गायब थी। वह बैचेन हो गया, शायद उससे ही कुछ अपराध हो गया।

''लेकिन क्या?'' वह सोचने लगा, कहां और क्यों खो गया वह लावण्यमय रूप, वह पिघले सोने सी कान्ति? वहां रुकने की हिम्मत नहीं रही, वह उठ खड़ा हुआ। बेढ़ाल सी पड़ी युवती में जैसे जान सी आ गई, सारी ताकत लगा, झट से आगे होकर उसने ललित का हाथ पकड़ लिया, ''आपकी और सिर्फ आपकी हूं मैं! अबकी बार अकेले नहीं जाने दूंगी''

पलंग पर बैठे ही ललित को अपनी ओर खींच वह उसके हाथ से लिपट गई, ''जी भरकर रो लेने दो!'' वह धीमे से वह बोली। वह जड़वत् खड़ा रहा, क्या करे और क्या न करे, क्या कहे और क्या न कहे। वह पलंग पर बैठ गया, युवती की पकड़ ढ़ीली नहीं हुई। तब तक और लोग भी आ गये, ''अरे फिर से बेहोश हो गयी!'' एक दो लोग चिल्लाये। उन लोगों ने ललित को उसकी पकड़ से अलग करना चाहा, पर असफल हो गये। बांह छुड़ाने के लिए ललित ने उसकी ओर देखा, वह तो उसे ही देखे जा रही थी, बिन पलकें झुकाय। मुंह खुला था, जैसे कुछ कह रही हो।

''अरे ये तो गई।'' दूल्हे के घरवालों में से कोई चिल्लाया। दौड़-भाग और हो-हल्ले में ललित की बांह उसकी पकड़ से छूट गयी, सिर झुकाये वह एक ओर खड़ा हो गया, अपराधी सा। युवती अपना वादा निभा गई थी और वह! वह क्या कर पाया?

बहुत दिनों तक वह उसी की यादों में खोया रहा। वह गोल मुखड़ा, गुलाबी होंठ, पिघले सोने सी लाल-पीली कान्ति, छरहरा बदन, गुलाबी साड़ी और मन्द मुस्कान। फिर धीरे-धीरे कर सब कुछ सामान्य होता गया। रोजमर्रा की जिन्दगी में वह इन यादों को पीछे छोड़ चुका था लेकिन आज उसका चेहरा एकाएक सामने आ गया। 'श्री सूक्त' का ध्यान करते-करते वही पिंगल्दक्क् चेहरा! और वे सारी बातें!

धन और ऐश्वर्य की प्राप्ति के लिए किया जाता है 'श्री सूक्त' का पाठ, जिसमें पिघले सोने सी कान्ति लिए लक्ष्मी का ध्यान किया जाता है। वह नहीं जानता कि लक्ष्मी का ध्यान इस लोक की किसी स्त्री, उसके रंग, रूप, कद-काठी और ऐश्वर्य में नहीं, बल्कि उस कान्ति में करना होता है जो गोल ज्योतिपुंज के रूप में माथे पर, दोनों भौहों के बीच एकाग्र हो कर आती है।

ललित जब भी एकाग्र होने की सोचता है, अनायास ही युवती का पिंगलदक्क चेहरा किसी लौ की भांति उसके हृदय पटल पर छा जाता है। सारे अवरोधों के बाद भी वह सदैव उसी की बनी रही, और वह स्वयं? उस पिघले सोने की कान्ति, उस स्वर्णिम आभा के सामने उसकी क्या बिसात!

रिलेशनशिप

घर से बाहर किसी दूसरी जगह पर बदली हो जाये तो परेशानी की बात है ही और अगर ढ़ाई–तीन सौ किलोमीटर दूर हो जाए तो कठिनाईयां और भी बढ़ जाती हैं। आलोक के साथ भी कुछ ऐसा ही हुआ। अपने प्यारे खूबसूरत शहर से दूर, एक बड़े शहर में ट्रान्सफर पर जाना पड़ गया। इच्छा यह रहती कि सप्ताह में कम से कम एक बार तो अपने शहर में आना हो जाये, सप्ताहांत में शनिवार को तो लगभग आसानी से आना हो जाता था किन्तु वापस जाने का विचार बड़ा तनाव भरा रहता। सुबह को सार्वजनिक वाहन से चलने पर आफिस में समय पर पहुँच पाना लगभग असम्भव था जो बेहद जरूरी था। अपने वाहन से चलने पर भी तड़के बहुत सुबह ही चलना पड़ता था और नींद पूरी न हो पाने के कारण दिन भर सारा शरीर टूटता, आफिस में ठीक से काम नहीं हो पाता था। ऐसे में एक ही तरीका बचता था कि देर रात्रि चलकर यात्रा की जाये व सुबह थोड़ा आराम कर तरोताजा हो काम पर जाया जाये। इसमें परेशानी यह थी कि घर पर रहने को केवल एक रात ही मिल पाती थी किन्तु इतना सन्तोष था कि साथ में एक पूरा दिन मिल जाता, वह इसी दिनचर्या का पालन करता। इसमें कठिनाई तब आती थी जब रात्रि को जाने का साधन नहीं मिल पाता, तब एक ही चारा रहता था कि अपना वाहन निकाला जाये, लेकिन समस्या साथ की होती थी। अकेले कार चला कर लम्बी दूरी की यात्रा करना जोखिम भरा साबित हो सकता था। उसकी इस कठिनाई को कुछ लोग जानते थे और लाभ उठाने के लिए अपने कार्यक्रम उसके साथ नत्थी कर देते। यात्रा में किसी का साथ मिल जाने से उसे भी राहत मिल जाती।

इस बार अब तक किसी ने उससे सम्पर्क नहीं किया। वह कुछ परेशान था कि चौबे जी का फोन आ गया। यह अप्रत्याशित था कि लगभग 79 वर्ष के चौबेजी उसे सम्पर्क करें। यह सोच पाना भी आसान नहीं था, वह काफी सम्मानित व्यक्ति थे और समाज में उनका बड़ा आदर था। एक अनुशासित, सिद्धान्त प्रिय, कर्मठ व निस्वार्थ व्यक्ति के रूप में उनकी अच्छी प्रतिष्ठा थी, बड़ी उम्र में भी वे न केवल स्वस्थ थे बल्कि निरंतर सक्रिय भी रहते थे। आलोक ने उनके विषय में काफी कुछ सुना हुआ था, वह भी उनका बहुत सम्मान करता था। उनका फोन सुनकर उसे काफी अच्छा लगा, उन्हें साथ ले जाने में भला उसे क्या आपत्ति हो सकती थी, उसने हाँ कर दी। चौबे जी का

आग्रह था कि शाम को चलते हुए वह उन्हें उनके घर से साथ ले ले, उसे इसमें भी कोई कठिनाई नही थीं। वह शाम को कार लेकर चौबेजी के बताये हुए स्थान पर पहुँच गया।

चौबेजी तैयार थे, उनकी लम्बी कद काठी, बड़ी उम्र में भी तनी हुई कमर, सिर पर गांधी टोपी, चेहरे पर ताजगी के साथ मुस्कुराहट, साफ व उजले कपड़े, कमीज-पैन्ट और बीच में चमड़े की चमकती बेल्ट, सामान के नाम पर एक छोटा सा जूट का बैग। इससे पहले कि वह कार से उतर कर उनके पैर छूने के लिए आगे बढ़ता, चौबे जी ने खुद नमस्कार कर उसे गले लगा लिया।

''ये भी हमारे साथ चलेंगी, यदि आपको कोई आपत्ति न हो, तो!'' चौबे जी ने पास खड़ी युवती की ओर इशारा किया। वह कुछ पूछना चाहता था किन्तु स्वभाववश सहमति में सिर हिलाने के सिवा कुछ नहीं कर पाया। चौबे जी उसकी बगल वाली सीट पर बैठ गये व युवती पीछे वाली सीट पर। कोई युवती साथ में हो और बगल की सीट पर उसकी जगह अपने में मगन, कोई बूढ़ा व्यक्ति बैठे तो थोड़ा बहुत झुंझलाहट स्वाभाविक है लेकिन चौबे जी के साथ बातचीत करने का प्रलोभन भी कम नहीं था। चौबे जी का स्वास्थ्य व सक्रियता लोगों को चकाचौंध करती थी, उन्हें देखकर कोई नहीं कह सकता था कि उनकी इतनी अधिक आयु होगी। वे वास्तविक से बीस-पचीस वर्ष कम के दिखते थे। वह भी इस बात से प्रभावित था, बातचीत में उसने इसका रहस्य जानना चाहा।

''कुछ खास नहीं है, नियमित दिनचर्या, खाने-पीने में सावधानी और थोड़ा बहुत शारीरिक श्रम!'' चौबे जी ने बताया।

''खाने-पीने में क्या-क्या और कब-कब लेते हैं?'' उसने जानना चाहा।

''सुबह सूर्योदय से थोड़ा पहले बिस्तर छोड़ देना, अखबार पढ़ते हुए एक कप चाय, इसके बाद एक घण्टा बागवानी या घर के अन्दर के छोटे-मोटे काम। हल्का-फुल्का नाश्ता, चार स्लाइस या दो चपातियां। भूख से थोड़ा कम भोजन, रात के खाने के बाद कमरे में थोड़ा टहलना और समय से सो जाना, बस!'' चौबे जी ने मुस्कुराकर कहा, फिर जैसे कुछ याद आ गया, ''मैं प्रायः शाकाहारी भोजन लेता हूँ'' उन्होंने बात पूरी की।

'प्रायः!' सुन उसने चौंक कर चौबे जी की ओर देखा, वे उसकी उलझन समझ गये। ''नौकरी के दौरान देश के कई भागों में रहना पड़ा, और स्थानीय कारणों से परिस्थितिवश सब कुछ खाना पीना भी पड़ा, लेकिन संयम-नियम के साथ, यह अभी भी चलता है।'' चौबे जी ने जैसे सफाई सी दी। उसे कुछ कुछ समझ में तो आ गया लेकिन ठीक से नहीं, चौबे जी को अधिक कुरेदना ठीक नहीं

था। वह चुप रहा, बात बदलने के लिए उसने चौबे जी के शौक पूछ डाले। वे ठहाका मार कर हंस पड़े।

''लोगों के सुख-दुःख में शामिल होना, किसी की कोई सहायता हो सकती है, तो कोशिश करना, खाली समय में कुछ अच्छा साहित्य पढ़ना, शाम को टी.वी. देखना और दो पैग व्हिस्की'' चौबे जी को इस वर्णन में जैसे आनन्द आ रहा था। उसे हैरानी हुई, अपनी मुस्कुराहट उनसे छिपा नहीं पाया। पीछे की सीट पर बैठी युवती को भी इस पर सहसा विश्वास नहीं हुआ।

''आप सच कह रहे हैं अंकल? आप पीते भी हैं?'' वह अचानक बोल उठी।

''खाने-पीने से नैतिकता का कोई सीधा सम्बन्ध नहीं है। ठण्डे प्रदेशों और अधिकांश देशों से लेकर राष्ट्राध्यक्षों तक की पार्टियों में पीने-पिलाने व मांसाहार का खूब चलन है। उनमें नैतिकता का स्तर नीचे तो नहीं कह सकते। व्यक्ति का मूल्यांकन इस आधार पर करने का क्या औचित्य है, यह समझ से परे है। यह जरूर है कि, हमें जहाँ तक हो सके, सात्विक रहना चाहिए, लेकिन यह आचरण और व्यवहार में अधिक जरूरी है, किसी का मूल्यांकन इसी आधार पर होना चाहिए। यह जान लेने से कि मैं पीता हूँ क्या मेरे चरित्र के बारे में तुम लोगों की धारणा ही बदल जायेगी? चौबे जी एक ही सांस में कह गये, ''आप ही बताईये!'' वे आलोक से बोले।

''आप ठीक कह रहे हैं'' उसने सहमति जताई। वह इसे अधिक महत्वपूर्ण मानता था कि चौबे जी न केवल शरीर से स्वस्थ हैं बल्कि मन में भी सकारात्मक सोच रखते थे और समाज में उपयोगी भूमिका निभा रहे थे। वे आदर प्राप्त व्यक्ति थे और सक्रिय जीवन जी रहे थे। वे क्या खाते पीते हैं, इससे बहुत अन्तर नहीं पड़ता। ''मेरे कुछ आत्मीय चाहते हैं कि मैं पूरी तरह सात्विक हो जाऊं या कम से कम खाने पीने की बात को छुपा कर रखूं। मैं उनसे सहमत नही हूँ। मैं कोई अपराध नहीं कर रहा, आवश्यक मर्यादा और अनुशासन का पालन करता हूं, इसलिए इस बारे में अधिक नहीं सोचता। खान-पान के कारण अगर कोई मुझे पसन्द नहीं करता तो यह उसकी समस्या है, मेरी नहीं, ठीक है?'' चौबे जी ने पीछे मुड़कर युवती की ओर देखा। उसे उत्तर मिल चुका था, उसने सहमति में सिर हिला दिया।

आलोक ने अनुमान लगाया कि हो सकता है कि चौबे जी अपनी खान-पान सम्बन्धी बात को लेकर कुछ असहज हो गये हों, लेकिन ऐसा नहीं था। बातचीत में उन्होंने यह भी साफ कर दिया था कि ये बातें न तो उनकी कमजोरी हैं और न ही शौक, किन्तु जब मन करता है तो वे इसे मार कर सात्विकता का दिखावा-छलावा नहीं करते, उनका कहना था वे प्रसन्न रहने में

विश्वास करते हैं। बंधी-बंधाई आदतें कई बार दुविधा में डाल देती है इसलिए निश्चिन्त और आनन्दित रहने के लिए जीवन में सरलता का होना जरुरी है, जो दिखावे से नहीं आती। अहिंसा, सदाचार और नैतिकता आदि सभी बातें आचरण का विषय हैं और उनका जीवन सब प्रकार से सराहा जाता है।

आलोक चौबे जी के तर्कों से सहमत था, किन्तु किसी बड़ी आयु के व्यक्ति के साथ बातचीत के लिए यह अच्छा विषय नहीं था। इसकी दिशा बदलने के लिए उसने चौबे जी से नया प्रश्न कर दिया कि वे दूसरों की सहायता किस प्रकार से करते हैं।

''बड़ा सरल है, किसी और की सहायता लेकर!'' चौबे जी खिलखिला पड़े।

''कैसे?'' उसने कुछ हैरानी से उनकी ओर देखा।

''जैसे आज करने जा रहा हूँ, इसकी सहायता'' चौबे जी ने युवती की ओर इशारा किया ''आपकी सहायता से'' वे आलोक की ओर देखकर बोले। आलोक ने कार में बैठे चौबे जी के साथ युवती को तो ले ही लिया था, यह सहायता तो हो चुकी थी। चौबे जी उससे और क्या कराने जा रहे हैं, उसने काफी सोचा, किन्तु कुछ समझ नहीं आया, उसने चौबे जी की ओर देखा, वे मुस्कुरा दिये।

लगभग तीन घण्टे में आधा रास्ता तय हो गया। आलोक ने एक अच्छे रेस्ट्रां के सामने कार रोक दी। उसके साथ-साथ चौबे जी भी उतर गये, युवती को उन्होंने कार में ही रोक दिया।

''इसके बारे में कुछ चर्चा करनी है, इसीलिए रोक दिया,'' चौबेजी ने टेबिल की ओर बढ़ते हुए कहा।

आलोक ने चाय नाश्ते का आर्डर दे दिया। चौबे जी ने इत्मीनान से पानी का गिलास समाप्त किया और कुर्सी पर कमर टेक कर मुस्कुराते हुये आलोक की ओर देखा, ''आपका सहयोग मिल जाये तो इस लड़की की उलझनें सुलझाने की सूरत भी निकल आयेगी।'' वे बोले।

''उसकी समस्या क्या है?'' आलोक ने उत्सुकता दिखायी। इस बीच चाय नाश्ता आ गया, युवती की चाय कार में ही भिजवा दी गयी। चौबे जी ने सीधा उत्तर न देकर आलोक का ही गुणगान शुरू कर दिया, ''घटनाओं और परिस्थितियों को समझने और उनका विश्लेषण कर निदान करने की आपकी क्षमता गजब की है। कई लोग इस कारण आपसे परामर्श लेते हैं।'' चौबेजी ने उससे कहा। अपनी प्रशंसा, वह भी चौबे जी जैसे वयोवृद्ध व्यक्ति के मुख से सुन, उसे अच्छा लगा। उसके साथ यह कई बार हुआ कि परिस्थितियों से

निपटने के लिए दिया गया उसका सुझाव सही निकलता। उसे इस पर स्वयं भी आश्चर्य होता कि इतना सटीक समाधान उससे कैसे हो जाता है।

''धन्यवाद! लेकिन इसकी परिस्थिति क्या है और मुझ से उसमें क्या सहयोग चाहिए?'' आलोक ने युवती की ओर इशारा कर कहा।

''आप व्यवहारकुशल व्यक्ति हैं और वर्तमान के प्रचलन भी पूरी अच्छी तरह जानते हैं, आपके कारण कोई न कोई हल निकल ही आयेगा।'' चौबे जी ने आलोक की प्रशंसा जारी रखी, ''पूरी परिस्थिति यह स्वयं ही बतायेगी और आप इसमें किस प्रकार से सहयोग कर सकते हैं, यह आपको ही तय करना है'' उन्होंने फैसला सा सुना दिया। ''ठीक है! लेकिन कुछ सूत्र तो दीजिये, समस्या किस प्रकार की है और यह मुझे कब तक बतायेगी? आलोक ने जानना चाहा।

''यह रहन-सहन में तो माडर्न लड़की है, लेकिन संस्कारों व विचारों से एकदम परम्परावादी। बोल-चाल में तेज तर्रार दिखती है, लेकिन मन से बहुत भोली है। अपने व्यक्तित्व के विभिन्न पक्षों में तालमेल न बिठा सकने के कारण यह प्रायः दुविधाग्रस्त रहती है। जीवन में परिस्थितियां कुछ ऐसी रहीं कि इसकी ओर ठीक से ध्यान नहीं दिया जा सका। इसका मन हमेशा दुविधा से भरा रहता है और सही फैसला लेने में कठिनाई होती है।'' चौबे जी ने बताया। यह कैसी समस्या है!' आलोक ने मन में सोचा, सही फैसला लेने में तो सभी को कठिनाई होती है, स्वयं उसके अपने कई बड़े फैसले सही साबित नहीं हुए, लेकिन वह चुप ही रहा।

''इसकी समस्या इसके युवक मित्र, या मंगेतर कह लीजिए, उसको लेकर है। यह कुछ भी सोच नहीं पा रही है'' चौबे जी बता कर चुप से हो गये। बात अब भी गोलमोल सी ही थी। वास्तविक परिस्थितियां क्या हैं, आलोक को समझ नहीं आ रहा था।

चौबे जी ने अचानक ओढ़ी चुप्पी तोड़ी, ''दरअसल, आप नये जमाने के लोग हैं। हमारे जमाने में तो बचपन में ही विवाह हो जाता था, आजकल की बहुत सी बातें हमारी समझ से बाहर हैं। प्यार-मोहब्बत और विवाह से पहले की उलझनें हम समझ ही नहीं सकते। ये लड़की काफी परेशान है और इसकी समस्या सुलझने की बजाय उलझती ही जा रही है। इसकी दादी ने मुझसे चर्चा की थी, वह मेरे एक पुराने मित्र की पत्नी है। इस लड़की के माता पिता नहीं हैं, इसकी दादी चाहती है कि उसकी आँखे मुंदने से पहले इसके हाथ पीले हो जायें। एक जगह बात पक्की भी हो गयी है, लड़के से इसका मेल जोल भी खूब बढ़ गया है लेकिन वह विवाह करने की बात टाल देता है। उसकी कुछ

बातों से यह गहरे तनाव में है और गलत-शलत सलाह मिलने से काफी डरी हुई है। मैं इस मामले में किसी भी प्रकार की सहायता करने में असमर्थ हूँ। आपके विषय में बहुत कुछ सुन रखा है, इसलिए आपको लेकर कुछ आशा बंधी है। अब सब आप पर है।'' उन्होंने कुछ भावुक अन्दाज में कहा।

आलोक को सूझ नहीं पा रहा था कि ऐसे मामले में वह क्या सहायता करे और कैसे। उसने चौबे जी की ओर देखा।

''यदि आप आज रात पास के ही शहर में रुक सकें तो,'' चौबे जी ने आलोक से अनुरोध किया, ''हम पर बड़ी कृपा होगी। आपका गन्तव्य वहाँ से डेढ़ दो घण्टे की दूरी पर है और प्रातः सूर्योदय के बाद चलने पर भी आप समय पर आफिस में पंहुच जायेंगे'' उन्होंने अनुरोध जारी रखा, ''शहर में मेरे परिचय का अच्छा गेस्ट हाउस पहले से ही बुक कराया हुआ है, आपको कोई कठिनाई नहीं होगी।'' उन्होंने बात पूरी की। चौबे जी के आग्रह में अपनापन था, उनकी बात टाल पाना सरल नहीं था, आलोक सहमत हो गया। शहर में पहुँच कर कार सीधे गेस्ट हाउस के सामने रुकी। गेस्ट हाउस में चौबे जी का अच्छा परिचय था, कमरे अच्छे और वातानुकूलित थे। एक कमरे में चौबे जी व आलोक तथा दूसरे कमरे में युवती चली गयी।

''गेस्ट हाऊस में खाना अच्छा मिलता है'' चौबे जी बोले, ''आपको बताया था न कि रात के खाने से पहले मैं थोड़ा व्हिस्की लेता हूँ, आप साथ देंगे?'' उन्होने आलोक से आग्रह किया और उत्तर की प्रतीक्षा किये बिना ही उसका गिलास भर दिया। एक पैग के बाद ही चौबे जी हल्के सुरूर में आ गये, ''मैं रात को देर से सोता हूँ, नींद न आने तक पुस्तकें पढ़ता हूँ। मेरे साथ आपको भी नींद नहीं आ पायेगी।'' उन्होंने आग्रहपूर्वक आलोक को दो-तीन पैग पिला दिये, ''अच्छा रहेगा कि आप भी बगल वाले कमरे में चले जायें! लड़की से आपकी पूरी बात भी हो जायेगी, ठीक?'' उन्होंने आलोक की सहमति चाही।

यह कैसा प्रस्ताव है! आलोक को हैरानी हुई, एक युवती के साथ इस तरह! ''नहीं! नहीं!'' उसने प्रतिवाद किया।

''क्यों? क्या हानि है इसमें?'' चौबे जी ने जानना चाहा ''जो परिस्थिति बनी है, उसमें आपको इसे इतना अपना तो बनना ही होगा कि यह आपको सब कुछ साफ-साफ बता सके, पूरा मन खोल कर। यह ऐसे वातावरण में ही सम्भव है। आपको भय किससे है? उससे या स्वयं से?'' चौबे जी की आवाज कांपने लगी। ''लेकिन'' आलोक ने कुछ कहना चाहा।

''इसमें भी'' चौबेजी बोले, ''आप दोनों को अनौपचारिक होने में वैसे भी समय लगेगा। दोनो संकोची हो, संस्कारों से बंधे हो, मर्यादा जानते और मानते हो,

एक विशेष परिस्थिति और प्रयोजन से साथ में हो। इसमें किसी भी प्रकार का भय नहीं है, फिर यह लेकिन किस बात का?'' उन्होंने जोर देकर कहा।

''फिर भी'' आलोक पर संकोच भारी था। बात अनसुनी करके चौबे जी ने दूसरे कमरे से युवती को बुला लिया, वैसे भी खाने में उसे साथ रहना ही था। ड्रिंक्स भी तब तक समाप्त हो चुकी थी, युवती उनके कमरे में आ गयी।

''ये भी तुम्हारे कमरे में ही रहेंगे, सारी बातें कर लेना।'' चौबे जी ने युवती से यह कह कर उसे बैठने का इशारा कर दिया। वह कुछ नहीं बोली, चुपचाप बेड पर बैठ गयी। खाने पर और कोई बात नहीं हुई। खाने के बाद युवती अपने कमरे में चली गयी। आलोक वहीं बैठा रहा।

''आप भी जाइये!'' अधिकारपूर्वक आलोक का हाथ पकड़ कर चौब`जी उसे युवती के कमरे में छोड़ कर वापिस आ गये।

युवती डबलबेड का कोना पकड़ कर खड़ी थी, कमरे की एक मात्र कुर्सी भोजन के समय पहले ही बगल के कमरे में जा चुकी थी। डबलबेड कुछ इस तरह से जुड़ा था कि दोनों बेड अलग नहीं हो सकते थे। आलोक कुछ सोच ही रहा था कि कमरे का स्प्रिंग वाला दरवाजा अपने आप बन्द हो गया। कमरे में मध्यम रोशनी थी, दिन भर आलोक युवती की ओर ठीक से देख नहीं पाया था। वह छब्बीस-सत्ताईस साल की गोरी और छरहरे बदन वाली आकर्षक युवती थी, जिससे प्रभावित हुए बिना रहा नहीं जा सकता था।

'बेटा मन में दो-दो लड्डू फूटे!' थोड़ा सरूर में आ चुके आलोक को टी.वी. का एक विज्ञापन याद आ गया। वह मन ही मन मुस्कुरा दिया।

''बैठिये प्लीज'' आलोक को खड़ा देख युवती ने बेड की दूसरी ओर हाथ से इशारा किया। आलोक ने जैसे यंत्रवत् होकर आदेश का पालन किया।

''देखिये मुझे पता नहीं, अंकल के मन में क्या पक रहा है, लेकिन आप मेरे बारे में, प्लीज कोई खराब धारणा न बनायें, मैं ऐसी-वैसी लड़की नहीं हूँ'' युवती बोली।

आलोक को हल्का नशा होने लगा था, ''ऐसी या वैसी?'' उसने चुटकी ली।

''ऐसी भी नहीं और वैसी भी नहीं, मैं जैसी हूँ, अंकल ने आपको बता दिया होगा।'' युवती बिना झिझके बोल पड़ी।

''तो?'' आलोक ने प्रश्नवाचक दृष्टि से उसकी ओर देखा।

''मुझे किसी के साथ इस तरह अकेले रहना अजीब सा लग रहा है, कुछ सूझ नहीं रहा।'' युवती बोली।

''डर लग रहा है?'' आलोक ने पूछा।

''ऐसी बात नहीं!'' युवती शान्त भाव से बोली, ''अंकल आपके बारे में काफी कुछ बता चुके हैं, आप भी ऐसे-वैसे आदमी नहीं हैं'' वह बोली।

''ऐसा या वैसा?'' आलोक ने फिर से मजाक किया।

''ऐसे भी और वैसे भी, आप पर भरोसा किया जा सकता है।'' युवती बोली। आप पैर ऊपर करके आराम से बैठिये। यह तय है कि आज रात आपको यहीं रहना पड़ेगा।'' युवती ने आलोक से कहा और स्वयं भी बेड पर कमर टेक कम्बल के अन्दर पैर फैला कर बैठ गयी। दोनों बेड्स पर कम्बल अलग अलग थे, प्रस्ताव पर आलोक को आपत्ति नहीं हुई।

''अब शुरु करें,'' आलोक ने युवती की ओर देखते हुए कुछ रुक कर कहा, ''आपकी समस्या पर बात?''

''यह इतना आसान नहीं है।'' युवती ने कुछ अनमने भाव से कहा, ''आप कुछ नहीं समझ सकते!''

''क्यों?'' आलोक को हैरानी सी हुई।

''किसी अपरिचित के सामने इस तरह से अपनी बात रख पाना कठिन तो होता ही है'' वह बोली, ''वैसे आज जैसी परिस्थितियाँ जीवन में कई बार आ चुकी हैं, रात में भले ही नहीं, लेकिन दिन में किसी पुरुष के साथ घंटों अकेले रहने के मौके अक्सर आ जाते हैं।'' युवती ने कुछ संकोच के साथ कहा।

''किसके साथ?'' आलोक ने पूछा।

''अपने मंगेतर के साथ!'' युवती ने बताया, ''मेरा रिश्ता उससे पक्का हो गया है लेकिन ...'' वह बोलते-बोलते रुक गयी।

''लेकिन?'' आलोक ने कुरेदना चाहा।

''वह अभी शादी नहीं करना चाहता, कुछ साल 'रिलेशनशिप' में रहने की बात करता है'' युवती ने मुश्किल से बताया।

''यानी बिना विवाह किये साथ साथ रहना? लेकिन क्यों?'' आलोक ने पूछा।

''यह तो पता नहीं, लेकिन पूरे-पूरे दिन हमारे घर पर मेरे साथ अकेले रहकर उसने कई समस्याएं पैदा कर दी हैं। कई बार परेशान कर चुका है, मैंने अपने को बचाये रखा है, किन्तु किसी को इस बात पर विश्वास नहीं हो रहा है। मेरी काफी बदनामी हो चुकी है और सब कुछ मंगेतर के साथ होने के चलते कोई कुछ बोलता भी नहीं। यहाँ तक कि मेरी दादी भी ऐसा ही सोचती है, उनका कहना है कि जब शादी उससे ही होनी है तो उसकी बात रख लेनी चाहिए। वह भी धमकाता रहता है कि उसकी बात न मानने पर रिश्ता तोड़ देगा।'' युवती ने काफी कुछ बता दिया।

''और तुम क्या सोचती हो?'' आलोक ने उससे पूछा।

''मुझे उसकी हरकतों से काफी तकलीफ होती है, वह मौजमस्ती में यकीन रखता है। वह खुद बताता है कि उसकी कई युवतियों से दोस्ती है, और वह ऐसी बातों को बड़े हल्के ढंग से लेता है। वह मुझे भी माडर्न बनने की सलाह देता है। पहनावे व खान-पान वगैरह के मामले में तो मैंने उसकी बात मान ली है लेकिन इससे आगे के लिए मन साथ नहीं देता। उसके साथ रिश्ता काफी लम्बा खिंचने से व इस कारण तरह तरह की बातों से और कहीं रिश्ता होना भी अब मुश्किल है। उसने ऐसी परिस्थिति बना दी है कि अब उसके सामने समर्पण करने के अलावा और कोई रास्ता नहीं बचा किन्तु अभी भी मन नहीं मान रहा।'' युवती ने अपनी कठिनाई सामने रखी।

इतनी बातें कर चुकने के बाद युवती का मन हल्का हो चुका था। आलोक ने उसकी बातें गौर से सुनीं, लेकिन कुछ नशे में होने के कारण समस्या पर ध्यान केन्द्रित नहीं कर पाया था।

''असली समस्या क्या है?'' आलोक ने युवती की ओर देख कर उससे पूछा। युवती ने चौंक कर आशय जानने के लिए चेहरा आलोक की ओर घुमा दिया।

''आप सचमुच नहीं समझे?'' उसने प्रतिप्रश्न किया।

''मुझे तो दो बातें ही समझ में आती हैं, पहली यह कि अपने मंगेतर की बात मान लो, यह काफी सरल है। दूसरी यह कि कोई विकल्प ढूंढ़ लो, लेकिन यह बहुत कठिन है। तुम सरल की तरफ जा नहीं पा रही, क्योंकि इसके लिए तुम्हारा मन नहीं मान रहा और कठिन तो कठिन है ही। तुम कुछ तय नहीं कर पा रही हो, मैं ठीक समझ रहा हूँ?'' आलोक ने उससे पूछा।

''बिल्कुल यही बात है!'' युवती बोली, ''वह शादी की बात टाल रहा है तो कोई विशेष कारण जरूर होगा, इसे न बता कर वह दूसरा प्रस्ताव रख रहा है। वैसे भी, यह शादी के लिए मना करने जैसा ही है, लेकिन उससे मन अभी भी हट नहीं पा रहा,'' उसने साथ में जोड़ा।

''यानि उससे अभी भी उम्मीद बाकी है'' आलोक ने युवती का मन टटोला, ''और यदि विकल्प मिल जाये तो?'' वह मुस्कुराया।

''कौन मिलेगा? आप?'' आलोक को हल्के नशे में देख युवती ने बिना झिझक पूछ डाला ''आप तो शादीशुदा लगते हैं और अगर एक रात भर का ही विकल्प देखना है तो मंगेतर के साथ लिव इन रिलेशनशिप' ' में फिर क्या बुराई है?'' उसका स्वर कुछ तीखा हो गया। फिर वह एकाएक गम्भीर हो गई, ''अब मैं समझी कि अंकल ने हमारे इस तरह साथ में रात बिताने की व्यवस्था

क्यों की, वह भी आपको व्हिस्की पिला कर'' उसने शंका व्यक्त की।

''क्यों? वे क्या चाहते हैं?'' आलोक ने युवती का अनुमान सुनना चाहा।

''यही कि अगर आज रात की परिस्थिति में मैं डगमगाई नहीं, तो फिर किसी दवाब के आगे घुटने न टेकूं और अगर अपने को सम्भाल नहीं पायी तो 'लिव इन रिलेशनशिप' की ही बात मान लूँ। अंकल ने ऐसी व्यवस्था शायद फैसला लेने में मेरी मदद के लिए की लगती है।'' युवती ने आलोक की पुष्टि चाही।

''लेकिन मैं तो मर्यादा में रहता हूँ, कमजोर नहीं पड़ता, उन्होंने यह भी तो सोचा होगा!'' आलोक ने अपना पक्ष भी रखा।

''मैं भी हर हालत में अपने को बचाये रखूंगी ही, लेकिन परिस्थितियां बहुत कुछ करवा देती हैं, फिर आपको व्हिस्की भी तो पिला दी गयी है, ऐसे में कुछ आशंका तो होनी ही है।'' युवती ने घबराहट सी जताई, ''कुछ अनपेक्षित भी हो सकता है।''

आलोक का नशा अभी कम नहीं हुआ था, लेकिन उसने अनुभव किया कि बातचीत किसी और दिशा में जा रही थी। अपने आवेगों को काबू में रखने में कठिनाई हो सकती थी। वह बिस्तर छोड़ कर दरवाजे की बढ़ा किन्तु युवती ने पीछे आ उसका हाथ कस कर पकड़ लिया और खींच कर बेड की ओर ले जाने लगी।

''यह सब क्या है?'' आलोक ने हाथ छुड़ाया।

''कुछ नहीं! बस आपको अंकल की बात रखनी होगी, यहीं साथ में ही रहना होगा। वे बहुत अच्छे इन्सान हैं, कुछ सोच कर ही हमारा साथ किया होगा।'' युवती ने आग्रह के साथ विनती जैसी की।

थोड़ा सोच कर आलोक ने पूछा, ''तुम कोई ऐसी-वैसी बात तो नहीं करोगी ना?'' उसने आश्वस्त होना चाहा।

''ऐसी या वैसी?'' युवती धीमे से हंसी। आलोक उसे कुछ नहीं कह पाया। वह फिर से बेड पर जा बैठा, 'विक्रम-बेताल' कहानी के बेताल जैसे।

''आपने कुछ अनुमान लगाया कि अंकल ने हमें इस तरह साथ क्यों किया?'' कुछ देर बाद युवती ने आलोक से पूछा।

''कोई अनुमान नहीं!''

''कुछ भी नहीं?''

''कुछ नहीं!''

''नाराज हैं?''

''नहीं!''

''कुछ नहीं बोलेंगे?''

''नहीं'' आलोक झुंझला सा गया। नशे में होने के बाद भी वह अपना सारा ध्यान युवती की समस्या सुलझाने पर केन्द्रित कर रहा था जबकि वह बार-बार दोनों के रात में इस तरह साथ होने की बात कर रही थी। आलोक ने अनुभव किया कि युवती के मन में कुछ उथल-पुथल चल रही थी, उसकी भाषा बदल रही थी व सम्भले रहने के स्थान पर वह आवेगों में बहने लगी थी। दोनों को कमरे में साथ आये डेढ़-दो घंटे हो चुके थे और पूरी रात बाकी थी। युवती सोने का सा उपक्रम करने लगी, आलोक के लिये यह कठिन था। समय काटने व युवती को जगाये रखने के लिए उसी के मन के अनुरूप कुछ न कुछ बातचीत होती रहनी चाहिए, यह सोच कर उसने चुप्पी तोड़ी ''चौबे जी यह जो कुछ कर रहे हैं, तुम्हें भी तो बताया होगा?'' उसने युवती से पूछा।

''नहीं!'' युवती ने सपाट उत्तर दिया।

नशा असर करने लगा था। आलोक को अचानक फिर से मजाक सूझी ''लगता है कि अब पति बन कर ही आपका कुछ हो सकता है'' बोलते हुए उसने युवती की ओर देखा। युवती आलोक के बदले रूप पर विश्वास नहीं कर पा रही थी। उसने चुप रहना उचित समझा।

''आप पत्नी की भूमिका सकती हैं?'' आलोक ने उससे जानना चाहा।

''भूमिका?'' युवती का माथा ठनका।

''अभिनय में!'' आलोक मुस्कुराया।

''कैसा अभिनय?''

''स्वाभाविक! मैं भी तो आपके साथ पति का अभिनय करूंगा।'' आलोक ने जोड़ा।

''अभिनय तो औरों के सामने होता है, यहां तो और कोई भी नहीं!'' युवती ने परेशानी जताई। उसे आलोक से अब तक तो कोई समस्या नहीं थी, लेकिन अब वह क्या चाहने लगा था, वह समझ नहीं पा रही थी। उसने हैरानी से आलोक को देखा ''मैं तो समझ रही थी कि आप वाकई भोले हैं, किन्तु इस पति-पत्नी के अभिनय से आपका क्या मतलब है?'' वह कुछ अपनेपन से बोली, ''ऐसे अकेले में अभिनय नहीं हो सकता! सिर्फ भूमिका ही निभाई जा सकती है, ऐसे!'' वह खड़े हुए आलोक से लिपट गई। आलोक ने कठिनाई से उसको अपने से अलग किया।

''मैंने केवल अभिनय करने को कहा है!'' आलोक ने नाराजगी दिखाई।

''मैं भी पत्नी का अभिनय ही तो कर रही हूं, जितना आता है'' युवती ने सफाई दी।

''ऐसे वाला नहीं! केवल कहने-सुनने का!'' आलोक कुछ सख्त हुआ।

''ऐसा तो बहुत कठिन है'' युवती जैसे काफी परेशान हो गई।

''कोई कठिन नहीं! अभिनय केवल शरीर से ही नहीं होता, बोलने-सुनने का भी होता है। आपने कभी रेडियो नाटक नहीं सुने?'' आलोक ने समझाया।

''सुने तो हैं!'' युवती ने गहरी सांस ली।

''तो ठीक यही करना है! आप मेरी पत्नी होने जा रही हैं, कल ही हम लोग शादी कर रहे हैं और आज रात से ही पति-पत्नी के तौर पर रहने लगे हैं।'' आलोक ने युवती की आंखों में आंखें डालीं।

''क्या?'' युवती को करन्ट सा लगा।

''बस बोलने सुनने के अभिनय में! ठीक? अब शुरू करें?'' आलोक ने युवती को उसकी भूमिका समझाई और उसे मोबाइल देकर मंगेतर का नम्बर मिलाने को कहा।

''मैं तुम्हारी मंगेतर युवती के साथ होटल के कमरे में अकेला हूँ'' आलोक ने मंगेतर लड़के को झटका देने के लिए कहा।

''कोई समस्या नहीं!, मुझे उस पर पूरा भरोसा है, वह बहुत मजबूत लड़की है।'' बिना उत्तेजित हुए लड़के ने प्रतिक्रिया दी, ''लेकिन आप कौन हैं? और मुझे फोन क्यों कर रहे हैं? वह भी इतनी रात को?'' उसने पूछा।

''क्योंकि तुम्हारे शादी टालने और लिव इन रिलेशनशिप' ' के लिए दबाव के कारण ये तनाव में थीं और तुमसे निराश हो चुकी थीं। मैंने इनका साथ देना तय किया है। अब हम दोनों कोर्ट मैरिज कर रहे हैं, कल ही। लेकिन ये तुम्हें धोखे में नहीं रखना चाहतीं, इसलिए सिर्फ सूचना के लिए फोन किया है।'' आलोक ने मोबाइल का स्पीकर ऑन कर दिया ताकि युवती पूरी बातचीत सुन सके।

''नहीं, ऐसा बिलकुल नहीं हो सकता,'' लड़का चीखा, ''मैं उसे बहुत प्यार करता हूँ और उससे शादी करना चाहता हूँ, उसके बिना नहीं रह सकता'' उसका स्वर कातर हो गया। आलोक ने फोन युवती के हाथों में दे दिया।

''यह अब कह रहे हो? अब तक तो टाल रहे थे?'' युवती ने मंगेतर को डपटा।

''दरअसल कुछ समय बाद मेरा प्रमोशन होने वाला है, मैं चाहता था कि तुम अफसर की बीबी बन कर मेरे घर आओ, जूनियर की नहीं। इसलिए थोड़ा

इन्तजार करवाना पड़ गया था।'' लड़के ने बताया।

''यह बात पहले बतानी चाहिये थी, अब क्या फायदा? तुम 'लिव एन रिलेशनशिप' के लिए भी तो दबाव देते थे? अब बहुत देर हो चुकी है।'' युवती ने तेज स्वर में, लेकिन धैर्यपूर्वक बात की।

''मैं यह प्रोमोशन गिफ्ट में, सरप्राइज की तरह, देना चाहता था। मैं जानता हूँ कि तुम मूल्यों वाली लड़की हो, 'लिव इन रिलेशनशिप' की बात पर कभी सहमत नहीं होगी, बस चिढ़ाने के लिए छेड़छाड़ करता था। वैसे भी रिश्ता पक्का होने के बाद थोड़ा बहुत तो चलता ही है। मुझे नहीं पता था कि तुम इन सब बातों को इतना सीरियसली लोगी। तुम्हें मुझ पर भरोसा रखना चाहिए। प्लीज ऐसे मत डराओ!'' उसने विनती की।

''अब शादी टल नहीं सकती, हर हालत में कल होगी ही। ये तुम्हारी तरह टालमटोल वाले नहीं हैं'' युवती ने फोन आलोक की ओर किया ''सही कह रही हूं ना?''

''हां, शादी कल ही होगी!'' आलोक ने फोन पर साथ दिया।

''आइ एम सॉरी! लेकिन अब कुछ नहीं हो सकता। अगर तुम्हें विश्वास नहीं है तो कल कोर्ट में आकर देख लेना।'' युवती ने मंगेतर से कुछ सधे हुए अन्दाज में कह कर फोन काट दिया।

आलोक का नशा अब काफी कुछ उतर चुका था। वह कमरे से बाहर निकल आया। चौबे जी वाले कमरे के दरवाजे की चटकनी नहीं लगी थी, वह अन्दर दाखिल हो कर बगल में बेड पर लेट गया।

''सुबह अपने शहर वापिस चलना होगा।'' आलोक ने चौबे जी से कहा।

''क्यों?'' चौबे जी चौंके।

''कल इसकी शादी हो रही है'' आलोक ने युवती के कमरे की ओर इशारा किया।

''किसकी? किससे? कैसे? कहां?'' चौबे जी हड़बड़ाये। उत्तर दिये बगैर आलोक कम्बल में पसर गया।

चौबे जी ने सुबह बहुत जल्दी दोनों को जगा दिया, तीनों कार से वापिस चल दिये। ड्राइव करते हुए आलोक ने पिछली रात की बातों पर सोचने का प्रयास किया किन्तु धुंधला सा ही ध्यान आ रहा था कि रात में क्या हुआ और क्या नहीं। चौबे जी जैसे वयोवृद्ध का व्हिस्की को लेकर लम्बी भूमिका बांधने व पीने के आग्रह के पीछे का माजरा कुछ-कुछ समझ आ रहा था। गहरे

संस्कारों के चलते शरीर व मनोवेगों पर तो उसका नियंत्रण बना रहे किन्तु सुरूर में कोई नया विचार आ, संकोच हटा कर हल निकाल जाये।

कार सीधे कोर्ट पहुँच कर ही रुकी। सबसे पहले पिछली सीट से युवती उतरी। कुछ लोगों के साथ एक युवक तेजी से उसके सामने आ खड़ा हुआ।

''प्लीज ऐसा मत करो, मै सचमुच सॉरी फील कर रहा हूँ'' उसने विनती की। युवती ने कार से उतरते आलोक की ओर देखा, ''ये ही हैं!'' उसने जैसे दोनों का एक दूसरे से परिचय कराया। चाह कर भी वह अपनी मुसकुराहट छिपा नहीं पाई।

''शादी देखने आये हो या रुकवाने?'' युवती ने कुछ गुस्से का नाटक किया किन्तु आंखों में प्यार छलक ही आया।

''करने!'' युवक ने जोर देकर कहा, ''मुझे सबक मिल गया! आपका अभिनय सफल रहा! थैंक्स!'' युवक ने आलोक का धन्यवाद ज्ञापन करते हुए युवती का हाथ पकड़ा और उसे लेकर तेजी से मैरिज़ रजिस्ट्रार ऑफिस के अन्दर चला गया। युवती ने कोई प्रतिरोध नहीं किया।

युवक ने पहले से ही सभी तैयारियां की हुई थीं, दस-पन्द्रह मिनट में सब लोग कमरे से बाहर निकल आये। मित्रों ने युवक-युवती के मुंह में लड्डू ठूंस दिये। युवक ने युवती की दादी को भी वहीं बुला लिया था।

''हमें आशीर्वाद दीजिये'' युवती ने आगे बढ़कर दादी और चौबे जी के पैर छू लिये।

''यह तो चमत्कार हो गया।'' दादी खुशी के मारे उछल पड़ीं।

''होता कैसे नहीं?'' चौबे जी ने सीना ताना ''उलझन सुलझाने के लिये आखिर चुना किसे गया था? बहुत बहुत धन्यवाद!'' वे आलोक की ओर मुड़े।

''लेकिन तरीका आपने बड़ा टेढ़ा आजमाया।'' आलोक बुदबुदाया।

''लिव इन रिलेशनशिप का मामला जो निपटाना था'' चौबे जी ने ठहाका लगाया।

आलोक को देखते हए युवक ने धीमे से युवती को छेड़ा, ''इन्होंने पति बनने का अभिनय ही किया ना? कहीं भूमिका तो ..?''

कनखियों से आलोक की ओर देख कर युवती, लजाते-शर्माते हुए भी, मुस्कुराये बिना नहीं रह सकी।

पिकनिक

महीने में एक-आध बार बाहर किसी बड़े होटल में खाना न हो तो शर्मा जी को बेचैनी सी हो जाती थी। बच्चे शिक्षा प्रतियोगिता के लिए, घर से काफी दूर, अन्य शहरों में रह रहे थे और शर्मा जी की पत्नी को बाहर खाने के नाम से ही चिढ़ थी। पत्नी का कोई न कोई व्रत निकल आता, वैसे भी मिर्च मसाले और प्याज-लहसुन जैसी चीजों से उन्हें घना परहेज था। चटपटे और लजीज, भांति भांति के खाने के शौकीन शर्मा जी को बाहर खाने में अकेले जाना भी अच्छा नहीं लगता, इसलिए किसी नजदीकी मित्र को आग्रह करके साथ ले लेते। इस बार उनकी पकड़ में आकाश आ गया।

होटल में डिनर पर जाने का अर्थ शर्मा जी के लिए केवल पेट में खाना ठूंसने से ही नहीं था, यह शान-ओ-शौकत के या सामाजिक हैसियत का प्रदर्शन करने का माध्यम भी था। वहां नये लोगों से परिचय और दायरा बढ़ाने का अवसर भी मिलता था, इसलिए शर्मा जी का आग्रह वहां भोजन के बहाने अधिक से अधिक समय बिताने का भी रहता। डेढ़-दो घंटे से कम होटल में रुके तो शर्मा जी को मजा ही नही आता था। खाने के लिए वे अक्सर शाम का समय चुनते थे। डिनर से पहले हार्ड ड्रिंक के लाइट पैग व स्नेक्स, उसके बाद सूप और फिर खाने का आर्डर। डिनर आते-खाते और बिल भुगतान करते-करते इतना समय लगभग हो ही जाता था। इस बीच शर्मा जी खूब बातें करते और आस-पास नजरें भी दौड़ाते रहते कि कोई नया सम्पर्क बन जाये या कोई परिचित निकल आये।

आकाश फुर्सत में था और शर्मा जी के आतिथ्य का आनन्द उठाना चाहता था, इसलिए खाने-पीने और गप-शप में साथ दे रहा था। शर्मा जी उससे बातें तो कर रहे थे लेकिन उनका ध्यान सामने की ओर दूसरी टेबिल पर था जो आकाश की पीठ के पीछे कुछ दूरी पर थी। हाल में क्लासिकल गजलें चल रही थीं इसलिए अपनी टेबिल के अलावा अन्य टेबिलों पर होने वाली बातें नहीं सुनी जा सकती थीं। रोशनी हल्की पीली और झिलमिलाहट के साथ थी, इसलिए गौर से देखे बिना किसी को एकदम पहचान पाना सम्भव नहीं था। शर्मा जी बार-बार उसी दूसरी टेबिल की ओर देख रहे थे जैसे किसी को पहचानने की कोशिश कर रहे हों, आकाश की बातों पर उनका ध्यान ही नहीं था। आकाश ने गरदन मोड़कर पीछे की ओर देखा-टेबिल पर दो महिलाएं थीं, वे भी जैसे इस टेबिल की ओर ही देख रही हों। पीछे की ओर लगातार देखना ठीक नहीं था और

गरदन अकड़ने का डर ऊपर से था, आकाश सीधे बैठ गया। सामने दीवार के बीच बनी शीशे की टाइलनुमा कुछ चौड़ी सी पट्टी में हाल का बिम्ब नजर आ रहा था, आकाश की नजर उस पर पड़ गई। महिलाएं बातों में मशगूल थीं लेकिन बीच-बीच में थोड़ी-थोड़ी देर बाद, इस टेबिल की ओर देख रही थीं।

''माजरा क्या है?'' शर्मा जी ने चुप्पी तोड़ी ''ये महिलाएं हमारी टेबिल की तरफ क्यों देखे जा रही हैं? शायद हमारे बारे में बातें कर रही हैं। मैं तो इन्हें पहचान नहीं पा रहा, कहीं आपकी परिचित तो नहीं?'' उन्होंने आकाश से पूछा। आकाश ने फिर से एक बार गरदन पीछे की ओर मोड़ी और तुरन्त सीधी कर ली- एक महिला सोबर सी साड़ी में थी और दूसरी सलवार कुर्ते में। साड़ी वाली के बाल जूड़े में बंधे हुए थे और कुर्ते वाली के बाल ब्यायकट-एक झलक में आकाश बस इतना ही देख पाया- चेहरों की ओर गौर से तो नहीं देखा लेकिन इतना पक्का हो गया कि दोनों में से कोई भी उसकी परिचित नहीं थी। आकाश ने गरदन दायें-बायें हिला दी।

महिलाओं की टेबिल पर डिनर आ चुका था और शर्मा जी ड्रिंक्स ले रहे थे, आकाश के सामने सूप का बाउल था। इस टेबिल पर डिनर के आने में देरी थी लेकिन महिलाएं डिनर शुरू कर चुकी थीं। आराम से खाते-पीते उन्होंने डिनर पूरा कर लिया। उनकी टेबिल पर बिल आ गया और इनकी टेबिल पर डिनर। शर्मा जी बीच-बीच में महिलाओं वाली टेबिल की ओर देख कर अभी माजरा समझने की कोशिश में थे कि कुर्ते वाली महिला उनकी टेबिल के पास चली आई। आकाश ने देखा कि वह आकर्षक नैन-नक्स वाली युवती थी।

''एक्सक्यूज मी'' युवती बोली ''आशा करती हूं आपको डिस्टर्ब नहीं कर रही''

''बिल्कुल नहीं!'' शर्मा जी तपाक से बोल पड़े।

''मुझे आपका थोड़ा सा समय चाहिए, अगर आप माइन्ड न करें तो!'' युवती आकाश की ओर मुड़ी। आकाश ने हैरानी से उसकी ओर देखा।

''श्योर-श्योर'' उत्तर शर्मा की ओर से आया। युवती इसकी अपेक्षा आकाश से कर रही थी।

''समय की तो कोई बात नहीं लेकिन किसलिए चाहती हैं, यह तो जानना ही होगा'' आकाश ने जोड़ा।

''दरअसल मेरे साथ बैठी महिला काफी देर से आपकी बातें बता रही थी, इसलिए आपसे मिलने की इच्छा हुई'' युवती ने बताया। आकाश ने महिला की ओर देखा, काफी कोशिश के बाद भी उसने उसे नहीं पहचाना।

''कौन है ये मोहतरमा? लगता नहीं कि मैंने इन्हें पहले कभी देखा है'' आकाश ने जानना चाहा।

''यदि सीधे यह बताऊंगी कि आपको इसने कहां देखा था तो शायद आप इससे न मिलना चाहें, लेकिन मुझसे बात कर लेने के बाद आप इससे मिले बिना शायद ही रह पायें'' युवती ने कुछ रहस्य सा पैदा कर दिया।

''पहले डिनर पूरा कर लें'' शर्मा जी ने हस्तक्षेप किया ''फिर आराम से बातें कर सकते हैं''

''अगर आप यह बता सकें कि मुझसे आपकी अपेक्षा क्या है तो खाने के साथ-साथ उस पर भी सोच लेने की सुविधा होगी'' आकाश ने सुझाव रखा।

''करेक्ट'' युवती चहकी, ''ये ठीक रहेगा, इसे इतना तो अनुमान है कि आप कोई बड़े अधिकारी हैं और किसी अच्छे शहर में रहते हैं लेकिन आपकों गांवों से इतना ज्यादा प्यार क्यों है और गांवों के विकास में गहरी रुचि क्यों है, इस विषय में कुछ नहीं जानती। मैं चाहूंगी कि आप सबसे पहले अपने गांव के विषय में कुछ बतायें, वहां का वातावरण, अच्छाइयों-बुराइयों और कुछ मीठी-कड़वी यादों को भी सुनना चाहेंगे इसके बाद मैं आपको बातऊंगी कि आप कितने बड़े जादूगर हैं'' युवती मुस्कराई, ''चाय हम साथ-साथ पीयेंगे'' कहकर वह वापस अपनी टेबिल पर चली गई।

'अपने गांव के विषय में क्या बताऊंगा मैं! वहां तो बस बचपन ही बीता था' आकाश सोचने लगा। गांव का खयाल मन में आते ही महंगे होटल के डिनर में वहां के खाने का स्वाद भर आया। मंडवे की मोटी रोटी और कंडाली ;बिच्छू घास की पत्तियोंद्ध का साग, मोटे लाल चावल के ढ़िंडके (मोटे टुकड़े) और दही-मांड की झोली, अंगारों पर भूने गये राख लिपटे आलू, सब कुछ। साथ में मां की भोली सूरत, चोटी के साथ गूंथे हुए फोंदे में बंधी नखचुण्डी (पैरों में चुभे कांटे निकालने वाली चिमटी) भी, हिलती हुई सदरी पहने उनकी साथी महिलाएं, उनकी नाक में नथ या बुलाक और कानों में मुरखलियां- सब कुछ आंखों में तैरने लगा। आकाश कहीं दूर खो गया पूरा गांव का दृश्य मस्तिष्क पर छा गया। ढ़लान पर बसा पहाड़ी गांव, सीढ़ीनुमा खेतों के साथ बीच में बने छोटे-बड़े मकान, जिनके सामने दालान होता। दालान में पशु बंधे होते, गाय-बैल, भैंस बछड़े व बकरियां। दालान ही आंगन का भी काम करता, बच्चों के खेल-कूद से लेकर गर्मियों में शाम की रसोई तक, सब कुछ इसी में होता। दालान आपस में जुड़े होते और उनमें जाने का रास्ता एक-दूसरे से होकर निकलता। मनुष्यों के साथ पशु भी इन्हीं रास्तों से होकर आते-जाते। आंगन की साफ-सफाई वही लोग करते जिनके घर के सामने आंगन होता।

आंगन निजी होते हुए भी इनमें बने रास्तों का सभी उपयोग करते लेकिन क्या मजाल कि कभी कोई विवाद हो। कोई लिखित या मौखिक समझौता नहीं, लेकिन इस परम्परा का सभी आदर करते।

एक-दूसरे की आवश्यकता पूरी करने की ऐसी परम्परायें और भी थीं जो गांव के जीवन में रची बसी थीं। गांव में कोई भी बड़ा कार्य होता तो सबके साझे में चुटकियों में सम्पन्न हो जाता। किसी के परिवार में शादी-ब्याह जैसा आयोजन होता तो सारा गांव काम के लिए आ जुटता। जंगल से लकड़ियां लाना हो या दूर स्रोत से पानी भरना-सब कुछ साझे में सरल हो जाता। खेती-बाड़ी के काम भी सामूहिकता से होते, गुड़ाई-निराई और कटाई जैसे काम साथ मिलकर होते। जिस परिवार का कार्य होता वह बदले में भोजन करा देता, यह भी सहभोज ही होता। वातावरण ऐसा था कि सारा गांव जैसे एक ही परिवार हो- आत्मीयता भाव इतना गहरा रहता कि सबके सुख-दुःख एक होते। किसी का प्रसव होना होता तो गांव की बड़ी-बूढ़ियां जचगी करा देतीं। जिस घर में कोई दुधारू पशु नहीं होता उसके यहा अन्य घरों से इतना दूध आ जाता कि वहीं सबसे अधिक हो जाता। जब कोई गांववासी दूर शहर से लौटता तो गांव भर के लिए चना-अंदरखी साथ लाता। शहर में रहने वाला गांव का कोई व्यक्ति जब अपने शहर वापिस लौटता तो सभी परिवारों से कुछ न कुछ भेंट अवश्य मिलती। गांव से बहुत दूर सेना या किसी अन्य सेवा में काम करने वाले को जब चिट्ठी भेजी जाती तो उसमें पूरे गांव का और प्रत्येक परिवार का समाचार होता, उसके पत्र में भी यह सब जानने की इच्छा रहती। अपने-पराये का भेद तो गांव में दूर-दूर तक दिखाई नहीं देता था- थोड़ा बहुत स्पर्धा-ईर्ष्या होती भी थी तो उसे जाहिर नहीं किया जाता।

गांव की ऐसी मीठी स्मृतियां आकाश के मन को कुरेद रहीं थी लेकिन डिनर समाप्त होते-होते खाने का स्वाद बदलने लगा। यह तो तेज मसालों, बनावटी खुशबू और तेल से भरपूर सजावटी खाना था- इसमें गांव की माटी की भीनी महक कहां से आती। चिन्तन का क्रम बदला, गांव में सब कुछ था- चौतरफा सुन्दर पहाड़ियां, पास के घने जंगल, हरियाली और ताजी हवा, शुद्ध-घी-दूध और मौसमी पहाड़ी फल काफल, हिंसर और किनगोड़। पास ही कल-कल छल-छल की सुन्दर आवाज करती छोटी नदी, हर ओर मनोरम दृश्य, लेकिन शिक्षा की कोई व्यवस्था नहीं, न कोई चिकित्सालय, आस-पास कोई बाजार भी नहीं, यातायात के साधन दूर-दूर तक नहीं, जीवन कठिनाइयों से भरा था- महिलाओं का जीवन तो और भी कष्टप्रद। सुविधाओं की चाह में गांव से लोग निकलने लगे, जो बाहर जाता, वापस आने का नाम नहीं लेता। इस जद में

आकाश का परिवार भी आ गया, उसका भी गांव का साथ छूट गया। पढ़ाई के लिए वह पिता के साथ शहर में पहुंच गया- कुछ समय बाद माता और छोटे भाई-बहन भी वहीं आ गये। अब तो गांव से जैसे नाता ही टूट गया, साथ में रह गई केवल बचपन की यादें।

शहर का वातावरण गांव से एकदम अलग था। मोहल्ले में भांति-भांति के मकान, बड़ी हवेलियों से लेकर झोपड़ियों वाली बस्तियां। अलग-अलग हैसियत और भांति-भांति के व्यवसाय वाले लोग। बड़े-छोटे और अमीर-गरीब, अफसर, बाबू और चपरासी- आकाश को नई-नई बातें देखने को मिलीं, आदमी की आदमी से दूरी, बात-बात में तुलना, छोटे माने जाने वाले लोग बड़े बनने वालों के आगे बढ़ने के तरीकों पर काना-फूसी करते तो बड़े माने जाने वाले लोग छोटों का उपहास करने का मौका नहीं चूकते। जाति, वर्ण और धर्म के नाम पर दूसरे का मजाक बनाना और अपनी बड़ाई करना हर कहीं आम चलन था। बनावटी व्यवहार, दिखावा, ईर्ष्या और द्वेष सब बातों पर हावी था, स्नेह और प्रेम स्वाभाविक नहीं लगता था। आकाश अपने गांव से तुलना करता तो उसे कुछ भी अच्छा नहीं लगता लेकिन उसके बस में कुछ नहीं था। उसे उसी वातावरण में रहते हुए बड़ा होना पड़ा लेकिन शहर में रहते हुए भी उसने चालाकी और धूर्तता नहीं सीखी, उसका मन गांव की सरलता को नहीं छोड़ पाया। उसे अपने ही नहीं, सभी गांवों और वहां के वातावरण से लगाव था। सेवाकाल के दौरान कार्य की प्रकृति से वह ग्राम्य विकास के क्रियाकलापों से जुड़ गया और सेवाभावी सामाजिक कार्यकर्ताओं से मित्रता के चलते इस ओर पहले भी करने लगा। इस दौरान उसे ऐसे विषयों पर अध्ययन का भी अवसर मिला, धीरे-धीरे उन कार्यों में उसे आनन्द आने लगा और उसकी रुचि और बढ़ गई।

डिनर समाप्त होने पर युवती के साथ महिला भी उनकी टेबिल पर आ गई। आकाश ने अपने गांव के बचपन के अनुभव और एकाध छोटी-मोटी घटनाएं उन्हें सुनाईं। यह भी कि ग्राम विकास में उसकी रुचि कैसे बढ़ी और नये प्रयोगों से देश के अनेक भागों में कैसे कायाकल्प हो रहा है।

''यही सब तो वहां हुआ।'' अब तक चुप बैठी महिला एकाएक बोल उठी और तुरन्त ही सकपका भी गई। युवती मुस्करा दी।

''सचमुच! ऐसा ही, बिल्कुल यही वहां भी हुआ'' युवती ने महिला की बात पूरी की। शर्मा जी हैरान थे- ''क्या हुआ और कहां?'' उन्होंने पूछा।

''वहीं, जहां चार-पांच वर्ष पहले ये गये थे'' युवती ने आकाश की ओर इशारा करते हुए एक स्थान का नाम लिया, ''आदिवासी क्षेत्र है, बिल्कुल पिछड़ा!

अपने इलाके में किसी को घुसने ही नहीं देते थे तो विकास कैसे होता! लेकिन इन्होंने जादू कर दिखाया'' युवती की आकाश की ओर देख मुस्कुराई। आकाश ने शर्मा जी की ओर कन्धे उचकाये कि उसे तो कुछ याद नहीं कि उसने कहीं ऐसा क्या कर दिखाया था, बल्कि स्थान भी उसे ठीक से याद नहीं आ रहा था। युवती आकाश की कठिनाई समझ गई। उसने एक जिले का नाम लेते हुए साथ में राज्य का नाम भी बता दिया, जिसमें वह जिला था।

''वहां से 40-50 किलोमीटर दूर दो राज्यों की सीमा पर एक प्यारा सा डैम है जो पहाड़ियों व जंगलों घिरे आदिवासी क्षेत्र में है। लोग अक्सर पिकनिक मनाने वहां जाते हैं, आपने भी वहां एक दिन बिताया था।'' युवती ने आकाश को याद दिलाया।

जिले का नाम सुनते ही आकाश को काफी कुछ स्मरण हो आया। इस जिले में वह लगभग एक माह तक रहा। रविवार को वह कार्यालय का काम नहीं करता था बल्कि आस-पास के पर्यटक स्थलों आदि पर जाना पसन्द करता। पहले दो रविवारों को दो अति प्रसिद्ध धार्मिक स्थल और उसके बाद वाले में एक सुप्रसिद्ध विश्वविद्यालय देख चुकने के बाद यह चौथा रविवार था। होटल के कमरे में दिन भर पड़े रहना उसे बहुत अखरता था, वहीं से उसे जानकारी मिली कि घंटे-डेढ घंटे की दूरी पर एक सुन्दर डैम है। उसके किनारे बने पर्यटक गृह में देश के एक नामी नेता को बहुत बड़े आंदोलन के दौरान कैद कर रखा गया था। डैम के आस-पास रमणीक दृश्य था, अवकाश के दिन बहुत सारे लोग वहां जाते थे, लेकिन उचित रख-रखाव के अभाव में स्थान अब उपेक्षित और वीरान सा हो गया था, इसलिए वहां चहल-पहल बहुत कम हो गई थी। वृतांत जानकर आकाश को उत्सुकता हुई, उसने उस स्थान पर जाने का कार्यक्रम बना डाला। कुछ फल, नमकीन, बिस्कुट, पेन-पैड, पानी व शीतल पेय की बोतलें तथा बैठने के लिए साथ में चादर और रेडियो आदि बैग में लेकर वह डैम पर सुबह 9.00 बजे पहुंच गया था।

जानकारी सही थी, डैम के पार्क में लम्बी घास उग आई थी, पौधे बेतरतीब होकर झाड़ियों जैसे हो गये थे, पेड़ों के नीचे झड़े हुए पत्ते बिखरे थे। बैठने के लिए बनी बेंच खस्ता हालत में थी, तार-बाड़ जगह-जगह से टूटी हुई या गायब थी। डैम की झील के किनारे बनाया यह पार्क चारों ओर से सुन्दर पहाड़ियों से घिरा हुआ था। पार्क तक पहुंचने वाली सड़क के किनारे बनी दुकानें व अन्य भवन टूट-फूट चुके थे, बस तीन-चार छोटे खोखे थे जो अभी तक खुले नहीं थे। आकाश को सहज ही अनुमान हो गया कि वीराने में बदल चुका पार्क कभी अवश्य ही बेहद आकर्षक रहा होगा।

पार्क का पूरा जायजा ले लेने के बाद एक साफ से दिखने वाले स्थान पर आकाश ने अपनी चादर बिछा दी। पानी की बोतलें व रेडियो निकाल कर बैग एक किनारे पर रख, पेड़ के तने पर पीठ टेक कर वह पांव पसार कर बैठ गया। उसने रेडियो ऑन कर एक मनपसन्द गीत लगा दिया और पहाड़ियों को निहारने लगा। आस-पास कोई नहीं था, दूर एक-दो कुत्ते नजर आ रहे थे जो आपस में खेलने में मस्त थे। जमीन के एक-एक इंच के लिए मारकाट देखने वाले और पार्कविहीन शहर के निवासी हो चुके आकाश को इतने सुन्दर स्थान पर इतने बड़े पार्क की ऐसी दुर्दशा देखकर बेहद दुःख हो रहा था। बात करने के लिए तो दूर, यहां तो कोई दिख तक नहीं रहा था। तभी पार्क के एक कोने से कुछ खड़-खड़ की आवाज हुई, कोई महिला पेड़ों के बीच से सूखी लकड़ियां चुन रही थी। घुटनों तक की धोती ऊपर कंधे को ढ़ककर वापस कमर में खोसी हुई, शरीर के ऊपरी भाग पर कोई वस्त्र नहीं। दूर से साफ दिख रहा था कि गांव की कोई आदिवासी महिला है। उसके साथ में लगभग चार-पांच वर्ष का बच्चा था, बच्चा टहलते-टहलते आकाश की ओर चला आया और उसे देख ठिठककर खड़ा हो गया। आकाश ने आवाज देकर उसे पास आने का इशारा किया तो डरकर वह मां के पास भाग गया, चौंककर उसकी माता ने आकाश को देखा और लकड़ियां छोड़ कर भाग खड़ी हुई।

दिन थोड़ा बढ़ने लगा था, बन्द पड़े खोखे खुलने लगे थे और झील के किनारे बनी सड़क पर भी हल्की-फुल्की आवाजाही शुरू हो गई थी लेकिन पार्क की ओर कोई नहीं आ रहा था। आकाश एकान्त तो चाहता था लेकिन इतना ज्यादा अकेलापन उसे अखरने लगा था कि तभी मैले-कुचैले कपड़े पहने सात-आठ वर्ष का एक बालक उसे दिखाई दिया, आकाश ने उसे पास आने का इशारा किया लेकिन वह वहीं खड़ा रहा। आकाश ने दस रुपये का एक नोट निकाल कर उसे दिखाते हुए पास बुलाया तो वह डरते-डरते उसकी ओर बढ़ने लगा और कुछ दूरी पर खड़ा हो गया। आकाश ने उससे आस-पास टॉफी-बिस्कुट की दुकान के बारे में पूछा तो उसने खोखों वाली दिशा में उंगली दिखा दी। टॉफी लाने के लिये आकाश ने नोट उसकी ओर बढ़ा दिया, नोट झपट कर बालक खोखे पर जाने की बजाय उसी दिशा में भाग गया, जिधर से आया था। आकाश को गर्दन हिलाते हुए हंसी आ गई।

थोड़ी ही देर हुई होगी कि आठ-नौ लड़कों का एक झुण्ड उस बालक को साथ में लेकर आकाश के पास आ गया।

‘‘आपने इसे रुपये दिये?’’ उनमें से एक ने कुछ गुस्से के साथ आकाश से पूछा।

''टॉफी लाने के लिए, लेकिन यह वापस भाग गया'' आकाश ने उत्तर दिया।

''क्या हम सबको भी 10-10 रुपये दोगे?'' अगला प्रश्न आया।

''नहीं'' आकाश बोला ''लेकिन हरेक को उतने दे सकता हूं जितने टॉफी इसे दिये''

''कितने?''

''दो रुपये'' हम कुल 12 लड़के हैं, हमें 24 दे दो।

आकाश ने अपना पर्स खोला, उसमें सबसे छोटा नोट सौ रुपये का था, ''लेकिन मेरे पास टूटे हुए पैसे नहीं हैं'' उसने कहा।

''आप सौ का नोट इसे दे दीजिये, जब तक यह बाकी के रुपये वापिस नहीं लाता, सब यहीं आपके पास बैठे रहेंगे'' लड़के ने दूसरे की ओर इशारा किया।

आकाश सहमत हो गया। एक लड़का उससे सौ का नोट लेकर चला गया। बाकी उसे घेर कर बैठ गये। उन्होंने सामान की ओर देखना शुरू किया - पुस्तकें, डायरी, दो-तीन पेन, छोटा रेडियो कुछ कैसेट, फल और पानी की बोतलें। उससे हल्के फुल्के प्रश्न भी शुरू हो गये, कहां के रहने वाले हैं, क्या करते हैं, पुस्तकें किस विषय की हैं, रेडियो में क्या सुनते हैं, कैसेटों में क्या है- आदि-आदि। आकाश मुस्कराकर जबाब देता रहा।

पैसा लेकर गया लड़का बहुत सारी टॉफियां लेकर वापिस आ गया, बचे हुए रुपये उसने आकाश को सौंप दिये और टॉफियां टोली के मुख्य लड़के को दे दी जो सवाल-जबाव कर रहा था। लड़के ने वे टॉफियां सबमें बांट दीं और दो आकाश को भी पकड़ा दीं। कुछ देर रुककर लड़के पार्क से हटकर कुछ नीचे बने छोटे मैदान की ओर चले गये। आकाश फिर से अकेला हो गया लेकिन चहल-पहल कुछ बढ़ गई थी। झील के किनारे काफी लोग, जिनमें महिलाएं और बच्चे भी थे, आ-जा रहे थे।

आधा-पौना घंटा हुआ होगा कि सारे लड़के फिर से आकाश के पास चले आये। आकाश ने कौतुहल ने उनकी और देखा, यह तो पहले ही अनुमान हो चुका था कि बच्चे आदिवासी परिवारों से न होकर झील की देखरेख करने वाले तथा बिजली व सिंचाई विभाग के वहां रहने वाले कर्मचारियों के परिवारों से भी थे। उनके बात करने पर यह भी ज्ञात हुआ कि पास ही में उनकी कालोनी है, वे दिन शुरू होने के बाद ही कालोनी से निकलते थे और शाम ढलने से पहले वापिस पहुंच जाते थे। यह जानकारी भी मिली कि कालोनी में जूनियर स्तर तक का एक स्कूल है जिसमें आदिवासियों के कुछ बच्चे भी पढ़ते हैं जो मुख्यतः इन विभागों अथवा सहयोगी संस्थाओं में छोटे-मोटे पदों पर काम करते हैं।

बच्चे आकाश के पास शायद कुछ आपसी सलाह मशविरे के बाद आये थे। टोली के मुख्य लड़के ने उसे बताया कि वे आपस में क्रिकेट मैच खेल रहें हैं लेकिन अम्पायर कोई नहीं बनना चाहता। उन्होंने आकाश से पूछा कि क्या वह अम्पायर बन सकता है। कुछ सोचकर वह सहमत हो गया।

लड़कों ने आकाश का सामान समेटकर बैग में रख दिया और उसे लेकर छोटे मैदान की ओर चल दिये। मैदान के किनारे लोहे के बेंच बने थे, लड़कों ने बैग से उसका सामान निकालकर करीने से उस पर सजा दिया।

''क्या हम आपको दादा कहकर पुकार सकते हैं?'' लड़कों में से एक ने आकाश से पूछा। उसे कोई आपत्ति नहीं थी, बल्कि वो ऐसे किसी प्रसंग की तलाश में ही था जिससे हल्का-फुल्का मनोरंजन हो सके। उसने हामी भर दी।

बच्चे टोली में खड़े थे, उनमें से कुछ तेज तर्रार एक लड़के ने उन्हें टीमों में बांटना शुरू किया- ''अपनी- अपनी टीमों में जाओ! तू उधर-तू इधर'' बाँड पकड़कर या इशारे से वह उन्हें उनकी टीम बता देता। लड़के उसके हिसाब से इधर-उधर होने लगे थे। आकाश को थोड़ा अटपटा लगा कि टीमें बराबरी की नहीं बन रही हैं, सामाजिक खेलों के उसके अनुभव ने यह आभास दे दिया। कोई रुचि या इच्छा न होते भी उसने बीच में हस्तक्षेप कर दिया।

''भई टीमें ठीक से बनाओ, ये तो बराबरी की नहीं लग रहीं'' वह बोल उठा। लड़के चौंके।

''लेकिन हम तो ऐसे ही खेलते हैं।'' लड़कों को टीमों में बाँटने वाले लड़के ने प्रतिवाद किया, ''रोज-रोज नये सिरे से टीमें बनाने से क्या फायदा?''

''यह तो मनमरजी हुई, जिसे चाहा जिधर भेज दिया, वैसे भी जब सारे आपस में साथी हो तो हमेशा एक ही टीम से या एक ही टीम के विरोध में खेलने में क्या मजा?'' आकाश फिर बोला। लड़कों को उसकी बात ठीक से समझ में नहीं आई लेकिन उन्होंने सुझाव सुन लेना ठीक समझा।

''तो कैसे बनायें टीमें?'' उन्होंने पूछा

''बराबर मुकाबले के दो-दो खिलाड़ी लेकर सिक्का उछालो, उससे तय करो कि कौन किधर होगा- हर रोज नयी टीम बनेगी- इसमें समय कितना लगता है। वैसे भी पहले या बाद में खेलने के लिए क्रिकेट में टॉस तो होता ही है। तुम दो अलग-अलग देशों या इलाके के थोड़े ही हो जो हमेशा एक ही टीम में रहो। या फिर!'' आकाश ने सुझाव दिया।

''या फिर?'' लड़के आगे सुनना चाहते थे।

''सबको कद के हिसाब से एक लाइन में खड़ा करो, एक-दो, एक-दो कर

गिनती बोलो और एक अंक वालों को लेकर पहली और दूसरे अंक वालों से दूसरी टीम बना सकते हैं।''

लड़कों को पहले वाला सुझाव पसन्द आया। उन्होंने आकाश से सिक्का उछालकर टीमें बनाने का अनुरोध किया। उसने टीमें बना दीं। जैसे-जैसे टीमों में सदस्य बढ़ते गये, लड़कों का शोर बढ़ता गया, जब भी कोई नया सदस्य टीम में आता वे उछल पड़ते और खूब चिल्लाते। टीमें बनाने का यह तरीका भी एक खेल जैसा ही था जो उन्हें अच्छा लग रहा था।

टीमें बन चुकी थीं, वे खेलने उतरने वाली थीं। आकाश ने एकाएक प्रस्ताव किया कि वह जीतने वाली टीम को पचास रुपये देगा।

''और हारने वाली को?'' लड़कों की ओर से सवाल आया।

''जीतने वाली टीम हारने वालों को जीत की दावत देगी'' आकाश ने फैसला सुनाया।

लड़के खेलने लगे। किसी नये आदमी के सामने वे अपना पूरा दम-खम दिखा रहे थे- हर एक शॉट पर शोर होता और चौके पर तो सारे ही उछल पड़ते। आकाश को भी अच्छा लग रहा था।

''हर चौके पर एक रुपया मिलेगा- शाबाश!'' वह चिल्लाया। लड़कों में जोश आ गया- चौका लगते ही लगाने वाला आकाश से आ चिपटता, बाकी सारे शोर खूब मचाते।

शोर ने घूमने आये पर्यटकों का भी ध्यान खींच लिया, उनमें से कई मैच देखने आ कर किनारे खड़े हो गये। खोखों से भी कुछ लोग आ गये और पास की कालोनी से बच्चों के साथ कुछ पुरुष भी आ गये।

लड़कों में जोश और उत्साह था- खेल जोरों से चल रहा था। पार्क के ऊपर की पहाड़ी पर बने गेस्ट हाउस की रेलिंग पर भी दो तीन लोग आ गये। वे शायद शोर सुनकर देखने आये थे।

किनारे खड़े लोगों में से एक का ध्यान उनकी ओर चला गया। एक हाथ की उंगली मुंह पर रख चुप होने को कह उसने ऊपर की ओर इशारा किया सबने उधर देखा और खेल रुक गया। एकाएक चुप्पी छा गयी। लड़के तेजी से मैदान से बाहर आ गये और सामान समेट आकाश को पार्क के एक कोने में ले गये जहां से ऊपर पहाड़ी की रेलिंग नहीं दिखती थी।

''क्या हुआ?'' आकाश को बेहद हैरानी हुई- लड़के थोड़े भयभीत जैसे लग रहे थे।

''वहां ऊपर आजकल डैम के सबसे बड़े अफसर का परिवार आया हुआ है,

उन्हें शोर बिल्कुल पसन्द नहीं है, वे शान्त वातावरण चाहते हैं। सबको हुक्म है कि किसी किस्म का शोर न हो'' चुप होने का इशारा करने वाले आदमी ने बताया। वह डैम विभाग का कोई कर्मचारी था। कहकर वह सीधे कालोनी की ओर भाग गया।

''ऊपर क्या है?'' आकाश ने जानना चाहा।

''गेस्ट हाउस हऐ, बहुत सुन्दर और बहुत बड़ा भी!'' एक लड़का बोला।

''वहां सिर्फ बड़े लोग ही जा सकते हैं, बड़े अफसर और बड़े नेता, वहां रात-दिन पुलिस की ड्यूटी रहती है।''

''ऐसा क्यों?'' आकाश को उत्सुकता हुई।

''कुछ साल पहले देश के एक बहुत बड़े नेता इसमें कैद करके रखे गये थे, तब से इसका बड़ा नाम है, तब टीवी और अखबार वालों के अलावा दूर-दूर से लोग उनको मिलने आते थे- उसके बाद यह आम लोगों को नहीं मिलता'' लड़के ने जानकारी दी।

''कौन नेता? कोई पूरी बात बता सकता है?'' आकाश ने पूछा।

लड़कों को बड़े नेता का पूरा नाम पता नहीं था, पूरी बात भी वे नहीं बता सकते थे, उन्होंने असमर्थता जता दी। मैच देखने आये लोग जा चुके थे- झील पर भी इक्का-दुक्का ही लोग थे और खोखों पर कोई रौनक नहीं थी। जानकारी लेने के लिए आकाश की उत्सुकता बढ़ रही थी लेकिन बताने वाला कोई नहीं था।

''क्या कोई बड़ा नहीं है जो यह बता सके कि वह बड़ा नेता कौन था- कैद क्यों था और यहां पर उसके साथ क्या-क्या होता था'' आकाश ने लड़कों से पूछा।

''किसी को कुछ पता नहीं, लेकिन लोग बताते हैं कि नेता किसी बड़ी पार्टी का था और सरकार उसके खिलाफ थी इसलिए उसे कैद कर लिया।'' एक लड़के ने बताया।

आकाश को अनुमान हो गया कि वह बड़ा नेता कौन हो सकता है और प्रसंग क्या है, राज्य की स्थिति याद आते ही इस अनुमान की जैसे पुष्टि हो गई।

लड़कों से बात हो ही रही थी कि ऊपर गेस्ट हाउस से उतर कर एक महिला नीचे कालोनी की ओर जाती दिखी। लड़कों और आकाश को देखकर वह ठिठक कर खड़ी हो गई।

''क्या यह कुछ बता सकेगी?'' आकाश ने लड़कों से पूछा।

''दादा इससे बात मत करना- बिल्कुल नहीं! यह बहुत गन्दी औरत है'' लड़के बोले।

''क्यों?'' आकाश चौंका।

''सब लोग इसके बारे में गन्दी-गन्दी बातें करते हैं। एक तो यह जंगल की बस्तियों में जाती है और जब कोई नेता या अफसर आता है तो यहां गेस्ट हाउस में भी आती जाती है। लोग कहते हैं कि यहां गन्दा काम होता है, अच्छी औरतें यहां नहीं आती'' लड़कों ने बताया।

आकाश ने महिला की ओर देखा, वह युवती थी साड़ी पहने, लेकिन ग्रामीणों व आदिवासियों की शैली से अलग। आकाश से वह काफी दूर थी लेकिन आभास दे रही थी कि जैसे पढ़ी लिखी हो, शायद कोई अध्यापिका। आकाश उससे मिलना चाहता था लेकिन लड़कों की बात की उपेक्षा करना ठीक नहीं था। आकाश को उसका चेहरा बहुत ठीक से तो नहीं, लेकिन इतना दिख गया कि उसे पहचान सके।

महिला शायद आकाश की कठिनाई भांप गयी, वह धीरे-धीरे कालोनी की ओर बढ़ गई। लड़कों से ही कुछ सूत्र हाथ लगे, इस आशय से आकाश ने बात जारी रखी, ''इतने बड़े नेता तुम लोगों के इतने पास रहे और तुम्हें कुछ पता तक नहीं! किसी ने भी कुछ नहीं बताया।'' उसने पूछा।

लड़कों ने एक दूसरे की ओर देखा- वह आश्वस्त होना चाहते थे कि आकाश की पूछताछ गलत इरादे से नहीं है। उनका संकोच टूटने लगा ''जानते तो सब हैं लेकिन सरकार के डर के मारे बात नहीं करते- उन नेता की बात जो कोई सुनता-मानता है, सरकार उसे परेशान करती है- नौकरी करने वालों को तो निकाल भी देती है'' आंखों में कुछ चमक सी लिए एक लड़का बोला।

''ओह तो असली वजह डर है! और तुम बच्चों को भी डराकर रखा हुआ है!'' आकाश ने लड़कों की आरे देखा, ''तुम में से डरपोक और कायर कहलाना कौन पसन्द करेगा?'' उसने पूछा।

लड़के हां तो कह नहीं सकते थे और अधिक जानकारी उन्हें थी ही नहीं, वे चुप रहे। आकाश को उनकी कठिनाई समझते देर नहीं लगी। उसने बात बदली ''अच्छा बताओ देश का भविष्य कौन हैं? बच्चे या बूढ़े?''

''बच्चे!'' सारे चिल्लाये।

''और देश का भविष्य कैसा होना चाहिए?'' आकाश ने पूछा।

''अच्छा!'' लड़के फिर से चिल्लाये।

''भविष्य अपने आप ही अच्छा हो जायेगा या इसके लिए कुछ करना भी

होगा?'' आकाश ने कुरेदा।

''कुछ करना होगा।'' लड़कों ने एक साथ कहा।

''लेकिन कौन? क्या? और कैसे करें? इस पर भी कुछ सोचना चाहिए या नहीं?''

''सोचना चाहिए!'' लड़के बोले।

आकाश ने सबको बैठने का इशारा किया ''चलो थोड़ी बात करके देखते हैं कि क्या हो सकता है'' उसने कहा। लड़के छोटा घेरा बनाकर बैठ गये।

''तो?'' आकाश ने लड़कों की ओर देखा।

''दादा आप बताइये! आपकी बातें हमें अच्छी लग रही हैं'' लड़कों ने आकाश से अनुरोध किया।

''अगर हम इस तरह से सोचें कि हम भी कुछ कर सकते हैं, हम कुछ करेंगे और हम कुछ कर दिखायेंगे, तो कुछ न कुछ तो होगा ही। होगा या नहीं?'' आकाश ने मुस्कराकर पूछा।

''होगा!'' सारे एक साथ बोल उठे।

''कुछ करने के लिए कहीं से तो शुरू भी करना होगा, तो सबसे पहले क्या करना चाहिए?'' बातों में रुचि ले रहे लड़कों को आकाश ने सोचने का मसाला दे दिया। लड़कों को कुछ सूझ नहीं पाया कि क्या कहें, लेकिन वे इतने प्रभावित व प्रेरित जैसे हो चुके थे कि मन में कुछ अच्छा करने का विचार जोर मारने लगा। उन्होंने आकाश से ही कुछ सुझाने का अनुरोध किया।

''कुछ ऐसे विषय पर सोचो कि जो हो रहा है और नहीं होना चाहिए या ऐसे पर कि जो होना चाहिए लेकिन नहीं हो रहा है। या तो हम किसी खराब बात को होने से रोकें या कुछ खास कर दिखायें, क्या करना चाहिए?'' आकाश ने सूत्र दिया।

लड़कों में आपस में राय मशविरा होने लगा – ऐसा बहुत कुछ था जो नहीं होना चाहिए– शराबखोरी, आपसी झगड़े, पढ़ाई–लिखाई की कमी आदि–आदि, लेकिन उन्हें रोक पाना बेहद कठिन दिखाई दे रहा था। इसके मुकाबले कुछ नया करने का विचार काफी आकर्षक था। लड़कों ने अपनी राय बता दी लेकिन यह नहीं बता सके कि वे कौन सा काम करना चाहते हैं।

कालोनी की महिलाएं बच्चों के समय से घर न पहुंच पाने के कारण चिन्तित हो पार्क में चली आईं। माजरा जानने के लिए उनमें आपस में खुसर–पुसर होने लगी। आकाश ने उन्हें भी लड़कों के पीछे एक और घेरे में बैठने का इशारा किया, उत्सुकता के चलते महिलाएं वहीं बैठ गईं।

''यह बताओ! पढ़ाने का काम किस-किसको पसन्द है?'' आकाश ने लड़कों से पूछा। कुछ लड़कों ने हाथ खड़े कर दिये।

''क्या ऐसा हो सकता है कि पढ़ाई में होशियार लड़के अपने साथी कमजोर लड़कों की सहायता कर दें ताकि वे भी पढ़ाई में अच्छे हो सकें?'' आकाश ने सवाल किया।

''हां'' कुछ लड़कों ने हाथ उठा दिये।

''तो इसे कौन शुरू करेगा?'' आकाश ने लड़कों की ओर देखा। लड़कों ने सबसे होशियार लड़के की ओर इशारा कर दिया, उसने भी हामी भर दी, अन्य सब ने भी उसका साथ देने का वायदा कर दिया।

''यह तो बहुत अच्छी बात है। इससे बच्चों में आपस में प्यार भी बढ़ेगा'' पीछे बैठी महिलाओं में से एक बोल उठी, अन्य महिलाओं ने भी सहमति में सिर हिला दिया।

''ये बच्चे अगर सप्ताह में एक बार गांव के आदिवासी बच्चों की सहायता भी कर दें तो उनसे नजदीकी बढ़ने में मदद मिलेगी।'' एक अन्य महिला ने सुझाव दिया। लड़कों ने एक दूसरे की ओर देखा- ''ठीक है'' उन्हें सुझाव जंच गया था। महिलाओं ने भी प्रस्ताव पर सहमति जता दी।

''और आप लोग?'' आकाश ने महिलाओं की ओर देखा ''आप लोग कुछ नहीं करना चाहेंगीं?''

''हम? हम क्या कर सकती हैं?'' जबाब में सवाल आ गया।

''स्वयं की सहायता।'' आकाश ने सुझाव दिया ''अभी आप लोग पैसों की अपनी छोटी-छोटी जरूरतों के लिए भी पुरुषों पर निर्भर हैं, कमाने का सारा बोझ भी पुरुषों पर ही है। अगर आप लोग अपनी छोटी-छोटी बचतें जमा कर आपस में छोटा बैंक जैसा बना लें, उस पैसे से अपने में से ही जरूरतमन्द को कर्ज के रूप में सहायता करें और पैसे को मामूली सूद के साथ वापिस लें। छोटे-मोटे काम जैसे सिलाई-कढ़ाई, अचार-पापड़, घरेलू उपयोग के सामान आदि शुरू करने के लिए भी इसमें से पैसा ले सकती हैं और काम चल निकलने पर उसे लौटा सकती हैं। सरकारें इसमें सहायता करती हैं, ऐसे समूहों को बैंक भी बिना किसी जमानत के कर्ज दे देते हैं।'' आकाश ने संक्षेप में बताया और ऐसे प्रयासों की सफलता के एक-दो उदाहरण भी सुना दिये।

महिलाएं अचम्भित हो यह सब सुन रही थीं, बच्चे भी एकचित्त थे। उनके घेरे से थोड़ी सी दूरी पर पहले वाली महिला चुपचाप खड़ी होकर ध्यान से सब कुछ डायरी में नोट कर रही थी- उसकी उपस्थिति को किसी ने महत्व नहीं

दिया, लेकिन पहले जैसी घृणा भी नहीं दिखाई।

''जो कुछ आप बता रहे हैं, इसमें तो काफी हिसाब-किताब रखना पड़ेगा?'' बहुत पढ़ाई-लिखाई की जरूरत होती होगी? महिलाओं में से एक ने शंका प्रकट की।

''बहुत अधिक नहीं, एक बार शुरू हो जाने के बाद अभ्यास से सब आ जाता है, ईमानदारी और मेहनत मिलकर सब कुछ सरल कर देते हैं। सामान्य सी पढ़ाई-लिखाई चाहिए। आप लोगों में से कोई भी इसे शुरू कर सकता है, समूह बड़े न होकर छोटे-छोटे 10-12 सदस्यों तक के हों तो तालमेल ज्यादा अच्छा रहता है'' आकाश ने बात स्पष्ट की।

''यह कुछ-कुछ कमेटी चलाने जैसा ही है बस रोजगार और बैंक जैसी बातें नई हैं, यह हम कर सकती हैं कल से ही शुरू कर देंगी। क्यों?'' एक पढ़ी लिखी सी युवा महिला उठ खड़ी हुई, उसने औरों की तरफ देखा।

''हां! बिल्कुल!'' सबने समर्थन में हाथ खड़े कर दिये।

''ये लड़के तो गांव की आदिवासी बस्ती में जाने को भी तैयार हैं, हमें भी उनके लिए कुछ करना चाहिए'' आदिवासियों से नजदीकी बढ़ाने की हिमायती महिला ने सुझाव दिया।

''हां हम भी सप्ताह में एक बार जाकर वहां रहन-सहन, साफ-सफाई और सेहत के मामलों उनकी मदद कर सकते हैं'' एक अन्य ने उसकी बात का समर्थन किया।

''और उनकी कमेटी भी बनवा सकते हैं'' दूसरी ने जोड़ा।

''कमेटी नहीं, स्वयं सहायता समूह!'' आकाश ने हंसते हुए संशोधन किया, ''आप सब ने तो बहुत कुछ तय कर लिया। वाह!'' उसने ताली बजाई- उसे देखकर लड़कों ने खड़े हो तालियां बजा दीं। महिलाओं ने भी इसमें साथ दिया और सब उठ खड़े हुए।

''एक समूह बनाकर इस पार्क की हालत भी सुधारी जा सकती है'' अब तक चुप रही एक प्रौढ़ महिला ने मजाक सा किया, ''कम से कम टहलने लायक तो बन ही जायेगा।'' उसकी बात पर सब हंस पड़ीं।

आकाश को लेने वैन का ड्राइवर आ चुका था, उसने सबको नमस्कार किया और बच्चों के गाल थपथपाये, बच्चे उससे लिपट पडे। महिलाओं ने हाथ जोड़कर उससे विदा ली, कोई कुछ नहीं बोला। आकाश धीरे-धीरे वैन की ओर बढ़ गया।

दूर खड़ी महिला कुछ निकट आ गई थी- उसने हाथ हिलाकर आकाश का

अभिवादन किया। उसने एक झलक उसकी ओर देखा, उसके चेहरे पर खुशी और कृतज्ञता के भाव थे। आकाश ने सिर हिलाकर प्रत्युत्तर सा दिया और आगे बढ़ गया।

आकाश के विषय में वहां किसी को भी ठीक से पता नहीं था, वह कौन था, कहां से और क्यों आया था। उसे भी कुछ बताने की आवश्यकता नहीं पड़ी और न ही किसी ने उसे इसके लिए कुरेदा।

अरे! यह तो वही महिला है!' आकाश चौंका, लड़के जिससे दूर रहने की चेतावनी दे रहे थे! यह यहां? उसे हैरानी हुई।

''ओह तो आप वो हैं!'' आकाश मुस्कराया, महिला थोड़ा लजा गई। उसने बड़े ही संयत स्वर में बताना शुरू किया ''आप के वहां से जाने के बाद तो लोगों पर आपकी बात का जैसा नशा ही छा गया। लड़कों ने पढ़ाई के विषयों के हिसाब से ग्रुप बनाये और नियमित रूप से पढ़ने के लिए बैठने लगे। सप्ताह में अवकाश के दिन उन्होंने आदिवासी बस्ती में जाकर वहां के बच्चों के साथ खेलना और उन्हें पढ़ाना-लिखाना शुरू कर दिया। महिलाओं ने दो-तीन स्वयं सहायता समूह बनाकर अपनी बचतों से छोटे-मोटे काम आरम्भ कर दिए और आदिवासी बस्तियों में जाकर वहां की महिलाओं को भी साथ ले लिया। कालोनी और आदिवासी बस्ती के बीच वहां बहुत अच्छा तालमेल बन गया है।''

''अच्छा!'' आकाश को सहसा विश्वास नहीं हुआ।

''यही नहीं, सामूहिक पढ़ाई के कारण वहां के बच्चे जिले भर में सबसे आगे हैं और स्वरोजगार के कारण महिलाएं तरक्की कर चुकी हैं। पूरे इलाके में इस बात की चर्चा हो रही है और अन्य स्थानों के लोग इनसे प्रेरणा ले रहे हैं। इसे चमत्कार मानकर वहां बड़े अधिकारियों और मंत्रियों के दौरे हो रहे हैं। इलाके के पुरुष भी अब सहयोग करने लगे हैं और सामाजिक बुराइयाँ काफी हद तक काबू में आ चुकी हैं।'' महिला ने बताया।

''यह किसी जादू से कम तो नहीं?'' साथ वाली युवती ने जोड़ा।

''और यह सब आपके कारण हुआ है! लोग आपको बहुत याद करते हैं लेकिन न तो आपके विषय में कुछ जानते हैं और न ही किसी के पास आपका कोई फोटो है। वे चाहते हैं कि आप वहां आकर अपने मंत्र का असर देखें'' उसने आकाश की आंखों में देखा। वहां विस्मय तैर रहा था।

''आपको याद आ गया न?'' महिला ने आकाश से पुष्टि चाही, वह चुप रहा।

''यह आपको पहचान तो रही है लेकिन इसे विश्वास नहीं हो पा रहा कि आप

वही हैं, इसलिए पूछ रही है।'' युवती ने सफाई दी ''यह वहां पहले से ही शिक्षा व स्वास्थ्य के लिए काम कर रही थी लेकिन इसे बहुत विरोध सहना पड़ता था। लोगों ने इसे क्या कुछ नहीं कहा, जाने क्या-क्या लांछन लगाकर अपमानित किया। यह तो हिम्मत हार चुकी थी लेकिन आपके आने के बाद जो कुछ वहां हुआ, उसमें लोगों ने इसका साथ लिया। उन्हें इसके ज्ञान और अनुभव का लाभ मिला और इसे अच्छा सम्मान। यह अब वहां बड़ी समाजसेविका के रूप में जानी जाती है और सरकार व सामाजिक सस्थाओं से पुरस्कार भी पा चुकी है। आपकी तो यह भक्त जैसी हो गई है।'' युवती ने महिला की ओर देखा और फिर से आकाश से पुष्टि चाही, ''यदि आप वहीं हैं तो!''

आकाश ठहाका मारकर हंस पड़ा, काफी देर तक हंसता रहा। शर्मा जी विस्मय से उसे देख रहे थे। युवती और महिला के कुछ भी समझ में नहीं आया।

''आपको गलतफहमी हो गई है!'' उसने सपाट से अंदाज में कहा, ''मैं वह नहीं हूं, हो सकता है कि किसी से मेरी शक्ल मिलती हो। लेकिन आपने जो कुछ कहा, वह जरूर अच्छा लगा। गांव को सच्चे मन से प्यार करने वाला कोई व्यक्ति ही ऐसा कर सकता है। काश! वह मैं ही होता!'' आकाश ने लम्बी सांस ली।

महिला को अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ। युवती भी परेशान हो उठी, उन्हें समझ नहीं आया कि इस पर क्या कहें। आकाश हाथ जोड़ कर उठ खड़ा हुआ और महिला व युवती से विदा ले होटल से बाहर निकल आया।

''क्या सचमुच वह आप नहीं थे?'' शर्मा जी ने बाहर आकर आकाश से जानना चाहा। वह मुस्करा दिया, ''चलते हैं'' उसने शर्मा जी की बात को अनसुना कर दिया।

समाज में योगदान का श्रेय लेना और महान कहलाना आकाश को अच्छा नहीं लगता था। किसी गांव के लिए कुछ कर पाने जैसी बात उसे व्यथित कर देती थी। उसके अपने गांव की अच्छी परम्पराओं के मुकाबले यह योगदान वैसे भी कुछ नहीं था लेकिन वैसा गांव उजड़ कर कब का वीरान और खण्डहर हो चुका है। वह चाह कर भी अपने गांव के लिए कुछ नहीं कर पाया। उसने स्वयं भी तो गांव छोड़ दिया है। गांव को सच्चे मन से प्यार करने वाला भला कभी ऐसा कर सकता है? नहीं! आकाश वह नहीं हो सकता। वैसे भी भला एक छोटी सी पिकनिक कोई जादू कैसे कर सकती है।

आकाश यादों में फिर से पिकनिक वाले पार्क के बच्चों के साथ खो गया।

अभिनय का पति

चोर उचक्के कहाँ नहीं होते। गांव-कस्बा हो या नगर-महानगर, ठगी-चोरी की घटनाएं हर कहीं होती हैं, कहीं कम तो कहीं ज्यादा। जहां गरीबी-अमीरी का अन्तर अधिक है या गरीबी-बेरोजगारी बहुत ज्यादा होती है, वहां अपराध भी एक प्रकार का व्यवसाय बन जाता है। इन अपराधियों में उठाईगीर या उचक्के काफी बड़ी संख्या में होते हैं जिनके शिकार खासतौर पर यात्रा करने वाले होते हैं, क्यों कि वे आसान लक्ष्य हैं (soft target) माने जाते हैं। अपराधी गिरोह बनाकर चलते हैं और यात्री प्रायः अकेले, यात्रा के दौरान झगड़े, झंझट और पुलिस रिपोर्ट के चक्कर से हर कोई बचना चाहता है। अपराधी इसी का फायदा उठाते हैं। ऐसे में एक ही उपाय बचता है कि यात्रा के दौरान अपने सामान की ठीक से चौकसी की जाती रहे।

शुभम् को काफी अरसे तक यायावर का जीवन बिताना पड़ा। कई वर्षों तक अधिकांश समय यात्रा करते बीता, नौकरी में घर से बहुत दूर ऐसी नियुक्ति मिल गयी थी कि जिसमें विभिन्न स्थानों पर जाना पड़ता था, उनमें भी आपस की दूरी काफी अधिक होती। यात्रा शुभम् के कार्य का आवश्यक अंग था, कभी बस से, कभी ट्रेन से, कभी अन्य साधन से और कभी-कभार हवाई यात्रा भी करनी होती। सामान के प्रति वह हमेशा सचेत रहता, कभी कोई छोटी सी चीज भी उसकी गायब नहीं हुई, उसे इस पर काफी फक्र था। लेकिन इस बार वह गच्चा खा गया, दूर के प्रदेश के एक जिले से, जो शुभम् के पड़ोसी प्रदेश की सीमा से लगा था, उसे सबसे नजदीकी बड़े शहर के तक आना था, दूरी लगभग 100 किमी. की रही होगी जहां से उसे लम्बी दूरी की ट्रेन पकड़नी थी। जिले के कार्यालय के लोगों ने उसे कार में बिठाकर विदा किया, उनके साथ सप्ताह भर का साथ रहा था, सरल स्वभाव के कारण उससे कुछ आत्मीयता हो जाने के कारण विदाई में थोड़ा भावुकता का पुट आ गया था।

कार्यालय प्रमुख ने शुभम् को बताया कि उसका सामान कार की डिग्गी में रखवा दिया गया है, वह निश्चित होकर कार में बैठ गया। कार ने कुछ दूरी ही तय की थी कि उसका टायर पंचर हो गया, सड़क पर पैदल लोगों की तो इक्का-दुक्का आवाजाही थी लेकिन वाहन काफी संख्या में आ-जा रहे थे। कार जहां खड़ी थी, उससे लगभग पचीस-तीस कदम पीछे एक तिराहा था, वाहन वहां रुक कर सवारियां उतार चढ़ा रहे थे। टायर बदलने में समय लग

रहा था, शुभम् कार से उतर कर एक ओर खड़ा हो गया। तभी तिराहे पर एक बस आकर रुकी, उसमें से लाल-पीले छींट की हरे रंग की धोती में लम्बा घूंघट निकाले एक महिला उतरी। गोद में लगभग साल भर का बच्चा, लेकिन मैला-कुचैला, बाल बिखरे हुए, कपड़े भी पुराने और मैले। ऐसा कुछ नहीं था कि शुभम् उसकी ओर ध्यान देता लेकिन बाकी सवारियाँ जब सीधी सड़क से तिराहे वाली सड़क की ओर आ रही थी तो महिला उसकी कार की दिशा में आ रही थी, जबकि इस ओर न तो कोई आबादी थी और न ही कोई अन्य रास्ता। वह कुछ चौंका अवश्य लेकिन इस बात से कोई लेना-देना न होने से उसे ज्यादा सोचने की जरूरत नहीं थी।

ड्राइवर ने टायर निकालने के लिए खोली कार की डिग्गी बदला हुआ टायर रखने के लिए खुली छोड़ दी थी। गठरी उठाये वह महिला सड़क के किनारे की ओर से कार के बगल में आ गई। लम्बे घूंघट के अन्दर से ही उसने सधी हुई अंग्रेजी में शुभम् से लिफ्ट देने की प्रार्थना की, ''आई एम इन ट्रबल'' उसने कहा, ''प्लीज हेल्प मी!'' (मैं परेशानी में हूं, कृपया मेरी सहायता करें)। वह बुरी तरह चौंक पड़ा, लेकिन उसके उत्तर की प्रतीक्षा किये बगैर महिला झट से दरवाजा खोल कर कार की पिछली सीट पर एकदम झुककर बैठ गई, दोहरी होकर, ताकि बाहर से दिख न सके। कार के शीशों पर वैसे भी गहरे रंग की शीट लगी थी, बाहर से कुछ नहीं दिखता था। शुभम् को समझ में नहीं आया कि क्या करे, कार में अन्दर जाकर बैठे या बाहर से ही उससे बात करे। पिछली सीट के शीशे बन्द थे लेकिन आगे के खुले हुए थे। ड्राइवर अपनी साइड वाला आगे का टायर बदल रहा था, बगल से तेजी से आते-जाते वाहनों से उसे कठिनाई हो रही थी। किसी वाहन के आते ही वह कार के आगे खिसक आता। दूसरी ओर की आगे की खिड़की से गरदन अन्दर डालकर शुभम् ने महिला से जानना चाहा कि वह किस प्रकार से ट्रबल में है और उसे किस प्रकार की सहायता चाहिए।

''सब कुछ बता दूंगी आपको'' उसने धीमे से कहा, ''लेकिन प्लीज बातचीत अंग्रेजी में ही कीजिये, मैं नहीं चाहती कि आपके ड्राइवर को कुछ भी पता चले, वह यहां का लोकल आदमी लगता है'' उसने घूंघट उठाकर शुभम् से अंग्रेजी मे कहा, ''आई एम फ्रॉम ए गुड फैमली एण्ड आलसो वेल एजुकेटेड'' (मैं बहुत अच्छे परिवार की हूं और अच्छी शिक्षित भी)।

शुभम् ने देखा वह एक सुन्दर युवती थी जिसने बताया कि वह काफी विपत्ति में है और वहां से किसी तरह सुरक्षित निकलना चाहती है। उसने

परेशान करने के लिए शुभम् से क्षमा मांगी और बताया कि उसके पास और कोई उपाय नहीं था। उसने अनुरोध किया कि हो सके तो कार में उसके साथ कोई बात न करें, कार से उतरने के बाद वह सब कुछ स्पष्ट कर देगी। उसने फिर से मुंह के आगे लम्बा घूंघट खींच लिया और ड्राइवर की सीट के पीछे गठरी होकर बैठ गई। शुभम् ने देखा कि पीछे तिराहे पर चार मोटर साइकिलों पर आठ दस लोग, परेशान से चक्कर कार रहे थे। टायर बदल चुका था, ड्राइवर टायर को डिग्गी में रख रहा था कि वे लोग ड्राइवर के पास आ गये। वे जोर-जोर से गन्दी गालियां दे रहे थे।

''यहां से बस कितनी देर पहले गयी है'' एक ने पूछा

''किस तरफ की बस को पूछ रहे हो,'' दूसरे ने उससे पूछा।

''अरे किसी भी तरफ गई हो, लेकिन अभी-अभी जो भी बस गई होगी, उसी में होगी'' पहला झुंझलाया।

''कई गाड़ियां गई हैं दोनों तरफ'' ड्राइवर ने बस के बारे अनभिज्ञता जताई।

''कोई औरत भी दिखी तुम्हें तिराहे पर'' उनमें से किसी ने ड्राइवर से फिर पूछा।

''मैंने ध्यान नहीं दिया'' ड्राइवर ने फिर से अनभिज्ञता जताई।

''ऐसा करो, तुम दोनों उस तरफ और हम लोग इस तरफ चलते हैं, जो भी बस या टैक्सी दिखे, रोककर पूछ लेंगे।'' किसी और ने कहा। उसके 'जल्दी करो' कहने साथ ही मोटर साइकिलें दोनों दिशाओं में दौड़ गईं।

ड्राईवर ने अपना दरवाजा खोला, युवती सिमट कर बिलकुल उसकी सीट के पीछे हो गई ताकि ड्राईवर को न दिख सके। रास्ते में शुभम् को मोटर साइकिलें फिर से दिख गयीं, उनकी मोटर साइकिलें एक बस के आगे खड़ी थीं। शुभम् समझ गया कि किसी को खोजने के लिए उन्होंने बस रोकी है, शायद इस युवती को, उसने अनुमान लगाया। शुभम् की कार तेजी से बगल से आगे निकल गयी, उसने राहत सी महसूस की। डेढ़-दो घंटे के बाद कार अपने गन्तव्य पर पहुंच गई। ड्राइवर उतर कर पीछे डिग्गी खोलने चला गया, युवती बच्चे सहित तेजी से उतरकर एक ओर खड़ी हो गयी, शुभम् भी दूसरी तरफ से उतर गया। युवती को उतरते हुए ड्राइवर ने देखा तो नहीं, लेकिन उसे कुछ शक हो गया, वह कुछ चौंका लेकिन उससे भी ज्यादा उसे खाली डिग्गी ने चौंका दिया। ''साहब सूटकेस अन्दर रख दिया था क्या आपने?'' कार के पीछे से ड्राइवर चिल्लाया। ''नहीं तो, डिग्गी में नहीं है क्या?'' शुभम् डिग्गी की तरफ बढ़ा। डिग्गी में सूटकेस नहीं था, शुभम् परेशान हो उठा, ''ठीक से तो रखा था

तुमने?'' उसने ड्राइवर से पूछा।

''हाँ'' ड्राइवर ने बताया कि उसने सूटकेस ठीक से डिग्गी में रखा था, तो कहां गया, ड्राइवर ने अनुमान लगाया कि रास्ते में जहां उसने टायर बदला, वहीं पर सूटकेस गायब हुआ होगा।

''साहब ये कौन है, कार में थी क्या?'' उसने शुभम् से पूछा, वह चुप रहा।

''साहब वहां पर कुछ लोग आये थे, इसी के साथ के होंगे, उन्होंने ही सूटकेस उड़ाया होगा'' ड्राइवर ने घूंघट काढ़े युवती की ओर देखकर शक जाहिर किया।''

''लेकिन उस समय तो तुम डिग्गी के ही पास थे, वे तो तुम्हीं से बातें कर रहे थे, तुमने देखा नहीं?'' शुभम् ने चुप्पी तोड़ी। युवती ने हाथ के इशारे से शुभम् को पास बुलाया, ''डिग्गी बहुत देर खुली रही कई लोग आ-जा रहे थे'' वह अंग्रेजी में फुसफुसाई, ''इसे जल्दी से भगाओ''

शुभम् समझ गया, सूटकेस तो गया, वह ड्राइवर पर काफी बिगड़ा भी कि डिग्गी खुली क्यों छोड़ी, लेकिन अब कुछ नहीं हो सकता था। उसने ड्राइवर को कार वापिस ले जाने को कहा। युवती ने अभी भी घूंघट नहीं हटाया था, उसके कहे अनुसार शुभम् ने कार के अन्दर बात नहीं की थी, लेकिन रास्ते भर शुभम् उसके बारे में सोचता रहा, उसकी उत्सुकता बढ़ गई थी। ''थोड़ी देर और परेशान करूंगी मैं आपको, अभी खतरे से बाहर नहीं हुई हूँ, ड्राइवर को कुछ शक हो गया है, यहां से भी तुरन्त निकलना होगा'' युवती ने घूंघट के अन्दर से कहा।

उस बड़े शहर से शुभम् को रात को अपने गन्तव्य के लिए ट्रेन पकड़नी थी, ट्रेन आठ-दस घंटे देरी से चल रही थी, तीन-चार घंटे का मार्जिन रखकर शुभम् स्वयं भी चला था, शाम हो चली थी, ट्रेन अब सुबह ही मिलने वाली थी। शुभम् के पास छोटे से हैण्डबैग के अलावा कुछ नहीं था, न बदलने को कपड़े, न ओढ़ने को कुछ, पूरी रात बितानी थी, शुभम् अपने लिए चिन्तित था, ऊपर से सहायता करने का काम और मिल गया, वह थोड़ा झुंझलाने लगा।

''अब और क्या करना होगा?'' उसने युवती से पूछा।

''तुरन्त किसी सुरक्षित जगह पर जाना होगा, बल्कि किसी अच्छे होटल में'' युवती ने अपनी प्राथमिकता बताई।

''ठीक है, किसी रिक्शे वाले को कहकर छुड़वा देता हूँ'' शुभम् ने प्रस्ताव किया।

''रिक्शा नहीं कार में जाना होगा, आपके साथ रहने से ही सेफ रहूंगी, प्लीज!

आप साथ चलिए। थोड़ा बड़ी कार चाहिए, सैलून टाइप की! पूरे एक दिन के लिए!'' युवती ने थोड़ा जोर दिया।

''काफी मंहगी पड़ेगी'' शुभम् ने संकोच दिखाया।

''उसकी प्राब्लम नहीं, पैसे है मेरे पास'' युवती ने भरोसा दिलाया।

युवती को स्टेशन के वेटिंग रूम में बिठाकर शुभम् कार लेने चला गया। थोड़ी देर बाद वापिस लौटकर वेटिंग रूम में आया तो पाया कि युवती वहां नहीं थी। तभी उसके कंधे पर किसी ने हाथ रखा, ''यहां हूं मैं'' सलवार कुर्ते में आ गई युवती ने उसे चौंकाया। हाथ की गठरी अब अच्छे से कैरी बैग में आ गई थी, गोद के बच्चे का चेहरा अब मैला कुचैला नहीं बल्कि चमक रहा था, कपड़े भी बदल गये थे। युवती का चेहरा स्कार्फ से ढ़का था, कुछ-कुछ मुस्लिम युवतियों जैसा।

''कार आ गई है, चलें?'' शुभम् ने युवती से पूछा।

''मुझे आपसे कुछ कहना है, प्लीज आप बुरा मत मानना, मुझे हर एहतियात बरतनी होगी ताकि मेरा पता न लग सके, इसमें आपका को-ऑपरेशन चाहिए'' युवती ने निवेदन किया।

''क्या घर से भाग कर आयी हो? क्या सहयोग चाहिए मुझसे?'' शुभम् उसके मामले में उलझना नहीं चाहता था, लेकिन साफ इन्कार भी नहीं कर पाया।

''प्लीज गलत मत समझिये मुझे!'' युवती ने कहा, ''काफी लम्बी कहानी है, मेरे परिवार में सब मारे जा चुके हैं, मेरी जान को भी खतरा है, मुझे सबसे पहले इतनी दूर निकल जाना होगा कि खोजा न जा सके, यहां से मेरा घर बहुत ज्यादा दूर नहीं है। वे बहुत दुष्ट लोग हैं, खोजने के लिए कोई कोर कसर उठा नहीं रखेंगे, सिर्फ आप ही मुझे बचा सकते हैं।''

''कैसे?'' शुभम् ने जानना चाहा।

''पहली बात तो यह है कि अकेली लड़की को वैसे ही कई खतरे होते हैं, इसे किसी से साथ होने से ही कम किया जा सकता है। दूसरे, वे लोग सब जगह मुझे अकेली मानकर खोजेंगे, आप के साथ होने से किसी को भी शक नहीं होगा'' उसने बताया।

''लेकिन मैं होटल में तो तुम्हारे साथ नहीं रह सकता, वहां तो अकेली ही रहोगी'' शुभम् ने उसे समझाना चाहा।

''क्यों नहीं रह सकते आप? मेरी मदद के लिए थोड़ी सी एक्टिंग नहीं कर सकते?'' उसने उलाहना सा दिया।

''कैसी एक्टिंग?'' शुभम् ने हैरानी से पूछा।

''बच्चा हमारे साथ है ही, आपको मेरा पति दिखना है, ताकि सब कुछ स्वाभाविक सा लगे, होटल के रजिस्टर में भी और रूम में भी, कहीं शक न हो पाये'' उसने शुभम् के कान में कहा।

''यह नहीं कर पाऊँगा मैं'' शुभम् ने सपाट सा जबाब दिया।

युवती रुंआसी हो गयी। उसका बदन जैसे काँपने लगा, आँखों में आंसू आ चुके थे। हथेली के पिछले हिस्से से आँसू पोंछ उसने दोनों हाथों से शुभम् हाथ पकड़ लिए ''बहुत तैयारी के बाद मैंने यह कदम उठाया है, पकड़ी गयी तो सब कुछ खत्म हो जायेगा, मैं भी और यह बच्चा भी। आपके बारे में जानकर, आपको माइन्ड में रखकर सब कुछ प्लान किया है, आपने साथ नहीं दिया तो फिर बचने की कोई उम्मीद नहीं'' वह बहुत कातर हो गयी।

शुभम् परेशान हो उठा, कैसे और क्या जानती है ये उसके बारे में? उसको लेकर ही उसने योजना क्यों बनाई? क्या और कैसी योजना? एक ओर संकट में पड़ी युवती थी जो सहायता मांग रही थी, दूसरी ओर अभिनय के नाम पर जालसाजी कर अपराधी बनने का भय था, जो उसके स्वभाव और पद से मेल नहीं खाता था लेकिन युवती को ढ़ांढ़स बंधना भी जरूरी था। शुभम् ने उसे भरोसा दिलाया, ''कुछ सोचता हूँ मैं, कोई न कोई रास्ता निकल आयेगा।'' उसने कहा।

युवती संयत हो गयी, ''एक रिक्वेस्ट और भी है, प्लीज आप मना मत करना, मैं कार में ही रहूँगी। आप एक अच्छा सा सूटकेस खरीद लीजिये और अपने लिए अन्दर के कपड़े, रात को सोने के, पहनने के लिए अच्छा पैंट शर्ट, स्वेटर, शेविंग किट वगैरह, मेरे लिए और बच्चे के लिए कुछ कपड़े, और एक अच्छे ब्राण्ड की व्हिस्की भी, कुछ और सामान की मैं लिस्ट बना देती हूँ। हमारे पास सूटकेस होना जरूरी है, बिलकुल जेनुइन, खोलने पर भी शक न हो। आप का हर काम वैसे भी परपफेक्ट होता है।'' वह शुभम् के सामने पहली बार हल्का सा मुस्कुराई, उसने हजार-हजार के दस नोट शुभम् के हाथ में थमा दिये।

''कार में हम किसी तरह की बात नहीं करेंगे, अगर बहुत जरूरी हुआ तो केवल अंग्रेजी में'' उसने कुछ अधिकार सा जताते हुए कहा।

''व्हिस्की'' शुभम् चौंका, ''किसके लिए? मैं तो नहीं पीता'' उसने कहा।

''आप केवल खरीद लीजिये, बाकी मैं बाद में बताऊंगी'' युवती फिर से मुस्कराई।

दोनों कार में बैठकर चल दिये। रास्ते में एक अच्छे से बाजार में कार

रोककर शुभम् ने जरूरी खरीददारी कर ली, व्हिस्की भी ले ली। वहां से चल कर कुछ दूरी पर एक बड़े होटल के सामने कार रुक गई, दोनों उतर गये। शुभम् रिसेप्शन की तरफ बढ़ रहा था कि युवती ने उसे रोक लिया।

''अगर आप को एतराज न हो तो एक ही कमरा ले लेते हैं, आपके बारे में मैं जानती हूँ, मुझे कोई डर या कठिनाई नहीं'' युवती ने प्रस्ताव किया।

''नहीं'' शुभम् ने साफ इन्कार कर दिया।

''मैं जानती थी, आप नहीं मानेंगे'' वह हार मानने जैसा भाव बनाते हुए बोली, ''ड्राइवर का लाइसेंस देखकर उसका नाम पता नोट कर लीजिए, एक कमरा आप अपने नाम से लीजिये, अकेले के लिए, दूसरा कमरा मैं ले लूंगी, ड्राइवर के नाम से, अपने लिए। आपको केवल यह करना होगा कि होटल का मेन गेट बन्द होने तक ड्राइवर को अपने कमरे में बैठाये रखना है। पहले चाय पीने के लिए और बाद में किसी और बहाने। आप तक तक मेरे कमरे में रहेंगे, अगर सब कुछ ठीक रहा तो सोने के समय ही अपने कमरे में जायेंगे'' उसने कहा।

होटल में उसी हिसाब से कमरे ले लिए गये और कार होटल के पार्किंग में खड़ी हो गई। चाय के बहाने से शुभम् ने ड्राइवर को कमरे में बुलवा लिया और अपने आप युवती के कमरे में चला गया।

''उस कमरे में चाय आने पर आप टी.वी. ऑन कर कोई अच्छी सी पिक्चर लगा देना, ताकि ड्राइवर उसमें तल्लीन हो जाय। जल्दी ही वापिस आने को कहकर, चाय के अपने कप के साथ फिर यहीं आ जाना, प्लीज!'' उसने कहा, ''उनके पास काफी लोग हैं, मुझे खोजने पर लगा दिये होंगे। पूरी एहतिहात रखनी होगी, पार्किंग में ड्राइवर से पूछताछ हो सकती है, कमरा खाली रहने से होटल वालों को शक हो सकता है, ड्राइवर को भी को शक न हो, इसलिए उसका भी ध्यान बँटाना होगा। बस आज रातभर की बात है, कल सुबह होते ही हम लोग निकल जायेंगे'' उसने विनती की।

''हम लोग?'' शुभम् चौंका, उसे तो सुबह ट्रेन पकड़नी थी, वह इसके साथ कैसे बंध सकता है, ''लेकिन'' उसने कहना चाहा, युवती ने उसे रोक दिया। तभी दरवाजे की बेल बजी, चाय लिये वेटर था, उसने दरवाजे पर ही चाय की ट्रे ले ली। ड्राइवर के कमरे में चाय पहुँचा व उसे टी.वी. पर व्यस्त करके शुभम् फिर से युवती के कमरे में आ गया।

युवती अब काफी संयत थी, घबराहट कम हो चुकी थी। वह सूटकेस खोलकर सामान चेक करने लगी, इसके अन्दर एक बैग में शुभम् का सामान था और व्हिस्की सहित शेष सामान अलग, जिसके साथ एक लिफाफे में खरीद के बिल

भी थे। लिफाफे में शुभम् को दिये गये रुपयों में से बची राशि और एक पर्चे में पूरा हिसाब भी था लेकिन उसमें शुभम् का सामान शामिल नहीं था। युवती ने कनखियों से शुभम् की तरफ देखा, ''मैं जानती थी आप ऐसा ही करेंगे, आप स्वाभिमानी हैं, किसी का एहसान कैसे लेंगे! खासकर किसी महिला का'' वह मुस्कराई, ''सचमुच अच्छा सामान लाये हैं आप, अच्छी पसन्द है आपकी'' सामान चेक करने के बाद वह शुभम् के सामने सोफे पर बैठ गई, उसकी चाय ठंडी हो चुकी थी।

''थोड़ी सी चाय और मंगा दीजिये प्लीज़ और साथ में कुछ खाने को भी, बहुत भूख लगी है'' उसने शुभम् से निवेदन किया, पकोड़े, पापड़ और सलाद और वेज-नानवेज, जो भी आपको पसन्द हो''

शुभम् ने बेल दी और दरवाजे से ही वेटर को सब कुछ लाने को कह दिया। युवती उठ कर सूटकेश में रखे सामान को बेड और सोफे पर बेतरतीब सा रखने लगी। शुभम् कुछ चौंका, उसे खुद पर आश्चर्य हो रहा था कि कैसे बिना कुछ बोले वह युवती की बात मानता जा रहा था।

''व्हिस्की से दो गिलासों में पैग बना लीजिये'' युवती ने शुभम् से कहा।

''लेकिन मैं तो पीता नहीं, दो पैग क्यों?'' परेशान से शुभम् ने अब जा कर कहीं जुबान खोली। युवती खिलखिला पड़ी, उन्मुक्त और बेफिक्र हंसी, शुभम् को अच्छा लगा।

''सचमुच बहुत अच्छे हैं आप! बहुत अच्छे हसबैंड!'' वह फिर खिलखिलाई ,''घबराइये नहीं, मैं भी नहीं पीने वाली, आपको व्हिस्की भरा एक गिलास अपने सामने सिर्फ रखना भर है। खाने का सामान आने पर उसमें से एक प्लेट में कुछ रख कर दूसरा गिलास ड्राइवर को दे देना है, फिर हम आराम से बातें कर सकेंगे'' वह एकाएक रुक गई, ''पहले आप इज़ी हो लीजिये, ये वाले कपड़े उतार कर रात के सोने के कपड़े पहन लीजिये'' उसने बात पूरी की।

''यहीं पर?'' शुभम् चौंका, युवती फिर खिलखिला पड़ी।

''संकोच हो रहा है?'' उसने पूछा ''वाइफ के सामने?'' शुभम् की तरफ देखकर वह मुस्कराई ''बाथरूम में भी जा सकते हैं आप, लेकिन अच्छा हो यहीं बदलें, यह टावल ले लीजिये'' उसने तौलिया उठा कर शुभम् की ओर बढ़ा दिया। शुभम् ने उसकी बात मानना ही ठीक समझा, उसने वहीं पर कपड़े बदल डाले। युवती के कहने पर उसने कपड़े कपबोर्ड में न रख कर सोफे की बैक पर डाल दिये। युवती भी कपड़े बदलने बाथरूम में चली गयी। तभी दरवाजे की बेल बज उठी, वेटर सामान लेकर आ गया था, शुभम् ने सामान मेज पर रखवा लिया। युवती के कहे अनुसार शुभम् ने व्हिस्की के दो पैग बना

लिए और एक छोटी सी प्लेट में खाने का कुछ सामान अलग रख लिया।

युवती बाथरूम से निकल आयी, लेकिन एकदम अलग रूप में, रंग साफ गोरे की जगह गहरा सांवला, सलवार कुर्ते की जगह करीने से बंधी हुई साड़ी, हाथों में चूड़ियां, माथे पर बिन्दिया और मांग में सिन्दूर और खुले रेशमी बाल। एक बार को तो शुभम् ठिठक ही गया, उसे लगा जैसे कोई और ही युवती निकल आयी हो। वह बेड के बगल में खड़ी होकर बच्चे के कपड़े बदलने लगी।

''व्हिस्की और यह सामान ड्राइवर को देकर और एक-आध मिनट उसके साथ बैठकर तुरन्त वापिस आ जाइये'' उसने शुभम् को मीठी आवाज में हुक्म सा सुना दिया। शुभम् सामान लेकर बगल के कमरे में आ गया। व्हिस्की और प्लेट उसने मेज पर रखी ही थी कि बाहर बरामदे में कुछ तेज सी हलचल होने लगी।

''कुछ देर बाद हमें होटल से कहीं बाहर जाना है, तब तक तुम थोड़ा आराम कर लो'' उसने ड्राइवर को कुछ समझाते हुए गिलास उसके हाथ में थमा दिया, ''ले लो, संकोच मत करो'' बात पूरी करते हुए ''अभी आता हूँ'' कह कर शुभम् कमरे से बाहर आ गया। बरामदे में चार पांच लोग हाथों में बन्दूकें लिए कमरों के दरवाजे खटखटा रहे थे। बेयरे सहम कर कर रेलिंग के सहारे खड़े थे, शुभम् तेजी से युवती के कमरे में चला गया। अन्दर जाकर वह चटखनी लगाने लगा लेकिन युवती ने उसे रोक दिया। बच्चा सो चुका था, युवती ने उसे बेड पर लिटाकर कम्बल ओढ़ा दिया।

''कुछ गड़बड़ लगता है'' घबराते हुए शुभम् ने युवती से कहा।

''जानती हूं, इसी का डर था, आप व्हिस्की का गिलास हाथ में पकड़कर आराम से पैर फैलाकर बैठ जाइये, कुछ नहीं होगा'' उसने धीरे से कहा, ''अगर कभी-कभार ले लेते हों तो, एकाध सिप ले लीजिए, नेचुरल दिखेगा'' युवती शुभम् के बगल में आकर दरवाजे की ओर पीठ करके सोफे के हत्थे पर बैठ गई। शुभम् का गिलास हाथों में लेकर उसने शुभम् के होठों से लगा दिया और उसके ऊपर थोड़ा सा झुक गई। उसने शुभम् को संभलने का मौका ही नहीं दिया, दो-तीन घूँट व्हिस्की शुभम् के हलक में उतर गई। शुभम् ने प्रतिरोध नहीं किया, ऐसे ही युवती ने पूरा गिलास खाली करवा कर दोबारा भर दिया।

''अब अपने हिसाब से!'' उसने शुभम् के बालों पर उँगलियां फेरते हुए जैसे बेफिक्री से कहा। तभी जोर-जोर से दरवाजा पीटने की आवाज हुई, भीतर से बन्द न होने से दरवाजा एकदम धड़ाम से खुल गया, दरवाजे पर बन्दूकें लिए तीन चार लोग थे, युवती ने सोफे के हत्थे से अन्दर की तरफ फिसल कर

शुभम् को थोड़ा सा हटाते हुए उसकी बगल में सिर छुपा लिया।

''कौन है ये?'' बन्दूक वालों में से एक ने कड़क कर पूछा।

''मेरी पत्नी'' शुभम् झटके से कह गया।

''चेहरा दिखाओ इसका'' उन लोगों ने शुभम् को धमकाया। शुभम् कुछ समझ पाता, उससे पहले ही युवती ने अपना घबराया सा चेहरा थोड़ा उनकी ओर कर दिया। कमरे की रोशनी युवती के पीछे की ओर थी और बरामदे से आ रही रोशनी भी काफी हल्की थी, चेहरा बहुत ठीक से नहीं तो देखा जा सकता था, लेकिन गहरा सांवला रंग, माथे की बिन्दिया, मांग का सिन्दूर, खनकती चूड़ियां, कन्धे से सरकती साड़ी और खुले बाल मार्मिक रोशनी में साफ दिखाई दे रहे थे। कमरे का वातावरण आभास दे रहा था कि उसमें स्वाभाविक पति-पत्नी ही ठहरे हुए हैं।

बन्दूक वाले कमरे से बाहर निकल गये। युवती ने सोफे पर बैठे शुभम् से लिपट कर उसके गाल चूम लिये, ''थैंक्स'' उसने कहा और तेजी से जाकर दरवाजे पर चटखनी लगा दी। शुभम् सकपका गया, युवती के हौसले से वह भयभीत हो गया।

''आपने सब कुछ संभाल लिया, जरा सा भी अचकचा जाते तो गड़बड़ हो जाती'' सोफे के पीछे से आकर शुभम् का सिर चूमते हुए वह बाथरूम में चली गई। शुभम् समझ नहीं पाया कि क्या करे, वहीं बैठा रहे या बाहर निकल जाये। उसे खुद पर आश्चर्य था कि कैसे एकाएक वह युवती को अपनी पत्नी बता गया। अन्दर ही अन्दर वह स्वयं पर मुस्कुराया भी, हाथ में रखा गिलास जाने कब फिर से खाली हो गया। बाथरूम से ही उसे युवती की आवाज सुनाई पड़ी, ''बगल के कमरे में देख लीजिए, प्लीज वहां कुछ जरूरत तो नहीं'' शुभम् नये गिलास में व्हिस्की लेकर बगल के कमरे में चला गया, ड्राइवर बहुत घबराया हुआ था।

''क्या हो गया था यहाँ?'' शुभम् ने उससे पूछा।

''कुछ लोगों ने अन्दर आकर कमरे की तलाशी भी ली, किसी लड़की को पूछ रहे थे'' ड्राइवर ने उत्तर दिया।

''होंगे कोई!'' शुभम् ने लापरवाही सी दिखाते हुए जबाब दिया, ''अब शायद हम बाहर न जायें, खाना खाकर तुम सोने के लिए गाड़ी में चले जाना'' उसे समझा कर शुभम् फिर से युवती के कमरे में चला आया। युवती बाथरूम से बाहर आकर तौलिये से अपने बाल झाड़ रही थी, वह अपने वास्तविक रूप में आ गयी थी, गोरा रंग, खूबसूरत चेहरा और गदराया सा बदन सफेद गाउन में और भी आकर्षक लग रहा था।

''उफ! कितना मुश्किल था मेकअप उतारना'' वह बोली, ''इतना टाइम तो करने में भी नहीं लगा था'' शुभम् की ओर देखते हुए उसने कहा, ''डिनर में कुछ अच्छा सा आर्डर कर दीजिये। तब तक रिलेक्स्ड मूड में एकाध ड्रिंक्स भी ले सकते हैं।''

शुभम् को हल्का सा नशा हो रहा था, यहां रुकना अब ठीक नहीं, यह सोचकर उसने बगल के कमरे में जाने और वहीं डिनर ले लेने की इच्छा व्यक्त की, उसने युवती को ड्राइवर द्वारा कही गई बात भी बताई।

''ओह! ये आपने क्या किया?'' उसने थोड़ा सा परेशान होकर कहा, ड्राइवर को गाड़ी में भेजने से उसके साथ औरों को भी शक हो जायेगा कि दूसरा कमरा खाली क्यों है, डिनर अलग लेने से यह शक बढ़ेगा ही'' उसने शुभम् को समझाया, ''खतरा अभी पूरी तौर खत्म नहीं हुआ, सिर्फ टला भर है, जब तक मैं यहां से सुरक्षित नहीं निकल जाती, तक तक कुछ भी हो सकता है। आपने इतना साथ दिया है, कल सुबह तक थोड़ा और निभा दीजिये'' उसने विनती की।

''क्या रात को भी यहीं रहना होगा?'' कुछ हैरानी से शुभम् ने पूछा।

''पहले आप ड्राइवर को उसी कमरे में रहने के लिए समझा कर आइये फिर आपको भी सब समझा दूंगी।'' उसने अधिकार सा जताते हुए शुभम् को बाहर ठेल दिया।

शुभम् ने ड्राइवर को विश्वास करा दिया कि जिनके लिए कमरा लिया गया था, वे अब नहीं आने वाले, ड्राइवर चाहे तो उसी में सो ले, सर्द रात में कहां गाड़ी में सोयेगा। प्रस्ताव आकर्षक था, अच्छा पीना, खाना और सोना, इससे अच्छा क्या हो सकता था, ड्राइवर सहमत हो गया। शुभम् फिर से युवती के कमरे में चला गया।

युवती ने तब तक गिलास फिर से भर दिया ''डिनर से पहले यह आपका लास्ट है'' एक पत्नी जैसे अधिकार के साथ-साथ बोलते हुए उसने गिलास शुभम् के हाथ में पकड़ा दिया। शुभम् की बांह पकड़ कर उसने उसे सोफे पर बैठा दिया और स्वयं उसके सामने बेड पर बैठ गई, बाल कन्धें पर झटक अपने दोनों हाथ बगल में, कुछ पीछे की ओर फैलाते कर शरीर का बोझ उन पर डालते हुए वह आराम की मुद्रा में। जाँघ पर जाँघ रखकर वह बेफिक्री से बेड पर लटकाये पैर हिलाने लगी, फिर एकाएक खिलाकर उठी।

''सचमुच में पति दिख रहे हैं आप! बहुत अच्छे हसबैंड, बिल्कुल नेचुरल, मुझे तो डर भी लगने लगा है'' वह फिर से खिलखिला दी। शुभम् सकपका गया लेकिन मुस्कुराये बगैर नहीं रह सका।

''एक ही कमरे में पूरी रात? इस तरह? कैसे रहेंगे?'' शुभम् हकला गया, नशा भी कुछ चढ़ रहा था, ''डर तो लगेगा ही, तुम्हें लगे न लगे लेकिन..'' वह वाक्य पूरा नहीं कर पाया। सामने युवती की मुद्रा उसे विचलित कर रही थी, शुभम् उस पर से नजरें हटाना चाहता था, लेकिन मन में काफी हलचल हाने लगी थी। कई दिनों से दूर रहने पर परिवार याद आने लगता है, ऐसे में 'हम तुम एक कमरे में बन्द हों' वाले हालात, खूबसूरत युवती की मोहिनी अदायें और नशे का असर, सब मिलाकर उसे बेचैन कर रहे थे। युवती शुभम् की परेशानी भांप गई, लेकिन उसे रोके तो रखना ही था, रिझाये बगैर उसके बिदकने का भय था। वह शुभम् के सामने लापरवाह सी दिखती हुई ऐसी भंगिमायें बनाती रही जिससे वह तरसने लगे। शुभम् के लिए अपने आवेगों को नियंत्रण में रख पाना कठिन हो रहा था, लेकिन संस्कार, शिक्षा, सामाजिक नैतिकता और संकोच भारी पड़ने लगे। उहापोह के बीच अपने को सम्भालते हुए वह उठ खड़ा हुआ, उसका शरीर जैसे कांप रहा था। युवती कुछ समझ नहीं पाई, पुरुषों के विषय में उसने जो कुछ देखा-समझा था, उसके आधर पर बनी धारणा से उसने कुछ और ही मतलब निकाला। उसे लगा जैसे शुभम् उससे सीधा समर्पण चाहता है, जबकि वह सब कुछ शुभम् को केवल बांधे रखने के लिए ही कर रही थी। युवती एकदम घबरा गई, सारा खेल बिगड़ जाने के भय से वह बेचैन हो उठी। मोहक अदायें भयभीत और कातर भाव में बदल गयीं, हड़बड़ाहट में युवती बड़ी तेजी से शुभम् के पैरों से लिपट गई।

''प्लीज मुझे माफ कर दीजिये, मैं मजबूर हूँ, एक हद से आगे नहीं बढ़ सकती, मैं शादीशुदा हूँ'' उसने कांपते स्वर से कहा। शुभम् थोड़ा सा संयत हो चुका था, लेकिन युवती के इस बदले रूप ने उसे चौंका दिया, उसे झल्लाहट सी होने लगी।

''गलत समझ रही हो तुम, ऐसा कुछ नहीं चाहता मैं'' उसने गुस्से से कहा। युवती ने जैसे उसे सुना ही नहीं।

''मैं अब यहां नहीं रुक सकता, यह ठीक नहीं होगा'' युवती को अपने से अलग कर शुभम् दरवाजे की ओर बढ़ने लगा। उठते हुए शुभम् का हाथ युवती ने कस कर पकड़ लिया, ''नहीं नहीं प्लीज़, ऐसा मत कीजिये, आज मैं आपको खो नहीं सकती, मेरी और इस बच्ची की जान बचाने के लिए आपका साथ जरूरी है। मैं आपकी हर बात मानने को तैयार हूँ, लेकिन यहां से मत जाइये प्लीज!'' वह अपना सिर शुभम् की बांह पर रख कर उससे कस कर लिपट गयी।

''छोड़ो'' शुभम् ने युवती को एक ओर झटक दिया, ''यह सब क्या है?''

उसने युवती को डांट कर अलग किया, ''बहुत हो चुका, अब और नहीं!''

''पहले आप यहां से बाहर न जाने का वादा कीजिये, तब तक आपको छोड़ूंगी नहीं'' वह फिर से शुभम् से लिपट गई।

''नहीं!'' शुभम् ने गुस्सा जताते हुए उसे फिर से अलग किया, ''पहले यह ड्रामा बन्द करो, बात सिर्फ इतनी भर थी कि तुम परेशानी में थी और उससे निकलने के लिए तुम्हें मेरी सहायता चाहिए थी। अपने को छुपाने के लिए थोड़ा बहुत सावधानी तो ठीक है लेकिन तुम तो नाटक पर नाटक किये जा रही हो। असली पति नहीं हूं मैं तुम्हारा! रात का साथ, शराब, उत्तेजक वातावरण, कभी कुंवारी, कभी शादीशुदा, क्या हो तुम?'' शुभम् झल्लाया।

''अजीब कहानी है मेरी'' युवती ने लम्बी सांस छोड़ी, ''शादीशुदा भी हूँ और नहीं भी, न फेरे पड़े, न किसी कोर्ट में हुई, अभी तो उसने हामी भी नहीं भरी, ठीक से जानती तक नहीं उसके बारे में, केवल चल रही हूं, बिना मंजिल जाने। बहुत थक गयी हूँ मैं! कोई किनारा चाहिए, आपसे मिलकर आस बंधी थी, लेकिन आप वैसे ही निकले जैसा सुना था'' युवती जैसे टूट कर धम्म से शुभम् के पैरों पर गिर पड़ी, वह बुरी तरह सुबक रही थी। शुभम् पिघल गया, उसे लगा उसे युवती का साथ देना ही चाहिये।

''अब सो जाओ, सुबह बात करेंगे'' सहारा देकर शुभम् ने उसे बिस्तर पर लिटा दिया, स्वयं सोफे पर सिर टेक कर बैठ गया।

युवती एकाएक जैसे गहरी नींद से जागी, ''आपको बच्चे का दूध बनाना आता है? दोपहर को चलने से पहले दूध दिया था, हल्की सी नींद की दवा मिला कर, ताकि रोये नहीं। बहुत देर से भूखी है, आप प्लीज कुछ कीजिए!'' उनींदी आँखों से उसने शुभम् से आग्रह किया।

''क्यों तुम्हें नहीं आता?'' शुभम् ने चौंककर पूछा, ''कैसी माँ हो तुम?''

''माँ नहीं हूं मैं इसकी'' युवती ने उत्तर दिया और फिर से सो गई, शायद उसने भी नींद की गोली ली है, सोचकर शुभम् ने उसे नहीं छेड़ा। उठकर बच्ची का दूध बनाकर उसे पिलाया और फिर से सोफे पर पसर गया।

शुभम् की आँखों में नींद नहीं थी, एक-एक कर विचार आ-जा रहे थे, कई सवाल उसके मन में कौंध रहे थे। कैसे अनायास वह इसमें उलझ गया और इसके नाटक में शामिल हो गया, उसकी उत्तेजक भंगिमायें, शादीशुदा और नहीं भी, बच्ची है लेकिन माँ नहीं, उसके खुद के बारे में यह क्या और कितना जानती है, किसी का भी उत्तर शुभम् के पास नहीं था। शुभम् इस बात पर भी हैरान था कि युवती को लेकर उसका मन कैसे कमजोर पड़ रहा था। आधी

रात के बाद जाकर कहीं शुभम् की आँख लगी। युवती गहरी नींद में थी, एकदम शान्त चेहरा जैसे कहीं कुछ नहीं हुआ हो।

युवती सुबह थोड़ा देरी से जागी लेकिन शुभम् से काफी पहले। उसने चाय का आर्डर देकर शुभम् की ओर देखा, वह अभी तक नींद में ही था, युवती ने उसका माथा चूम लिया, उसकी आँखों से आँसू टपक कर शुभम् के चेहरे पर गिरे, उसकी नींद खुल गई। युवती अभी तक उस पर झुकी हुई थी, उसने आँखे फाड़ कर युवती के चेहरे की ओर ताका। ''बहुत अच्छे हैं आप'' आंखों में आंखें डालते हुए उसने शुभम् के बालों में उंगलियां फेर कर फिर से उसका माथा चूम लिया। शुभम् कुछ नहीं बोला, वह खिन्न था, लेकिन समझ नहीं पा रहा था, कि कौन सी बात पर।

''नाराज हैं आप?'' युवती ने थोड़ा चहकते हुए उससे पूछा। शुभम् चुप रहा।

''बिल्कुल पति की तरह रूठ रहे हैं आप, क्या करना होगा मनाने के लिए?'' युवती मुस्कराई। शुभम् को अब युवती कुछ बोझ सी लगने लगी, वह बुरी तरह झुंझला गया, युवती की बातें उसे अब अच्छी नहीं लग रही थीं। ''मैं चलना चाहूंगा'' शुभम् ने तीखे स्वर में रूखेपन से कहा। ''लेकिन ट्रेन तो आपकी कब की जा चुकी?'' युवती ने चौंकाया। शुभम् ने घड़ी देखी, सचमुच देर हो चुकी थी। ''घबराइये नहीं, आप का टिकट मेरे पास है, हमारी ट्रेन लगभग चार घण्टे बाद है, तब तक नहा-धोकर नाश्ता कर लेते हैं, ड्राइवर को भी करा दीजिये'' युवती ने शुभम् को आश्वस्त करना चाहा।

शुभम् की नाराजगी दूर नहीं हुई थी ''नहीं अब नहीं रुकूंगा मैं'' उसने जिद की। युवती ने उसका हाथ पकड़ कर अपने दोनों हाथों के बीच ले लिया, ''आपकी नाराजी बेवहज नहीं, लेकिन कोई खास वजह भी तो नहीं, खुद ही काफी मजबूत इन्सान हैं आप, फिर किस बात की नाराजगी?'' उसने शुभम् को समझाने जैसे अन्दाज में कहा ''बस यूँ समझ लीजिये कि हम एक पारिवारिक फिल्म में अभिनय कर रहे थे, जिसमें एक लिमिट तक ही सीन परमिटेड हैं, यहां भी एक लिमिट ही थी। शूटिंग सबके सामने होती है लेकिन यहां केवल हम दोनों ही थे, सभी कुछ हम ही को तय करना था। मैं तो एक बार कमजोर पड़ भी गई थी लेकिन आपका अपने ऊपर पूरा फेथ और कन्ट्रोल है, इसी से मैं डरी नहीं'' वह बातों से काफी हद तक शुभम् की नाराजगी दूर करने में सफल हो गई लेकिन शुभम् को अपने सवालों का जबाब चाहिए था, वह सब कुछ जानना चाहता था, उसने युवती से पूरी बात बताने को कहा।

''आपके कन्धे पर सर रख लूं?'' युवती ने शुभम् से कहा, ''कुछ सकून के

साथ बता सकूंगी'' शुभम् के जबाब की प्रतीक्षा किये बिना ही उसने शुभम् के कन्धे पर सर रख दिया। वह अब काफी संयत हो चुका था, अकस्मात उसका हाथ भी युवती के बालों पर चलने लगा, युवती की आँखों सें आसूंओं की धारा बह चली।

''हाँ बताओ'' शुभम् ने उसे बोलने को प्रेरित किया। युवती ने आँसू पोंछ कर बताना शुरू किया, ''पिछले सात-आठ महीने तक सब कुछ ठीक-ठाक था, बगल के शहर में हमारा अच्छा बिजनेस था, काफी बड़ी प्रापर्टी थी। मम्मी की डेथ तो कई साल पहले हो गई थी लेकिन पापा के साथ हम भाई-बहन काफी खुश थे। भाई पापा का बिजनेस सम्भाल रहा था और मैं दिल्ली में एडवान्स मैनेजमेन्ट का कोर्स कर रही थी। पिछले दो सालों से मैं वहां एक गर्ल्स होस्टल में रह रही थी और साल में दो-तीन बार घर आती थी। भाई कुंवारा था और मैं भी कैरियर के कारण फिलहाल शादी नहीं करना चाहती थी। भाई हालांकि स्वभाव में तो अच्छा था लापरवाही के चलते गलत संगति में फँस गया। वह खाने-पीने और मौजमस्ती में यकीन रखता था, बस यहीं से'' युवती की आँखें डबडबा आईं।

''फिर क्या हुआ?'' शुभम् आगे जानना चाहता था।

''एक दिन पता चला कि भाई एक रोड एक्सीडेट में मारा गया, इस खबर से पापा टूट से गये। मैं उस समय दिल्ली में थी, खबर सुनकर घर आना चाहती थी लेकिन पापा ने मना कर दिया, उन्होंने बताया कि कुछ लोग उनकी प्रापर्टी के पीछे पड़े हैं और उनके साथ-साथ मेरी जान को भी खतरा है। पापा खुद भी वहां से निकलना चाहते थे लेकिन भाई के एक दोस्त ने उनकी तगड़ी घेराबन्दी कर दी। एक औरत के साथ एक छोटी बच्ची को भाई की बीबी और बेटी बताकर वह हमारे घर ले आया और प्रापर्टी उसके नाम करने के लिए पापा पर दबाव बनाने लगा। घर पर एक तरह से कब्जा कर वह वहीं रहने भी लगा, औरत के साथ मिलकर उसने पापा को कैद जैसा कर लिया, उनका घर से बाहर निकलना भी बन्द हो गया। उसने घर में जगह-जगह उस औरत के साथ भाई की फोटो व दोनों की शादी की फोटो लगा दी और भाई का दोस्त होने की आड़ में बिजनेस में भी दखल देने लगा। पापा मुझसे फोन पर बातें तो करते थे लेकिन उसकी निगरानी में ही, फोन पर उन्हें उसी की बनाई कहानी दोहरानी पड़ती। वह भी फोन पर मुझसे मीठी बातें करता था ताकि मुझे कोई शक न हो और मैं भी वहां आकर उसके जाल में फँस जाऊँ। एक दिन उसी ने...'' युवती फिर से रुंआसी हो गई।

''उसी ने क्या?'' शुभम् ने युवती की पीठ थपथपा कर सांत्वना दी।

''उसी ने मुझे फोन किया कि हार्टफेल होने से पापा की डेथ हो गई है, मैं तुरन्त वहां चली आई। मुझे विश्वास में लेने के लिए उसने घर की सारी चाभियां मुझे सौंप दीं, पापा की प्रापर्टी, बिजनेस और बैंक एकाउण्ट्स मेरे नाम करने के लिए सारे डाकुमेन्ट्स भी बनवा दिये। अपने को मेरा सबसे बड़ा वेलविशर दिखाने के लिए उसने भाई की बीबी बन कर आई औरत और बच्ची के जेनुइन होने पर भी शक जाहिर किया। वह मुझे उस औरत से मिलने और बातें भी नहीं करने देता था। वह मेरी हर बात का ख्याल रखता और हर समय मेरे इर्द-गिर्द ही रहता। सबसे नजदीक दिखने के कारण मुझे भी उसी का सहारा था। एक दिन बातों ही बातों में उसने इशारा कर दिया कि प्रापर्टी और बिजनेस देखने के लिए मैं अकेली काफी नहीं हूं और अगर मैं उसे अपना लूं तो सब कुछ ठीक हो जायेगा। मुझे इस पर हैरानी नहीं हुई क्योंकि मैं खुद भी ऐसा ही सोच रही थी लेकिन उसकी फेमिली बैकग्राउण्ड और एजूकेशन के बारे में मैं कुछ नहीं जानती थी। भाई ने भी कभी उससे मिलवाया नहीं था। थोड़ा जानकारी लेने के लिए मैंने घर की पुरानी नौकरानी से बात करना ठीक समझा, बस वहीं से सारी बातें साफ हुईं'' युवती एकाएक रुक गई।

''क्या हुआ था?'' शुभम् को थोड़ी हैरानी हुई।

''देर हो रही है, जल्दी से तैयार होकर पहुंचना होगा, ट्रेन यहीं से खुलती है, लेट नहीं होती, कहीं छूट न जाये, बाकी बातें ट्रेन में ही करेंगे'' युवती उठ खड़ी हुई।

''लेकिन!'' शुभम् कुछ कहना चाहता था।

''फर्स्ट क्लास का पूरा केबिन बुक करवा रखा है, केवल हम दो ही होंगे उसमें, सिर्फ हसबैंड'' उसने शुभम् की छाती पर उंगली लगाई, ''और वाइफ'' फिर अपने सीने पर। युवती बाथरूम में चली गई और शुभम् ड्राइवर को देखने।

नहा धोकर दोनों तैयार हो गये, नये कपड़ों में शुभम् का व्यक्तित्व निखर उठा, एक विवाहिता की तरह युवती भी आकर्षक कलेवर में थी लेकिन फिर से सांवले रंग में। वह शीशे के सामने खड़े शुभम् की बगल में आ गई।

''सचमुच ही कितनी अच्छी लग रही है हमारी जोड़ी'' उसने शुभम् को छेड़ा।

''सचमुच!'' शुभम् ने उसे बाहों में ले लिया, ''अभिनय में इतना तो चल सकता है ना?'' मुस्कराकर उसने युवती की आँखों में देखा।

''जिन्दगी भर! अगर आप तैयार हों तो!'' उसने कनखियों से इशारा किया। शुभम् ने लम्बी सांस लेकर छोड़ी, ''मुमकिन नहीं!, बस इतना ही बहुत है''

उसने कहा।

''अभी ट्रेन में भी साथ हैं'' वह चहकी, ''होटल, ड्राइवर सभी का हिसाब आपको देखना है,'' हजार-हजार के नोटों से भरा पर्स उसने शुभम् को थमा दिया।

होटल, ड्राइवर, कुली सबसे निपटकर युवती और बच्ची के साथ शुभम् ट्रेन में बैठ गया। निर्धारित समय पर ट्रेन चल पड़ी, जैसे ही ट्रेन प्लेटफार्म से बाहर निकली, युवती उछल पड़ी, ''थैंक्स! थैंक्स! थैंक्स!'' उसने तड़ातड़ शुभम् को चूम डाला ''आपके होने से मैं बच गई, ओह गॉड! कितना भयानक था सब कुछ'' सीट पर बैठ दोनों हाथों से अपना चेहरा ढ़ँक कर वह अपने घुटनों पर झुक गई ''मैं तो सब कुछ खत्म मान बैठी थी'' उसने गहरी सांस ली।

युवती काफी देर तक टकटकी लगाये खिड़की से बाहर देखती रही, आँखें डबडबाई हुई थीं, ओंठ जोरों से भींचे हुए थे, बहुत देर तक वह कुछ नहीं बोली, शुभम् भी चुप ही रहा। थोड़ी देर में ट्रेन ने गति पकड़ ली, शुभम् कुछ पूछता इससे पहले ही युवती बोल पड़ी, ''अब किसी एक्टिंग की जरूरत नहीं पड़ेगी, मैं आपकी सचमुच आभारी हूं, आप नहीं जानते, आपने हमारे ऊपर कितनी बड़ी कृपा की है'' उसने शुभम् से सम्मानजनक दूरी बना ली। शुभम् अभी भी अपने सवालों में उलझा उस पर नजरें टिकाये हुए था कि वह आगे कुछ बताये।

''मैंने आपको नौकरानी के बारे में बताया था न!'' युवती ने बात फिर शुरू की, ''उससे बात करने से पहले ही मैं इस बात से परेशान थी कि इतने सम्बन्धी और मित्र होने के बाद भी हमारे घर पर कोई आ-जा क्यों नहीं रहा, भाई का मित्र मुझे भी कहीं आने-जाने नहीं देता, हर बात में जान का खतरा बता कर रोक देता। एक दिन रात को वह मेरे कमरे में आ धमका। उसने मुझे समझाने की कोशिश की कि उससे शादी कर लेने पर ही मेरे ऊपर आया खतरा टल सकता है। उसके इरादे ठीक नहीं दिख रहे थे, मैंने किसी तरह उसे टाला। अगली सुबह रात खुलने से पहले ही मैं नौकरानी के कमरे में चली गई, उसे क्या कुछ पता है, यह पूछने पर वह बेतहाशा डर गयी। भरोसा दिलाने और पैसों का लालच देने के बाद उसने बताया कि भाई का मित्र दरअसल इलाके का एक बड़ा दबंग है, जिससे हर कोई डरता है। उसने बताया कि न तो भाई की मौत एक्सीडेंट में हुई, न पापा की हार्टअटैक से, दोनों की हत्या की गई है, इसी दबंग के द्वारा। साथ की औरत भी भाई की पत्नी न होकर दबंग की रखैल है और बच्ची भी उसी की है। नौकरानी ने बताया कि मुझसे शादी

कर वह सारी दौलत हथियाना चाहता है और उसके बाद मेरी भी हत्या कर देगा। कहानी बहुत भयानक थी लेकिन सारा खेल मेरी समझ में आ चुका था, चुपचाप वापस आकर बिस्तर पर लेट गयी। मैं समझ गयी कि दबंग से टकराने से सब कुछ खत्म हो जायेगा, इस सब से निकलने के लिए कोई अच्छी सी प्लानिंग करनी होगी।

दबंग सब कुछ अपना बना लेने की जल्दी में था, सीधी उंगली से घी निकलता न देख वह सीधे धमकी पर आ गया कि अगर उसकी बात न मानी गई तो वह मुझे मार डालेगा। मैंने मीठी–मीठी बातों से उसे भरोसा दिला दिया कि उससे शादी करने के सिवा मेरे पास और कोई चारा ही नहीं है, लेकिन पापा की मौत के एकदम बाद शादी करना ठीक नहीं, इसलिए डेढ़–दो महीने का टाइम मांग लिया। वह इस शर्त पर तैयार हो गया कि मैं इस बीच बाहर बिल्कुल नहीं जाऊंगी और न ही किसी से कोई बात करूंगी, अगर ऐसा किया तो मार दी जाऊंगी। मैंने सहमति दे दी, यही एक रास्ता बचा था।

''मैनेजमेन्ट के कोर्स में हमें काफी कुछ सिखाया जाता है, पर्सनल मैनेजमेन्ट से लेकर थ्रेट मैनेजमेन्ट तक, प्यार से नफरत तक, रोने से ठहाके मारने तक, छोटी–छोटी बातें भी, जिनका महत्व काफी बड़ा होता है। यह भी कि अच्छी प्लानिंग से सब कुछ सम्भव हो सकता है, अच्छा ताना बाना हो तो प्रोजेक्ट सफल हो जाता है। मैंने उन्हीं तकनीकों का सहारा लिया, लेकिन साधन सीमित थे, मेरे लिए एक ही बात अच्छी थी कि खाते मेरे नाम हो चुके थे और चेक बुक मेरे पास थी, पैसा भी बहुत कुछ करा देता है। नौकरानी तो मेरे साथ थी ही, दबंग की रखैल से मेलजोल बढ़ाने में भी खास कठिनाई नहीं आयी, बच्ची को खिलाने का मन होने को कारण बनाने से उसे मेरे घुलने मिलने में आपत्ति नहीं हुई। उसे जब पैसे का लालच दिया गया तो दबंग को कुछ न बताने के लिए भी उसने हामी भर दी।'' युवती ने बताया।

कहानी का सिरा तो शुभम् की समझ में आ गया था लेकिन उसकी उत्सुकता इस बात में थी कि उसे इसकी योजना में कब और कैसे शामिल किया गया। शुभम् ने आगे जानना चाहा, ''फिर क्या हुआ?'' उसने पूछा।

''नौकरानी के बाद दबंग की रखैल को विश्वास में लेने के बाद मैंने उसकी बच्ची की देखभाल शुरू कर दी ताकि वह मुझे अजनबी न समझे, अधिकतर समय वह मेरे पास ही रहने लगी। नौकरानी की बेटी अक्सर अपनी मां के पास आया करती थी, उसके पति का देहान्त हो चुका था और वह पति के स्थान पर नौकरी पा गई थी, आपके ही विभाग में।'' युवती ने शुभम् को बताया।

'कौन?'' शुभम् चौंका। युवती ने नौकरानी की बेटी का नाम बता दिया।

''अरे वह!'' शुभम् को विश्वास नहीं हुआ। वह एक चुतर्थश्रेणी कर्मचारी थी, बहुत कम पढ़ी लिखी। उसे शुभम् के वहाँ ठहरने के दौरान उसे चाय-पानी-नाश्ता, खाना खिलाने आदि के काम पर लगाया गया था, ऑफिस में उसकी गाड़ी से सामान लाना-छोड़ना आदि काम भी वही करती थी। किसी को बुलाना हो तो शुभम् उसे ही कहता, उसका काम शुभम् के आस-पास रहने का ही था।

युवती ने बताना जारी रखा, ''वो बड़े काम की निकली। उसने अपने विभाग के एक अधिकारी का नाम लिया और बताया कि उसे स्टाफ के लोग बहुत मानते हैं क्योंकि वह समस्याओं का चतुराईपूर्वक हल निकालने में माहिर है। मुझे तो ऐसे ही आदमी की तलाश थी ही। नौकरानी की बेटी ने फोन पर उससे मेरी बात करवा दी। इसके बाद मेरी उससे कई बार बात हुई, अक्सर फोन पर ही, एक बार मिले भी, लेकिन दूर से ही, मैंने उसे खिड़की से और उसने मुझे सड़क से देखा था। उससे बातें करने पर मुझे, यहां से निकलने की आशा बँध आई।''

''कैसे?'' शुभम् को कुछ समझ नहीं आया।

''अकेले मैं यहां से निकल नहीं सकती थी, यहां का स्थानीय कोई व्यक्ति न तो साथ देता और ऐसा करता भी उसका पता चल जाता, इसलिए साथ देने के लिए कोई बाहरी लेकिन बहुत अच्छा व भरोसेमन्द व्यक्ति होना जरूरी था।''

''मेरा नाम इस सब में कहां से आया?''

''आपके विभाग के अधिकारी ने मुझे आपके चरित्र और व्यक्तित्व के बारे में बताया कि साथ के लिए आप सबसे होंगे। मैंने नौकरानी की बेटी को आपके बारे में और जानकारी जुटाने को कहा, उसे भी पैसों का लालच देना पड़ा।''

युवती ने नौकरानी की बेटी का गुणगान जारी रखा, ''आपने उसकी ओर कभी खास गौर नहीं किया लेकिन औरों से तथा फोन आदि पर आपकी बातचीत सुनती रहने के कारण वह उसके बारे में काफी कुछ जान गयी थी। वह आपके बारे में अन्य लोगों की धारणा से भी परिचित थी कि आप कितने सरल, संयमी और अच्छे विचारों वाले हैं। आपके प्रति उसके मन में भी आदर का भाव था, औरों की तरह उसे आप कभी डांटते नहीं था, बल्कि भूल-चूक होने पर भी बस मुस्करा देते। आपकी दिनचर्या से वह अच्छी तरह परिचित थी और उसके आगे के कार्यक्रमों के बारे में भी उसे जानकारी रहती। उसी से मुझे जानकारी मिली कि कल (बीते हुए) ही आप वहां से निकलने वाले है, किस समय और किस साधन द्वारा।''

''इस जानकारी से क्या हुआ?''

''मैंने यह सारी बात आपके विभाग के अधिकारी को बता दी और उसने न केवल योजना बनाई बल्कि सारी व्यवस्थायें भी कर दीं। उसके बाद तो आप जानते ही हैं।'' युवती ने बात समाप्त की।

''वह अधिकारी है कौन?'' शुभम् को उत्सुकता हुई।

''आप उसे अच्छी तरह जानते हैं लेकिन उसने किसी से भी अपनी चर्चा न करने का वचन लिया है, इसलिए अभी इससे अधिक कुछ नहीं बता सकती।''

''लेकिन कुछ बातें अभी भी समझ से परे हैं'' शुभम् ने शंका प्रकट की, ''हमारे आफिस तो तुम आयीं नहीं, जैसा तुमने बताया आ भी नहीं सकती थी। जैसे और जहां पर तुम कार में बैठी, वहां तो वह टायर पंचर होने के कारण रुकी और साथ में यह बच्ची? कुछ भी साफ नहीं!'' वह कड़ियां जोड़ना चाहता था।

''बच्ची मुझसे काफी घुलमिल गई थी, इससे मुझे दबंग की रखैल के वेश में निकलने का मौका मिल गया। उस समय उसे कहीं बाहर भेजने की और बच्ची को खुद देखते रहने की बात मैंने पहले ही कर ली थी। मेरे द्वारा बाहर से पहनी हुई धोती भी उसी की थी, मुझ पर जमे विश्वास और पैसे के लालच के कारण उसने कोई सन्देह नहीं किया। हमारा शहर आपके ऑफिस से इस बड़े शहर के रास्ते पर है, सड़क से थोड़ा हटकर वहां से एक छोटी सड़क तिराहे पर मुख्य सड़क पर मिल जाती है, जहां आपकी कार रुकी थी'' युवती ने बताया।

''क्या कार का रुकना वहां पहले से तय था?'' शुभम् अब तक यही समझता था कि टायर पंचर होने से ही कार वहाँ रुकी।

''हाँ, यह भी प्लानिंग का ही पार्ट था, कार के ड्राइवर के नौकरानी की बेटी से व्यक्तिगत सम्बन्ध थे, दोनों एक ही आफिस में काम करते हैं और एक ही कस्बे से आते-जाते हैं। ड्राइवर लाचची किस्म का आदमी है, टायर बदलने के बहाने उसे सूटकेश गायब करने में मदद करने के लिए तैयार कराया गया। उसे भी इसके लिए पैसों का लालच दिया गया था, उसे सूटकेश से मतलब नहीं रखना था? केवल कार से उड़वाने में मदद करनी थी। सूटकेश उड़ाने के लिए भी आदमी तय था, इससे अधिक जानकारी ड्राइवर को नहीं थी। मुझे इसी तालमेल के साथ तिराहे पर पहुंचना था कि आपकी कार आने पर ही मैं वहां पहुँचू। अधिकारी ने इस बात की सावधानी रखी कि जिसकी जितनी भूमिका हो, योजना की जानकारी भी उसे बस उतनी ही हो, इसीलिए रखैल, नौकरानी, उसकी बेटी और ड्राइवर, पूरी बात किसी को भी मालूम नहीं थी, उस

अधिकारी व मुझे छोड़ कर।''

''मुझे तो बिल्कुल भी नहीं, लेकिन सबसे बड़ी भूमिका तो मेरी ही रही'' शुभम् ने ठहाका लगाया, फिर एकाएक गम्भीर हो गया ''अगर सूटकेस उड़ाने वाला तय था तो कहां है मेरा सूटकेस?'' उसने पूछा

''आपके सूटकेस में ही मेरा भविष्य छिपा है'' युवती ने शुभम् को चौंकाया।

''कैसे?'' शुभम् हैरान था ''फिर अपने शादीशुदा होने या न होने के विषय में भी तो तुमने कुछ नहीं बताया।''

''आपकी अटैची मिल गयी तो शादीशुदा! नहीं तो कुंवारी! इसी से फैसला होगा।'' युवती निश्चित भाव से बोली, ''अपने को बचाने के लिए एक दांव लगाया है मैंने, चल गया तो जीत पक्की, न भी चला तो हारी नहीं, देखें भाग्य क्या करता है!''

''मैं कुछ समझा नहीं!'' शुभम् की उत्सुकता बढ़ गयी।

''बिजनेस के सिलसिले में दिल्ली के एक युवक से मेरे भाई की दोस्ती हो गयी थी भाई ने उसे कुछ रुपया भी उधार दिया था। वह उसे लौटाने हमारे यहाँ आया था लेकिन यहाँ के हालात जानकर वापिस लौट रहा था कि नौकरानी की बेटी को उसके बारे में पता चला। उसने मुझे बताया तो मैंने नौकरानी की बेटी को उससे पैसे लेकर किसी तरह आपके सूटकेस में रखने उसे कल (बीते) तक रुकने का सन्देश भिजवाया ताकि कस्बे से तिराहे तक आने वाली बस में उससे मिल सकूं। नौकरानी की बेटी से कहकर मैंने उसे आपका सूटकेस गायब करने के लिए भी तैयार करा लिया, बिना यह बताये कि उसके दिये रुपये भी उसी सूटकेश में हैं। उसे यह भी समझा दिया गया कि पकड़े जाने पर ड्राइवर बीच-बचाव कर उसे छुड़ा देगा। आपका सूटकेस आप तक तो किसी तरह पहुंच ही जाता लेकिन मेरे आपके साथ होने की खबर लीक हो जाने पर सूटकेस के कारण आपके पहचाने जाने पर हमारे पकड़े जाने का भय था, इसीलिए आपका सूटकेस गायब करवाना जरूरी था।'' युवती ने सूटकेस गायब होने का रहस्य सुलझा दिया।

''लेकिन बात कुछ पूरी नहीं हुई! इस किस्से से तुम्हारे शादीशुदा होने या न होने की बात तो कहीं से भी समझ में नहीं आई, फिर यह बच्ची? इसका क्या होगा?'' शुभम् को सूत्र अभी भी बिखरे नजर आ रहे थे।

''कल बस में भेंट होने पर युवक ने मुझे एक पर्ची थमाई'' युवती ने एक पर्ची शुभम् की ओर बढ़ा दी, पर्ची में लिखा था ''आपके भाई साहब ने आपके साथ मेरा रिश्ता प्रपोज किया था, बल्कि आपको देखने भी बुलाया था जिसके लिए

मैं इस समय यहाँ आया था। मुझे पता लगा कि आप भारी मुसीबत में हैं और इससे निकलने का उपाय कर रही हैं, मैं आपके साथ हूं।''

''मैंने हल्का सा घूंघट उठाकर उसे अपना चेहरा दिखा दिया, लेकिन उसका चेहरा नहीं देख पाई, उसने एक और पर्ची मुझे थमा दी, यह!'' युवती ने एक और पर्ची शुभम् को थमा दी। उसमें लिखा था ''आगे भी सहायता करता रहूंगा और अगर आप चाहें तो जीवन भर के लिए भी'' उसके नीचे युवक ने अपना नाम पता व टेलीफोन नम्बर लिखा था। युवती ने बताया कि उसने वह पर्ची अपने ओंठों से चूम और दोनों आँखों से लगा कुछ बूंद आँसू युवक की हथेली पर गिरा दिये थे। बस में इससे अधिक कुछ नहीं हो सकता था, बस रुकने पर दोनों अपरिचित से उतर गये।''

''लेकिन सूटकेस का क्या हुआ? युवक अब कहां है?'' शुभम् आश्वस्त हो गया था कि उससे वास्तव में किसी का भला हो गया है, लेकिन बच्ची को लेकर उसकी शंका बरकारार थी ''इसका क्या होगा? तुमने तो इसका अपहरण जैसा किया है'' उसने पूछा।

''बच्ची मेरा ट्रम्प कार्ड है, हमारे घर का कब्जा इसी के माध्यम से छूटेगा और दबंग भी इसी के माध्यम से काबू आयेगा। वह पुलिस के पास तो जा ही नहीं सकता, उसकी सारी ताकत तो गुण्डागर्दी में है लेकिन मेरे घर से निकलने के साथ ही उसकी सारी योजना बेकार हो गई है, बाकी का काम हमारे वकील और पुलिस कर देंगे।'' युवती अब बेफिक्र थी।

''अरे हां'' उसने बोलना जारी रखा, ''आपकी ट्रेन के बारे में तो जानती ही थी, लेकिन यह भी कि पीछे से चलने वाली ट्रेनें जाड़ों में कोहरे के कारण बारह-चौदह घंटे लेट ही चलती है, ऐसे में रिजर्वेशन बेमानी सा हो जाता है। इसीलिए यह कूपा पहले ही रिजर्व करवा दिया गया था, आपके लिए भी!'' उसने बताया।

ट्रेन को चले छः सात घंटे हो चले थे, एक घण्टे बाद गन्तव्य आने वाला था।

''हम कभी जीवन में मिलें या न मिलें लेकिन आप जीवन भर याद रहेंगे'' उसने शुभम् की ओर देखा।

''पति की भूमिका निभाने के लिए?'' शुभम् ने मुस्कुराकर पूछा।

''नहीं, पति का अभिनय करने के लिए!'' युवती कनखियों से शुभम् की ओर देखकर जोर से हंस पड़ी, फिर एकाएक गम्भीर हो गयी ''जाने क्या होगा, ट्रेन पहुंचने वाली होगी, पता नहीं, वहां कुछ गड़बड़ न हुआ हो''

''क्या अब भी गड़बड़ की गुजाइश है?'' शुभम् ने परेशान हो कर पूछा।

''हां, अगर वह न आया तो'' युवती ने आशंका जाहिर की।

''कौन?'' शुभम् जानबूझकर पूछा।

''आपके सूटकेस वाला, जो मुझे बस में मिला था, वेटिंग रूम से मैंने उसके बताये फोन पर सम्पर्क किया था, लेकिन वह नहीं मिला, मैंने संदेश छोड़ दिया था'' युवती हल्की सी रुआंसी हुई ''हमसे पहले तो वह वैसे भी यहाँ पहुँच ही नहीं सकता।''

गन्तव्य पर पहुंच कर ट्रेन रुक गई। लोग ट्रेन से उतर कर प्लेटफार्म आ-जा रहे थे, शुभम् का युवती से बिछुड़ने का समय आ गया था, उसे कुछ अजीब सा लगने लगा, युवती भी बेचैन हो गयी।

''कुछ भूल-चूक हो गई हो तो मुझे माफ कर दीजिएगा प्लीज़! जो कुछ भी मैंने किया वह मेरी मजबूरी थी'' वह शुभम् के पावों पर झुक गई। शुभम् को उससे अब कोई शिकायत नहीं थी, उसने युवती को उठा कर छाती से लगा लिया।

''यह अभिनय का भाग नहीं, लेकिन बिना गले मिले बिछुड़ना हमेशा खलेगा'' शुभम् ने युवती से कहा। उसने देखा कि युवती की नजरें बेचैनी से प्लेटफार्म पर लगी हैं, उसने शुभम् की बात को जैसे अनसुना कर दिया। शुभम् ने जिस गर्मी से उसे गले से लगाया था, युवती उसके मुकाबले आवेगहीन और ठंडी थी। वह भी खिड़की से बाहर देखने लगा। तभी उसे अपना सूटकेस लिए एक आदमी दिखाई दिया जो आते-जाते लोगों को देख रहा था। शुभम् उतर कर उसके पास पहुंच गया।

''मिस्टर'' उसने उस आदमी से कहा, ''वहां कोई आपका इन्तजार कर रहा है।''

''कौन?'' आदमी ने पूछा।

शुभम् कुछ बताना चाहता था तभी एक महिला उसके पास आ गई, लगभग वैसे ही कपड़ों में जिनमें युवती शुभम् को मिली थी।

''पता लगा कुछ हमारी गुड़िया का?'' उसने रोते हुए आदमी से पूछा।

''तुम्हारी अटैची है ये?'' आदमी ने शुभम् से पूछा '' वह साली हराम... कहां है?''

शुभम् ने ट्रेन के अन्दर देखा, युवती और बच्ची गायब थे।

''अभी तो यहीं थे'' शुभम् खुद भी हैरान था। महिला जोर जोर से रोने लगी, ''हाय मेरी बच्ची! कहां ले गयी होगी उसे! क्या किया होगा!''

शुभम् समझ गया कि हो न हो यह वही दबंग और उसकी रखैल है। उसने आदमी से पूछना ठीक समझा, ''लेकिन यह सूटकेस तो किसी और को लाना था?''

''मार के आगे बक गया साला सब!, भाई का नाम ले लड़की को फंसा कर दौलत हड़पना चाहता था!, नौकरानी की लड़की को पटा कर स्कीम बनायी थी!, वह भी मार के आगे सब कुछ उगल गयी साली!'' उसने एक ओर को थूका, ''बच कर कहां जायेगी ये साली हराम..'' वह गुस्से में बोला, ''तूने भगाया है न उसे वहां से? काट दूंगा तुझे भी!''

शुभम् शान्त भाव से खड़ा रहा, तभी एक ओर से एक दरोगा ने तीन चार सिपाहियों के साथ आकर उस आदमी और औरत को घेर लिया। दूसरी ओर से बच्ची को लेकर युवती भी आ गयी।

''मेरी बच्ची!'' युवती की गोद में बच्ची को देख कर महिला चिल्लाई।

''चुप्प!'' दरोगा डपटा ''चुपचाप वेटिंग रूम में चलो''

दरोगा के साथ सभी वेटिंग रूम में पहुंच गये। सूटकेस के कारण शुभम् को भी साथ जाना पड़ा। वेटिंग रूम में सामने के सोफे पर दो वकीलों के साथ एक आकर्षक युवक बैठा था। शुभम् को देख कर वह उठ खड़ा हुआ।

''प्रणाम सर!'' उसने शुभम् को नमस्कार किया, ''आपको बहुत तकलीफ हुई, दस पांच मिनट और सही!''

उसे देख शुभम् को बेहद हैरानी हुई लेकिन वह चुप ही रहा। वकीलों ने दबंग और उसकी औरत से पहले से टाइप किये हुए कई कागजों पर हस्ताक्षर कराये, सूटकेस युवती को दे दिया गया और युवती ने बच्ची महिला को सौंप दी, कोई ना-नुकुर नहीं हुई। युवक से हाथ मिला कर पुलिस दबंग, महिला और बच्चे को लेकर चल दी और उनके बाद वकील भी चले गये। युवती ने शुभम् से उसका छोटा बैग ले लिया और उसे खाली कर फिर सूटकेस खोल कर उसमें से रुपये निकाल कर बैग में रख लिये। शुभम् का सूटकेस बन्द कर युवती ने उसे शुभम् की ओर बढ़ा दिया। शुभम् यह सब चुपचाप देखता रहा।

''तुम? यहां? क्या तुम भी इस सब में शामिल हो?'' सब के जाने के बाद शुभम् ने युवक से पूछ कर चुप्पी तोड़ी। युवक विभाग का एक होनहार अधिकारी था, वह शुभम् को काफी अच्छा मानता था और हमेशा उसके साथ ही रहता था, शुभम् भी उससे प्रभावित था। दोनो के सम्बन्ध आत्मीय और

कुछ हद तक मित्रवत् भी हो गये थे। ''सर! नौकरानी की बेटी से इनके परिवार की पूरी परिस्थिति जानकर मैंने ही इनसे मदद की पेशकश की थी।

''बस इतना ही?'' शुभम् ने पूछा।

''हमारी हल्की सी जान पहचान इनकी नौकरानी की बेटी के माध्यम से हुई थी, फोन पर बातचीत और दूर से एक छोटी सी भेंट, इससे हम एक दूसरे के कुछ नजदीक आ गये।'' युवक ने बताया, ''सर! इनकी सुरक्षा केवल आप जैसे अच्छे और जिम्मेदार इन्सान के हाथों ही सम्भव थी। इसीलिए आपको केन्द्र में रख कर पूरी योजना बनाई गई, लेकिन कुछ इस तरह कि न तो आपको कोई हानि हो और न ही आपके कार्यक्रम में किसी प्रकार का फेरबदल। आप सही समय पर अपने गन्तव्य पर पहुंच गये हैं।''

''इस मात्र इतनी ही योजना थी?''

''सर इन्हें पुरुषों पर भरोसा नहीं है, इनका मानना है कि सारे एक जैसे होते हैं। इन्होंने तो शर्त भी लगा दी थी कि इनकी बात ही सही साबित होगी।'' उसने बताया, ''इसलिए कुछ खास परिस्थितियों को भी योजना में जोड़ दिया।''

शुभम् ने गहरी सांस लेकर युवती की ओर देखा। वह शरमा गई, कार में आने से लेकर अब तक उसने ऐसा नहीं किया था।

''तो क्या निचोड़ निकला?''

''सर! इन्हें शर्त जीतने में सब कुछ खो देना था और मुझे शर्त जीतने में ही सब कुछ पाना था।'' युवक बोला। ''ऐसी शर्त क्यों लगाते हो जिसमें सब कुछ खो देने का डर हो? मैं ही हार जाता तो?''

''आपको लेकर मुझे तो हार का कोई डर नहीं था'' निश्चिन्त भाव से युवक ने कहा।

''और मेरी तो दोनों तरह से जीत थी, हारने पर इनकी, और जीत जाती तो आपकी।'' युवती ने धीमे से मुस्कुराई, ''लेकिन फिलहाल सभी जीत गये ''ये अपनी शर्त, मैं अपनी लड़ाई और आप हम दोनों का विश्वास!'' उसने शिवम् की ओर देखा।

''अब चलना चाहिये'' कह कर शुभम् ने युवक से हाथ मिलाया।

युवती चुपचाप खड़ी रही, उसे सूझ नहीं पाया कि हाथ हिलाये, लिपट जाये या शुभम् के पैर छूये, अलबत्ता होठों का कम्पन और आँखों में आ गये आँसू उससे रुक नहीं पाये।

माजी की सोच

दसवीं का रिजल्ट आये सप्ताह भर से अधिक हो गया था, निखिल अच्छे अंकों में पास हुआ था इसलिए मित्रों-परिचितों से बधाई मिल रही थी। पढ़ाई का चलन कुछ ऐसा था कि बोर्ड का रिजल्ट अगर पैंतीस प्रतिशत से ऊपर रह गया तो अच्छा माना जाता था। फर्स्टक्लास में पास होने वाले बेहद गिने चुने ही होते, इसलिए उन्हें खासा महत्व मिलता। ग्यारहवीं कक्षा में प्रवेश को यों तो खासी मारामारी होती थी लेकिन फर्स्टक्लास में पास होने के कारण निखिल के सामने विशेष समस्या नहीं थी। उसकी असली चिन्ता पढ़ाई के खर्चे को लेकर थी क्योंकि परिवार इस स्थिति में नहीं था कि कालेज की फीस, ड्रेस व किताब-कॉपियों का महंगा खर्च उठा पाता।

कुआँ खोदकर पानी पीने सरीखी आकाशवृत्ति वाला परिवार चाहता था कि निखिल भी पुश्तैनी काम में जुट जाये, बहुत जरूरी हो तो प्राईवेट पढ़ाई कर ले। निखिल इस पक्ष में नहीं था, वह जैसे भी हो पढ़ाई जारी रखना चाहता था, लेकिन परिवार पर बोझ बनकर नहीं, बल्कि ट्यूशन जैसा कुछ छोटा-मोटा काम करके। साल के शुरू में बच्चों का ट्यूशन रखने वाले कम ही मिलते हैं इससे कुछ कठिनाई अवश्य थी लेकिन निखिल ने परीक्षा के बाद की छुट्टियों का उपयोग करके अपना सारा समय पढ़ाई में कमजोर बच्चों को अगली कक्षा के लिए तैयार करने में लगाया जिससे उसे कुछ पैसे मिल गये और आगे का रास्ता बन गया। बच्चों को पढ़ाने के लिए उसे प्रायः घरों में जाना पड़ता था।

व्यवसायी लोगों के पास पैसा तो खूब होता लेकिन बच्चों के लिए समय बहुत कम, उन्हें पढ़ाने के लिए तो बिल्कुल नहीं। पतियों के व्यस्त रहने के कारण उनकी पत्नियों का अधिकांश समय घर में बच्चों के बीच ही बीतता, जिनकी शरारतों से वे परेशान रहतीं, खासकर स्कूल की छुट्टियों में, जब बच्चे पूरे समय घर में रहते थे। ऐसे में पढ़ाई के बहाने से बच्चों के एक दो घंटे व्यस्त हो जाने से उन्हें राहत मिलती। निखिल को इसका फायदा मिल गया, दोपहर से सांय काल तक वह डेढ़-दो घंटे प्रत्येक परिवार में चला जाता। अकेले के बजाय बच्चों को छोटे समूहों में पढ़ाना सुविधाजनक रहता, इसलिए वह आस-पड़ोस के परिवारों के बच्चों को भी पढ़ने को प्रेरित करता, इससे उसे भी आर्थिक लाभ हो जाता।

ट्यूशन पढ़ाने से खर्चा जुटा निखिल ने इण्टर की परीक्षा भी अच्छे अंकों में पास कर ली। अच्छा अनुभव होने व कुछ साख बन जाने के कारण ट्यूशन पढ़ाने

का क्रम आगे ग्रेजुएशन की पढ़ाई के दौरान भी जारी रहा।

ट्यूशन वाले परिवार निखिल के घर से दो-तीन मील के दायरे में थे, वहां पैदल ही जाना होता, आने जाने के क्रम में बड़े-बूढ़ों से नमस्कार भी हो जाती। अपने स्वभाव के कारण वह ट्यूशन पढ़ने वाले बच्चों में तो प्रिय था ही, बच्चे घर में भी उसकी प्रशंसा करते, इससे उनके परिवारों में भी उसे अच्छा माना जाने लगा। कई परिवारों के बच्चों के साथ पढ़ने से परिवारों में आपस में भी निखिल के बारे में चर्चा होने लगी, शीघ्र ही वह पूरे मौहल्ले का परिचित बन गया। उसे पढ़ाने के प्रस्ताव और आने लगे जिसे उसके सामने या तो समूह बढ़ाने का विकल्प बचता था अथवा अन्य समय देने का। समूह बढ़ाने से प्रत्येक बच्चे की ओर पर्याप्त ध्यान न दे पाने से पढ़ाई के स्तर में गिरावट का भय रहने और सीमित समय में से और समय निकालने, दोनों बातों में कठिनाई थी। समूह में अधिक बच्चे रखने से उसके लालची माने जाने की आशंका भी रहती, जबकि ट्यूशन पढ़ाने के पीछे उसका उद्देश्य अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति मात्रा ही था, कोई व्यवसाय नहीं, इसलिए समूह प्रायः छोटे ही रहते और उसका पढ़ाने का काम चलता रहता।

एक बार वह एक विचित्र स्थिति में फंस गया, जिन घरों में वह ट्यूशन पढ़ाने जाता था, उनमें से एक घर से सटे मकान में उसका एक परिचित परिवार रहता था। दूर की रिश्तेदारी भी थी और परिवार की महिला उसकी मां की सहेली भी थी। परिवार की माली हालत कुछ ठीक नहीं थी, जैसे-तैसे गुजारा चलता लेकिन बच्चे पढ़ने में होशियार थे। आर्थिक स्थिति के कारण उन्हें अच्छे स्कूल में न पढ़ा कर पास ही के सरकारी स्कूल में भर्ती किया गया था जहां बच्चों की ओर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया जाता था। होशियार होने के वावजूद बच्चे कुछ खास नहीं कर पा रहे थे, इसलिए माता-पिता परेशान थे। परिवार में कुल दो बच्चे थे, बड़ी लड़की और उससे पांच-छः साल छोटा लड़का, लड़की की पढ़ाई को लेकर तो उन्हें कोई विशेष चिन्ता नहीं थी, लेकिन लड़के की पढ़ाई को लेकर परेशान थे। पड़ोस के परिवार में निखिल के ट्यूशन पढ़ाने के लिए आने के कारण आते-जाते समय कभी कभी रिश्तेदार महिला से उसकी दुआ-सलाम भी हो जाती। महिला उसे अपने घर में आने को कहती, वह सहमति तो जताता लेकिन इसके लिए समय नहीं निकाल पाता था। एक दिन उस रिश्तेदार महिला का बुलाया उसके लिए ट्यूशन वाले घर में ही आ गया।

''मम्मी ने आपको हमारे घर बुलाया है, कुछ जरूरी काम है'' दस-ग्यारह साल का बच्चा उस तक सन्देश पहुचा गया। ट्यूशन समाप्ति के बाद निखिल उस

घर में चला गया। महिला ने उस पर पूरी ममता उड़ेल दी, चाय, नाश्ते का भी अच्छा प्रबन्ध था, यह अस्वाभाविक नहीं था। महिला के उसकी माता की निकट सहेली होने से दोनों परिवारों के सम्बन्ध पहले से ही मधुर थे। बातचीत में महिला ने उसके सामने अपनी पारिवारिक स्थिति रखते हुए इच्छा व्यक्त की वे अपने बच्चों को उससे ट्यूशन पढ़वाना चाहते हैं। उनसे ट्यूशन के पैसे तो ले नहीं सकता था और अलग से समय दे पाना भी सम्भव नहीं था, इसलिए समूह में पढ़ाने का विकल्प ही बचता था जिसके लिए उस घर से अनुमति लेनी जरूरी थी जहॉं पर यह समूह चलता था। उसने उस घर से बात कर एक आध दिन में बताने का आश्वासन दे दिया।

ट्यूशन का समूह जिस घर में चलता था, वह एक व्यवसायी का था जिसका कारोबार और रहन–सहन अच्छा खासा था। वहां चलने वाले समूह में पढ़ने वाले बच्चे भी लगभग समान स्तर के परिवारों से थे। रिश्तेदार महिला के पति एक सरकारी विभाग के छोटे कर्मचारी थे, निकट के व्यवसायी परिवारों में उनका घुलना–मिलना नहीं के बराबर था। पड़ोसी होने के चलते आपसी परिचय भी बस औपचारिता तक ही सीमित था। रिश्तेदार के बच्चे को उस समूह में सम्मिलित करने का निखिल का प्रस्ताव व्यवसायी परिवार को पसन्द नहीं आया। उन्होंने साफ इन्कार तो नहीं किया लेकिन और कई कठिनाईयां गिना दीं। निखिल को विश्वास था कि समूह वाले परिवारों में उसको जिस प्रकार से अच्छा माना जाता था, उसके चलते उसकी बात रख ली जायेगी लेकिन उसे निराशा हुई। उसका मन हुआ कि उस समूह को पढ़ाना छोड़ दे, लेकिन यह उन व्यवसायी परिवारों से विरोध लेना होता और उनका विरोध मोल ले यदि वह रिश्तेदार परिवार के बच्चे को पढ़ाता तो उन परिवारों के आपसी सम्बन्ध खराब होने का भी भय था। उसने निश्चय किया कि उस समूह को ट्यूशन पढ़ाने के बाद सप्ताह में दो–एक दिन वह रिश्तेदार परिवार के बच्चे को पढ़ायेगा।

निखिल अगले ही दिन से बच्चे को पढ़ाने जाने लगा। सप्ताह में एक–दो दिन जाने से निरन्तरता टूटने की सम्भावना के कारण उस घर में जाना लगभग नित्य का नियम बन गया। बच्चा मेहनती था, उसे केवल एक बार समझाने की आवश्यकता पड़ती, वह जल्दी ही समझ जाता। होशियार बच्चे को पढ़ाना उसे भी अच्छा लगता, उसकी माता का आत्मीय व्यवहार भी वातावरण को सहज रखता। आठ– दस दिनों में ही बच्चे में अच्छी प्रगति दिखने लगी और निखिल भी परिवार में घुल–मिल गया।

बच्चे से पांच छः वर्ष बड़ी बहिन बच्चे की पढ़ाई के समय प्रायः दूसरे

कमरे में ही रहती। निखिल से उसका सामना नहीं के बराबर ही होता था लेकिन छोटे भाई की प्रगति ने उसे चौंका दिया। बच्चा अपनी दीदी से पढ़ने को तैयार नहीं होता था, दीदी का समझाया उसके पल्ले ही नहीं पड़ता था। युवती इस बात पर हैरान थी कि ट्यूशन ने बच्चे पर किस तरह जादू जैसा कर दिया है, बच्चा और उसकी माँ निखिल की तारीफ करते नहीं थकते थे।

उन्नीस-बीस साल के निखिल से युवती साल-दो साल छोटी ही रही होगी। उम्र के स्वाभाविक संकोच के चलते वह उससे दूर ही रहती थी लेकिन उसके इतनी सरलता से सुलभ होने के कारण वह भी अपनी पढ़ाई में उसकी सहायता चाहने लगी। उसकी मां नहीं चाहती थी कि निखिल को और परेशान किया जाये। उनके लिए उसका इतना सहयोग भी बहुत था लेकिन युवती अपने को रोक नहीं पाई, एक दिन निखिल के सामने आ ही गई। निखिल को मालूम था कि घर में बालक की एक बड़ी बहन भी थी। कभी-कभार वह घर में एक कमरे से दूसरे में आती जाती भी लेकिन निखिल से सीधे आमना-सामना अब तक नहीं हुआ था। वह सामने बैठे बालक के बगल में खड़ी हो गई, कुर्सी पर बैठे निखिल ने सिर उठा कर उसकी ओर देखा। आसमानी हरे रंग जैसे सूट पर पेट तक माला की तरह चुनरी पहने हुए वह निखिल की ही तरफ देख रही थी।

उसने दोनों हाथ जोड़ निखिल को नमस्कार किया, मुस्कराते हुए लेकिन नीचे की हुई नजरों के साथ, ''मैं इसकी दीदी हूँ'' उसने बालक के सिर पर थपकी दी।

''नमस्ते!'' वह मुस्कराया, ''जानता हूं लेकिन मिले पहली बार हैं, बैठो!'' उसने साथ पड़ी कुर्सी की तरफ इशारा किया। युवती बैठ गई, निखिल ने और कुछ नहीं कहा, वह बालक की कापी उठाकर उसे पलटने लगा।

''मुझे सोनू कहते हैं, घर में मेरा यही नाम है'' युवती ने चुप्पी तोड़ी।

''और घर के बाहर?'' निखिल ने अपना काम जारी रखते हुए बिना उसकी तरफ देखे पूछा।

''स्वर्णलता'' युवती ने कुछ अचकचाते हुए कहा ''लेकिन मुझे यह नाम पसन्द नहीं है, अच्छा नहीं लगता, यह पुराना सा नाम है'' वह एक साथ कह गई।

''अच्छा?'' निखिल चौंका, उसने युवती की ओर ध्यान से देखा, उसके चेहरे पर सचमुच झुंझलाहट थी। युवती काफी देर चुप बैठी रही। निखिल ने महसूस किया युवती का आना अकारण नहीं होगा। उसने पूछना बेहतर समझा।

''मुझसे कोई काम तो नहीं है आपका?'' उसने पूछा।

''था तो'' युवती ने थोड़ा संकोच किया, ''दरअसल आपकी थोड़ी मदद चाहिए''

''किसलिए?'' निखिल ने जानना चाहा।

''अपनी पढ़ाई में'' युवती बोली ''आप बहुत अच्छा पढ़ाते हैं, मैं दूसरे कमरे से सुनती रहती हूँ'' थोड़ा रुककर उसने निखिल की ओर देखा ''लेकिन रोज नहीं, कभी-कभी, बल्कि कभी कभार''

निखिल कुछ कहता, इससे पहले ही युवती की मां चाय लेकर कमरे में आ गई, उसने युवती की बात सुन ली थी, लेकिन उसे अनसुना सा करते हुए महिला ने निखिल से चाय लेने को कहा, फिर युवती की ओर देखा।

''यह यहां क्या कर रही है? कुछ कह तो नहीं रही थी?'' उसने निखिल से पूछा। ''कोई खास नहीं'' उसने जवाब दिया।

''पढ़ाई में मदद करने को कह रही होगी, मैने इसे मना किया था, पहले ही इतना परेशान कर रहे है तुम्हें'' महिला तेजी से कह गई।

''कोई बात नहीं, यहां आता तो हूँ ही मैं'' निखिल ने आश्वासन दिया, ''थोड़ा बहुत समय भी निकल ही जायेगा''

''थैंक्यू!'' युवती चहकी, ''इलेवेन्थ में हूँ मैं, ज्यादा परेशान नहीं करूँगी'' वह उठ खड़ी हुई ,''अभी आ जाऊं या कल से?'' वह शरारत से मुस्कराई।

''आज नहीं कल से, लेकिन रोज नहीं'' निखिल चाय खत्म कर चुका था।

अगले दिन से युवती का पढ़ाना भी चालू हो गया, बात कभी कभार मदद करने की हुई थी, लेकिन सिलसिला लगभग रोज का ही चल निकला। युवती समय से हाजिर मिलती और पूरे समय बैठी रहती, कभी-कभी निखिल को अधिक समय भी देना पड़ जाता। वह पढ़ने में होशियार थी, सहायता का उसने भरपूर फायदा उठाया। दोनों के बीच शुरूआती संकोच कब दोस्ताना माहौल में बदल गया, उन्हें पता ही नहीं चला। निखिल परिवार के सदस्य जैसा हो गया था, युवती कभी उसके लिये चाय बना लाती, कभी खाने को कुछ। पढ़ाई के अलावा कभी-कभी इधर-उधर की बातें भी हो जातीं, ज्यादातर कैरियर की। युवती ज्यादा खुश होती तो फिल्मों और अपनी सहलियों की बातें भी शुरू कर देती, वह अधिक बोलती तो निखिल बात को फिर से पढ़ाई पर ले आता। वह हमेशा समय का ख्याल रखता और आवश्यकता से अधिक नहीं रुकता।

निखिल की मेहनत रंग लायी, बालक तो अच्छे अंकों से पास हो ही गया, युवती भी अपने कालेज में सर्वप्रथम आ गई। ग्रेजुयेशन करते करते

निखिल को एक अच्छे विभाग में नौकरी मिल गई। अब उसे ट्यूशन पढ़ाने की आवश्यकता नहीं थी, ट्यूशन का सिलसिला वहीं रुक गया। नौकरी मिलने के बाद निखिल ने दो बेडरूम वाला एक अच्छा मकान किराये पर ले लिया जो युवती के घर से बहुत अधिक दूर था। इस के साथ ही उसका युवती के घर जाना भी पूरी तरह थम गया।

एक दिन सांयकाल युवती निखिल के नये घर आ धमकी, ''बिल्कुल ईद के चांद हो गये आप तो, कितने दिनों से घर पर नहीं आये। मां कितना याद करती है।'' उसने उलाहना दिया।

''समय नहीं मिलता'' निखिल ने सफाई दी।

''रविवार को भी नहीं?'' युवती ने सवाल किया। वह चुप ही रहा, युवती ने कुछ इधर-उधर की बातें की, फिर मां के सन्देश के बहाने निखिल से अगले रविवार को अपने घर आने का वादा लेकर चली गई।

अगले रविवार को निखिल युवती के घर पर चला गया, उसके अच्छे स्वागत सत्कार की तैयारी थी। युवती के पिता भी घर पर ही थे, सभी के बीच घर-परिवार, पढ़ाई व कैरियर आदि की काफी बातें हुई। बातों-बातों में युवती की माता ने निखिल से प्रस्ताव किया कि अगर हो सके तो वह बालक और युवती की पढ़ाई के लिए रविवार को समय दे दिया करें।

''आखिर पढ़ाना भी तो तुम्हारे शौक में शामिल है, हमारे बच्चों का भला हो जायेगा, अहसान हम कभी नही भूलेंगे'' उसने निखिल को मनाने की कोशिश की। उसने अपनी कठिनाई बता दी, सप्ताह में एक दिन मिलने वाले अवकाश को वह पूरी तरह अपने लिए रखना चाहता था।

''कभी-कभी तो ये बच्चे आपके घर भी आ सकते हैं, वहां तो दिक्कत नहीं होगी?'' महिला ने दूसरा प्रस्ताव दिया।

''ठीक है'' कोई चारा न देख निखिल ने सहमति दे दी।

सप्ताह में एक-दो दिन देर सायं युवती और बालक निखिल के घर आ जाते। वह उनके लिये थोड़ा समय निकाल लेता। दो-तीन सप्ताह बाद बालक का आना तो बन्द हो गया, लेकिन युवती आती रही। जाते हुए कभी कभी वह निखिल की कोई पुरानी किताब भी मांग ले जाती, कुछ लौटा भी देती, कभी अपनी किताब छोड़ देती। वह कुछ नया सा व्यवहार करने लगी थी।

''आपने वह बुक देखी थी जो मैं कल छोड़ गयी थी।'' या ''उफ! आप तो अपनी पुरानी बुक्स देखते ही नहीं कि उनमें मैने कुछ लिखा तो नहीं'' या ''उस

बुक में मेरा कोई लेटर तो नहीं मिला?'' वह ऐसी ही कोई बात कह बैठती या अपनी सहेली की शादी, सगाई, लव एफेयर या फिल्मों की बात छेड़ देती। निखिल देख रहा था कि युवती का मन पढ़ाई में न हो कर इधर-उधर है। कभी-कभी वह पढ़ना छोड़ एकटक निखिल के चेहरे पर देखने लगती, उसे यह सब अखरने लगा। वह युवती को टालने की जुगत करने लगा, युवती के आने से पहले ही वह कहीं बाजार या टहलने निकल जाता। युवती का आना फिर भी बन्द नहीं हुआ बल्कि और बढ़ गया, समय का उपयोग वह निखिल की माता के काम में हाथ बंटाने और उनसे बातों में करने लगी। बातें अक्सर निखिल को लेकर ही होतीं, निखिल की माता को भी सुनने में अच्छा लगता कि उसका बेटा इतना होनहार है। युवती उनसे काफी घुल-मिल गई।

एक दिन रात कुछ देर से निखिल घर पर आया तो पाया कि माता जी घर पर नही थीं, लेकिन युवती वहीं थी। उसने बताया कि वहीं पड़ोस में किसी की तबियत अचानक बिगड़ गयी है, माता जी काफी देर पहले वहां गयी थीं। अपने घर में युवती को यों अकेला पाकर निखिल को कुछ अजीब सा लगा। उसे रसोई में सहज ढ़ंग से चीजें निकालते-रखते देख उसे और भी आश्चर्य हुआ, युवती ऐसे सहज व्यवहार कर रही थी जैसे यह उसी का घर हो और वह इसकी अभ्यस्त हो।

''खाना लगा दूं?'' युवती ने सोफे पर बैठे निखिल के बगल में आकर पूछा।

''तुम क्यों खाना लगाओगी? माताजी कब आयेंगी?'' उसने चौंकते हुए पूछा।

''माजी देर से आने को कह गई हैं, आप को खाना खिलाने को भी कहा है'' युवती ने निखिल कि ओर देख कर कहा और रसोई में चली गई। कुछ ही मिनटों में वह थाली में करीने से खाना लगाकर ले आयी।

''यहीं रख दूँ? उसने सोफे के सामने की मेज के पास आते हुये कहा।

''नहीं सामने'' निखिल ने डाईनिंग टेबल की ओर इशारा किया।

खाना अच्छा बना था, चावल, दाल, सूखी और तरीदार सब्जी, रोटी, पापड़, दही, आचार और सलाद के साथ सिंवई की खीर भी। घर में शाम को प्राय: ऐसा खाना नहीं बनता था। अक्सर सब्जी रोटी ही बनती थी, कभी-कभार दही भी मिल जाती। निखिल ने खाना शुरू किया तो काफी स्वादिष्ट लगा।

''किसने बनाया है यह खाना?, माताजी के हाथ का तो नहीं लगता!'' निखिल ने खाने के बीच ही युवती की ओर बिना देखे पूछा।

''कैसा बना है?'' युवती ने जवाब की बजाय सवाल कर दिया।

''ओह तो तुमने बनाया है?'' निखिल ने थोड़ा आश्चर्य सा दिखाते हुए अगला सवाल कर दिया। युवती ने कोई उत्तर नहीं दिया, बस मुस्कुरा दी।

''कितनी देर से हो तुम यहां पर?' निखिल ने पूछा।

''शाम से ही।'' युवती ने बड़े ही सहज ढंग से बताया।

''लेकिन अब तो बहुत रात हो गई है, इतनी देर तक रुकना तो ठीक नहीं, देर रात अकेली कैसे जाओगी?'' निखिल ने खाना रोक कर युवती से पूछा।

''अकेली क्यों?'' युवती ने अधिकार सा जताते हुए निखिल की आंखों में देखा, ''या तो आप छोड़ने चलोगे या यहीं रह जाऊंगी, घर ऐसे ही खुला छोड़ कर जा सकती थी क्या?'' उसने निखिल से ही पूछ डाला। निखिल को कुछ अटपटा सा लगा। उसने अनुमान लगाया कि युवती के इस प्रकार रुकने में माताजी की भी सहमति होगी।

कुछ देर बाद माताजी आ गयीं, इससे पहले कि निखिल कुछ पूछता, माताजी ने युवती की ओर देखा, ''अरे तुम्हें तो बहुत देर हो गयी। मै वहां से निकल ही नहीं पाई! क्या करती?''

युवती के उत्तर की प्रतीक्षा किये बगैर माताजी ने उससे अगला प्रश्न कर दिया, ''बहुत रात हो गयी है। अभी घर जाओगी या यहीं रह लोगी?'' उन्होंने पूछा। युवती कुछ कहती इससे पहले ही निखिल ''मैं छोड़ आता हूँ'' कह कर खड़ा हो गया।

''तुमने कुछ खाया भी है?'' निखिल का कहा अनसुना कर माताजी ने युवती से पूछा।

''इन्हें खिला दिया है'' युवती ने निखिल की तरफ देखे बगैर जवाब दिया, ''मैं आपसे पहले थोड़े ही खा लेती। आप के लिए लगा दूँ?' उसने माताजी से पूछा।

''साथ में अपने लिए भी! सचमुच अच्छे संस्कार दिये हैं तुम्हारे माता-पिता ने'' माताजी ने उसकी प्रशंसा की।

युवती को उसके घर छोड़ आने के लिए तैयार निखिल ने कपड़े भी नहीं बदले थे, वह अपने कमरे में चला गया। माताजी और युवती खाते-खाते बातें भी करते रहे, काफी देर बाद पानी का गिलास लिये हुए युवती निखिल के कमरे में आ गई,

''माजी इतनी रात जाने को मना कर रही हैं, मैं यहीं रह लूंगी, घर पर मैं पहले ही कह कर आई थी'' उसने एक साथ कह डाला।

निखिल ने घूरते हुए उसे देखा, 'पहले ही कह कर आई थी' सुनकर वह चौंक

गया, लेकिन वह पहले से ही कह कर क्यों आयी थी? यह वह नहीं समझ पाया था। युवती का चेहरा प्रफुल्लित था, जैसे उसका रात को वहां पर ठहरना कोई उपलब्धि हो। झल्ला चुके निखिल ने संयत होने का प्रयास किया, ''बैठो!'' उसने युवती से कहा। वह कमरे पर रखे सोफे पर बैठ गई जैसे उसे पहले से ही ऐसी अपेक्षा थी। उसके बैठ जाने पर निखिल ने समझाने का प्रयास किया, ''मैं काफी कुछ समझ रहा हूं कि तुम यह सब किस लिए कर रही हो'' उसने कहा।

''सच?'' युवती चहकी। फिर उसने नजरें एकाएक नीचीं कर लीं, ''थैंक गॉड!'' उसने दोनों हाथ आपस में कस घुटनों के बीच दबा कर भींच दिये।

''हां! लेकिन, यह सब ठीक नहीं, मैं इसके पक्ष में नही हूँ, मैंने तुम्हारे परिवार को केवल सहायता करने के लिए सहयोग दिया है'' निखिल ने स्पष्ट किया।

''थैंक्स! हम सभी आपका यह अहसान मानते हैं'' युवती की नजरें नीची ही रही। निखिल को लगा युवती को ऐसे समझा पाना कठिन है, बात सीधे कह देनी चाहिए।

''मैं जो कहना चाह रहा हूँ उसे ध्यान से सुनो'' उसने कहा, ''जैसा मैं देख रहा हूँ, तुम्हारे दिमाग में अगर प्यार मोहब्बत का कोई फितूर है तो उसे निकाल दो, मैं इस सब से बहुत दूर हूँ'' उसने कुछ तीखे स्वर से कहा। युवती सहम गई, वह चुप रही।

निखिल की बात अभी पूरी नहीं हुई थी, ''पढ़ाई का तुम्हारा मेरा जो सम्बन्ध था, उसे भी अब खत्म मान लो, न तो मैं इसके पक्ष में हूँ और न ही मेरे पास अब समय है। और हां! हमारे घर तुम्हारा इस तरह रोज-रोज आना ठीक नहीं है, इस तरह रात को रुकना तो और भी गलत। यह सब बन्द हो जाना चाहिए'' उसने एक साथ कह डाला।

''लेकिन'' युवती कुछ कहना चाहती थी।

''कोई लेकिन-वेकिन नहीं'' निखिल ने तेज लहजे में कहा। युवती की आंखों मे आंसू आ गये, उसका गला रुंध आया, ''लेकिन मैं तो आपको'' युवती कहना चाहती थी किन्तु वाक्य पूरा नहीं कर पाई, वह उठ खड़ी हुई।

''गुड नाइट!'' निखिल ने उसे दरवाजा दिखा दिया। युवती सिर झुकाये कमरे से निकल गई, निखिल किवाड़ बन्द कर सो गया।

युवती रात में निखिल की माताजी के बगल वाले बिस्तर पर लेट गई, वह रात भर सिसकती रही और भोर सुबह वहां से निकल गई। सुबह माताजी ने निखिल से जानना चाहा कि उसने युवती से ऐसा क्या कह दिया था कि वह

रातभर सुबकती रही और सुबह बिना बताये ही चली गई।। उसने माताजी को पूरा घटनाक्रम बता दिया।

''लेकिन वह तो बहुत अच्छी लड़की है, उसकी मां मेरी कितनी पुरानी सहेली है, हम लोग रिश्तेदार भी हैं। तुम्हें उसे इस तरह से नहीं दुत्कारना चाहिये था। जो कुछ कहना था ठण्डे मन से समझाते या मुझे पहले ही सब कुछ बता देते'' माताजी ने समझाया।

निखिल को भी लगा कि उससे गलती हो गयी है, किसी के भी साथ इतना कड़वा व्यवहार ठीक नहीं लेकिन जो हो चुका, सो तो हो ही चुका था।

''लेकिन इन सब को रोकना भी तो जरूरी था'' निखिल ने माताजी से मजबूरी जताई।

''ठीक है, लेकिन अपनी गलती मान कर उसे ठीक कर लेना चाहिए, यह सब के लिए जरूरी है'' माता जी ने उसे सलाह दी।

''लेकिन कैसे?''

''उसके घर जाओ, रात के व्यवहार पर थोड़ा खेद जताओ और फिर जो कुछ भी कहना चाहते हो, उसे ठीक शब्दों में और शान्त भाव से समझाने की कोशिश करो। बातचीत से हर चीज का हल निकल आता है, इसे प्रतिष्ठा से मत जोड़ो। हमारे परिवारों के बीच जो अच्छे सम्बन्ध हैं, वे बने रहें, इसमें सब की भलाई है। मुझे विश्वास है होगा वही, जो तुम चाहोगे'' माता जी ने निखिल को आगा-पीछा भी समझा दिया।

''ठीक है।'' उसे माताजी का सुझाव जँच गया। शाम को ही वह युवती के घर चला गया, सामने वही पड़ गयी।

''सॉरी'' निखिल ने अपने दोनों हाथ कानों पर लगा दिये, ''कल कुछ ज्यादा ही कह गया'' उसने खड़े-खड़े ही कह डाला।

''बैठिये!'' युवती ने कुर्सी की तरफ इशारा कर दिया। बहुत देर तक दोनों चुप रहे। निखिल को यह चुप्पी बहुत अखर रही थी, ''देखो!'' उसने कहना शुरू किया।

''वही सब फिर सुनाना चाहते हैं जो कल कहा था?'' युवती ने उसके चेहरे पर देखा।

''दर असल'' वह फिर से कुछ कहना चाहता था।

''यही ना कि मेरे लिए आपके मन में कुछ नहीं?'' युवती ने फिर से उसे रोका।

''जो कुछ मैं कहने आया था'' निखिल ने कुछ कठिनाई सी अनुभव की।

''कुछ नया कहना चाहते हैं? '' युवती ने थोड़ा तल्खी के साथ पूछा। निखिल के पास उत्तर नहीं था।

''हम अच्छे दोस्त बन सकते हैं, और बने भी रह सकते हैं'' निखिल ने प्रस्ताव दिया।

''दोस्त? '' युवती चौंकी, उसने आंखे निखिल की आंखों मे डाल दीं, ''दोस्त कैसे हो सकते हैं? मैं तो आपके लिए बस स्टूडेन्ट भर हूँ और आप ठहरे टीचर! सिर्फ टीचर! हमारे बीच दोस्ती?'' उसने व्यंग्य किया। निखिल धीरे से मुस्कुराया, ''जब प्यार हो सकता है तो दोस्ती क्यों नहीं?'' उसने पूछा। युवती चौंक पड़ी। जितनी आसानी से निखिल 'प्यार' कह गया, उसे सहसा विश्वास ही नहीं हुआ।

''हां, क्यों क्या प्यार नहीं है तुम्हे मुझसे?'' निखिल ने शरारत सी दिखाई।

''और आपको?'' युवती की तल्खी काफी कम हो चुकी थी।

''अभी तो नहीं! लेकिन कभी हो भी सकता है। फिलहाल दोस्ती से काम चला लो'' वह भी सहज हो चुका था।

युवती की मां चाय लेकर आ गई। मां को इसका अनुमान तो हो गया था कि पिछली रात दोनों के बीच कुछ खटपट हुई है, लेकिन पूरी जानकारी नहीं थी। उन्हें निखिल का वहां आना अच्छा लगा।

''ऐसे ही आते रहा करो कभी-कभी! अच्छा लगता है'' युवती की मां ने प्यार जताया।

''जी जरूर!'' निखिल का उत्तर पूरा होते-होते मां रसोई में चली गई।

चाय की चुस्कियों के बीच युवती और निखिल के बीच कुछ पढ़ाई की बातें हुई। निखिल ने वापस असली बात पर आना ठीक समझा, ''हमारे अधिक मिलने-जुलने से कई तरह की बाते होंगी, इसलिए थोड़ा ख्याल रखना होगा, हां अगर कभी मेरी मदद की सचमुच जरूरत पड़े तो अच्छे दोस्त की हैसियत से मुझे याद कर सकती हो'' उसने युवती की ओर देखा।

''ठीक है, समझ गयी'' युवती ने सिर हिलाया।

''प्यार न सही, दोस्ती ही सही, यह तो नहीं सोच रही हो? '' निखिल ने चलते-चलते मजाक करना चाहा।

''दोनों मे कोई रिश्ता नहीं, धोखे में रहना बेकार है, मुझे दोस्ती और प्यार का अन्तर मालूम है, लेकिन दोस्ती के भी अपने मायने हैं। आपकी दोस्ती भी सिर आंखों पर, बेकार नहीं जायेगी'' उसने दरवाजे पर आकर कहा। निखिल बाहर निकल गया। युवती ने दरवाजा बन्द कर दिया।

युवती से बात कर चुकने के बाद निखिल काफी आश्वस्त हो गया कि युवती अब उसके पीछे नहीं पड़ेगी और दोनों परिवारों के संबंधों में खटास आने से भी बच जायेगी। युवती का निखिल के घर आना लगभग बन्द सा हो गया। यदि कभी आती भी तो तब जब निखिल घर पर नहीं होता। काफी अरसे तक निखिल का उससे सामना नहीं हुआ। निखिल के पास भी उसे याद करने का समय नहीं था।

एक दिन सांयकाल निखिल जब घर पहुँचा तो युवती और उसकी मां उसे अपनी माताजी के साथ बैठ बातें करते हुए मिले। उसका माथा ठनका, उनकी अनदेखी कर वह अपने कमरे में चला गया। कुछ ही देर बाद युवती एक हाथ में पानी का गिलास और दूसरे हाथ में मिठाई की प्लेट लेकर कमरे में चली आई।

''आप सीधे अन्दर आ गये!'' उसने कहा, ''सोचा था बाहर ही मुंह मीठा कर लेंगे'' उसने उलाहना सा दिया।

''किस बात का मुंह मीठा?'' निखिल ने आश्चर्य दिखाते हुए प्रश्न किया।

''मेरी सर्विस लग गई है, रक्षा विभाग में'' युवती ने बताया ।

''मैं समझा तुम्हारी सगाई हो गयी'' उसने बधाई देने के साथ थोड़ा मजाक भी किया।

''वो तो आपसे ही होगी!'' युवती ने तत्परता से जवाब दिया, ''दोस्ती तो आपने मान ही ली है और प्यार हो जाने की उम्मीद अभी कायम है!'' वह चहकी।

''नो वे! कोई चान्स नहीं!'' निखिल ने प्रतिवाद जैसा किया ''मेरा शादी का कोई विचार नही, हाथ में लकीर ही नहीं हैं'' उसने मुस्करा कर युवती की ओर देखा।

''अच्छा?'' उसकी बेरुखी पर हैरान होते हुए वह मुस्कुरा कर बाहर निकल गई।

साल भर से अधिक बीत गया था, युवती की ओर से निखिल के साथ कोई सम्पर्क नहीं हुआ, निखिल को तो करना ही नहीं था। बात लगभग खत्म सी हो गई थी कि एक दिन निखिल को उसके आफिस में युवती का फोन आ गया।

''अगर आज शाम फ्री हों तो एक तकलीफ देनी है आपको'' औपचारिक हाय– हैलो के बाद युवती ने अनुरोध किया।

''किस बात की?'' निखिल ने जानना चाहा।

''ताज रेस्टराँ में 7 बजे आ जाइये! किसी से मिलवाना है आपको! बाकी बातें वहीं बताऊँगी!'' कहकर युवती ने उससे आने की पुष्टि चाही, उसने हामी भर दी।

निखिल थोड़ी देर से रेस्टराँ में पहुँचा। युवती किसी सांवले से युवक के साथ हँस-हँस कर बातें कर रही थी। निखिल के पहुँचने पर दोनों खड़े हो गये।

''हैलो!'' युवती के साथ आये युवक ने निखिल से हाथ मिलाया, ''मैं एल.वी. राव हूँ, इनका कलीग!'' उसने युवती की ओर देखते हुए कहा, ''इन्होंने आपके बारे में काफी कुछ बताया है कि आपने किस तरह परिवार की सहायता की'' उसने बताया।

''आपसे मिल कर खुशी हुई'' निखिल साथ रखी कुर्सी पर बैठ गया।

एक दूसरे का हाल चाल पूछ लेने के बाद राव ने निखिल को बताया, ''मैं और सोनू मैरिज कर रहे हैं, वी आर इन लव! शायद इन्होंने आपको बताया हो!'' उसने युवती की ओर देखा।

''लव क्या! सच तो यह है कि साथ में काम करते करते हम एक दूसरे के नजदीक आ गये, इन्होंने मुझे प्रपोज कर दिया'' युवती ने जोड़ा।

''ठीक तो है!'' निखिल ने प्रतिक्रिया दी।

''लेकिन एक प्राब्लम आ गई है, न तो मेरे घर वाले तैयार हैं और न ही इनके परिवार वाले'' युवती ने बताया।

''ओह!'' निखिल ने दोनों की ओर देखा, ''तब?'' उसने सवाल किया।

''हम कोर्ट मेरिज करना चाह रहे हैं, आपकी हेल्प चाहिए! कल हम लोग अप्लाई कर रहे हैं, विटनेस में आप का नाम देने की सोच रहे हैं'' राव ने अनुरोध किया।

''मैं ही क्यों?'' निखिल ने सवाल किया।

''क्योंकि इनका आप पर बहुत ज्यादा फेथ है, कोई परेशानी तो नहीं होगी ना आपको?'' राव ने उससे सहमति चाही। निखिल कुछ सोच में पड़ गया लेकिन दोनों द्वारा अनुनय विनय किये जाने के बाद वह विटनेस बनने के लिये मान गया।

दोनों ने विवाह के लिए आवेदन किया हुआ था। दोनों को आशा थी कि एक माह के नोटिस के दौरान वे अपने-अपने परिवारों को राजी कर लेंगे। नोटिस में विवाह की तिथि सूचित कर दी गई और विटनेस में निखिल का नाम लिख कर उसकी उपस्थिति सुनिश्चित करने के लिये उसके हस्ताक्षर भी करवा लिये।

''इसे मैरिज हुई ही मानिये, साथ तो हम दोनों हैं ही'' खुश होते हुये राव बोला।

''सिर्फ आफिस में ही!'' युवती ने जोड़ा।

''दोनों को बहुत बहुत बधाई!'' निखिल बोला। 'चलो एक अध्याय बन्द हुआ' उसने मन ही मन सोचा।

विवाह करने की योजना को राव और युवती, दोनों ने अपने परिवारों से छुपा कर रखा लेकिन यह बात राव के घर तक पहुँच ही गई। उसके परिवार वाले घोर रूढ़िवादी थे, यह अन्तर्जातीय विवाह था, वे भड़क उठे और युवती के घर आ धमके, खूब कहासुनी हुई। राव के घर वालों ने युवती के परिवार को उनके लड़के को फंसाने का आरोप लगाया। युवती के परिवार वालों ने विवाह के सम्बन्ध में कोई जानकारी होने से ही इन्कार कर दिया। विवाद के दौरान युवती के परिवार वालों ने सफाई में यह भी कह दिया था कि युवती तो निखिल से शादी करना चाहती थी। उन्होंने इसमें निखिल की सहमति होने की सम्भावना भी जताई।

राव के परिवार वाले पूरी छान-बीन करने में जुट गये। विवाह के लिये निखिल के विटनेस बनने की सहमति भी सामने आ गई। युवती की निखिल से नजदीकी, पढ़ने-पढ़ाने के नाम पर निखिल के युवती के घर प्रतिदिन आने और युवती के निखिल के घर निरन्तर जाने की बात भी राव के परिवार को पता चल गयी। उन्होंने राव को लताड़ा और अपना निष्कर्ष बताया कि कैसे निखिल अपनी बला गुपचुप उसके सिर मढ़ रहा है। उन्होंने उसे यह भी समझाया कि युवती असल में निखिल को ही चाहती है और उनके सम्बन्ध इस विवाह के बाद भी बने रहेंगे।

दोनों परिवारों में हालांकि तनाव काफी था लेकिन युवती और राव की नौकरी करने की मजबूरी के चलते वे दोनों के मिलने जुलने में कोई रोक नहीं लगा सके। आफिस में दोनों का साथ रहने का सिलसिला थमा नहीं, दोनों के बीच खूब बातचीत होती। उनके आपसी सम्बन्ध यों तो अच्छे चल रहे थे लेकिन बातचीत में अक्सर निखिल का जिक्र हो आता जो राव को अच्छा नहीं लगता। उसके मन में शंका घर करने लगी, युवती द्वारा निखिल की अक्सर प्रशंसा किये जाने और उसकी चर्चा किये जाने की जिन बातों को वह अब तक सामान्य मानकर सरलता से लेता था, वे सब उसे खटकनें लगी। निखिल का नाम आते ही वह असामान्य व्यवहार करने लगता।

आखिरकार एक दिन उसने अपने घरवालों की कही बातें और अपनी शंका युवती पर प्रकट कर ही दी। युवती को धक्का लगा, उसे राव से इस

प्रकार के व्यवहार की आशा नहीं थी, दोनों में मनमुटाव शुरू हो गया। एक साथ रहने की दोनों की तैयारियां ढ़ीली पड़ने लगीं। राव कमाऊ बीवी पाने का मौका नहीं खोना चाहता था, निखिल को भूल जाने की शर्त पर वह युवती के साथ विवाह को तैयार था लेकिन राव को ठीक से समझने के लिये युवती कुछ समय लेने की जरूरत अनुभव करने लगी। दोनों ने कोर्ट मैरिज के लिये आवेदन जरूर किया था लेकिन रिश्ते असल में अभी तक आफिस तक ही सीमित थे।

युवती अब विवाह के लिये किसी जल्दबाजी में नहीं थी। राव और उसके बीच नजदीकी साथ रहने के कारण बनी थी और दोनों का विवाह करने का निर्णय आगे के कैरियर को देखते हुए तथा राव द्वारा बहुत अधिक आग्रह किये जाने के कारण हुआ था। दोनों अभी तक एक दूसरे को पूरी तरह समझ नहीं पाये थे, राव द्वारा युवती पर निखिल के साथ संबंधों को लेकर संदेह किया जाना उससे सहन नहीं हो रहा था, राव को भी युवती द्वारा उससे दूरी बनाना अखरने लगा था। उनमें आपसी तनाव पैदा हो गया, युवती को अपने निर्णय पर पछतावा भी होने लगा। अच्छी नौकरी पर होने के कारण वह किसी पर आश्रित नहीं थी इसलिए मन मारकर समझौता करना उसे ठीक नहीं जँच रहा था। उसने राव से अलग ही रहने का मन बना लिया।

एक दिन शाम को युवती निखिल के घर पर सीधे उसके कमरे में आ गई। उसने उसे पूरा घटनाक्रम बताया और इस बात को साफतौर पर समझाया कि दोनों के बीच पति-पत्नी जैसे तो दूर प्यार-मोहब्बत जैसी बातें भी नहीं हुईं। उसने निखिल से उसकी सहायता करने का अनुरोध किया, ताकि वह राव से दूर रह सके। निखिल ने उसे समझाना चाहा लेकिन वह अपने निश्चय के अनुसार आगे बढ़ने पर तुली थी।

युवती ने राव को नोटिस भेज उससे विवाह नहीं करने के फैसले की सूचना दे दी और इसकी जानकारी फोन पर निखिल को दे दी। राव ऐसा नहीं चाहता था, उसने इसका विरोध किया। राव और युवती के आपसी सम्बन्ध दोनों के विभाग में चर्चा का विषय बनने लगे। राव के लिए स्थिति असहज थी, वह युवती के साथ ही रहना चाहता था इसलिए चुप्पी साध लेता, लेकिन युवती मुखर थी। वह सहयोगियों को काफी कुछ बता देती, निखिल के कारण आये तनाव की बात भी। अनायास ही दोनों के सम्बन्धों के बीच निखिल का नाम भी चर्चा में आने लगा, प्रेम त्रिकोण के बीच में तीसरे जैसा, राव को यह बात और अधिक खटकने लगी।

निखिल के कार्यालय में एक दिन राव का फोन आ गया, उसने मिलने

के लिये समय मांगा था। निखिल की सहमति पर दोनों शाम को उसी होटल में मिले जहां उनकी पहली भेंट हुई थी। राव ने निखिल को युवती और उसके बीच आयी दूरी के विषय में बताना चाहा।

''जानता हूँ'' निखिल ने टिप्पणी की।

''कैसे?'' राव ने जानना चाहा

''सोनू बताती रहती है'' निखिल ने उत्तर दिया।

''ओह! तो अभी भी वो आपके सम्पर्क में है?'' राव ने चौंकते हुए कहा।

''सम्पर्क?'' निखिल हैरान था ''कैसा सम्पर्क? वह कभी कभी फोन पर बताती है''

''लेकिन आपको ही क्यों?'' राव ने सवाल दागा। निखिल के पास इसका कोई सीधा उत्तर नहीं था।

''मैं बताता हूँ'' राव ने निखिल से उत्तर न मिलता देख स्वयं ही बोलना आरम्भ कर दिया, ''वह आपको ही चाहती है, अभी भी! हर बात में आपसे तुलना करती है, हर काम में आपको शामिल करना चाहती है'' उसने बताया।

''लेकिन'' निखिल कुछ कहना चाहता था।

''जानता हूँ'' राव ने रोका ''आपका कोई रोल नहीं है, मेरा आप पर किसी प्रकार का संदेह नहीं है, बल्कि आपका आदर करता हूँ, लेकिन वह हर जगह मेरी तुलना आपसे करे, आफिस में भी व मेरे अन्य परिचितों में भी, तो औरों को तो सन्देह होगा ही। मैंने उसको यही सब करने रोका था, और कोई बात नहीं'' उसने सफाई दी।

''लेकिन मैं इसमें क्या कर सकता हूँ?'' निखिल ने परेशानी जताई।

''कठिनाई यह है कि'' राव ने परिस्थिति सामने रखी,''उसे अभी भी विश्वास है कि आप उसे अपना लेंगे, इसलिए वह बार-बार आपसे सम्पर्क करती है। शायद आपकी माताजी ने उसको ऐसा भरोसा दिया हुआ है। मैं जानता हूँ कि ऐसा नहीं होने वाला लेकिन उसे समझाना सरल नहीं है'' उसने कहा।

''ओह!'' निखिल को माजरा समझ में आ गया। युवती की पिछली बातों को याद कर तस्वीर कुछ साफ हो गयी, ''मुझसे क्या चाहते हो?'' उसने राव से पूछा।

''सब कुछ आप ही ठीक कर सकते हैं, मैं सोनू को बेहद चाहता हूँ, उसके बिना रह नहीं सकता, उसके लिए अपने सारे परिवार का विरोध मोल लिया है। परिवार से अलग होकर उसके साथ रहने के अलग व्यवस्था भी कर रहा हूँ लेकिन वह तो अब मिलना ही नहीं चाहती। उसे समझाऊँ भी तो कैसे?

इसीलिए आपसे प्रार्थना कर रहा हूँ'' राव का गला रुंध आया, उसकी आँखों में आंसू थे।

निखिल को समझ में नहीं आया कि वह क्या करे, राव ने उसे दुविधा में डाल दिया था। उसकी अपनी कोई समस्या नहीं थी लेकिन इस बात से तकलीफ हुई कि विवाद की जड़ उसे बना दिया गया है। उसने राव के कन्धे पर हाथ रखकर उसे सांत्वना जैसे दी।

''मैं देखता हूँ कि क्या हो सकता है, भगवान सब ठीक करेगा'' निखिल ने कहा और राव से विदा लेकर अपने घर को चल दिया।

घर में आकर निखिल ने माताजी से बात करना ठीक समझा। माताजी ने बताया कि सोनू पिछले कुछ दिनों से फिर से घर में आने लगी है।

''बेचारी के साथ बहुत बुरा हुआ'' माताजी ने युवती को लेकर हमदर्दी जतायी।

''क्या हुआ?'' निखिल ने पूछा।

''उसके आफिस में किसी ने धोखे से कागजों पर उसके साइन करा लिये और अब कहता है कि उससे शादी करनी होगी, न फेरे, न ही कोई रस्म, ऐसे भी कोई शादी होती है? बेचारी फँस गयी है'' माताजी ने बताया।

''ऐसा नहीं है, उनकी कोर्ट मेरिज होने जा रही है, युवती भी इसके लिये सहमत थी, मैं खुद उनके साथ था। कोई धोखा नहीं हुआ उसके साथ। वह बेवकूफी कर रही है'' निखिल ने समझाना चाहा।

''बेचारी नादान है, पछता रही है, अब तक एक दिन भी आफिस से बाहर साथ नहीं रहे दोनों। खाली कागजों में हुई बात से जबरन शादी के लिये क्यों माने? वह ठीक तो कर रही है इससे पीछे हट कर'' माताजी पूरी तरह से युवती के साथ थी।

''माताजी, सिर्फ कागजी नहीं, कानूनी शादी की बात है, कानून के लिहाज से वे पति-पत्नी बन जायेंगे। सब कुछ नोटिस देने से पहले सोचना चाहिए था।'' निखिल ने समझाना चाहा।

''बेचारी क्या करती? चाहती तो वह तुझे ही है, पहले से ही। कोर्ट मैरिज तो सिर्फ एक बहाना था, तुझे सोचने पर मजबूर करने के लिए। उस लड़के से दोस्ती तो उसने सिर्फ तुझे चिढ़ाने के लिए की थी। बेचारी कितना चाहती है तुझे! मुझे तो बहुत भली लगती है'' माता जी की सहानुभुति युवती के साथ थी, उन्हें समझा पाना सरल नहीं था।

माताजी की बातों से निखिल को हैरानी हुई। शादी का फैसला मजाक में नहीं लिया जाता, चिढ़ाने के लिए इतना बड़ा कदम थोड़े ही उठाया जाता है,

वह भी एकतरफा प्यार में , निखिल का यही मानना था। युवती द्वारा राव से इतनी जल्दी अलग होने का निर्णय लिये जाने और राव का हर हालत में विवाह करने पर जोर देने से मामला निखिल को थोड़ा पेचीदा लगने लगा। उसने पहले तो सोचा था कि उसे इस सारे पचड़े में नहीं पड़ना चाहिए, दोनों जैसा चाहें अपना मामला निपटा लें लेकिन माताजी की बातों ने उसे परेशान कर दिया। युवती का उसके घर फिर से आना जाना शुरू करने और माताजी के युवती के घोर पक्ष में होने से वह स्वयं को लपेटे में आता देखने लगा, उसे लगा कि युवती से साफ-साफ बातें किये बगैर और कोई चारा नहीं।

शाम को निखिल सीधे युवती के घर पहुँच गया, उसने उसकी मां से सोनू के विवाह के विषय में जानना चाहा। युवती की मां ने बताया कि उन्हें इस विषय में ज्यादा कुछ मालूम नहीं, लेकिन वह अगर राव से विवाह के लिये तैयार थी, तो वे भी सहमति दे देते। उन्होंने अनुमान लगाया कि समस्या राव के परिवार वालों से होगी, उन्होंने ही कोई बाध पैदा की होगी। युवती की मां ने यह भी कहा कि राव ने उन्हें बताया है कि उसके परिवार वालों ने उस के सामने पहले धार्मिक रूप से विधिवत् विवाह की शर्त रख दी, फिर सही मुहुर्त के इन्तजार कर लेने के नाम पर समय ले लिया, लेकिन उसी ने कोर्ट मैरिज के लिए जल्दबाजी की ताकि उसके घरवाले उसका रिश्ता कहीं और न कर दें। उन्होंने यह भी बताया कि बाद में वह परिवार वालों को साथ में लेने की बातें करने लगा। इससे दोनों में दूरी बढ़ गई, इस दूरी से और भी कई बातें होने लगी जिन्हें कुछ तो राव के परिवार वालों ने हवा दी और कुछ अटकलें अफ्फवाहें भी चल पड़ीं। उन्होंने बताया कि सोनू अब किसी भी हालत में राव से विवाह करने को तैयार नहीं और किसी की भी बात सुनना नहीं चाहती। उन्होंने निखिल से अनुरोध किया कि हो सके तो वह सोनू को समझा दे। सोनू उसकी बहुत इज्जत करती है, उसकी बात मान लेगी।

युवती की मां की बातें, राव के और निखिल की मां की बताई बातों से काफी अलग थीं, निखिल का सिर चकरा गया लेकिन उसने राहत की सांस ली, यहां मामला इज्जत करने का ही था, उसे ही चाहने का नहीं। निखिल कुछ सहज हो गया, युवती की माता चाय ले आयी, वह इत्मीनान से चाय पीने लगा।

थोड़ी देर में युवती आ गई, वह निखिल के घर से ही आ रही थी, उसे अपने घर में पाकर वह काफी खुश हुई। उसे इस बात पर हैरानी हुई कि उसे देखकर निखिल वैसा असहज नहीं हुआ जैसा पहले होता था।

''आप यहां?'' युवती ने चौंकते हुए पूछा, ''अचानक?''

''सोचा तुम्हारे हाल-चाल पूछ लूँ, क्या चल रहा है'' निखिल ने उसकी ओर देखा।

''सब कुछ तो आपको मालूम ही है'' उसने उत्तर दिया।

''आज कुछ फुर्सत में हूँ, थोड़ा बहुत बातें हो सकती हैं'' निखिल ने प्रस्ताव किया।

''जरूर! मै खुद ही आपको सब कुछ बताना चाहती थी'' युवती ने तत्परता दिखाई। निखिल ने युवती की मां से उसके साथ एकान्त में कुछ बातें करने की अनुमति चाही। मां को कोई आपत्ति नही थी, वे स्वयं भी यही चाहती थीं।

युवती निखिल को अपने कमरें में ले गयी। कमरा सुव्यवस्थित था। कोने में एक मेज पर करीने से पुस्तकें और पत्रिकायें रखी थीं, साथ में एक टैबिल लैम्प और सामने कुर्सी रखी। निखिल को कुर्सी पर बैठने का इशारा कर युवती साथ रखे बैड पर बैठ गई। टैबिल लैम्प कुछ इस तरह रखा था कि रोशनी कुर्सी पर बैठे व्यक्ति के चेहरे पर नहीं पड़ती थी। मेज पर पढ़ने के साथ रोशनी बेड पर भी पड़ती थी। मेज पर रखे शीशे के नीचे एक कोने पर एक छोटी सी फोटो थी, जिसके ऊपर शीशे पर हल्की लाली लगी थी, निखिल ने ध्यान से देखा, यह उसी की फोटो थी।

फोटो ने निखिल को परेशान कर दिया, उसने युवती के चेहरे पर देखा, वहाँ मासूमियत झलक रही थी। उसने युवती की ओर इस तरह कभी नहीं देखा था, झट से उससे नजरें हटा लीं।

''तो शुरू करें?'' निखिल ने चुप्पी तोड़ी।

''हुंह!'' युवती जैसे नींद से जागी। वह बेड का कोना पकड़े अपने दोनों पैरों के अंगूठे आपस में मल रही थी। नीचे की हुई नजर उठाकर उसने निखिल की ओर देखा।

''राव के साथ गड़बड़ी कहां से शुरू हुई?'' निखिल ने सीधे सवाल किया।

''शुरू से ही! उससे शादी करने का फैसला ही गलत था!'' युवती का चेहरा तन गया।

''क्यों क्या हुआ?'' निखिल ने जानना चाहा।

''काम्प्लेक्स है उसमें! वह मुझसे नहीं, मेरी नौकरी से शादी करना चाहता था'' युवती ने मुंह बिचका कर कहा।

''लेकिन तुम क्यों तैयार हुई?'' निखिल ने पूछा।

''सच जानना चाहेंगे?'' युवती जैसे पहले से ही तत्पर थी।

''बिल्कुल।'' निखिल ने सहमति जताई।

''सब कुछ आप से ही शुरू होता है और अब आप पर ही खत्म होगा'' युवती बोली।

''कैसे?'' निखिल चौंका।

''मैं जान गई हूँ कि आप के सिवा किसी को चाह ही नहीं सकती, मै ही खुद को धोखा दे रही थी, किसी और का कोई कसूर नहीं'' युवती ने पछतावा दिखाने के स्वर से कहा। निखिल चुपचाप सुनता रहा।

''मैं खुद हैरान हूँ कि मुझे क्या हो गया था, क्यों मैं राव की मीठी-मीठी बातों में आ गई, जबकि मैं आपके अलावा कुछ और सोचती ही नहीं थी'' युवती ने सफाई दी।

''लेकिन अभी तो तुम राव को दोषी बता रही थी?'' निखिल ने हैरानी जताई।

''उसने मेरी आँखें खोल दीं, ओह गॉड! कैसी उलझ गई थी मैं'' युवती ने घुटनों पर मुक्के मारते हुए आँखें भींच लीं।

''हुआ क्या था?'' निखिल ने थोड़ा खीझे स्वर से पूछा।

''बातचीत में राव से जब कभी मै आपका नाम लेती तो वह कुछ परेशान हो जाता, वह या तो बात बदल देता या कभी रोक भी देता'' युवती ने बताया।

''वह अचानक ऐसा करने लगा?'' निखिल ने जानना चाहा।

''नहीं, शुरूआती मुलाकात के दौरान तो आप का जिक्र होता ही नहीं था, मुलाकात दोस्ती में बदल जाने पर कभी-कभी आपकी बात हो जाती, लेकिन वह चुपचाप सुन लेता। उससे शादी का फैसला हो जाने के बाद वह कुछ बदल गया, आपकी नाम सुनते ही वह बिदक जाता'' युवती ने अफसोस सा जताया।

''और क्या हुआ?'' निखिल ने शान्त भाव से पूछा।

''उसने बताया कि आप को लेकर उसके घर वाले मेरे बारे में कितना बुरा सोचते हैं, छीः।'' युवती ने मुंह बिचकाया।

''क्या उसने यह भी बताया कि वह भी ऐसा ही सोचता है?'' निखिल ने जानना चाहा।

''नहीं। लेकिन वह आपसे दूर रहने, कोई सम्पर्क न रखने और कभी न मिलने पर जोर देने लगा'' युवती ने राव से नाराजगी दिखाई।

''तो इसमें गलत क्या है? कोई पुरुष अपनी होने वाली पत्नी से किसी दूसरे की बातें क्यों सुनेगा? कोई और गलतफहमी पैदा होने से रोकने में बुराई क्या है? उसके घरवालों को मनाने के लिये यह जरूरी भी है। जब वह स्वयं बुरा नहीं सोचता तो परेशानी क्या है?'' निखिल ने कई सवाल कर डाले।

''आपसे कोई वास्ता न रहे, मिलूँ भी नहीं, बात तक न हो, यह कहां तक ठीक है? तभी मैंने यह महसूस किया कि यह नहीं हो सकता। मैने उसे साफ-साफ बता दिया।'' गुस्से में युवती की सांसें तेज हो गई।

''क्यों? क्यों नहीं हो सकता ऐसा?'' निखिल ने उसके चेहरे की ओर देखा।

''इसलिए कि मै आपके बिना नहीं रह सकती, आप अपनायें या ठुकरा दें, लेकिन......'' युवती कुछ कहते कहते रुक गई।

''लेकिन क्या?'' निखिल पूरी बात जानना चाहता था।

''मैं जानती हूँ कि आप आसानी से मानेंगे नहीं कि'' युवती फिर रुक गई। नजरें नीची किये उसने निखिल की ओर देखा और धीरे से मुस्करा दी।

''क्या कहना चाहती हो? साफ-साफ कहां'' निखिल को कुछ समझ नहीं आ रहा था।

''माताजी कह रही थीं कि'' युवती की जुबान फिर रुक गई।

''किसकी माताजी? क्या कह रही थीं?'' निखिल कुछ उत्तेजित हो गया।

''आप की माताजी'' कह कर युवती फिर मौन हो गई।

''क्या कह रही थीं माताजी?'' निखिल का स्वर तीखा हो गया।

''माताजी कह रही थीं कि आप भी मुझे चाहते हैं लेकिन'' युवती कहते कहते रुक गई, प्रतिक्रिया के लिए उसने निखिल की ओर देखा।

''बोलती रहो, मैं सुन रहा हूँ'' निखिल ने पीठ कुर्सी पर टेक दी।

''माताजी कह रही थीं कि चाहते तो आप भी बहुत हैं मुझे, उनसे अक्सर तारीफ भी करते हैं, अच्छा भी मानते हैं, लेकिन जान बूझ कर दूरी दिखाते हैं'' युवती कनखियों से निखिल की तरफ देख कर मुस्कराई।

''अच्छा? और तुम्हें क्या लगता है?'' निखिल ने कुछ आराम से पूछा।

''माताजी सच कह रही हैं, उन्होंने तो मुझे बहू मान लिया है'' युवती थोड़ा शरमाई।

''तुम्हें यह कबसे लगने लगा?'' निखिल जैसे छानबीन में जुट गया।

''शुरू से ही।'' युवती झट से बोल गई।

''शुरू माने?'' निखिल सही उत्तर चाहता था।

''जब से हम मिले हैं'' युवती धीमे से बोली।

''या जब से माताजी ने तुमसे यह सब कहा?'' निखिल ने पुष्टि करनी चाही।

''लेकिन मैं तो आपको पहले से ही चाहती हूँ'' युवती ने सिर नीचा किये ही जोर दिया।

''प्फिर राव बीच में कहां से आ गया?'' निखिल ने कुरेदा। युवती ने चुप्पी साध ली।

''अगर तुम मुझे चाहती थीं और तुम्हारे विचार से मैं भी तुम्हें चाहता था तो राव से शादी करने का फैसला कैसे हो गया?'' निखिल ने जोर देकर कुछ तीखेपन से पूछा।

''वो तो ..... यों ही ...'' युवती ठीक से बोल नहीं पाई।

''मजाक था या बचपना?'' निखिल ने शब्द सुझाया।

''बेवकूफी थी!'' युवती सिर नीचा किये रही। निखिल संयत बना रहा, उसने युवती के कुछ और बोलने के लिए प्रतीक्षा की, लेकिन वह कुछ नहीं बोली।

''सच तुम जानती हो, लेकिन बोल नहीं रही हो। तुम्हें खुद नहीं पता कि तुम चाहती क्या हो, इसलिए खुद ही परेशान हो, साथ में राव भी, और मैं इसमें बेमतलब उलझा दिया गया हूँ।'' निखिल ने चुप्पी तोड़ी। युवती चुप बैठी रही। उसने कोई प्रतिक्रिया तक नहीं दी।

''राव के साथ शादी का फैसला तुमने सोच समझ कर लिया था और उसमें अपने और राव के घरवालों की सहमति भी जरूरी नहीं समझी थी। दोनों एक दूसरे को पसन्द थे, आपस में चाहने लगे थे, इसीलिए तैयार हुए। किसी का दबाव तो था नहीं, यह प्यार नहीं तो और क्या है?'' निखिल ने शान्त भाव से पूछा। युवती ने सिर उठाकर उसके चेहरे पर कुछ अचरज से देखा जैसे उस पर आये भाव पढ़ना चाहती हो।

''दोनों की नासमझी और कुछ गलतफहमी के कारण थोड़ी दूरी क्या आ गई, तुमने उसे दूसरी ही तरफ मोड़ दिया जबकि कोई गम्भीर बात नहीं थी। माताजी, तुम्हारी मां, राव और तुमने जो कुछ कहा है, वह एक दूसरे से काफी अलग है। इससे तुम लोगों के बीच आई दूरी तो झलकती है लेकिन असली कारण साफ नहीं है'' निखिल ने युवती की ओर देखा, वह ध्यान से सुन रही थी, उसकी आँखे फैल रही थीं और निखिल के चेहरे पर टिकी थीं। वह फिर भी चुप ही रही।

''मैं बीच में न तो कभी था और न हूँ, बल्कि जबरन घसीटा गया हूँ। यदि राव को मुझ से कोई समस्या थी तो तुमसे दूरी उसकी ओर से बढ़नी चाहिए थी, यदि यह केवल तुम्हारी नौकरी के कारण शादी का इच्छुक होता तो ऐसा रिश्ता उसके परिवार वाले कहीं और करा सकते थे, वह परिवार से विद्रोह क्यों करता? तुम्हारे इतनी दूरी दिखाने के बाद भी वह तुम्हें क्यों चाहता है? उसे क्या कमी है? कम से कम राव के बारे में तो तुम्हें सोचना चाहिये था। उसकी भावनाओं को कितनी चोट पहुंची होगी?'' निखिल बोलता चला गया, प्रतिक्रिया

के लिए उसने युवती के चेहरे पर देखा।

''जी!'' युवती ने अपना मौन तोड़ा ''मैं सुन रही हूँ, आप कहते रहिये प्लीज!'' उसने अनुरोध किया।

निखिल थोड़ा ठिठका, वह जानना चाहता था कि युवती पर उसके कहे का कितना असर हो रहा है, युवती की बात से उसे भरोसा हुआ।

''मुझे लगता है कि माताजी की बातों से तुम्हारा इरादा बदला, उस दिन कोर्ट में तुम काफी खुश थीं'' निखिल ने अपना अनुमान बताया।

''मातजी की बातों में अपनापन था, वे राव के साथ मेरे रिश्ते से खुश नहीं थीं, उन्होंने मुझे काफी समझाया भी'' युवती ने निखिल के अनुमान को सही ठहरा दिया ''माताजी कह रही थीं कि.....'' उसने निखिल की ओर देखा।

''क्या कह रही थीं मांजी?'' निखिल सुनना चाहता था।

''कि वे आपको समझायेंगी और देर-अबेर आप मान ही जायेंगे, दोनों एक दूसरे के लिए बने हैं'' युवती ने बताया।

''बस इसी बात पर तुमने राव को छोड़ दिया?'' निखिल ने आश्चर्य दिखाया।

''मुझे आप अच्छे लगते ही थे, मैं हमेशा से ही आपको चाहती थी। राव के लिए तो मजबूरी में हामी भरी थी, आपकी बेरुखी के बाद!'' युवती ने सफाई दी।

''ओह!'' निखिल ने अपने माथे पर हाथ मारा, ''तुमने अपना तमाशा बना दिया है, मातजी को कुछ पता नहीं! वे अपने हिसाब से सोचती हैं।'' निखिल ने उनके लिए गुस्सा दिखाया।

''माताजी की बात हल्के में तो ली नहीं जा सकती थी, मैं इसे कैसे टालती? मुझे तो माननी ही थी।'' युवती ने तर्क दिया।

''लेकिन मैने इस बारे में कभी सोचा ही नहीं, तुम्हें कभी इस नजर से नहीं देखा, हमेशा एक स्टूडेन्ट ही मानता रहा। अगर कभी तारीफ भी की तो तुम्हारी पढ़ाई, लगन और होशियारी की ही। तुम्हें मैंने यह साफ भी कर दिया था, कुछ दूरी भी बनाये रखी थी, इसके बाद भी तुम्हारा माताजी की बातों में आ जाना, उसकी आड़ में यह सब करना ठीक नहीं था। अपनी जिन्दगी की तुम मालिक हो, लेकिन मुझे इस तरह उलझाने का तुम्हें कोई हक नहीं!'' निखिल उठ खड़ा हुआ।

युवती ने निखिल का हाथ पकड़ लिया, ''प्लीज!'' उसने रुआंसे स्वर में कहा ''रुक जाइये, अब जो भी हो, हल आप ही निकालेंगे, जो भी फैसला देंगे, मैं मानूँगी!'' कहते-कहते वह भी उठ खड़ी हुई, उसकी आँखों में आँसू थे।

निखिल हाथ छुड़ाकर कमरे से बाहर आ गया।

कमरे के बाहर युवती की मां परेशान सी खड़ी थी, निखिल के इतनी देर कमरे में रहने से उसे बातचीत की गम्भीरता का अन्दाजा हो गया। निखिल को उनकी अनदेखी कर घर से सीधे निकल जाना उचित नहीं लगा, वह वहीं सोफे पर बैठ गया। युवती की माता उसके लिए पानी लेने चली गई।

सोफे के बगल में कोने में फोन रखा था, युवती अचानक कमरे निकली और फोन के पास एक पर्ची रखकर अन्दर चली गई। पर्ची पर एक नम्बर लिखा था और नीचे राव का नाम। इशारा साफ था, अगर वह ठीक समझे तो राव से बात कर ले।

ऐसी बात फोन पर नहीं हो सकती थी इसलिये निखिल ने फोन से राव को वहीं बुला लिया। राव के आने के बाद हाल-चाल पूछने, इधर-उधर की बातों के साथ ही चाय आ गई। निखिल को समझ नहीं आया कि बात कहां से शुरू करे। उसने राव से सीधे सवाल कर डाला, ''तो कब कर रहे हैं आप लोग शादी?''

राव को ऐसे ही किसी सवाल की आशा थी, ''जब सोनू कहे!'' उसने तपाक से जवाब दिया। निखिल ने युवती की माता को उसे बुला लाने का इशारा कर दिया।

''यहीं आ जाओ!'' युवती को कमरे से निकलते देख निखिल ने कहा। युवती दूसरे सोफे पर बैठ गई।

''भई, राव ने सब कुछ तुम पर छोड़ दिया है, जब तुम कहोगी, तभी शादी होगी'' राव के कन्धे पर हाथ रखकर निखिल ने युवती की ओर देखा।

युवती ने राव की ओर देखा, दोनों की नजरें मिली, युवती को राव की आंखों में मान जाने के लिए अनुरोध जैसा भाव दिखाई पड़ा। चेहरे पर हल्की सी मुस्कराहट लाते हुए उसने निखिल की ओर देखा, ''आप रहेंगे ना इसमें?'' उसने सवाल किया।

''क्यों नहीं? बशर्ते इन्हें आपत्ति न हो'' निखिल ने राव की ओर इशारा कर मजाक जैसा किया, राव ने मुस्कराते हुए गर्दन दायें बायें हिला दी। थोड़ा रुक कर निखिल ने दोनों की ओर देखा, वे दोनों जैसे आंखों में ही कुछ सलाह कर रहे हों।

''हां तो कब कर रहे हो शादी?'' निखिल ने इस बार दोनों से पूछा।

''जब आप कहेंगे'' युवती जैसे कुछ कहने को बेताब थी।

निखिल ने लम्बी सांस ली, जैसे भारी राहत मिल गई हो, ''भई ये फैसला तो

आप दोनों को ही करना है'' उसने कलाई पर बंधी घड़ी पर देखा, ''ओह! मुझे देर हो गयी है, जाना होगा'' वह उठ खड़ा हुआ।

राव ने दोनों हाथों से निखिल का हाथ कसकर दबा दिया, ''थैंक्स!'' वह इससे आगे कुछ नहीं बोल पाया। युवती के चेहरे पर चमक लौट आई थी। कमरे के कोने पर युवती की माता आँखों में आ गये आँसुओं को रोकने की कोशिश कर रही थी।

राव और युवती, दोनों निखिल को दरवाजे तक छोड़ने आये, युवती ने चिटकनी नीचे की। दरवाजा खुल चुका था, निखिल बाहर निकल आया।

'अलविदा!' उसने दोनों को मन ही मन कहा। अचानक उसे मातजी का ध्यान हो आया 'तो माताजी कह रहीं थीं कि ...' उसे हंसी आ ही गई, 'बेचारी माताजी!'

किनारे की चाहत

अभय शहर के जिस होटल में रुका था वहां लोग केवल बिजनेस या आफिस के काम से ही आते थे और रविवार को प्रायः नहीं रुकते थे, उस दिन केवल एक वेटर ही वहाँ रहता, अन्य सारे वेटर भी छुट्टी कर जाते। अपना शहर सैकड़ों मील दूर होने के कारण सप्ताहान्त में अभय को उसी होटल में रुकना पड़ गया।

नाश्ता पूछने के लिये सुबह की चाय लेकर वेटर उसके कमरे में आ गया, ''मैनेजर साहब किसी को बता रहे थे कि आप किसी पहाड़ी इलाके से आये हैं साहब?'' मेज पर चाय रखते हुए उसने अभय से जानना चाहा। अभय ने उत्तर देने के स्थान पर उससे ही सवाल कर दिया, ''तुम कहाँ के रहने वाले हो?''

''साहब! हम भी बहुत हरे-भरे पहाड़ी इलाके से आये हैं, जहाँ चारों तरफ कुदरती नज़ारे दिखते हैं, हमें वहाँ की बहुत याद आती है!'' वेटर जैसे खो सा गया।

''कहां से?'' अभय ने उसकी तरफ देखा।

''हम पडोसी देश से हैं साहब!'' वेटर ने देश का नाम लेते हुए तपाक से उत्तर दिया।

''वह तो काफी बड़ा देश है, वहाँ किस जगह के रहने वाले हो?'' अभय ने चाय पीते-पीते सवाल किया।

''वहां को हजूर!'' एक शहर का नाम लेते हुए वेटर अचानक अपनी भाषा में बोल उठा। अभय ने चौंक कर उसे देखा।

''मेरा मतलब है कि हम उस प्यारे शहर के रहने वाले हैं साहब!'' वेटर ने सफाई जैसी दी और 'अब मैं जाता हूँ साहब !' कह कर कमरे से निकल गया। अभय को ध्यान आया कि इस शहर का नाम वह पहले भी कहीं सुन चुका है, क्योंकि यह एक प्रसिद्ध पर्यटक केन्द्र है। उसे याद आया कि यह नाम उसने कुछ दिनों पहले भी पढ़ा है। उस देश के महाराजा और उनके परिवार के सदस्यों की हत्या के समय उनके चचेरे भाई उसी शहर में ही थे और वे वहाँ से विमान द्वारा देश की राजधानी आये थे।

'तो ये वो शहर है!' अभय ने मन ही मन सोचा। उसने तय किया कि वह वेटर से इस शहर के विषय में और जानकारी हासिल करेगा।

''ये वही इस शहर है ना?'' अभय ने महाराजा के परिवार की हत्या की चर्चा

करते हुए वेटर से सवाल किया। उत्तर देने की बजाय वेटर अचानक सुबकने लगा, उसकी आंखों से आँसू टपकने लगे।

''क्या हुआ?'' अभय ने हैरानी से पूछा। वेटर का सुबकना नहीं रुका, वह काफी देर बाद संयत हो पाया।

''साहब महाराज तो हमारे भगवान थे। हम लोग उन्हें भगवान का अवतार मानते थे। दुष्टों ने उन्हें ही मार डाला।'' वेटर काफी बैचेन था।

''किसने मारा उन्हें? सुनने में तो यह आया था कि उनके बेटे ने ही उन्हें मारा।'' अभय ने उसकी ओर देखा।

''इस घटना ने हमारे शहर को कलंकित कर दिया साहब!, वहीं सारा षडयंत्र रचा गया। धरती के स्वर्ग पर नरक के सौदागरों की छाया पड़ गई। वह दुष्ट अपने आप तो वहाँ पर बैठा रहा और उसके बेटे ने राजकुमार का नकाब पहन कर सबकी हत्या कर दी। मैं तब से उस शहर में नहीं गया।'' वेटर ने बताया।

पड़ोसी देश के घटनाक्रम के विषय में अभय पत्र-पत्रिकाओं में काफी कुछ पढ़ चुका था, वह इस विषय में अधिक बात करने का इच्छुक नहीं था। वह तो बस शहर के विषय में जानना चाहता था, विषयान्तर के लिए उसने वेटर की ओर देखा।

''और क्या-क्या है तुम्हारे शहर में?'' उसने सवाल किया।

''मै सच कह रहा हूँ साहब ! हमारे देश का बच्चा बच्चा यह बात जानता है लेकिन डर के मारे कुछ नहीं कहता।'' वेटर अभी भी राजा की चर्चा पर अटका था।

''तुम शहर के बारे में बताओ!'' अभय ने जोर दिया।

''वही तो कर रहा हूं साहब!'' वेटर अपनी बात कहे बगैर नहीं रहने वाला था, ''लोग बताते हैं कि सारा षडयंत्र रचते समय महाराजा का भाई हमारे शहर के उस होटल में ही था जिसमें मैं काम करता था और होटल के मालिक की उससे दोस्ती है।''

''ठीक है, लेकिन वह शहर तो एक बडा़ टूरिस्ट सेन्टर है, वहां ऐसा क्या है कि इतने लोग जाते हैं?'' अभय ने बात बदलनी चाही।

''साहब! आप तो बहुत अच्छे आदमी हैं लेकिन वो होटल मालिक बहुत दुष्ट है। मैं उसे जिन्दा नहीं छोड़ूंगा।'' वेटर के नथुने घृणा और क्रोध से फड़फड़ा रहे थे।

''मैं उस शहर के बारे में पूछ रहा हूं और तुम दूसरे किस्से सुना रहे हो!'' अभय ने झल्लाहट दिखाई।

''साहब मैंने तो उस भयानक घटना के बाद शहर ही छोड़ दिया था, कभी वहां न जाने की कसम के साथ, लेकिन आप को देखकर सब कुछ फिर से याद आ गया।'' वेटर मुठ्ठी के पिछले भाग से आंखों में आ गये आंसू पोंछने लगा।

''मुझे देखकर क्यों?'' अभय ने हैरानी से उसकी ओर देखा।

''नहीं बता सकता साहब!'' वेटर ने चुप्पी साध ली।

''अच्छा छोड़ो! तुम यह बताओ कि शहर है कैसा? क्या-क्या है वहां?'' अभय ने विषय बदल दिया।

वेटर कुछ संयत हो गया, ''उस शहर का वर्णन नहीं हो सकता साहब! कोई तस्वीर, कोई विवरण, उसका बखान नहीं कर सकता। उस शहर का सच्चा आनन्द तो वहीं जा कर लिया जा सकता है। एक से बढ़ कर एक नजारे, सुन्दर पहाड़ियां, साफ-सुथरी झीलें, भले और मेहनती लोग, आलीशान बंगले और होटल, सर्पीली सड़कें, घने जंगल, सजीले बाजार और सुहावना मौसम! क्या नहीं है उस शहर में? हो सके तो जरूर जाइये साहब!'' वेटर अपनी रौ में आ गया था। वह काफी देर तक उस शहर के विषय में बताता रहा।

रविवार को अभय के पास समय ही समय था, दोपहर के भोजन के बाद वेटर फिर से आ गया। इस बार उसके पास कुछ फोटोग्राफ और उसके देश की पत्र-पत्रिकाओं की कतरनें थीं। रमणीक दृश्यों की पृष्ठभूमि में आकर्षक बंगले, बाजार के दृश्य, विदेशी पर्यटकों की छोटी छोटी टोलियां और झील में तैरती नावें। कुछ फोटो पुरानी पड़ चुकी थीं। वेटर एक-एक फोटो दिखा कर उसके विषय में विस्तारपूर्वक बताता रहा। उसने उस शहर का संजीव चित्र सामने ला दिया। उस शहर के वर्णन ने अभय को जैसे मंत्रामुग्ध सा कर दिया। उसके मन में इस शहर को देखने की इच्छा जोर मारने लगी।

दो तीन माह बाद ही उसके सामने ऐसा अवसर आ गया। ऑफिस के काम से उसे उस देश की सीमा के पास ऐसे केन्द्र में जाना था, जहाँ से यह शहर काफी निकट था। वहाँ से छः सात घंटे में इस शहर तक पहुँचा जा सकता था। इस केन्द्र पर उसे पूरे दस दिन रुकना था, इस बीच सप्ताहांत के साथ एक अतिरिक्त अवकाश भी था। इस तरह उसके पास पूरे दो दिन और दो-तीन रातें वहां पर बिताने का अवसर उपलब्ध था। केन्द्र पर पहुँचने के एकाध-दिन के अन्दर अभय ने जरूरी पूछताछ कर वहाँ जाने की योजना बना डाली।

केन्द्र के निकट के उस देश की सीमा से शहर के लिए या तो साधारण बसें उपलब्ध थीं या टूरिस्ट टैक्सी। बसों में समय तो अधिक लगता

ही था, सीटें भी कठिनाई से मिल पाती थीं जिसके लिए लम्बी लाइन में लगना पड़ता। टैक्सियां साधारण न होकर बड़ी ए.सी. वाली कारें थी और काफी महंगी थी। जानकारी से यह भी पता चला कि शहर में होटल भी काफी महंगे हैं। अभय को यह भी बताया गया कि बेहद महंगी और महत्वपूर्ण या संवेदनशील चीजें साथ नहीं ले जानी चाहिये, भुगतान वापिस आकर करना चाहिये और टैक्सी किसी परिचित के माध्यम से ही लेनी चाहिये। अभय यह सब पूछताछ कर ही रहा था कि अचानक एक व्यक्ति उसके सामने आ खड़ा हुआ।

''आप को भी वहीं जाना है ना?'' शहर का नाम लेते हुए उस व्यक्ति ने अभय से पूछा। अभय ने चौंकते हुए उससे जानना चाहा कि वह यह बात कैसे जानता है। वह व्यक्ति सकपका गया, कुछ देर बाद जैसे उसे कुछ सूझा, ''किसी ने मुझे बताया है कि आप वहाँ के बारे में लोगों से पूछताछ कर रहे थे।''

''हां, जाना तो चाह रहा हूं लेकिन आप कौन है?'' अभय ने उसकी ओर देखा। उस व्यक्ति ने बताया कि वह एक अन्य विभाग का स्थानीय अधिकारी है और अपने किसी बड़े अधिकारी की उस शहर में प्रस्तावित यात्रा की तैयारी के लिए वह भी वहाँ जाना चाहता है। वह अभय के साथ जाने को तत्पर था। अभय के लिए यह राहत की बात थी क्योंकि इस तरह टैक्सी और होटल का किराया तो दोनों में आधा-आधा बंटता ही, यात्रा में साथ की सुविधा भी हो जाती। स्थानीय अधिकारी के अनसार उसका मार्ग पर अच्छा खासा परिचय भी था और वह स्थानीय भाषा भी समझ-बोल सकता था। अभय उसके साथ जाने के लिए सहमत हो गया।

उस अधिकारी को अभय को लेने आते-आते शाम हो गयी और चलते-चलते छः-सात बज गये। रात को बारह-एक बजे से पहले उस शहर में पहुँच पाना सम्भव नहीं था। उनकी टैक्सी रात के आठ-साढ़े आठ बजे एक स्थान पर भोजन के लिए रुक गई। खाने के होटल के बाहर पीने-पिलाने की व्यवस्था भी थी, जहाँ एक पुरुष व युवती आपस में जोरों से बहस कर रहे थे, साथ का अधिकारी उनके पास चला गया। पुरुष उसका परिचित निकल आया था, दोनों में कुछ बातें हुई और अधिकारी अभय के पास चला आया। उसने अभय को बताया कि वह पुरुष और युवती भी उसी शहर जा रहे थे लेकिन उनकी कार खराब हो गई है और उनका उस शहर में पहुँचना बहुत जरूरी है। उसने प्रस्ताव किया कि यदि अभय और वह, उन दोनों को साथ ले लेते हैं तो उनकी समस्या सुलझ जायेगी और टैक्सी का किराया भी दो के स्थान पर चार

में बंट जायेगा। अभय को कोई आपत्ति नहीं हुई। भोजन से पहले साथ के अधिकारी और साथी पुरुष ने अभय से इस तर्क के साथ ड्रिंक्स में साथ देने का आग्रह किया कि इससे सर्द इलाके में कुछ राहत तो मिलेगी ही थोड़ा बहुत नींद भी आ जायेगी जिससे दूसरे दिन सैर सपाटे में लाभ रहेगा। अभय ने उसका आग्रह नहीं माना। वह पीने से परहेज करता था और उसे ड्रिंक्स की क्वालिटी के विषय में कोई जानकारी नहीं थी व न ही उसे लेने के तरीके के बारे में। वह अपनी बात पर डटा रहा।

साथ का अधिकारी और पुरुष अभय की जिद से परेशान हो गये। उन्होंने एक दूसरे की ओर देखा, कुछ संयत होने की कोशिश की और उठ खड़े हुए जैसे कुछ याद आ गया। वे दोनों बगल के पी.सी.ओ. में चले गये। युवती वहीं बैठी रहीं। पी.सी.ओ. में कोई पहले से बात कर रहा था। अधिकारी और साथी पुरुष बाहर प्रतीक्षा करने लगे। वे आपस में कुछ सलाह जैसी कर रहे थे।

इस बीच अभय के लिये चाय तैयार हो गयी, साथी पुरुष ने बीच में ही वेटर से चाय ले ली और स्वयं लाकर अभय के सामने रख दी। अभय ने युवती की ओर देखा, युवती ने बताया कि वह चाय नहीं पीती। अभय ने चाय की चुस्कियां लेनी शुरु की, चाय में थोड़ी कड़वाहट थी, लेकिन बनी अच्छी थी। चाय के साथ अच्छे स्नैक्स भी थे, अभय की चुस्कियां जारी रहीं, लेकिन स्वाद इतना कसैला था कि उसने चाय छोड़ दी। इस बीच अधिकारी और साथी पुरुष पी.सी.ओ. के अन्दर चले गये। युवती जैसे इसी ताक में थी, वह तेजी से जाकर पी.सी.ओ. के दरवाजे की ओट में खड़ी हो गई। पी.सी.ओ. का दरवाजा फिर से खुलते ही वह साथ बने लेडीज़ बाथरूम में चली गई। अधिकारी और साथी पुरुष वापिस अभय के पास आ गये। वे दोनों काफी गम्भीर थें। दोनों ने अपने अपने गिलास खाली किये और अभय के लिए सूप का आर्डर कर दिया।

''सर हम लोग थोड़ा और लेंगे, फिर खाना खायेंगे, तब तक आप सूप पी लीजिये। उसने अभय की ओर देखा।

सूप भी अच्छा था लेकिन स्वाद में कुछ चाय जैसा ही कसेलापन था, अभय ने उसे भी एक ओर रख दिया। साथी पुरुष अभय की परेशानी समझ गया।

''सर यहां का पानी ही ऐसा है, स्वाद में थोड़ा कसैला है इसीलिए लोग चाय या सूप के बजाय ड्रिंक्स लेते हैं लेकिन सेहत के लिए बुरा नहीं है।'' उसने अभय को बताया। अभय ने सूप का एकआध सिप और ले लिया। ड्रिंक्स न लेते भी अभय का सिर कुछ चकराने लगा। उसकी आवाज भारी होने लगी।

युवती बाथरूम से वापिस आ गई। एक टेबिल पर चारों के लिए खाना लग गया।

''सर एक प्रॉब्लम आ गई है'' खाना शुरू होने के बाद अधिकारी ने अभय की ओर देखते हुए कहा।

''क्या!'' अभय ने पूछा ।

''दरअसल जिन बड़े अधिकारी के दौरे की तैयारी के लिए मैं जा रहा था, उनका दौरा कैंसिल हो गया है। अब मेरे उस शहर में जाने का कोई मतलब नहीं है। मुझे यहीं से वापिस जाना पड़ेगा।'' उसने बताया।

''लेकिन !'' अभय कुछ कहना चाहता था। अधिकारी ने उसके हाथ पर अपना हाथ रख दिया, ''परेशान मत होइये सर! खर्च का मैं अब भी आधा दूंगा लेकिन साथ नहीं जा संकूगा। आप के साथ के लिए मैडम हैं, ये शहर के बारे में सब कुछ जानती हैं, आपकी सहायता कर देंगी। आप को कोई कठिनाई नहीं होगी सर। क्यों मैडम?'' अधिकारी ने युवती की ओर देखते हुए पूछा।

''हाँ हाँ ! नो प्रोब्लम।'' युवती ने हामी भर दी ''ये भी तो साथ में है!'' उसने साथी पुरुष की ओर इशारा किया।

''मुझे भी वापिस होना पड़ रहा है, बहुत जरूरी काम आ गया है'' हाथ में शराब का पूरा गिलास भरे हुये कुछ लड़खड़ाते से साथी पुरुष ने भी मजबूरी जताई और अभय के ऊपर गिर गया। गिलास की पूरी शराब अभय के कपड़ों पर गिर गयी।

''सॉरी!'' साथी पुरुष हाथ जोड़ कर पीछे मुड़ बगल की एक कुर्सी पर पसर गया। खाना समाप्त कर अधिकारी, युवती और अभय, तीनों टैक्सी के पास आ गये।

अभय को अचानक तेज नींद का आभास होने लगा, उसे खड़े रहने में कठिनाई होने लगी। अधिकारी ने सहारा देकर उसे कार में बिठा दिया। बगल में दूसरी ओर से युवती भी बैठ गयी। अधिकारी ने अभय से हाथ मिला कर विदा ली, युवती से कुछ बात की और अलग हट गया।

टैक्सी उस शहर की ओर चल दी, अभय गहरी नींद में सीट पर पसर गया। डेढ़ दो घंटे बाद टैक्सी एक सुनसान से स्थान पर रुक गयी। बाहर कुछ शोर शराबा था, अभय की नींद कुछ टूटी, वह कुछ पूछना चाहता था, लेकिन युवती ने अपने होठों पर अंगुली रख कर अभय को चुप रहने का इशारा कर दिया। युवती ने ड्राइवर से कुछ बात की, ड्राइवर बाहर उतरा। इस बीच युवती ने सीट के नीचे से शराब की बोतल निकाल कर कुछ शराब सीट पर उड़ेल

दी। ड्राइवर के साथ दो-तीन लोग कार में आये, अन्दर तांक-झांक की और टैक्सी को जाने का इशारा कर दिया। अभय को फिर से नींद आ गयी, ऐसी घटना घंटे-डेढ़ घंटे बाद जैसे दोहरा दी जाती, रात में तीन-चार बार ऐसा हुआ। एक स्थान पर तो ड्राइवर के साथ हाथापाई भी हुई। जैसे-तैसे रात के ढ़ाई-तीन बजे टैक्सी उस शहर में पहुँच गयी। टैक्सी से उतरने के बाद भी अभय नींद में डगमगा रहा था। शरीर और दिमाग पर नींद बुरी तरह से हावी थी। सब कुछ जैसे सपने में हो रहा था। ड्राइवर ने अभय को कमरे तक पहुँचा दिया। अभय का बदन टूट रहा था। वह बिस्तर पर लेट गया, उसे गहरी नींद आ गई।

सुबह अभय काफी देर से उठा, मुँह से रजाई हटाकर उसने देखा कि वह काफी बड़े और सुसज्जित कमरे में है। अरे यह क्या? उसके शरीर पर कपड़े नहीं थे, केवल अधोवस्त्र ही थे। बेड पर बगल में दूसरी रजाई फैली हुई थी, तकिया भी टेढ़ा पड़ा था लेकिन वहां पर और कोई नहीं था। कपबोर्ड खोलने पर उसने पाया कि उसकी अटैची पहले की तरह बन्द थी और उसके कपड़े करीने से टंगे हुए थे। उसके कपड़ों के साथ किसी युवती के कपडे भी टंगे थे और उसकी अटैची के साथ एक और छोटी अटैची रखी थी।

कमरे में दो दरवाजे थे, एक के ऊपर रोशनदान था जिस पर लगे पर्दे से रोशनी छन कर अन्दर आ रही थी। अभय ने अनुमान लगाया कि वह किसी होटल के कमरे में है जिसके बाहर कोई बरामदा है और दूसरा दरवाजा शायद बाथरूम से जोड़ता है। पिछली रात खाना खाने से लेकर रास्ते की बातें उसे धुंधले सपने जैसी कुछ उलझी-उलझी सी याद आ रही थीं लेकिन वह समझ नहीं पाया कि उसे हुआ क्या था जो वह ऐसी बेहोशी वाली नींद में आ गया था। उसे कुछ भी याद नहीं आया। अभय ने बेड की साइड टेबिल पर रखा पानी उठा कर पिया और बेल का बटन ढूंढ़ने लगा ताकि किसी वेटर को बुलाया जा सके। बेल बजाने से पहले ही बाथरूम का दरवाजा खोल कर एक युवती उस कमरे में आ गयी, अभय ने कुछ चौंकते हुए उसकी ओर देखा।

''गुड मॉर्निंग, मैं टैक्सी में आपके साथ ही आयी थी। आप शायद पहचान नहीं पाये।'' उसने मुस्कुराते हुए कहा।

''ओह!'' अभय ने उसकी ओर देखा। पिछली रात अंधेरे में वह युवती को ठीक से नहीं देख पाया था। वह चौबीस-पचीस वर्ष की युवती थी। दिखने में सुन्दर, तीखे नैन नक्श, कमर तक आये खुले बाल लेकिन पेटीकोट के ऊपर साड़ी की जगह तौलिया लपेटा हुआ था।

''रात में आप सम्भल नहीं पा रहे थे, होटल के किसी और कमरे में आपको अकेले ठहराना न तो ठीक था और न ही पॉसिबल, इसीलिए साथ में रहना पड़ा। आपके कपड़े बदलने में भी काफी मेहनत करनी पड़ी।'' उसने कनखियों से अभय की तरफ देखा, ''किसी और की हेल्प लेना भी ठीक नहीं लगा।''

''थैंक्स!'' अभय ने उसका आभार जताया।

'तो रात में बिस्तर पर यह साथ थी।' उसने मन ही मन नतीजा निकाला। युवती एकदम बेफिक्र और अनौपचारिक थी जैसे अभय उसका कोई अपना ही हो।

''लगता है आपको नींद अच्छी आयी है, काफी फ्रेश लग रहे हैं, लेकिन मैं नहीं सो पायी!'' वह बोली।

''क्यों?'' अभय ने जानना चाहा।

''रात में कई बार उठ कर देखना पड़ा कि आप ठीक हैं कि नहीं।'' युवती ने बताया।

''लेकिन आपको देखकर तो ऐसा नहीं लगता, आप भी काफी तरोताजा दिख रही हैं, इतनी मेहनत और रातभर जागने के बाद भी!'' अभय ने युवती की ओर प्रश्नवाचक ढंग से देखा कि रात में वास्तव में क्या कुछ हुआ।

''आप जल्दी से तैयार हो जाइये, फिर घूमने निकलेंगे नाश्ता बाहर ही कर लेंगे।'' युवती ने अभय से आग्रह किया।

''लेकिन आप तो यहाँ अपने किसी जरूरी काम से आयी हैं ना?'' अभय ने कुछ कुतूहल से युवती की ओर देखा।

''वह तो सब कुछ गड़बड़ हो चुका, फिलहाल अब तो सबसे जरूरी काम आपको यह शहर दिखाना है, उसके बाद कुछ और सोचेंगे।'' युवती ने निर्णय सा सुना दिया।

अभय को अकेले घूमने का अभ्यास था, उसे किसी के साथ की कोई खास आवश्यकता न थी, लेकिन साथ मिल जाए तो कोई हानि भी नहीं थी, बल्कि कुछ सुविधा भी हो जाती थी। अभय उसे साथ लेने को तैयार हो गया।। युवती ने नई टैक्सी बुलवा ली, उसने अभय को बताया कि उसने पहले वाली टैक्सी को भुगतान कर वापिस भेज दिया था। युवती अभय को झील के किनारे की सड़क पर स्थित एक बड़े रेस्टोरेन्ट में ले गयी, जहाँ हाल में मेजों के बीच केबिननुमा पार्टीशन थे। दोनों एक कोने वाली केबिन में बैठ गये जहाँ से झील का मनोरम दृश्य दिखायी देता था। युवती ने वेटर को नाश्ते में स्थानीय व्यंजन का आर्डर कर दिया। वेटर केबिन का परदा ठीक कर बाहर निकल गया। अभय और युवती टेबिल पर आमने सामने बैठे थे।

''एक बात कहूँ?'' उसने अभय से पूछा, बिना उसके उत्तर की प्रतीक्षा किये उसने बात शुरू की, ''लगता है अपको मेरे लिए भगवान ने भेजा है, आपसे मेरे सब सपने सच हो सकते हैं। मैंने इस बारे में कभी सोचा भी नहीं था। आज सुबह ही दिमाग में आया। मुझे आपका साथ चाहिये, हर हालत में!'' युवती ने आगे बढ़कर अभय का हाथ अपने दोनों हाथों में ले लिया, ''आपका पिछली रात का साथ तो हमेशा याद रहेगा ही, मेरे लिये भी यह एक नया अनुभव था, लेकिन आगे का साथ मेरे पूरे जीवन को संवार देगा।'' अभय के हाथों पर उसका दबाव बढ़ गया, ''मुझे यकीन है आप निराश नहीं करेंगे'' उसने मुस्कुरा कर अभय की ओर देखा।

अभय ने आश्चर्य में था, वह कुछ समझ नहीं पा रहा था, उसने अपना हाथ धीरे से युवती हाथों से खींच लिया। उसे अपने ऊपर पूरा विश्वास था कि भले ही वह नींद में रहा हो लेकिन कोई ऐसी-वैसी बात नहीं हुई होगी जिसका लाभ युवती उठा सके। कुछ सम्भलते हुए उसने नाराजगी दिखाने का प्रयास किया, ''क्या कहना चाह रही हैं आप?'' उसने युवती से पूछा।

''आपको पिछली रात का कुछ याद है कि क्या-क्या हुआ?'' युवती ने जवाब में उससे ही पूछ लिया।

''क्या हुआ था?'' अभय ने जानना चाहा।

''यह इलाका उग्रवादियों की जकड़ में है, इस रूट पर महीने में आठ दस मर्डर होना आम बात है, रात को कोई अकेला वाहन इधर से नहीं गुजरता। रात में हमारी कार चार-पांच बार हमलावरों से घिर गयी थी। मैंने किसी तरह कहानी बना कर आपको बचाया। अगर उन्हें पता चल जाता कि आप दूसरे देश से हैं तो जरूर माल डालते। यहां के उग्रवादी आप के देश के खिलाफ रहते हैं।'' युवती ने बताया।

''ओह!'' अभय ने राहत की सांस ली।

खाने-पीने का समान आ चुका था, दोनों ने नाश्ता किया। युवती बीच बीच में हल्का-फुल्का मजाक करती रही, उसने एक आध बार अभय को टोका भी कि वह इतना सीरियस क्यों दिख रहा है। नाश्ते के बाद बिल युवती ने चुका दिया।

''आपके पर्स में पैसे नहीं हैं।'' उसने बताया कि सब उग्रवादियों की भेंट चढ़ गये।

टैक्सी को वहीं छोड़ दोनों झील के किनारे टहलने चल दिये। सड़क के दूसरी ओर बाजार की चहल पहल थी और इस ओर काफी शान्ति, खूब

बड़ी झील और पीछे घनी पहाड़ियाँ, झील के बीचों बीच एक टापू जैसी छोटी पहाड़ी पर एक मन्दिर था जिस तक नावों के द्वारा ही पहुँचा जा सकता था।

''मैंने पिछली वाली टैक्सी इसीलिए वापिस की थी कि रात में ड्राइवर का रोल कुछ अच्छा नहीं था। सब कुछ जानने और समझाने के बाद भी वह गोल-मोल बातें कर रहा था। वह तो एक युवती का साथ होने, आपके बुरी तरह बेसुध होने और कार में शराब की भारी गन्ध से बचत हो गयी कि उन लोगों ने मेरी बताई कहानी पर भरोसा कर लिया। खुद ड्राइवर भी गफलत में पड़ गया था। परेशानी से बचने के लिए मैंने उसे भगा दिया।''

''थैंक्स! मुझे इस सब का अनुमान नहीं था, न ही किसी ने मुझे बताया।'' अभय ने उसके प्रति आभार जताया।

''पिछली रात जहाँ पर आपने खाना खाया था, आपके साथ आया आदमी और मेरा साथी अचानक वापिस हो गये थे। वे अच्छे लोग नहीं थे, भगवान ने मेरी और आपकी, दोनों की मदद कर दी। शुक्र है!'' युवती ने अभय की बाहों में बाहें डाल दीं ''रात में जो कुछ भी कहानी मैंने गढ़ी है, उसे जारी रखना होगा। इसमें मेरा आपकी पत्नी दिखते रहना जरूरी है, आपके पास भी और कोई चारा नही हैं।'' युवती ने अपनी हथेली की उंगलियाँ भी अभय की उंगलियों में फँसा दीं।

अभय प्राकृतिक दृश्यों और स्थानीय बाजार का आनन्द लेना चाहता था लेकिन युवती से छुटकारा नहीं पाया जा सकता था। पास में पैसे न होने की बात से वह कुछ परेशान सा हो उठा, लेकिन कुछ रुपये उसने अटैची में भी रखे थे, उनसे काम चल जायेगा, बशर्ते वे सुरक्षित हों। उसने युवती की ओर देखा, ''मेरी अटैची से तो कुछ नहीं गया न?'' उसने पूछा।

''बस आपके रुपये गये!''

''पर्स से रुपये उग्रवादियों को आपने दिये?''

''पर्स से भी और अटैची से भी!'' पूरी तलाशी ली थी उन्होंने, वह तो अच्छा हुआ कि आपके पर्स या अटैची में आपकी पहचान बताने वाली कोई चीज नहीं थी।'' युवती ने बड़े संयत भाव से बताया।

''लेकिन अटैची तो ठीक तरह से बन्द है?'' अभय ने अचरज भरी निगाहों से उसकी ओर देखा।

''मैंने बन्द की थी, आपकी जेब से चाबी निकाल कर खोली थी। ऐसा करना जरूरी था। उन्हें दिखाने के लिए मुझे अपने को आपकी पत्नी बताना पड़ा और आपका परिचय भी देना पड़ा जबकि मैं आपको जानती तक नहीं। न तो नाम

और न ही कुछ और, आपको पूछती भी कब और कैसे?'' युवती ने धैर्यपूर्वक बताया।

अभय दूसरे देश में था, पास में पैसे नहीं, बुक की हुई टैक्सी वापिस हो चुकी थी, किसी प्रकार का कोई परिचय नहीं, युवती के बारे में भी वह कुछ नहीं जानता था। वह बहुत परेशान हो गया। ऐसे में एक मात्र सहारा वही युवती बची थी। अभय ने थोड़ा आत्मीय भाव से उसकी ओर देख कर अपना परिचय देने का मन बना लिया।

''मेरे बारे में नहीं जानना चाहेंगे?'' अभय के कुछ कहने से पहले ही युवती ने उसकी ओर शरारत भरी निगाहों से देखा।

''हाँ, अगर आपको आपत्ति न हो'' अभय ने सहमति दी।

''हो सकती है?'' युवती ने अभय की आँखों में आँखे डाल दीं, ''पिछली रात से पत्नी बन कर रह रही हूँ आपके साथ!'' उसने चहकते हुए कहा। वह भी मुस्कुराये बिना न रह सका।

''सच बताऊँ या झूठ?'' युवती मजाक के मूड में थी।

''जैसा ठीक समझें'' अभय ने सब कुछ उसी पर छोड़ दिया।

''दरअसल आपके साथ आये आदमी और मेरे साथी ने एक षडयंत्र रचा था लेकिन आप काफी मजबूत निकले, आप ने शराब पीने को हामी नहीं भरी। दूसरे तरीके के तौर पर उन्होंने आपकी चाय और सूप में नींद की गोलियाँ मिला दीं लेकिन शराब के नशे में धुत होने और गहरी नींद में होने में बहुत अन्तर है, उनका गणित फेल हो गया और लगता कि योजना भी।'' युवती ने बताया।

''क्यों!'' अभय ने हैरानी जताई।

''मेरी कहानी तो काफी लम्बी है, लेकिन लगता है कि आप की शक्ल के कारण वे किसी बड़े लालच में आ गये थे। आपकी शक्ल यहां के इस बड़े होटल के मालिक से काफी मिलती है, जिसमें हम लोग ठहरे हैं। वह बहुत पियक्कड़ है और हमेशा नशे में धुत रहता है। वह आजकल अपने शहर में नहीं है। ये लोग शायद होटल मालिक के तौर पर आपको इस्तेमाल करना चाहते थे ताकि यहां के राजा साहब की उससे दोस्ती का फायदा उठाया जा सके। आपको लेकर ही इन लोगों ने सारी योजना बनाई थी और इसी धोखे का सहारा लेकर मुझे भी बुला लिया था'' युवती ने बताया।

अभय को उत्सुकता हुई कि वे उसे लेकर क्या योजना बना रहे थे। युवती की इसमें क्या भूमिका थी और आगे क्या होने वाला है। उसने युवती से विस्तार पूर्वक जानना चाहा।

दोनों नाव पर बैठ कर झील के बीच बने टापू पर चले गये। टापू पर थोड़ी देर घूम-फिर लेने के बाद युवती एक घने पेड़ के नीचे पैर एक के ऊपर एक सीधे रख कर जमीन पर बैठ गयी। अभय भी पास ही बैठ गया। युवती ने अभय का सिर अपने घुटनों के ऊपर रख दिया।

''मैं बहती जा रही थी, सब कुछ भाग का लिखा मान कर। सोचा था कभी तो कोई किनारा मिलेगा, अब आप मिल गये हैं तो आस जग गई है।'' उसकी आंखों से आंसू छलक कर अभय के चेहरे पर गिरने लगे। अभय ने भी उसके पैरों से दूर अपने पैर पसार दिये। युवती उसका सिर सहलाने लगी, वह उठना चाहता था किन्तु युवती ने उसकी छाती पर थपकी दे लेटे रहने का इशारा किया।

''मैं यहाँ से कुछ दूर के गाँव की रहने वाली हूँ, बचपन में बेहद खूबसूरत थी, दस-ग्यारह बरस की रही हूंगी कि एक रिश्तेदार बहला फुसला कर इस शहर में ले आया और एक दलाल को बेच डाला। दलाल ने मुझे एक अमीर औरत को बेच दिया जिसने मुझे काफी जतन से अपने सांचे में ढ़ाला। उसने मुझे हिन्दी और अंग्रेजी बोलने का अच्छी प्रैक्टिस करवाई और मेरा रूपरंग निखार कर मुझे किसी बड़े घर की लड़की जैसी बना दिया। उसके साथ एक बूढ़ा आदमी रहता था जो जवानी के दिनों में उससे शादी करना चाहता था। औरत ने तब तो उससे शादी नहीं की लेकिन बुढ़ापे में उसे अपना सहारा बना कर साथ रख लिया था।

सोलह बरस की होते होते वह औरत मुझे होटलों में भेजने लगी। शुरू में तो वेटर के तौर पर भेजा गया, कुछ समय बाद शराब परोसने और फिर पुरुषों को रिझाने का काम लिया गया। इस बीच मैं कई लोगों की नजरों में आ गई और होटलों से मेरी मांग होने लगी। औरत ने मुझे भी अच्छे खाने-पीने और आरामतलब जिन्दगी का शौक चढ़ दिया। उन्होंने मुझे शराब पीने की लत भी लगा दी। बूढ़ी औरत मेरी सब कुछ थी, वह मेरे लिए इतना सब कर रही थी, मैं भी उसके लिए सब कुछ करने को तैयार थी। उसने इसका फायदा उठाया और खूब अच्छे पैसे लेकर मुझे रातों में बड़े होटलों में भेजने लगी। थोडा़ बहुत आनाकानी के बाद मेरे लिए भी यह सब कुछ नार्मल हो गया। औरत के घर में खूब रुपया बरस रहा था और मुझे भी कोई परेशानी नहीं थी। वह बूढ़ी हो रही थी और एक दिन अचानक उसकी मौत हो गई। उसका कोई अपना नहीं था और उसकी दौलत पर कइयों की नजर थी लेकिन उसके साथ वाले आदमी ने उससे सब कुछ मेरे नाम करवा दिया था, इस शर्त के साथ कि सम्पत्ति की असली मालकिन मैं उस बूढ़े के मर जाने के बाद ही बन सकूंगी। औरत की

मौत से मेरा मन उचट चुका था। मैंने सोचा कि बूढ़ा भी कभी न कभी तो मर ही जायेगा, फिर एकाएक मैं सारी दौलत की मालकिन तो बन जाऊंगी लेकिन मेरा अपना कोई नहीं है। बाद में मेरी हालत भी उस औरत जैसी ही हो जायेगी। मैं भी इसी तरह किसी और लड़की को धन्धे में धकेलूंगी और किसी बूढ़े का सहारा ढूंढूंगी।

होटलों से भी मेरी अच्छी आमदनी थी, बूढ़े के दबाव में उसे जारी रखना मेरी मजबूरी थी। मैं सब कुछ छोड़ कर वापिस आना चाहती थी लेकिन मुझे गांव-घर का पता ही मालूम नहीं था। संयोग से एक बार एक बड़े होटल में, जहां राजा साहब ठहरे हुए थे, एक रात के लिये मुझे बुला लिया गया। मेरे नैन-नक्श और बोलने के तरीके से राजा साहब को अन्दाजा हो गया कि मैं उन्हीं के इलाके से हूं। उन्होंने मुझसे थोड़ा बहुत बातचीत की और मेरे सिर पर हाथ फेर कर सो गये। सुबह बूढ़े से बात कर वे मुझे अपने साथ यहां वापिस ले आये।'' युवती कुछ रुकी।

''राजा साहब की पत्नी अक्सर बीमार रहती थी, उनकी सेवा टहल करने के लिए राजा साहब ने मुझे रख लिया। तीन-चार महीने तो सब कुछ ठीक-ठाक चलता रहा लेकिन फिर उनकी पत्नी की तबियत ज्यादा बिगड़ गयी। इलाज के लिए आपके देश ले जाना पड़ा। मुझे भी वहाँ जाना पड़ा। पत्नी के इलाज के लिए राजा साहब का भी वहाँ रहना ज्यादा जरूरी था। यहाँ उनका कोई अपना नहीं था, इउलिए वे भी एक कोठी किराये पर लेकर वहीं रहने लगे और यहाँ के महल की जिम्मेदारी इस होटल के मालिक को दे दी क्योंकि वह राजा साहब का मित्र तो था ही, महल भी होटल के साथ मिला है। होटल मालिक अपने होटल में जगह न होने पर ग्राहकों को महल में ठहराने लगा। बाद में महल में ठहरने की मांग भी खूब बढ़ गई और उसे अच्छी आमदनी होने लगी।''

''इलाज के कारण राजा साहब की पत्नी के प्राण तो बच गये लेकिन उनकी हालत जिन्दा लाश जैसी हो गयी थी। राजा साहब मुझे अच्छा मानते थे। मैं उनके घर के सदस्य जैसी हो गयी थी। वे छोटी छोटी बातों के लिए मुझ पर निर्भर थे।'' युवती की आंखों में आंसू छलक आये।

कुछ रुक कर युवती आगे बताने लगी ''राजा साहब के कोई सन्तान नहीं थी, न ही होने की कोई आशा थी। उनकी पत्नी बेहद तनाव में रहती थी। अपनी हालत ज्यादा खराब देख कर एक दिन उन्होंने मेरा हाथ राजा साहब के हाथ में दे कर उनसे मुझे पत्नी के तौर पर अपनाने का अनुरोध कर दिया ताकि राजा साहब का खयाल भी रखा जा सके और सन्तान होने की भी राह निकल

आये। राजा साहब अपनी पत्नी को बेहद चाहते थे, उनके सामने तो उन्होंने हामी भर दी लेकिन मन से इसके लिये इसके लिये तैयार नहीं हो पाये। उन्होंने न तो मुझे पत्नी माना और न ही इसके अधिकार दिये लेकिन घर में पहले की तरह रहने दिया। राजा साहब की पत्नी ने राजा साहब के मुझे अपना लेने की बात अन्य मिलने जुलने वाले लोगों से भी कह दी। कुछ दिनों में उनकी पत्नी का देहान्त हो गया। घर में राजा साहब के साथ केवल मेरे ही रहने से लोगों को भी ऐसा ही लगने लगा। औरों की निगाहों में मैं घर की मालकिन थी जबकि सच में राजा साहब से मेरा ऐसा कोई रिश्ता नहीं था। मैं राजा साहब की खूब सेवा करती थी, वे मुझ से बहुत खुश थे और मेरी मदद करना चाहते थे। उन्होंने एक बार मुझ से कहा था कि यदि महल उन्हें वापिस मिल जाता है तो वे उसे मेरे नाम कर देंगे।

कुछ दिनों पहले पता चला कि राजा साहब का महल गुपचुप तरीके से होटल मालिक ने अपने नाम करा लिया है और उसका कहीं पता नहीं चल पा रहा था। किसी ने अपने को राजा साहब का शुभचिन्तक बताते हुये यह सन्देश दिया कि होटल मालिक महल को बेचना चाहता है और इस सिलसिले में आपके देश के बार्डर वाले शहर में है। सन्देश देने वाले ने यह भी बताया कि उन्होंने नकली ग्राहक तैयार कर लिया है और अगर राजा साहब की ओर से कोई आकर होटल मालिक को महल का असली मालिक साबित कर दे तो वह अपने देश भी जा सकता है, जहाँ उसे पुलिस के हवाले किया जा सकता है।

यह एक अच्छा मौका था, जिसके लिये मैं तैयार हो गयी और अकेले ही बार्डर वाले शहर पहुंच गई। वहां मुझे दो व्यक्ति मिले जिनमें से एक मुझे पहचानता था। उसने दूसरे व्यक्ति का परिचय महल के नकली खरीददार के रूप में दिया। परिचित से मुझे पता चला कि खरीददार बना आदमी वहाँ पर होटल मालिक से सिर्फ मुलाकात करेगा, और कोई बात नहीं। वे दोनों होटल मालिक को मेरे साथ जाने को राजी कर लेंगे। बाकी का काम इस पहाड़ी शहर में हो जायेगा।

इतना बता कर परिचित होटल मालिक को लेने चला गया। मुझे यह समझ नहीं आ रहा था कि महल और खरीदने–बेचने बगैरह की बात किये बिना होटल मालिक साथ जाने को कैसे तैयार होगा। मैं नकली खरीददार से इस बारे में बहस कर ही रही थी कि परिचित के साथ कार में आप आ गये। खरीददार बने आदमी ने होटल मालिक के रूप में आप को दिखा दिया, लेकिन कोई बात करने से मना भी कर दिया। खाने के होटल पर वे आप को शराब पिला कर

धुत करने पर तुले थे। मुझे दाल में कुछ काला नजर आने लगा और मैंने पीसीओ के पास जा कर इनकी बात सुनने की कोशिश की।'' युवती ने अभय की ओर देखा। कहानी लम्बी होती जा रही थी लेकिन अब तक अभय को यह समझ नहीं आया था कि युवती वास्तव में कहना क्या चाह रही थी और उसका क्या उपयोग होने वाला था।

''सच दरअसल यह है कि देश के महाराजा की हत्या के बाद होटल मालिक गायब है और यहां के राजा साहब की लोगों को खबर नहीं है। इन लोगों की बातों से आभास हुआ कि होटल मालिक के रूप में आपको सामने कर राजा साहब के महल को बेचने की साजिश रची गई है लेकिन लगता है कि आपके सामने फेल हो गई!'' युवती बोली।

''कैसे?'' टभय ने जानना चाहा।

''आपको किसी भी तरह ड्रिंक्स न लेते देख ये दोनो बेहद हड़बड़ा गये थे। घबराहट में इन्होनें पीसीओ से यहां इस शहर में किसी से फोन पर बात की। दोनों जोर जोर से बोल रहे थे और घबराहट में यह देखना भी भूल गये कि कहीं कोई सुन तो नहीं रहा। इनकी बातचीत से मुझे इनकी स्कीम का पता चल गया।'' युवती ने कुछ रुक कर आगे बताया ''इसके लिये आपको हमेशा नशे में धुत रखना था, इतना कि आप के मुंह से हमेशा शराब की बू आती रहे, ताकि किसी को कोई शक न हो। महल बेचने के लिये असली खरीददार को भरोसा दिलाने के लिये यहाँ राजा साहब की पत्नी होने के भ्रम के कारण मुझे चुना गया। इनकी योजना मुझे भी लगातार गफलत में रखने की थी।'' युवती ने बताया।

''अच्छा?'' अभय को हैरानी हुई।

''आपको टैक्सी में बिदा करते समय एक बार भी आपसे होटल मालिक की तरह व्यवहार न करते देख मुझे पक्का हो यकीन हो गया कि आप होटल मालिक नहीं हैं लेकिन इनकी योजना कुछ-कुछ समझ में आने के बाद मैंने ही इसका फायदा उठाने की सोच ली।

''किस तरह?'' अभय को आश्चर्य हुआ।

''माओवादियों को मैंने आपका परिचय होटल मालिक के तौर पर दिया, आपके बारे में लोगों ने सुन रखा था। आपको नशे में बेसुध देख कर उन लोगों को यकीन भी हो गया। यहाँ तक कि होटल में भी सबने सामान्य तौर पर लिया, वैसे भी होटल का पुराना स्टाफ अब बदल चुका है। किसी को शक नहीं हुआ। आप यहां होटल में मालिक के तौर पर ही ठहरे हैं।'' युवती ने माजरा कापफी कुछ समझा दिया।

कहानी काफी परपफेक्ट थी और कोई झोल नहीं था कि अभय इसकी सत्यता पर किसी प्रकार का सन्देह करता। युवती उसके प्रति आभार दिखा रही थी लेकिन वह भी उसके प्रति कम कृतज्ञ नहीं था। उसने युवती से जानना चाहा कि वह उस योजना का क्या फायदा उठाना चाह रही है और किस तरह?

''उनकी योजना से तो हम दोनों बड़ी मुसीबत में पफंस जाते लेकिन मेरी योजना में कोई खतरा नहीं है। होटल मालिक के रूप में आप से राजा साहब का महल खरीददार बन कर मैं ही खरीदूंगी। यहां के सारे अफसरों को मैं जानती हूं, मेरे कारण किसी को आप पर शक नहीं होगा, सब आपको असली होटल मालिक ही समझेंगे। वह यहां है नहीं, इसलिये किसी विवाद का भी डर नहीं। आप को भी कोई समस्या नहीं होगी, आपको पहचानना भी मुझे ही है और कोई शिकायत हो तो वह भी मुझे ही करनी है। एक बार महल मेरे नाम हो गया तो कोई कुछ नहीं कर सकेगा। असली होटल मालिक दिखने के लिये बस आपको थोड़ी ड्रिंक्स की हालत में दिखना पड़ेगा, बाकी सब मैं सम्भाल लूंगी।'' युवती ने बिना संकोच सब कुछ कह दिया।

''लेकिन है तो यह धोखाघड़ी ही, मैंने अपने लिए कुछ मर्यादायें तय की हैं, जिनका मैं पालन करता हूं। आपका साथ एक सीमा तक ही दे सकता हूं, इस धोखाघड़ी में नहीं।'' अभय ने अपनी असमर्थता जता दी।

''देखेंगे...'' युवती लापरवाही से कह अभय के कन्धे का सहारा ले उठ खड़ी हुई।

सामान्य रहते हुए अभय ने युवती के साथ सारा शहर घूम लिया और दोनों वापिस होटल में आ गये।

''तो मैं होटल मालिक हूं! लेकिन हिसाब देने तो मेरे पास कोई नहीं आ रहा?'' अभय ने युवती से पूछा।

''ओह हाँ! मैं देखती हूं'' युवती वहां से चली गयी और थोड़ी देर में रुपयों से भरा बैग लेकर कमरे में आ गयी।

''मैनेजर के पास रुपये तैयार थे, ये आपके देश की करेन्सी है'' उसने अभय को बताया। अभय ने अपने पर्स और अटैची में रखे रुपयों का हिसाब जोड़कर उतने पैसे ले लिये और बाकी युवती को लौटा दिये।

''ये सब आपके हैं! यहां होटल से लगा बड़ा कैसीनो भी है। उसमें खेलने के लिए काम आयेंगे। कैसीनो में ऐश के और भी सारे इन्तजाम हैं, जितना चाहो मजे लो, कोई रोक नहीं!'' युवती ने अभय को आंख मारी।

''सॉरी! मैं जुआ नहीं खेलता'' अभय ने दृढ़तापूर्वक कहा और रुपये युवती के हाथ में थमा दिये। दिन भर घूमने के कारण वह थक गया था, उसने कमरे में जाकर थोड़ी नींद ले लेना ठीक समझा।

अभय को जागने में देर हो गयी, रात के खाने का समय हो गया था। युवती ने कमरे में ड्रिंक्स और मुर्गे-मछली के पकौड़े और काफी अन्य चीजे मंगवा लीं।

''लेकिन मैं तो ड्रिक्स नहीं लेता और न ही नॉनवेज! आप को बता चुका हूं'' अभय युवती द्वारा वेटर को इस तरह का आर्डर देते देख चौंका।

''मैं एकाध ले लूंगी, आप साथ तो देंगे ना?'' युवती ने उससे पूछा।

''ओह श्योर! लेकिन सिर्फ नींबूपानी और सलाद-पापड़ से ही!'' अभय ने हामी भर दी। थोड़ी देर में ड्रिंक्स आ गयी। युवती ने अभय से साथ देने का दबाव जैसा बना दिया और अपना गिलास अभय के हाथ में नींबूपानी के लिये पकड़े हुये गिलास में उलट कर उसे जबरन उसके मुंह से लगा दिया। अभय को अच्छा नहीं लगा, लेकिन वह चुप रहा। युवती जैसे सपनों में खो गई, उसने इत्मीनान से दो तीन पैग लगा लिये और अच्छे सरूर में आ गयी।

''आपका साथ चाहिये, आप की मदद से अब महल मेरा हो जायेगा, अब किस्मत मुझ पर मेहरबान हो रही है। दौलत मेरे पास है, बूढ़े के मरते ही सारी मेरी हो जायेगी। राजा साहब ने भी कुछ कम नहीं किया है मेरे लिये। आज जश्न की रात है, डट कर पीयो और जिन्दगी का मजा लो।'' युवती अभय से छेड़छाड़ करने लगी। अभय ने उसे धीरे से अपने से दूर हटा दिया।

''किस तरह के आदमी हो? न पीना-पिलाना! न ताश! न ही कोई मौजमस्ती! सतयुग से आये हो?'' युवती ने गुस्से में उलाहना दिया। अभय कुछ नहीं बोला। उसने युवती का गिलास फिर से भर दिया और अपना गिलास मुंह से लगा लिया।

युवती ड्रिंक्स के साथ पकौड़े भी लेती रही, अभय बीच-बीच में उसका गिलास भर देता और अपना गिलास भरने और पीने का अभिनय करता रहा। उसके उपेक्षा वाले व्यवहार से युवती झल्ला उठी, वह उसके प्रभाव में नहीं आ रहा था।

''होटलों में कितनों के लिये ठेके लिये हैं लोगों ने मेरी बदौलत, कितनों के काम करवाये हैं, कितने अफसरों से फैसले बदलवाये हैं। आज अपना ही काम नहीं निकलवा पा रही। आप ऐसा नहीं कर सकते! मुझे इन्कार नहीं कर सकते, मेरे सपने नहीं तोड़ सकते!'' वह बुदबुदायी और सीधे बोतल अपने मुंह पर

लगा दी, ''क्या क्या सोचा था! ये जवानी, ये खूबसूरती किसी काम की नहीं! सब बेकार!'' उसने लड़खड़ाते हुए करीने से लिपटी हुई अपनी साड़ी उतार कर एक तरफ फेंक दी। वह झूमते हुये अभय की तरफ बढ़ी, उसके गले में बांहें डालनी चाहीं लेकिन सम्भल नहीं पायी और फर्श पर गिर पड़ी। अभय ने उसे उठा कर सोफे पर लिटा दिया।

युवती के इस आक्रामक रूप ने अभय को परेशान कर दिया। उसे यह साफ हो गया था कि युवती अपने लाभ के लिये उसका इस्तेमाल करने जा रही है और वह बड़ी विपत्ति में फँस सकता है। वह शहर अच्छी तरह घूम चुका था और वापिस जाने लायक पैसे उसके पास आ गये थे। उसने कुछ निश्चय किया और गिलास में रखी शराब सिंक में उड़ेल दी।

कुछ देर में खाना आ गया, अभय ने दरवाजे से ही वेटर के हाथ से ट्रे ले ली और प्लेटों में खना लगा दिया। युवती खाना खाने की हालत में नहीं थी, उसका पेट शराब और पकौड़ों से पहले ही भर चुका था। अभय ने आराम से खाना खाया। खाने के बाद उसने जैसे तैसे युवती को अपने सहारे से खड़ा कर उस पर साड़ी लपेटी और बेल बजा दी। उसने इशारे से वेटर को युवती की अटैची और कपड़े दूसरे कमरे में रखने को कह दिया और युवती के हाथ अपने कन्धे पर लेकर उसे दूसरे कमरे में लिटा दिया। युवती कुछ कहना चाहती थी लेकिन अभय ने उसके होठों पर उंगली रख दी। वह धीरे धीरे दरवाजे की तरफ बढ़ा और तेजी से बाहर निकल कर अपने कमरे में आ गया।

युवती ने उसके कमरे के बाहर आकर दरवाजा खुलवाने की काफी कोशिश की, ''आप मेरे साथ कुछ अच्छा नहीं कर रहे, खा जाऊंगी क्या आपको? कल भी तो सोई थी आपके साथ! इस तरह कमरे से निकालने का क्या मतलब? आपको अपने पर भरोसा नहीं है?'' वह काफी उलाहने देती रही, लेकिन अभय ने दरवाजा नहीं खोला। वह बेहद गुस्से में थी, उसकी आंखें लाल थीं, गुस्से और नशे में। वेटरों ने बीच में न पड़ने में ही भलाई समझी। वैसे भी 'होटल मालिक' के आगे किसका बस चल सकता था।

सुबह तड़के अभय ने टैक्सी मंगवा ली, वेटरों को ताकीद कर दी कि युवती को इसकी भनक न लगे। कुछ देर में टैक्सी आ गई और वह होटल से निकल गया।

'अलविदा प्यारे शहर!' शहर से बाहर निकल कर उसने प्यार भरी निगाह से छोटे पहाड़ी शहर की ओर देखा, 'तुम्हारी बहुत याद आयेगी' उसने मन ही मन कहा। शहर के लिए या उस युवती के लिए, उसे खुद ही मालूम ही नहीं था। 'शायद दोनों के लिए' उसने मुस्कुरा कर सिर हिला दिया।

टैक्सी कुछ ही दूर निकली थी कि उसे तीन–चार हथियारबन्द युवकों ने घेर लिया और कुछ मील दूर एक सुनसान स्थान पर ले जाकर उतार दिया। एक स्कूलनुमा बिल्डिंग में, वहां आठ–दस युवक जमा थे, जिनके बीच सिर पर पट्टा बांधे हुए उनका नेता बैठा था।अभय को उसके सामने पेश कर दिया गया।

''आप इस तरह चुपचाप नहीं निकल सकते, आप की निगरानी की जा रही है। अगर फिर कोशिश की तो काफी मंहगी पड़ सकती है'' नेता ने अभय की ओर देखा। इससे पहले कि अभय कुछ कहता, एक युवक पीछे से सामने आ गया, ''अरे रुको! ये होटल के मालिक नहीं हैं, ये वो नहीं है!'' वह बोला।

''अरे सर! आप यहां?'' युवक अभय की ओर मुड़ा। अभय ने उसकी ओर देखा, लेकिन तुरन्त नहीं पहचान पाया। उसे लगा कि उसने इसे पहले कभी देखा जरूर है।

''सर मैं आपके देश के उस होटल का वेटर हूं जिसमें दो–तीन महीने पहले आप कई दिन रुके थे। लेकिन आज यहां? इस तरह?'' उसने हैरानी जताई। अभय को सब कुछ याद आ गया।

''तुमने इस शहर की इतनी अधिक तारीफ की थी कि यहां आये बगैर नहीं रहा गया।'' युवक को पहचान अभय ने राहत की सांस ली।

''लेकिन हमें तो खबर मिली थी होटल मालिक यहां आकर होटल में ठहरा है और इस टैक्सी में वही है, फोटो भी सही मिलती है।'' वेटर के एक साथी ने टोका।

''यह सही है कि इनकी शक्ल होटल मालिक से हूबहू मिलती है लेकिन मैं इन्हें अच्छी तरह से जानता हूं कि ये वो नहीं हैं, ये वहाँ के एक बड़े अफसर हैं'' वेटर ने अपने साथियों को बताया।

''जानता हूं'' नेता ने वेटर की बात में हामी भर कर सबको चौंका दिया, ''इस युवती के साथ होने से ही यह बात साफ है। असली होटल मालिक के साथ यह हो ही नहीं सकती थी। वह भी इस तरह खुले आम नहीं घूम सकता जैसे ये कल झील में दिख रहे थे। इनका बिना शराब पिये होना भी इसी बात का सबूत है।'' उसने स्पष्ट किया, ''इन्हीं बातों से सब लोग उलझन में पड़ गये और ये 'सर' बच गये, नहीं तो, कल ही निशाना बन जाते।''

अपने साथियों के व्यवहार के लिये नेता ने अभय से माफी मांगी और सब कुछ साफ–साफ बताने का आग्रह करते हुए उसे बिल्डिंग के अन्दरूनी भाग में ले गया। अभय जो कुछ जानता था, जो कुछ युवती ने बताया था और

जो कुछ उसके साथ हुआ, वह सब उसने उन्हें बता दिया।

''अगर अब महल बेचने की बात हो रही है तो जरूर इसके पीछे होटल मालिक का ही दिमाग होगा और उसका होटल भी जरूर बिक रहा होगा। यह काम असली मालिक के आये बगैर नहीं हो सकता। लगता है कि इन्हें प्लान बना कर युवती के हवाले किया गया है और लोगों को गफलत में रखने के लिये इनका इस्तेमाल किया जाना था। इसका मतलब है साफ है कि असली मालिक भी यहीं कहीं है। बात कुछ-कुछ साफ हो रही है कि हमें कैसे और क्या करना है'' नेता ने अपना फैसला जैसा सुना दिया।

''आपको वापिस होटल जाना होगा और हमारे कहने तक वहीं रहना होगा। आपका भला इसी में है, आपकी हिफाजत अब हमारी जिम्मेदारी है।'' कह कर नेता अभय की ओर मुड़ा, ''आप होटल में वैसे ही जायेंगे जैसे निकले ही न हों, युवती के साथ नार्मल रहेंगे और उसी के हिसाब से चलेंगे। आज रात भी आप यहीं रहेंगे और चौथी सबसे जरूरी बात यह है कि आप अपनी ओर से नया कुछ नहीं करेंगे। ये आपके साथ जा रहा है'' नेता ने वेटर की ओर देख कर कहा, ''ये आपके टच में रहेगा, कोई बात हो तो इससे कहिएगा। आपको भी, जो कुछ सन्देश इससे मिले, वैसा ही कीजिये।'' अभय और वेटर के टैक्सी में बैठते ही नेता ने दरवाजा धड़ाम से बन्द कर दिया।

रास्ते में अभय ने वेटर से माजरा जाना चाहा। वेटर ने बताया ''यह ग्रुप महल के पुराने वफादार कर्मचारियों के बच्चों का है। इनके माता-पिता, चाचा-ताऊ होटल मालिक के अवैध कामों में साथ नहीं दे रहे थे। उन्हें नौकरी से जबर्दस्ती निकाल दिया गया था, कइयों को तो बकाया तनखा तक नहीं दी गई, उल्टा झूठे आरोपों में फंसा दिया गया। महाराजा की हत्या के षडयंत्र में होटल मालिक के शामिल होने के सन्देह के बाद उससे बदला लेने के लिये ये सब एकजुट हुये हैं और मैं स्वयं भी आपके देश के होटल की नौकरी छोड़ इसीलिए यहां आया हूँ।'' वेटर ने अभय की ओर देखा, ''अब आप सुरक्षित हैं, आप होटल में ही रहें, हमारे लोग होटल मालिक को जरूर ढूंढ़ निकालेंगे।'' उसने अभय को आश्वस्त किया।

अभय कमरे में आकर सीधे रजाई में घुस गया, बड़ी कठिनाई से दोबारा नींद आ पाई। डेढ़-दो घंटे हुये होंगे कि कमरे की घंटी बज उठी। उसने रजाई एक ओर हटाई, कमरा उजाले से भर गया था। उसके दरवाजा खोलते ही युवती कमरे में आ गई, वह पिछली रात वाले लिवास की जगह व्यवस्थित और अच्छे कपड़ों में थी।

''कल रात वाले व्यवहार के लिये सॉरी!'' युवती बोली, ''मैं सचमुच शर्मिंदा हूं, महल पाने का मेरा सपना भले ही पूरा न हो, लेकिन एक बात का सन्तोष रहेगा कि जिन्दगी में कोई ऐसा आदमी तो मिला जो मर्यादा और चरित्र की केवल बात नहीं करता, बल्कि उन्हें निभाता भी है। सच तो यह है कि आपको जानकर अब मुझ में आपके सामने खड़ा हो सकने तक का साहस नहीं है। अब मुझे आपसे कोई शिकायत नहीं, अगर मुझे माफ कर सकें तो अपनी खुशकिस्मती मानूंगी'' युवती अभय के पैरों पर गिर पड़ी।

''कोई बात नहीं'' अभय ने उसे भरोसा दिया, ''हमारे अन्दर देवता और राक्षस दोनों ही बैठे हैं। हम कमजोर पड़ जाते हैं तो राक्षस हावी हो जाता है और थोड़ा मजबूत रहते हैं तो इससे बच जाते हैं। जीवन में यह अक्सर होता है, गिरना आसान है और सम्भलना मुश्किल। यह सब के साथ होता है। यही मेरे साथ भी हुआ है और आपके भी। मैंने सम्भलने की सिर्फ कोशिश भर की और अब तो आप भी सम्भल चुकी हैं।''

''मेरी इतने सालों की आदत थी, पता नहीं कैसे वापिस आ गयी थी। असल में राजा साहब के साथ आने के बाद मैंने सब कुछ छोड़ दिया था। कैसे मेरे मन में आपको इस तरह वश में करने का खयाल आ गया, मैं खुद हैरान हूं। मैं बेहद शर्मिंदा हूं, प्लीज़ माफ कर दीजिये।'' युवती की आंखें भर आयीं।

अभय का स्टैंड अब उसे क्लीयर था, वह तैयार था। कल युवती अपने पेशेवर अन्दाज में अभय को रिझा रही थी और आज भावनात्मक अपील से उलझा रही थी। उसे नार्मल रहना था और ऐसा करना दिन के समय में कोई बहुत कठिन काम नहीं था।

''पता नहीं कब रुकेगा ये भटकाव! कब मिलेगा कोई किनारा!'' युवती ने फिर से बात शुरू की। अभय शान्त भाव से खड़ा रहा।

कुछ मिनटों बाद साथ आया वेटर युवक कमरे में आ गया ''तो यही है?'' युवती की ओर देख उसने अभय से पूछा। अभय ने हामी भर दी।

''आप रूम में ही रहें, आपके लिये नाश्ते का आर्डर कर दिया है। मैं इससे सारी बात समझ कर थोड़ी देर में आपको बताता हूं'' वेटर ने अभय से कहा और युवती को साथ लेकर कमरे से निकल गया।

कुछ देर बाद नाश्ता आ गया, अभय पूरा ही कर पाया था कि ग्रुप का नेता अन्दर चला आया, उसके साथ युवती व वेटर युवक भी थे।

''सर! आपको हमारे साथ रजिस्ट्री वाले सरकारी दफ्तर तक चलना पड़ेगा। थोड़ी देर वहां रुक कर वापिस चले आना है, यह आपके साथ रहेगी।'' नेता ने

युवती की ओर देख अभय से कहा।

''मैं इनका साथ नहीं दे पाऊंगा, इन्हें पहले ही इन्कार कर चुका हूं'' अभय ने असहमति जताई।

''घबराइये मत, आपको करना कुछ नहीं है। न किसी से मिलना है, न कोई दस्तखत, न अंगूठा, न ही कोई लेन-देन। बस इसके साथ खड़े रहना है, वह भी थोड़ी ही देर।'' उसने फिर से अनुरोध दोहरा दिया।

अभय किसी झमेले में नहीं पड़ना चाहता था, ''मुझे क्षमा करें, मैं कहीं नहीं जाऊंगा'' उसने दृढ़ता से कहा। नेता कुछ परेशान हो गया लेकिन वेटर युवक अभय के सामने आ गया।

''सर हम धर्मयुद्ध लड़ रहे हैं। धर्मात्मा कहे जाने वाले युधिष्ठिर ने भी अश्वत्थामा को लेकर गोलमोल बात कर सच छुपाया था। हम तो आपसे इतना भी नहीं करवा रहे। तय आपको करना है, हम आप पर कोई जोर नहीं डालेंगे।'' कह कर वेटर युवक नेता के साथ बाहर निकल गया।

युवती सहमी सी वहीं बैठी रही। महल पाने की उसकी योजना अब ध्वस्त हो चुकी थी। आगे क्या होने वाला है, उसे कुछ समझ नहीं आ रहा था। स्थानीय होने के कारण उसे मालूम था कि वह अब बेहद मजबूत ग्रुप के कब्जे में है और उनके हिसाब से चलना ही अकेला रास्ता बचा है। अभय के व्यवहार पर उसे आश्चर्य हुआ कि वह इतना निडर कैसे है। उसने अभय को समझाने का प्रयास किया, ''मैं कुछ कहूं आपसे?'' उसने अभय से पूछा।

''हां! हां! क्यों नहीं?'' अभय ने हामी भर दी।

''होटल में मालिक बन कर तो आप पहले से ही ठहरे हैं, यह धोखाधड़ी तो आपसे कराई ही जा चुकी है, इसमें आप की जान भी जा सकती थी। ये लोग आप को इस सब में फंसाने वाले को सामने लाने में आपका सहयोग मांग रहे हैं। अगर आप साथ नहीं देना चाहते तो वे पीछे हट जायेंगे लेकिन इससे वह षडयंत्रकारी ही सफल होगा क्योंकि होटल, बाजार और झील आदि में आपके दिखाई देने से उसकी आमद तो दर्ज हो ही चुकी है। इन लोगों द्वारा आपको दी गई सुरक्षा हट जाने पर, हो सकता है कि आप भी किसी बड़े खतरे में पड़ जायें क्योंकि यहां लोग उसके बहुत खिलाफ हैं और वे कुछ भी कर सकते हैं। भला इसी में है कि आप इनकी बात मान लें'' उसने अपनी राय दी।

युवती की बात अभय की समझ में आ गयी, वह सहमत हो गया। अभय के कपड़े बदलवा कर कर उन पर खूब शराब छिड़क दी गई। एक कार में उसे वेटर युवक के साथ रजिस्ट्री वाले सरकारी दफ्तर के लिये रवाना कर

दिया गया। कुछ मिनट बाद दूसरी कार में युवती को भी भेज दिया गया। दफ्तर के सामने वे अपनी अपनी कारों से उतर गये। अभय को नशे में धुत दिखते रहना था, युवती उसके पास खड़ी हो गयी। वेटर युवक दोनों से बातें करता रहा, थोड़ी देर में वह दोनों को एक कमरे में ले गया और दूसरे दरवाजे से बाहर लाकर अपनी-अपनी कारों में बिठा दिया। कारें वापिस होटल में आ गयीं। अभय अपने कमरे में आ गया, साथ में युवती व वेटर युवक भी आ गये। सब के लिये चाय मंगा दी गई।

चाय आने और पीने पिलाने में लगभग एक-डेढ़ घंटा लग गया। चाय पीने के बाद अभय टहलने के लिये अपने रूम से बरामदे में चला आया। बरामदे में कछ दूरी पर नेता अपने किसी साथी से बात कर रहा था। बगल वाले युवती के रूम के बाहर दो बन्दूकधारी पहरा दे रहे थे। रूम में हो हल्ला हो रहा था, जैसे कुछ मारपीट हो रही हो, कुछ साफ सुनाई नहीं दे रहा था। ऐसा लग रहा था कि वहां किसी की जम कर धुनाई हो रही थी। अभय को देख कर नेता ने रूम में चलने का इशारा किया। उसके रूम से वेटर युवक व युवती भी दूसरे रूम में आ गये। वहां हो रही मारपीट रुक गयी, अभय ने देखा कि कोई कुर्सी से बंधा हुआ था व तीन-चार युवक उसे घेरे हुये थे।

''यही है आपका हमशक्ल! इसे लगा, कि इसका दांव चल गया लेकिन अपने ही बुने हुये जाल में फंस गया। हम लोग रजिस्ट्री दफ्तर पर नजर रखे हुये थे। आपके दफ्तर से जाने के बाद खरीददार की इसके पास भागदौड़ से हम आखिरकार इस तक पहुंच ही गये। यह वेश बदल कर और अलग नाम से दूसरे होटल में छिपा था।'' नेता ने अभय को बताया।

''इसने काफी कुछ बता दिया है, इसने खरीददार और भ्रष्ट सरकारी अफसरों से मिलकर सारा इन्तजाम कर लिया था। 'सर' का इस्तेमाल हमें धोखे में रखने के लिये किया जाना था। यह महल और होटल के पैसे लेकर गायब होने की तैयारी में था।'' कुर्सी के पीछे खड़े युवकों में से एक ने बताया।

वेटर युवक भी कुछ कहना चाहता था ''युवती इससे मिली हुई नहीं है, इसे तो खुद गफलत में रखा गया है। इसका काम तो 'सर' को यहां लाने और होटल मालिक के तौर पर पेश करने तक ही था लेकिन अपने हिसाब से! इसके कहने पर नहीं!'' उसने होटल मालिक की ओर देख कर नेता से कहा।

सबको इकठ्ठा हुआ देख ग्रुप के नेता ने ठहाका सा लगाया और फिर गम्भीर हो गया, ''यह मेरी इच्छा थी कि 'सर' को किसी तरह यहाँ लाया जाये'' कह कर वह अभय की ओर मुड़ा ''सबसे पहले तो मैं आपसे माफी मांगता हूं'' उसने अभय को सम्बोधित करते हुये वेटर युवक की ओर देखा,

''दरअसल यह एक होनहार छात्र है और आपके देश में आगे की पढ़ाई के लिये गया था। रहने के इन्तजाम और अपना खर्चा निकालने के लिये यह साथ में होटल में भी काम करने लगा। हुआ यह था कि जब आप इसके होटल में रहने के लिये गये तो इसने आपको यहाँ के इस होटल का मालिक समझा और मुझे फोन कर दिया। एक दो दिन बाद जब इसे असलियत का पता चला तो इसने मुझे फिर से फोन किया। मुझे इस पर विश्वास नहीं हुआ, मैंने इससे कहा कि यह आपसे इस शहर की इतनी तारीफ कर दे आप यहां आये बगैर न रह सकें। मेरी यह बातचीत किसी तरह इस तक पहुंच गयी और इसने आपको इस्तेमाल करने की सोच ली।'' उसने बताना आरम्भ किया, ''वैसे तो यह होटल मालिक राजा साहब का दोस्त था लेकिन राजा साहब इस बात से दुःखी थे कि महाराजा की इस तरह हत्या हुई और यह इस षडयंत्र में शामिल था, महाराजा की हत्या के बाद नदारद भी था। राजा साहब इससे महल वापिस लेना चाहते थे लेकिन बिना इसके सामने आये उनका यहां आने का कोई लाभ नहीं था, इसलिये उन्होंने मुझे सारी परिस्थिति समझा कर मेरी सहायता मांगी।'' नेता कुछ रुका, ''हमें सूझ ही नहीं रहा था कि क्या करें। हमें यह तो मालूम था कि यह महल और होटल बेचने की कोशिश में है लेकिन समझ नहीं पा रहे थे कि इसके बिना सामने आये यह होगा कैसे। इस युवती के कारण हमें कुछ सुराग मिल गया।'' उसने बात पूरी की।

''मेरे कारण?'' युवती चौंकी, ''कैसे?'' उसने पूछा।

''रास्ते में तुमने 'सर' का परिचय हर जगह होटल मालिक के तौर पर दिया, यह जानकारी हम तक पंहुच गयी और हमने 'सर' की व तुम्हारी निगरानी शुरू कर दी।'' नेता ने बताया।

''ठीक है! आप की निगरानी काम आयी और अनजाने में मुझे मिला रोल भी निभ गया! अगर अब आप लोग मुझे जाने दें तो मैं आभारी हूंगा'' अभय ने नेता के हाथ पकड़ कर कहा।

''अभी नहीं, आज रात आप हमारे मेहमान हैं'' नेता ने विनम्रता दिखाई।

अभय ने दोनों हाथ कानों पर लगाये, ''अब और मेहमानबाजी नहीं! प्लीज़'' उसने कोने में खड़ी युवती की ओर देखा, वह धीमे से मुस्कुरा दी।

''राजा साहब को खबर भेज दी गई है, वे दोपहर बाद की फ्लाइट से यहां पहुंच रहे हैं। वे आपका थैंक्स करना चाहते हैं, इसलिये आपका रुकना अब और जरूरी हो गया है।'' नेता ने बताया।

इस बीच ग्रुप के कुछ युवक महल और होटल के खरीददार को भी ले़ लाये। वे उसकी खूब धुनाई भी कर चुके थे, साथ में घूस ले चुका सरकारी

अफसर भी था।

''इसका क्या करें?'' खरीददार को धक्का दे आगे करते हुये एक ने नेता से पूछा।

''इससे ही पूछो, यह क्या चाहता है'' नेता मुस्कुराया।

''मुझे कुछ नहीं चाहिये! न महल, न होटल, ये रुपये भी आप ही ले लो'' खरीददार ने ब्रीफकेस सामने रख दिया ''बस मेरी जान बख्श दो! मुझे छोड़ दो'' वह रोने लगा।

नेता के पास अचानक राजा साहब का फोन आ गया। उन्होंने बताया कि उनकी तबियत अचानक और बिगड़ गयी है और वे नहीं आ सकेंगे। उन्होंने अभय से बात करने की इच्छा व्यक्त की, नेता ने फोन अभय को पकड़ा दिया।

''थैंक्यू वेरी मच! आप के कारण बहुत कुछ ठीक हो गया। मैं अब जिन्दगी की आखिरी सांसें गिन रहा हूं, किसी भी हालत में वहां नहीं आ सकता। मेरी एक प्रार्थना आप से है, सारा प्रकरण आपके सामने आ चुका है। आप एक योग्य अधिकारी हैं, मेरे महल, होटल, षडयंत्र करने वालों और इसे फेल करने वालों, सब के साथ यथायोग्य न्याय करते हुये इन का निर्णय कर दीजिये। मैं जानता हूं कि आप उज्वल चरित्र के व्यक्ति हैं। यहां आपका अपना कोई लालच भी नहीं है, इसलिये आपका निर्णय बिलकुल सही होगा। थैंक्स अगेन!'' अभय के उत्तर की प्रतीक्षा किये बिना राजा साहब ने फोन रख दिया।

अभय को कुछ सन्देह हुआ, ''पता नहीं, राजा साहब को आना भी था या नहीं! उनका फोन भी असली था या ऐसे ही! मैं उनकी आवाज पहचानता तो हूं नहीं!'' उसने नेता की ओर देखा, नेता मुस्कुरा दिया।

''मैं इतना ही कह सकता हूं कि सारे निर्णय आपको ही सुनाने हैं, सारी परिस्थितियां आपके सामने आ चुकी हैं। मैं यह आश्वासन दे सकता हूं कि कोई प्रतिवाद नहीं करेगा।'' उसकी आवाज में कुछ अधिकार सा था।

अभय को शहर से निकलना था लेकिन यह एक नई परेशानी सामने आ गई। निकलने का यही एक उपाय था कि वह जैसे तैसे मामले को निपटा कर इससे छुटकारा पा ले। उसने एक-एक कर चीजें देखने का निश्चय किया। सबसे पहले होटल मालिक को लिया। वह डर के मारे थरथर कांप रहा था।

''सर इसके बारे में आप नहीं हम फैसला करेंगे, बल्कि कर चुके हैं'' नेता ने बीच में दखल दे दिया। युवती और वेटर युवक ने भी सहमति में सिर हिला दिया। ग्रुप के सदस्यों ने भी अभय के सामने हाथ जोड़ दिये।

अभय ने उस समय ''ठीक है'' कहने में ही भलाई समझी। खरीददार अपने बारे पहले ही बता चुका था, उसके बारे में फैसला करना कठिन नहीं था। अभय ने उसे अगली सुबह जाने देने का इशारा कर दिया। खरीददार की सांस में सांस आ गयी, उसने कृतज्ञता से अभय की ओर देख कर सिर हिला दिया।

''आप को अपना ग्रुप और उसकी गतिविधियां चलाने के लिये पैसा चाहिये ना?'' अभय ने नेता की ओर देखा। नेता ने हामी भरी। अभय ने उसे सामने रखा ब्रीफकेस उठाने का इशारा कर दिया और युवती ओर मुड़ गया।

''क्या बूढ़े के मरने बाद तुम्हें मिलने वाली सम्पत्ति के बारे में भी कुछ करना है?'' अभय ने युवती से पूछा।

''बिल्कुल!'' युवती जैसे तैयार थी।

''तो वह सम्पत्ति भी इस ग्रुप की हुई, ये उसे ऐसे प्रयोजन में खर्च करेंगे कि इस इलाके की किसी लड़की के साथ तुम्हारे जैसा व्यवहार न हो! ठीक है?'' उसने युवती और साथ ही ग्रुप के नेता की ओर देखा। दोनों ने सहमति में सिर हिला दिया।

''और तुम्हारा क्या करें?'' अभय ने युवती की आंखों में आंखे डाल कर उससे पूछा ''तुम्हें महल चाहिये, यही ना? शायद राजा साहब भी यही चाहते हों और उनकी स्वर्गीय पत्नी भी! तो ठीक है! यह तुम्हारा हुआ!'' अभय ने होटल मालिक की ओर देखा, ''जरूरी कागजों पर इसके हस्ताक्षर ले लो और अफसर से पक्का करा लो'' युवती ने नजरें झुका कर आभार से अभय की ओर देखा। वह मुस्कुरा दिया।

''और तुम? होनहार हो! पढ़ने के लिये हमारे देश गये थे, होटल का अनुभव है, वेटर तक की नौकरी भी की। महाराजा के हत्यारों को दण्ड दिलाने के लिये अपना सब कुछ दांव पर लगा दिया? तुम्हें कुछ नहीं चाहिये?'' अभय ने वेटर युवक को पास आने का इशारा किया। वह पास आ गया लेकिन कुछ नहीं बोला।

''ये होटल लेना चाहते हो? तुम इसके लिये सबसे अधिक योग्य हो!'' अभय ने उसके कन्धे पर हाथ रखा। उसने आगे बढ़ कर अभय के पैर छू लिये, उसकी आँखों में आँसू आ गये। अभय ने उसे गले लगा उसकी पीठ थपथपा दी। एक-एक उसके सारे साथियों ने उसे सीने से चिपका लिया।

''तुम भी कागज बना कर पक्के करा लो! आज से तुम होटल के मालिक हुये'' अभय ने हाथ मिला कर उसे कर बधाई दी।

''सब हो गया?'' अभय ने नेता की ओर देखा, ''या और कुछ भी करना है?''

नेता शरारत के साथ मुस्कुराया, ''सर एक छोटा सा काम रह गया है, महल होटल से मिला हुआ है, बल्कि अब तो उन्हें एक ही माना जाता है, इस बारे में भी कुछ!'' कहते कहते नेता पुराने होटल मालिक की ओर मुड़ गया ''ऐसा ही है ना?'' नेता ने उसकी ओर देखा।

''ये तो है!'' मालिक ने सिर झुकाये ही डर से कंपकंपाती आवाज में उत्तर दिया। उसे सामने मौत साफ दिखाई दे रही थी।

''ठीक है! लेकिन मुझे अन्दाज है कि इस पुराने होटल मालिक को क्या दण्ड मिलेगा। आप सबसे एक आश्वासन चाहता हूं, इसे अगर जीवनदान दे सको तो'' अभय ने ग्रुप के सभी सदस्यों की ओर देखा।

''वैसे भी इसकी योजना आपके कारण ही फेल हुई है, इसे लगा होगा कि सब इसी की तरह लालची और कमजोर होते हैं, लेकिन आप में चरित्र और निर्भीकता के साथ उदारता भी है।'' अभय की बात पूरी होने से पहले ही नेता ने बोल पड़ा, ''सर! ठीक है, हम आपका मान रखेंगे।'' सब ने उसकी हाँ में हाँ मिला दी। अभय आश्वस्त हो गया। वह वहां से चल पड़ने के लिये उठ खड़ा हुआ।

''सर!'' नेता ने कुछ कहना चाहा।

''वही ना? महल और होटल एक साथ हैं!'' अभय ने उसकी ओर देखा और दोनों हाथों को आगे कर उंगलियां अन्दर की ओर मोड़ते हुए युवती व वेटर युवक को अपने पास बुला लिया।

''लो पकड़ो और सम्भालो!'' अभय ने वेटर युवक का हाथ पकड़ा और पास खड़ी युवती का हाथ उसके हाथ में थमा दिया, ''यह है तुम्हारा किनारा! मिल गया आज तुम्हें!'' उसने युवती की ओर देख मुस्कुराते दोनों के हाथ कस कर दबा दिये। मंत्रामुग्ध से खड़े वेटर युवक और युवती ने अचरज से पहले एक दूसरे को देखा और फिर अभय को।

''सर! हम आपको छोड़ने बार्डर तक चलना चाहते हैं।'' उन दोनों ने अभय से अनुरोध किया और उसके पैरों पर अपने सिर रख दिये।

कोई उत्तर न दे अभय कार की ओर बढ़ गया और बार्डर पार करने के बाद ही रुका। उस न्यारे शहर की उसकी यात्रा जानदार रही या शानदार, वह तय नहीं कर पाया।

कहानीकार : एक संक्षिप्त परिचय

छात्रा जीवन से ही नेतृत्व के गुणों के साथ मेधावी भी रहे, हाईस्कूल की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण कर कॉलेज में सर्वप्रथम रहे तथा इण्टर करने के दौरान प्रान्तीय शिक्षा दल के डिस्ट्रिक्ट सीनियर अण्डर ऑफिसर व ऑल राउण्ड बेस्ट कैडिट रहे। 1970–71 में गुरु रामराय (पी.जी.) कॉलेज में स्टूडेंट वेलफेयर बोर्ड के सचिव तथा छात्रा संघ के महासचिव रहे, तत्पश्चात् डी.ए.वी.(पी.जी.) कॉलेज में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद की ओर से 1973 में छात्रा संघ के अध्यक्ष पद का चुनाव लड़ा। अ.भा.वि.प., देहरादून के जिला संयोजक व गढ़वाल के प्रमुख रहने के साथ 1973 से 75 तक उत्तर प्रदेश कार्यकारिणी के सदस्य भी रहे। जय प्रकाश नारायण नीत सम्पूर्ण क्रान्ति आन्दोलन में छात्रा युवा संघर्ष समिति के देहरादून जिला संयोजक व तत्पश्चात् गढ़वाल मण्डल के संयोजक भी रहे तथा उत्तर प्रदेश छात्रा युवा संघर्ष समिति के सदस्य भी रहे।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संघ शिक्षा वर्ग से आप द्वितीय वर्ष तक शिक्षित हैं। संगठन में मुख्य शिक्षक, तहील कार्यवाह, नगर बौद्धिक प्रमुख, जिला व्यवस्था प्रमुख तथा जिला प्रचार प्रमुख आदि कई प्रत्यक्ष दायित्व सम्भाले। राम जन्मभूमि आन्दोलन के दिनों संघ की ओर से इसके नगर प्रमुख भी रहे। संघ के वैचारिक प्रभाव के विस्तार क्रम में गठित उत्तरांचल संवाद समिति के पांच वर्षो तक प्रान्त प्रमुख रहे। संघ से सम्बन्धित जन कल्याण न्यास तथा जुड़े रहे। संघ के वैचारिक अभियान प्रज्ञा प्रवाह की उत्तरांचल इकाई **'देवभूमि विचार मंच'** के प्रान्त समन्वयक रहे। समाचार एजेन्सी **'हिन्दुस्तान समाचार'** की प्रवर समिति में सह संयोजक रहे। संघ के उत्तरांचल के बड़ी प्रसार संख्या वाले जागरण पत्रा राष्ट्रदेव के दो वर्षो तक सम्पादक रहने के साथ विश्व संवाद केन्द्र से भी जुड़े रहे तथा वर्तमान में आप संघ के प्रचार विभाग की प्रान्तीय टोली के सदस्य हैं।

1972 में भारतीय स्टेट बैंक की सेवा में आने पर देहरादून में आप स्टाफ एसोसिएशन के सचिव तथा तदुपरान्त अधिकारी संघ के क्षेत्राीय समिति व केन्द्रीय समिति के सदस्य रहे। रोकड़ अधिकारी, लेखा अधिकारी, क्षेत्राधिकारी, शाखा प्रबन्धक, प्रबन्धक (लेखा परीक्षा), प्रबन्धक (निरीक्षण), प्रबन्धक (जिला समन्वयक), मुख्य प्रबन्धक (कार्यालय प्रशासन) तथा मुख्य प्रबन्धक (राजभाषा) आदि पदों पर कार्य करने के पश्चात् 2007 के प्रारम्भ में आपने बैंक से स्वैच्छिक सेवानिवत्ति ले ली थी।

पत्राकारिता व लेखन से आपका गहरा सम्बन्ध है। 1969–71 के दौरान **'उत्तरांचल'** साप्ताहिक के साथ जुड़े रहे तथा सेवा में आने के बाद बैंक की आन्तरिक पत्रिकाओं से भी जुड़े रहे। हिन्दुस्तान समाचार के **'उत्तरांचल विशेषांक'**, राष्ट्रदेव के **'विजय दिवस विशेषांक'**, गगरी मासिक पत्रिका के **'टिहरी स्मृति विशेषांक'** तथा **'कर्मयोगी डॉ. नित्यानन्द'** पुस्तक का सम्पादन आपने किया है। कुछ प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं में आपके लेख प्रकाशित हुए हैं तथा कवितायें भी छपी हैं। 100 से भी अधिक कहानियां लिख चुके हैं, वर्ष 2013 में **'आलू का झोल'** नाम से आपका कहानी संग्रह भी प्रकाशित हुआ है। आप कुशल वक्ता के तौर पर जाने जाते हैं, अध्ययनप्रियता के कारण विषयों की गहन जानकारी है जिससे आपके भाषण बहुत प्रभावशाली रहते हैं। कई गोष्ठियों व सेमिनारों में उन्हें विशेष रूप से आमंत्रित किया गया है। टैगोर कल्चरल सोसाइटी भाषणों की श्रृंखला आयोजित कर चुकी है। भारतीय संस्कृति, जीवन मूल्य, मान्यताएं व परम्पराएं आपके प्रिय विषय हैं।

www.prabhakaruniyal.com